॥ श्रीवासुदेवस्वामिनेनमः ॥ अथ श्रीभगवद्गीता लिख्यते ॥ श्लोकः ॥ श्रीवासुदेवोभगवाञ्छ्वेतद्वीपपतिः
प्रभुः ॥ भक्तिधर्मात्मजः श्रीमान्मंगलं वितनोतु वः ॥ १ ॥ यः परात्मा परंब्रह्म सप्रोक्तः कारणकारणं ॥ नारायणः
स्वयंज्योतिः श्रेष्ठेशः पुरुषोत्तमः ॥ २ ॥ योनंतकोटिभिर्मुक्तैर्ब्रह्मरूपैः शान्तिप्रभैः ॥ निरन्तरं पूजितोऽनेकैरुपचारैः
सुभक्तितः ॥ ३ ॥ स्तुतः पुरुषसूक्तेन महापुरुषविद्यया ॥ प्रेम्णा ध्यानस्थितैर्नित्यं दिव्यमूर्तिः सतांपतिः ॥ ४ ॥ योऽ
नंतकोटिरवियैकतुल्यतेजः स्वगेहेदिव्याम् ॥ आस्थायैकपदानिशं चोर्ध्वबाहुर्हरः सुमुखः ॥ ५ ॥ स्वाश्रितानां मतां
स्वस्मिन्नैकांतभक्तिसिद्धये ॥ तपः करोति करुणस्तं नमामि जगद्गुरुम् ॥ ६ ॥ सर्वशास्त्रमयी गीता धर्मैकांतिकैर्युता
तद्भक्तत्रयैर्युक्तं वेतम्माशीकांतराशया ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अतिसमर्थसोभानिधी ॥ भक्तिधर्मसुतजोय ॥ श्वेतद्वी
पपतीअतीकरुवद ॥ चंद्रसदाप्रभुसोय ॥ १ ॥ वासुदेवभगवानसो ॥ मंगलअनन्तहमार ॥ भक्तमनोरथपुरप्र
भु ॥ करहुसदाविस्तार ॥ २ ॥ सोरठा ॥ जाहीवाखानतवेद ॥ परमातमपरब्रह्मकही ॥ ईशनकेईशअभेद ॥ सवकार
नकेहेतुनित ॥ ३ ॥ नारायणजेहीनाम ॥ स्वयंज्योतिसाकारनित ॥ निगमगावतगुनग्राम ॥ पुरुषोत्तमकहीप्रेमजुत ॥ १ ॥
४ ॥ चोपाई ॥ देहदिकांतिचंद्रसमाना ॥ ब्रह्मस्वरूपभजतभगवाना ॥ मुक्तनिरंतरकिकोटिअपारा ॥ प्रेमसेजेहीपु

जनवहुवारा ॥ ५ ॥ पुनिसोइमुक्तस्तवनकरेभारी ॥ पुरुषसूक्तकेमंत्रउचारी ॥ महापुरुषविद्यामेंसोई ॥ स्तवन
जाहिमुनिअनिलपुहोई ॥ ६ ॥ जाकोध्यानधरतमुनिवृंदा ॥ सदादिव्यमूरतिसुखकंदा ॥ संतनकुंसवविधिसु
खकारी ॥ संतनकिगतीभक्तभयहारी ॥ ७ ॥ कोटिभानुशशिसरिसउजारा ॥ सोप्रकाशधामहीवेदितुसारा ॥ उत्तर
सुखउर्ध्वभुजकरिगाढे ॥ एकपाउवेदिपरठाढे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ आपकेआश्रितसाधुकुं ॥ आपमेंअचलअनंन
भक्तिएकांतिकसिधिहीन ॥ करततहैतपभगवंत ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ करुणाकरनकरतार ॥ जगतगुरुजगदीशक
रत ॥ गुणगणजासअपार ॥ वासुदेवसोईवंदुनित ॥ १० ॥ चोपाई ॥ तिनकिआज्ञामेंसुखकारी ॥ तेहीएकां
तिभक्तनरनारि ॥ तिनकुंसुखसेंअरथजिमिभांसे ॥ तिनकरितरसंतोषप्रकाशे ॥ ११ ॥ तिनहीनगीताश्रीमुख
वानि ॥ भाषाकरिकेलिखुंसुखदानी ॥ श्रुतिसमृतिउपनिषदजेसा ॥ सवहिकोसारहेगितातेहा ॥ १२ ॥ एकांतीक
हरिभक्तकहाई ॥ तिनकेधर्महेगितामांई ॥ सवहिरेवमहिविदसुजेमें ॥ सवहिशास्त्रमहीगितानेमें ॥ १३ ॥ शांकर
भाष्यरामानुजभाष्या ॥ श्रीधरिमधुसूदनीटीकापामा ॥ वहुरिकागीताकिजेहा ॥ तिनकोरहस्यलिखतहुंनेहा ॥ १४
आगेनिजनिजअंशमेंभारि ॥ राजवंशमहिभएदुखारी ॥ तासेदैनकेसेनअपारा ॥ पापरूपभोमिकोभारा ॥ १५ ॥ दो

हा॥ तिनकोभारनसहीमहि॥भोमिधेनुंतनुंधारि॥ ब्रह्माकेशरननेगई॥दिनखिनदुखभारी॥१५॥चौपाई॥भोमि
अरुभोमिपरसंता॥तेहिदुखदिनोदैतअनंता॥सोसबदुखकिवानविस्तारी॥ब्रह्माकुंकहिभोमिपोकारी॥१६
इंद्रादिकसुरजुतअजतबही॥खिरसमुद्रतीरगयेसबही॥सोसमुद्रतटबैठकेदेवा॥चिन्तनकाश्रकिनतनखेवो
१७॥श्वेतदीपमहिरहतमोरारी॥वासुदेवप्रभुभवभयहारी॥तिनकोध्यानकियोदेवसमाजा॥प्रभुकोभारउतारनका
जा॥१८॥दैतसंहारनहितसबकोई॥अनिरुद्धारथनाकिनिसोई॥तबहिसोवासुदेवभगवाना॥रहेअदृस्यप्रभुप
रमसुजाना॥१९॥दोहा॥ब्रह्माकंप्रभुकहतभये॥द्वापरकलिजुगजोय॥तिनकिसंधिकेअंतमहि॥धरीकुं
रूपमेंदोय॥२०॥नरनारायणरूपकरी॥जदुकुरुकुलधरिदेह॥हरिकुंदेसुरगसंतहीन॥तामेंनहीसंदेह॥२१
सोरठा॥संतनकेसुखकाज॥धर्मकोअतिथापनकरन॥पृथ्वीरिकुंसहितसमाज॥अबसबसुरसंगेतजंकुं॥२२
चौपाई॥सबसुरगणसबकुंप्रियगणजेकुं॥निजनिजपत्निसहीतसबनेकुं॥निजनिजअंससृष्टीकरिबकुंहेना॥
ममसेवाहीनकुदेवसमेता॥२३॥मनुष्यलोकमहीउपजउजाई॥मेंसंगरहुंपरमसुखदाई॥युंकहेवासुदेव
भगवंता॥तापीछेसुरवृंदअनंता॥२४॥तहांसेंनिजनिजस्थानकुंआये॥प्रभुपरदेहधरेमनभाये॥श्वेतदीपवा

सिप्रभुजोई॥वासुदेवभगवानहेसोई॥२५॥नारायणऋषिरूपमेंतहि॥पुरिमथुरांमहीआयकेतेहि॥वसु
देवसेंप्रभुसुखरासी॥देवकिमहीउपजेअविनासी॥२६॥दोहा॥नरऋषीरूपसेंसोप्रभु॥वासुदेवजगवंद॥
इंद्रसेंकुंतीकेविषे॥उदयभयेजिमिचंद॥२७॥चौपाई॥सोईश्रीकृष्णअरुअर्जुनदोई॥इननामनिसेंविदि
तभयेसोई॥सोश्रीकृष्णभयेपरमउदारा॥जिनकोमहीमाअनंतअपारा॥२८॥दुष्टनकिकंसादिकपापी॥ह
निकेदैतसबजगपरितापी॥आपश्रीद्वारामतीकेमांही॥रूकमणिआदिनारिबहुतांई॥२९॥उद्धवादिबहु
पार्षदवृंदा॥तिनकुतसजनभयेसुखकंदा॥सोश्रीकृष्णसमर्थभगवाना॥युधिष्ठिरनृपतिकेज्ञाना॥३०
सोश्रीकृष्णकोजसअघहारी॥तेहिविस्तारकरनहितभारी॥राजसूजज्ञमेंपुजाकीना॥जरेबिमुखनृपअति
मतिहीना॥३१॥दोहा॥सबहीनृपतिसिरपावधरी॥नृपतियुधिष्ठिरजेकुं॥तिनकिपुजाप्रेमकरत॥ग्रहराग
किनिप्रभुनेकुं॥३२॥चौपाई॥सोइराजसूजज्ञमेंजबही॥नृपसमुहआएजोसबही॥दियोयुधिष्ठिरकुंद्रव्य
तेही॥अतुलसमृधिगनिजातनतेही॥३३॥सोदेखनदुर्योधनपापी॥अधिकतपतभयोजनपरितापी॥सो
सबसमृधिलेनकेकाजा॥निजमातुलसंकहनभयोराजा॥३४॥मामासकुनिकपटकोरूपा॥द्युतक्रियामही

खलकोभुप॥ सोसकुनिकियोकपटकोखेला॥ तिनसुंयुधिष्ठिरखेलेअकेला॥ ३५॥ राजसमृधिपांडवकि
जोई॥ छलकरिसकुनिजितिकेसोई॥ सोसबदुर्योधनकुंदिना॥ बारवरषवनरहनकुंकिना॥ ३६॥ दोहा॥ त
बपांडवपत्नीसहित॥ बारेवर्षपुजंत॥ धर्मसेबांधेवनरहे॥ जुगुरुमुखिसबसंत॥ ३७॥ सोरठा॥ एकवर्षलगी
सोय॥ नृपवैराटकेघररयेउ॥ जुंनपिछानेकोय॥ तेहिविधिपलटेनामसब॥ ३८॥ चोपाई॥ वर्षसबहीपुरेभ
एजबही॥ तबनिजराज्यभागहितसबही॥ पांडवउद्यमकिनोभारि॥ भागकुंदेनकिजुकीविचारी॥ ३९॥ निज
सबंधिअरुमित्रजोराजा॥ सोसहायहितकियोसमाजा॥ तातेयुधिष्ठिरनृपतिउदारा॥ राज्यभागहीतकिन
विचारा॥ ४०॥ पठयेश्रीकृष्णकुंविनयदेराइ॥ रखुनकछुकहताबंधुसगाई॥ हस्तिनपुरपतिप्रभुजबआए
नृपधृतराष्ट्रकुंअतिसुखपाये॥ ४१॥ अनंतमायकिजुकीदेखाइ॥ दुर्योधनकुंकहिसमुझाई॥ राज्यभागपा
डवकोजेहा॥ नितिविचारीदेकुंतुमतेहा॥ ४२॥ दोहा॥ तबश्रीकृष्णकुंबोलियो॥ दुर्योधनसबलेउं॥ कछुके
अग्रजेतिजमि॥ पांडवकुंनहीदेउं॥ ४३॥ चोपाई॥ तबश्रीकृष्णपांडवपहिगएउ॥ अंधकेपुत्रकुंवरनन
भएउ॥ दुर्योधनआदिकहेजोइ॥ मायबिनितिनहिमानतकोइ॥ ४४॥ पिछेयुधिष्ठिरनृपतिप्रविना॥ युधक ॥३॥

रनकुंनिश्चेकिना॥ द्रुपदसासकिआदिकजेऊं॥ निजसंबंधिराजाहेतेऊं॥ ४५॥ तिनकेसेनसंगसबलिना
कुरुक्षेत्रसहीडेरादिना॥ दुर्योधनकुंजांनोयहजबही॥ भिष्मद्रोणकरणादिकसबही॥ ४६॥ निजसहाय
कुलतनतपरहोइ॥ कुरुक्षेत्रपुनिआयोसोइ॥ एहिविधिक्षोहिणिग्रहदलअग्यारा॥ कौरवदलबलवारनपा
रा॥ ४७॥ दोहा॥ पांडवकिसेनाप्रबल॥ सातक्षोहिणिजोय॥ उडुनकेहीनतनपरभए॥ सेनपरस्परदे
य॥ ४८॥ सोकुधमेंश्रीकृष्णप्रभु॥ भक्तुएकोतिकजांनि॥ पांडवकोजयकरनहित॥ मंत्रिभयेसुखदानी॥
४९॥ सोरठा॥ अरजुनमहिंअतिहेत॥ प्रेममेंपरवसहीयप्रभु॥ सारथिभएउसचेत॥ नितिविचारकुंक
हतनिन॥ ५०॥ दोहा॥ सबहीविश्वउपकारहित॥ मनुष्यरूपकरतार॥ इसत्रापरसबंदनकियें॥ पतित
उहहिभवपार॥ ५१॥ जनमेजयसुविप्रवर॥ वैसंपायनजोय॥ कुरुपांडवकेजुधकि॥ कथाकेहतभयेसो
य॥ ५२॥ चोपाई॥ शरणागतवत्सलसुखकारी॥ भक्ताधिनभक्तभयहारी॥ सबहीलोकसाक्षीप्रभुजो
ई॥ पारथकेसार्थिभएसोई॥ ५३॥ तिहिविधिअरजुनकोजयजांनी॥ नृपधृतराष्ट्रअधर्मअभिमांनि॥ ता
हिअधिकनिजसुतनसनेहा॥ दुरयोधनजयकोसंदेहा॥ ५४॥ सबहीभांतिलोचनविनजेऊं॥ निजसु

तजयदुछतनृपतेऊं॥ एहिविधिनृपतिविसुविख्याता॥ संजयसंपुछतभएबाता॥ ५५॥ दोहा॥ जेहि
विधिनृपधृतराष्ट्रतब॥ मोहविवसअतिहोई॥ कहेउवचनअपानसें॥ बरनिसकैनाउतोई॥ ५६॥ सोरठा॥
नृपमनमोहअपार॥ निजसुतजयकुंअतिचहत॥ सुदजुविनहीविचार॥ संजयसंपुछतभएउ॥ चौपा
ई॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ धर्मक्षेत्रकुरुक्षेत्रमेंजोउ॥ मिलेऊधइछाहितसोउ॥ मोरतनयअरुपांडुकुमारा॥
कहोसंजयकहाकरतउदारा॥ ५६॥ एहिविधिनृपकेबचनसुनीकाना॥ मोहविवसतेहीजानिसुजाना॥
तबसंजयविचारकरिछिना॥ नृपसंगबोलेउपरमप्रविना॥ ५७॥ संजयउवाच॥ देखिपांडुदलसुहविवि
का॥ दुर्योधनभयभयजुतएका॥ द्रोणाचारजपहिगतबजाई॥ नृपकहेवचनबैरदरसाई॥ ५८॥ सुनुआचा
रजअतिप्रबलमारा॥ द्रुपदपुत्रबुधिवंतउदारा॥ दृष्टद्युमनरचिव्युहबनाई॥ बहिसबहीविधिबरनिनजाई॥
५९॥ पांडुपुत्रसमाअतिभारी॥ गुरुदेखहुंतुमनेनपसारि॥ अधिकउपेक्षाजोगपनएहा॥ प्रबलसुतुक
छुनहिसंदेहा॥ ६०॥ यहसंग्रामधजोधाजेऊं॥ अतिबडधनुषधारिसबतेऊं॥ भिमअरजुनसमरण
धीरा॥ युधसमेअतिप्रबलप्रविरा॥ ६१॥ दोहा॥ इनसबहीनकेनामसो॥ बरनिसकैनाउतोय॥ सासकी ॥४॥

अरुविराटनृप॥ द्रुपदमहारथिसोय॥ ६२॥ चौपाई॥ दृष्टकेतुचेकितानानरेसा॥ काशीराजअतिप्रबलविं
सेषा॥ कुंतीभोजबहुजितनहारा॥ सैब्यनरनमेंश्रेष्ठउदारा॥ ६३॥ युधामन्युउत्तमबलवांना॥ अतिबल
जुतविक्रांतसुजांना॥ अभिमन्युसोभद्रकहावे॥ पितुसमबलबरमोनहीतावे॥ ६४॥ द्रुपदीपुत्रबलअनं
तअपारा॥ प्रतिविंध्यादिकपंचउदारा॥ यहसबप्रबलमहारथिजानो॥ औरएहिसमप्रबलप्रमांनो॥ ६५
भयसंकाविसरावनकाजा॥ निजबलगुरुसंकहतअबराजा॥ सुनकुंद्विजोत्तमकहुंसबबाता॥ जोममसं
ग्रामहिविख्याता॥ ६६॥ दोहा॥ ममसंग्रामपतिनामसो॥ बरनिसकनाउउदार॥ जिनकेप्रबलप्रतापसें॥ म
मउरहरखअपार॥ ६७॥ चौपाई॥ गुरुतुमप्रथमहभिष्मसुधिरा॥ करणकृपाचारजसप्रविरा॥ ताच
हुंममदलमेसुखजोई॥ इदरणजितकहावतसोई॥ ६८॥ गुरुसुतअश्वत्थामातेऊं॥ सुहिविकरणअनु
जनिजतेऊं॥ सोमदत्तीअरुजयद्रथजानो॥ एसबअतिबलवंतप्रमांनो॥ ६९॥ औरकुंअनंतसुरहेजेता॥
ममहितप्रानतजेंअबतेता॥ बहुविधशस्त्रग्रहेकरजेहा॥ सबविधिकुसलजुधमहीतेहा॥ ७०॥ भिष्मपी
तारक्षजुतजीनमांही॥ अपनिफोजसमअमकोउनांहि॥ तदपितेहिरणजितनकाजा॥ निजबलअनुनस

गनमुनिराजा॥ ७१॥ दोहा॥ भिमसेनरक्षकप्रबल॥ रिपुदलदर्शनजोय॥ अपनेसेंनकुंजीतने॥ समरथभा
यतमाय॥ ७२॥ चौपाई॥ निजगुरुसंकहीकेंइमिबानी॥ निजपुरुषनकुंकहतहिंज्ञानी॥ जेहिजेहिथल
जोजोधप्रविरा॥ तेहितेहिथलरेनारनधिरा॥ ७३॥ भिष्मकिरक्षाहोयसोकरहुं॥ औरसकलउद्यमपरह
रहुं॥ इमिदुर्योधनवचनउचारी॥ चिंतासोकजंहभयोभारी॥ ७४॥ कहेसंजयसुनुंनृपतिउदारा॥ भि
ष्मपितामहमनकिनविचारा॥ दुर्योधनकुंहरखउपजाई॥ कुरुकुलवृद्धपरमसुखदाई॥ ७५॥ सिंहसुनादत
किनअतिभारी॥ अतिप्रतापजतअतिजयकारी॥ पुनीअतिसंखनादतेहिकिना॥ अधिकप्रतापीप
रमप्रविना॥ ७६॥ दोहा॥ तापिछेबहुतूंरखधुनी॥ भेरिढोलअपार॥ नोबसरणसिंगाबजे॥ भयोशब्द
भयकार॥ ७७॥ सोरठा॥ बजेसबहीएककाल॥ जधकारणबाजेंत्रबहु॥ भयोभ्रादविकराल॥ कायरअ
तिकंपतभएउ॥ ७८॥ चौपाई॥ सुनिसोनादउरसंकनलेशा॥ पांडुतनयमनहरखविशेषा॥ तबश्रीकृष्ण
सचराचरस्वामी॥ पारथकेसारथिबहुनामी॥ ७९॥ पांडुतनयरथिपरमसुजाना॥ धनुर्वेदजानतविधि
नाना॥ त्रिभुवनजयसाधनरथजेहुं॥ श्वेतअश्वजतअतीवरनेहुं॥ ८०॥ सोरथपरवेदोउविरा॥ मा

अ॰१ ॥५॥

धवपांडवपरमसुधिरा॥ दिव्यसंखलिनेदोउहाथा॥ लगेउबजावनत्रिभुवननाथा॥ ८१॥ पांचजन्यनि
जसंखकहायो॥ सोश्रीकृष्णलेअधिकबजायो॥ देवदत्तनिजसंखहेजोई॥ अरजुनअधिकबजायोसो
ई॥ ८२॥ दोहा॥ भयकारिजेहिकर्मसब॥ प्रबलवृकोदरविर॥ पौंड्रनाममहासंखले॥ किनोसबदगंभीर
८३॥ चौपाई॥ अनंतविजयजेहिनामकहायो॥ सोतोयुधिष्ठिरसंखबजायो॥ संखसुघोषनकुलधुनि
किना॥ मणिपुष्पकसहदेवप्रविना॥ ८४॥ काश्यपन्रपतीअतिबडधनुधारी॥ महारथिप्रबलसिखंडी
भारी॥ धृष्टद्युम्नविराटहेजेहुं॥ सात्यकिअतिअपराजिततेहुं॥ ८५॥ द्रुपदनृपतीअरुद्रुपदकुमारा॥
सुंमहाभुजअभिमन्युउदारा॥ निजनिजसंखपृथकलेसोई॥ लगेउबजावनन्रपसबकोई॥ ८६॥ संखघो
षबहुसुनंनकुंनरेसा॥ कोरवउरभयोअधिकप्रवेशा॥ नृपधृतराष्ट्रतनयउरजेहा॥ अधिकविदारणकि
नेउतेहा॥ ८७॥ दोहा॥ नभभोमिसबदिशाविषे॥ दारुणशब्दप्रकाश॥ कोरवसबमानतभए॥ सबकी
जयकोनास॥ ८८॥ चौपाई॥ अबकोरवदलबारीजेहि॥ दृगभरीदेखिकपीध्वजतेही॥ शस्त्रनिपातप्र
वृतिउविसोई॥ धनुषग्रह्योअरजुनसमजहोई॥ ८९॥ सोतुंनृपजधहितउद्यमगानी॥ तबश्रीकृष्णसंबो

तेउवानि॥ अस्युतममरथअतिहदतेऊं॥ उभयसेनमध्यथापऊंतेऊं॥ ८०॥ ऊछकरनवारेजेआई॥
जेहिविधिमैंनिरखुंतेहिजाई॥ सुंममरथराखऊंजगवंदा॥ हरनसकलकलिमलभवफंदा॥ ८१॥ यहह
रणमेंमोयपरमविचारा॥ केहिसंगजोग्यहेऊधहमारा॥ जुधकेजोग्यमैंदेखुंतवही॥ रणउछासवदे
मोयतवही॥ ८२॥ दोहा॥ दुष्टबुधिकौरवसवे॥ तेहिहितदुछनजेही॥ आयेइहांजोऊधहीन॥ अव
हिविलोकुंतेहि॥ ८३॥ संजयउवाच॥ चोपाई॥ सुंअर्जुनप्रेरतभयेजवही॥ तेहीविधिऊरसमकरतभये
तवही॥ जयकारिउत्तमरथजेहा॥ उभयसेनमध्यथायेतेहा॥ ८४॥ भिष्मद्रोणप्रमुखमहिपतिजोइ
सवदेखतबोलेउप्रभुसोई॥ अर्जुनकुरुदलसघनअपारा॥ वारवारऊहेदेखनृदारा॥ ८५॥ पारथनेहि
थलदेखेजेऊं॥ पितापितामहगादेतेऊं॥ आचारजमातुलअरुभ्राता॥ पुत्रपौत्रमंत्रिसाक्षाता॥ ८६॥
स्वसुरसमंधिसुहृदसवजोउ॥ उभयसेनमध्यदेखेसोउ॥ परमकृपाकरिभेउरग्लानी॥ खेदऊरुबोले
उतववानी॥ ८७॥ अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ कृष्णऊंहूस्वममस्वजनसब॥ ऊधहीनआयेजोय॥ देखिदेखि
अंतरविषे॥ दुष्टहीनहेमोय॥ ८८॥ चोपाई॥ खेदहुममगात्रअभंगा॥ मुखसूकतकंपतसवअंगा॥

रोमांचिततनहोतहमारा॥ सोकसिंधुकोवारनपारा॥ ९९॥ करसेंगिरतगांडिवहमारो॥ तुचाजरतता
तननसारो॥ रथपरवेवनसम्रथनाही॥ मोमनभ्रमतअधिकमुर्छाही॥ १००॥ अशकुनअनंतअधिक
दुखकारी॥ मैंदेखनऊंदेवमोरारी॥ ऊधमहीस्वजनहंस्ववधजेऊं॥ निजकल्याननभासतनेऊं॥ १०१॥ कृष्ण
ऊंहूस्वमैंजयनहीचाऊं॥ राजकेसुखमेंनहीललचाऊं॥ राजसेहमकुंकहागोविंदा॥ भोगरूजिवनकहा
सुखकंदा॥ १०२॥ दोहा॥ जिनकेकाजहमचहतहै॥ राज्यभोगसुखसाज॥ सोवादेरणभुमिमे॥ त्यागत
जनधनकाज॥ १०३॥ चोपाई॥ आचारजपितुपुत्रहेजेहा॥ सुंहिपितामहआगउतेहा॥ मातुलस्वसुरपौ
त्रअरुसाला॥ सुंहिसमंधिभएउविकराला॥ १०४॥ मोयमारनआएउसबग्रही॥ तदपिनमेंमारुंप्रभुते
ही॥ वंधुमारित्रिभुवननहिचाऊं॥ मोमेंभोमिहितकुललचाऊं॥ १०५॥ हनिधृतराष्ट्रतनयवऊनामी॥
कहाआनंदहमहीजगस्वामी॥ त्रासत्र्यपापीनेहिहनिअपहारी॥ हमहिऊंपापलगतअतिभारी॥ १०६॥
तातेवंधकरनकौरवजेऊं॥ हमकुंहननजोग्यनहीनेऊं॥ वंधुमारिअतिजनअविगोवे॥ हेमाधवहमऊंसुख
विहोवे॥ १०७॥ चोपाई॥ जद्यपीसोनहिदेखही॥ कुलक्षयकोमहापाप॥ लोभविवसनहीदेखही॥ मी

ज्ञो हम अघ ताप ॥१०८॥ चौपाई ॥ कुलक्षय दोष विलोकनहारे ॥ हम सब वेंध धर्म रुचि वारे ॥ यह पातक
में निवृत्ति जोई ॥ हम क्युं न जाने जनार्दन सोई ॥१०९॥ कुल में धर्म सनातन जेहा ॥ कुलक्षय नास होहि सब तेहा
धर्म नास भए कुल सब मांही ॥ अधर्म वास करत जहां ताही ॥११०॥ अधर्म को अनीसे वस होइ ॥ कुलत्रिय दु
ष्ट होहि सब कोई ॥ दुष्टा क्रम होहि जब नारी ॥ वर्णसंकर उपजत दुखकारी ॥१११॥ कुलहंता को कुल हे जो
ऊ ॥ संकर डारत नरक में सोऊ ॥ पितृ पिंड उदक न हीं पावे ॥ क्रियाहीन होय जमपुर जावे ॥११२॥ दोहा ॥ ताके
पितृ स्वर्ग में ॥ पिंड रहीत जब होय ॥ संकरकृत कुल में भये ॥ गिरत स्वर्ग से सोय ॥११३॥ चौपाई ॥ वर्णसंक
र सो दोष करें जेता ॥ कुलहंता कुं नरक हीन तेता ॥ तिनके जाति धर्म हे जेहा ॥ प्रथम के कुलधर्म नास होने हा
११४॥ अति उछेद भयो कुलधर्म जाको ॥ निश्चे वास नरक महीं ताको ॥ कहे नेहे जनार्दन सब श्रुति मांही ॥ म
नुष्य अधर्मी अधोगति जांहि ॥११५॥ अहो करन महापाप अपारा ॥ हम भये तत पर स्यागि विचारा ॥ राज के
कारण हित हम कुं लोभाने ॥ स्वजन हनन अति उद्यम ठाने ॥११६॥ अब ईन कुं नहि करुं प्रहारा ॥ शास्त्र न कर ग्रहुं
रा ति विचारा ॥ शस्त्र पाणि सो मार ही मोइ ॥ तब मम क्षेम अधिक ता होइ ॥११७॥ दोहा ॥ नृप धृतराष्ट्र के पु ॥७॥

त्र सब ॥ इहि विधि मारहि मोय ॥ तब मेरे जय सब ही विधि ॥ मोर परम हीत सोय ॥११८॥ संजय उवाच ॥
दोहा ॥ युं कही अर्जुन युद्ध विषे ॥ रथ पर बेठे आय ॥ धनुष बान कर से तजे ॥ शोक न बरन्यो जाय ॥११९॥
इहि विधि करुणा धर्म सें ॥ कृतजन नन अरु ध्यान ॥ मुकुंदानंद कहे मनहीमन ॥ करत हे शोक कल्यान ॥१२०॥ इति
श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे मुकुंदानंद मुनि विरचित भगवद्गी
ताटिकायां अर्जुनविषादो नाम प्रथमो ऽध्यायः ॥१॥ संजय उवाच ॥ चौपाई ॥ कहे संजय नृप सुन कृष्णने देखा
अर्जुन उर भइ कृपा विशेषा ॥ तेहि विधि कृपा जुक्त भयो भारी ॥ अति व्याकुल लोचन बहे वारी ॥१॥ खेदजुक्त
अर्जुन कुं जांनी ॥ मधुसूदन युं बोले बांनी ॥ जेहि विधि कहीं पारथ मन बांता ॥ सो नृप तो ही कहुं साक्षाता ॥
२॥ श्री भगवानुवाच ॥ कहो तुं अर्जुन अब जोग युद्ध मांइ ॥ कहां से शोक प्राप्त भयो ताही ॥ तुं छत्रिस बिन वो
कहे जेहा ॥ स्वरग विघन अपजस प्रद एहा ॥३॥ यह कायरता जो ग्यनतोई ॥ पृथापुत्र जान ते सब कोइ ॥ तु
छ हृदय दुरबल पन जोई ॥ तज अरि युध जीतन वारे होइ ॥४॥ दोहा ॥ पुनि सों स्नेह करुणा विवस ॥ धर्म सें व्याकु
ल होय ॥ हम कहे हित के वचन ॥ ताहि न जांने मोय ॥५॥ अर्जुन उवाच ॥ मो अर्जुन कहे हम कं ॥ स्कं नियो

सामककज्ञान॥भिष्मद्रोणकुंरणविषे॥क्युंकरमारुंबान॥६॥सोरठा॥पुजनजोग्य हे दोय॥सोकिमिमारुंबा
नकरी॥मोयपरमदुखसोय॥ताहीतेंममउरजरतहरी॥७॥चोपाई॥अतिसनमानजोग्यहेजेउं॥भिष्मद्रो
णआदिकगुरुनेउं॥तिनकुंहतेविनयहजगमोई॥भिक्षाभोजनश्रेष्टहेसोई॥८॥ताहिकारनतेंहीकेहीविधी
मारुं॥भोगासुखक्युंरणमेंराहुं॥भिष्मादिकहीमारुमेंजबही॥तेहीभुक्तेंसोभोगअवसबही॥९॥तिनकें
रुधिरजुक्तहोइजावें॥तेहिआसनश्चिंतहोइक्युंभावें॥पापयुक्तउरजाअसोहमजामें॥अतिआतुरकहोउकि
मिनामें॥१०॥प्रभुतुमहमहोकहींगेतेहा॥जुधआरंभकियोक्यकहा॥आरंभकरिकेनलरिहोजबउं॥कोर
वतुमहीनलोरेनबउं॥११॥दोहा॥किहमइनहिकुंजितिहें॥जितेकिहमकुंराह॥इनमेंश्रेष्टउपायको॥ह
मकुंअतिसंदेह॥१२॥चोपाई॥जिनहीमारिहमजीवेनांही॥सोइलरनजाइरणमांही॥धर्मअधर्मनज्ञांनतजाही
हमहीकुंमारेश्रेष्टहेतेही॥१३॥प्रभुकायरपनदोषअपारा॥तेहिकियोनाशस्वभावहमारा॥धर्ममेंमुढचितभ
योभारी॥तुमहिकुंपुछुंदेवमोरारी॥१४॥जोममश्रेयअचलकरिमोई॥कहउंजथारथमहाप्रभुमोइ॥मेंत
वशरणागतमकरवकंदा॥शिष्यकुंबोधदेउंनगवंदा॥१५॥ममउरप्रबलशोकहैजेउं॥इंद्रिनकुंअतिशोषत

तेउं॥पायअकंटकभुवकोराजा॥पायइंद्रपदसहितसमाजा॥१६॥दोहा॥तदपिममउरशोकसो॥मिटत
नहीलवलेश॥सुंमोयभासतयाहितें॥दिजेमोयउपदेश॥१७॥संजयउवाच॥चोपाई॥नृपइमिअर्जुनप
रमप्रविना॥हृदयमेकंवचनकहेउहोइदिना॥जुधनकरउंकृष्णकरवकारी॥युंकहीलिनमुनिव्रतभारी॥
१८॥ताहिविधिदेहआतमाजोउ॥नहीतेहिज्ञांनजथारथसोउ॥तेहिकारनउरशोकअपारा॥आतमतत्व
कोकरतविचारा॥१९॥देहसेंप्रथकआतमाजाई॥ताकोज्ञांनहोनहीतसोई॥धर्मअधर्मकोकरतउचारा
तदपिनजानतसारअसारा॥२०॥जुधहीतउभयसेनहेजेहा॥तेहिमध्यसदुउखमविनतेहा॥अरजुन
कुंइमिदेखिमोरारी॥बोलेउकृपादेवमकरवकारी॥२१॥दोहा॥हेपारथसुंवचनकही॥प्रथमकिनकछुहा
स॥आतमअजरूपरमातमा॥कहेउप्रथकअविनास॥२२॥छंदहरिगीता॥अविनासआतमपरमातम
किपायतिहितजोयजु॥कमकर्मजोगरुज्ञांनजोगरेभक्तीजोगहेसोयजुं॥यहतिनजोगसेंजुक्तआत
मपरमातमकोज्ञानजुं॥सबआद्यमध्यरुअंतगीताकहतश्रीभगवानजुं॥२३॥दोहा॥ताहीविधिसबसं
शयहरन॥वचनकहतभगवान॥मुक्तानेदकेसांमनव॥बोलेउपरमसुजांन॥२४॥श्रीभगवानुवाच॥

चौपाई॥ सोकुकरनकैजोग्यनजोई॥ हेअर्जुनतुमसोचतसोई॥ जोपभ्रयेपिंडोदकुजेहा॥ परहीनरकमें
हिपितृतेहा॥२५॥ सोसबकुलघ्नहतनाहिरपापा॥ तुमगाहीभांतीकरतसंतापा॥ देहमेंआतमसुधीतुमारा॥
कहतहोतुमसबविनहीविचारा॥२६॥ देहातमस्वभावहैजेऊं॥ पारथतुमनहिजानततेऊं॥ आगरहीतज
उपिंडहेजेहा॥ पंडीतरंचनसोचततेहा॥२७॥ प्राणऋक्तजोजिवकहाही॥ पंडितनतेहिहितशोचतनांही॥ दे
हकुंजन्ममरणनितहोई॥ चैतनकुंदोमेनहीकोई॥२८॥ दोहा॥ देहकैजन्मेजन्मनही॥ देहमरेनहीनाशु॥
तातेपंडितजीवको॥ कबहुंनमांनेविनाश॥२९॥ सोरठा॥ ताहितेंपंडितजांन॥ जउचैतननचिंतानजन॥ शो
चतउभयनुजांन॥ तेहिसुंविमुखगिनत॥३०॥ चौपाई॥ कहेश्रीहरिएमकंतेअरजुनराऊं॥ आत्माअन
नंतेभांतिहैजेऊं॥ तिनकोसहजस्वभावहैजेहा॥ बरनिसकंनाउतोपुनअबतेहा॥३१॥ जसुंमेंवफेदेवकहतसोई॥
आगेनहिथासुंनहीहोई॥ तुमकुंनहीआगेंसुंनाही॥ हमतुमरहेंउपुर्वभवमांही॥३२॥ यहसभीप्यादिकहतु
पतिअपारा॥ आगेंनहीसुंनाहीउदारा॥ सबहीसमआगेकेराहा॥ जीवरुपकरीसमहेतेहा॥३३॥ पुनी
मेअसरुपहनुपतिअनंता॥ नाहोइहेसुंनहीबुद्धीवंता॥ सबहीकालसमबसमहेजोरी॥ ताकिविगतकंनाउ ॥९॥

तोरी॥३४॥ छंदहरिगीता॥ कहुंविगतिजसुंमेंसकलकारणसबनियंताराजऊं॥ परमातमासर्वेशसंसे
रहीतनितछविछाजऊं॥ तेहिविधिअनादिमक्तमेरेतुमसदासस्वरुपसुं॥ तेहीभांतिएसबनृपतीसस
हेविमुखजीवस्वरुपसुं॥३५॥ दोहा॥ अजरअमरइमीआतमा॥ शोकनकरनोलेश॥ देहातममतिकुंत
जो॥ एहीउत्तमउपदेश॥३६॥ चौपाई॥ जसुंआतनमहीवर्त्तनजेता॥ होतअवस्थाद्वेधपुजेता॥ पुनरत
बालतरुनवृधजोई॥ तबतेहीजीवकोनाशुनहोई॥३७॥ सुंअन्यदेहमेंजावेजवही॥ जीवकोनाशनहोवततव
ही॥ एहिविधिधिरसमझोमनमांही॥ तेहीहितसोनरनांहीमुंझाही॥३८॥ शब्दरुपरसरुपरसगंधा॥ अ
र्जुनविषेजालजगबंधा॥ श्रोत्रादिकसेंग्रहतनरएहा॥ करवदुखदायकहोतहेतेहा॥३९॥ आयकेनाशहो
तहैजेहा॥ अप्रतिअनित्यसकहुनहीसंदेहा॥ तातेपंचविषेहैजेऊं॥ सहनकरीअरजुनतुमतेऊं॥४०॥ दोहा
अरजुनजोतुमयुंकहो॥ सहेकवनगुनहोय॥ गुनक्रवदुखकेसहनको॥ सबहीकंनाउतोय॥४१॥ चौ
पाई॥ जोधिरजनहतहरमतिविरा॥ तजनजोपमहादुखगंभीरा॥ क्रवजिमिमांनिसमानरहेजोई॥ तेहिसम
हरमतिओरनकोई॥४२॥ निजवरणाश्रमकेधर्महेजेहा॥ मोक्षकेसाधनजोग्यहैतेहा॥ फलइछाविनतन

परतेऊं ॥ जुध आदिक आरंभ तजेऊं ॥ ४३ ॥ जुध आदिक कर्मन मही जोउ ॥ कोमल कविन परमसहि मोउ ॥ आ
त्रपान आदिक महे जेही ॥ अविचुल पद पावत हे तेही ॥ ४४ ॥ तब सम दुख कुं सहत नही जेता ॥ कबहुं पर
मपद लहत न तेता ॥ ताते जुध करऊं तम विरा ॥ सोक सब ही त्यागऊं रणधिरा ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ असत देह सो
मतन ही ॥ आत्मा असत न होइ ॥ देह रु आत्मा सब ही विधि ॥ इविकहत मुनि सोइ ॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ दोउ को
निरणय जेऊं ॥ तत्वदरशि सब विधि करत ॥ असत अनातम तेऊं ॥ तजत सत्य कुं अनुसरत ॥ ४७ ॥ चौपाई
अरजुन सो इह अविनासी जानो ॥ जो यह तन में व्यापि लपटानो ॥ अविनासी यह जीव है जोइ ॥ नास करन स
मुथ नही कोइ ॥ ४८ ॥ अज अविनासी आतम जेऊं ॥ देह कुं जाननहार है तेऊं ॥ निज निज पाप पुन्य करि गह
चेतन कुं प्रापत भये देहा ॥ ४९ ॥ कर्म के अंत नाश होइ जावे ॥ ताते बुध नेही शोक न ल्यावे ॥ अरजुन लषी आ
तम अविनासी ॥ जम पर जुध करऊं गुनरासी ॥ ५० ॥ हे अरजुन अज आतम जोउं ॥ ताहि कुं हनन हार कु
हे कोउं ॥ तेहि विधि हनन हेत उर ल्याही ॥ नास भयो जानत है ताही ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ उभय भांति के पुरुष कुं ॥ उर
नहीं आतम ज्ञान ॥ चेतन ना मारे मरे ॥ यह स्रुति सिद्ध प्रमांन ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ अविनासी जिवातम जोइ ॥ देह

के संग न जनम न सोइ ॥ देह के नास भए नाश न जाको ॥ अज अविनासी नाम है ताको ॥ ५३ ॥ कल्प कि आदि अनउ
पजन जेता ॥ विस्व के नाश न पावत अंता ॥ देह कुं नाश करत है जबही ॥ जिव को नास न होवत तबही ॥ ५४ ॥
तेहि विधि निस्य अरु अज अविनासी ॥ जिव कुं जाने अचल गुनरासी ॥ सो बुधिवंत चराचर मांही ॥ पारथ
जंतु मरावत नाही ॥ ५५ ॥ करत सो केहि विधि जीव कि घाता ॥ जिन जान्यो आतम साक्षाता ॥ ताते हनावो जिव
कुं जानो ॥ तेहि हित शोक अजुगत प्रमानो ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ अरजुन तुम युं जानि हो ॥ करे रतन कि नास ॥ सो
क निमित यह सब गरहे ॥ सो कयुं मिरत न अविनास ॥ ५७ ॥ सोरठा ॥ याको उत्तर तोय ॥ कहुं अब ही सिद्धांत करी
तुम अति विस्त भमांय ॥ भिन भीनव रसुं सब ही विधि ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ जिरण वस्त्र तजत नर सब कोऊ ॥ नविन वस्त्र
धरि लियत सोऊं ॥ त्युं यह धर्म अधम ही धिरा ॥ अति जिरण सब त्यागि शरीरा ॥ ५९ ॥ देवादिक कंदरत न जेऊं ॥
सो तन पाप के लिहि है तेऊं ॥ तेही कारन बड शोक करे जे ता ॥ तजत न जीरण सब हि विधि तेहा ॥ ६० ॥ जिव कुं शस्त्र न छे
दत कोइ ॥ जिव अग्नि करि दहन न होइ ॥ जलसें सरत न चेतन राही ॥ मारुत शोषी सकत न ही तेही ॥ ६१ ॥ शस्त्र
अग्नि जल मारुत जोइ ॥ अति शिष्युल रूप है सोइ ॥ आत्मा अति सूक्ष्म है तऊं ॥ शस्त्रादिक नही छेदत तेऊं ॥ ६२

॥दोहा॥ अनिकृष्ट आतम विषै॥ छेदनादि नहीं होय॥ शस्त्रादिक निज शक्ति कूं॥ करन न समरथ कोय॥६३॥
चौपाई॥ छेदन जोग्य न चेतन होई॥ पावक मैं दाझन नहीं सोई॥ जल करि भिंजन जोग्य नहीं जेऊं॥ पवन सें सूकन जोग्य
न तेऊं॥६४॥ देह इंद्रि अंतःकरण मांहीं॥ व्यापि रहत अरु नित्य कहाहीं॥ थिर अरु अचल सनातन सोऊ॥ अस
न के गुन ते हि लगत न कोऊ॥६५॥ आत्मा अधिक अव्यक्त कहावै॥ देहादिक जो मिन नजर न आवै॥ देहादिक
सें विजाति विशेषा॥ चिंतन में नहीं आवत लेषा॥६६॥ अनिअविकारि आतम एहा॥ कवहूं विकार के जोग्य
न तेहा॥ ताते एही विधि आतम रुपा॥ सब ही भांति ते हीं जो नित्य अनुपा॥६७॥ दोहा॥ अर्जुन एही विधि आत्
मा॥ समझि अचल मन मांही॥ तृषा शोक न हि कार नै॥ करन जोग्य तुम नांही॥६८॥ चौपाई॥ हे अरजुन तुम पु
नि यु मानो॥ देह रूप नित आतम जांनो॥ जन्म मरण नित पावत ताऊं॥ तदपि शोक के जोग्य न तेऊं॥६९॥ देह सदा
परिणाम स्वभावा॥ ते हि ग्रि जन्म मरण को दावा॥ जाको अचल स्वभाव है जोऊ॥ सो कके जोग्य नहीं चेतन सोऊ॥७०॥
जो जनमत ते हि मरण अभंगा॥ मरन ताहीं है जन्म प्रसंगा॥ ताही ते उदेअस्त जो होई॥ नित्य परिणाम कुं पावत जोई॥
७१॥ नित परिणामि रहत देहाला॥ नहीं परिहार होत कोऊ काला॥ अर्जुन तातें शोक मन मांही॥ सब विधि कर ॥११॥

न जोग्य तुम नांही॥७२॥ दोहा॥ भासमान सब व्यक्त की॥ पृथ्य म अवस्था साग॥ अन्त अवस्था प्रापति॥ तेहीं न
सोक व उ भाग॥७३॥ सोरठा॥ मनुष्यादिक सब कोय॥ अस्त्य कूं शोक के जोग्य नहीं॥ मर्म अलौकिक सोय॥
तोय व ताउं अब सब ही॥७४॥ चौपाई॥ ऋंन कुंभ रत कुल देह उदारा॥ मनुष्य आदि पर त्राण अपारा॥ ति
न कि आद्य अवस्था तेऊं॥ अति अव्यक्त न हि भासत तेऊं॥७५॥ पाये हैं मनुष्य आदि तन जोई॥ मध्य अवस्था
भासत सोइ॥ अंत अवस्था कहत है जोऊ॥ अति अव्यक्त न हीं भासत सोऊ॥७६॥ इन को एही स्वभाव कहावै॥
उपजत खिनत होय पलय कुं पावै॥ यामें पि त्रनिमित्त न कोऊ॥ सहज स्वभाव में वरतन सोऊ॥७७॥ एही विधि देह
कुं आतम कहही॥ शोक निमित्त नहिं ते हि मन रहही॥ युं कहीं देह सें पृथक अनुपा॥ अनिअद्भुत आतम को
रुपा॥७८॥ दोहा॥ देखन हार जो ताही को॥ कहन हार जो कोई॥ सुनन हार जो ताही को॥ अतिदुर्लभ है सोई॥
७९॥ चौपाई॥ देह सें पृथक विजाति जेहा॥ त्रिविध रूप आतम है तेहा॥ सब ही प्राणी मध्य पुरुष वेत्त जेऊं॥ तप करी
खिन्न पाप है तेऊं॥८०॥ अनिवर पुरुष उ देखयो जाही॥ एसो कोऊं पुरुष है ताही॥ आश्चर्य मय आतम को रुपा॥
दिव्य दृष्टि करि भासे अनुपा॥८१॥ एहि विधि अधिक पुरुष कुन जोई॥ आश्चर्य मय आतम कहे सोई॥ ते हि विधि

अधिक पुन्य ऋनस्वानि ॥ ऋंनन ताही आश्चर्य मय जांनि ॥८२॥ जिवातम कं निदेखि उदारा ॥ अस आगें कहे वा
रमवारा ॥ नदपि जथारथ दरसन जाको ॥ कहन ऋंनन अनि दुलभ ताको ॥८३॥ दोहा ॥ सब के देह कुं वध कियें
चेतन को वध नांही ॥ हे अर्जुन दुखि आतमा ॥ मत दुखि लेकुं मन मांही ॥८४॥ सोरठा ॥ सब प्रानि कौ शोक ॥ करन
जोग्य नही धिर तुम ॥ उर में रहो अशोक ॥ मिथ्या दीक गिन निकवन ॥८५॥ चौपाई ॥ निज कुल धर्म देखि के धिर
नही तुम कं पव जोग्य प्रविरा ॥ धर्म रूप ताही ऋध में आग ॥ क्षत्रि कुं न परम पद दोरा ॥८६॥ जतन विनो प्रापन भ
योजे हा ॥ खुले हे स्वर्ग के द्वार सोग हा ॥ पारथ क्षत्रि परम ऋत्वि सोउ ॥ ए हि विधि ऋध कुं पावन जोउ ॥८७॥ अ
ब क्षत्रिय कुं धर्ममय जेऊं ॥ तुम संग्राम न करि हो तेऊं ॥ तातें निज धर्म कि रति गमाइ ॥ पै हो पाप अपजस करता
ई ॥८८॥ अरु तेरो अपजस दुखदाई ॥ कहि है लोक सब गालबजाई ॥ संभावित की अकिर्ति जेही ॥ मरण सें
अति दुखदायक नेही ॥८९॥ दोहा ॥ भयो अधिक भय भित जब ॥ तब हि तजो संग्राम ॥ युं मानें गे महारथि
सो तो यस बड दुखधाम ॥९०॥ दुर्योधन आदिक रिपू ॥ अति बहु जानत तोय ॥ ऋध सा गेन्यु ही इहि ॥ कायर क
हे सब कोय ॥९१॥ चौपाइ ॥ हम सब अति करे रेण मांही ॥ ए ही अब पारथ को बल नांही ॥ हम रे संग मिलो

रहे जब ही ॥ अरु ऋन अमीर सें क्रर हे नब ही ॥९२॥ युं तब सांमथि नि दिहि गऊं ॥ कहि है क्र आगे सब ले ही ॥ न
वृद्धा तु को रखहें जेहा ॥ अति अवाच्य कहि हे सब तेहा ॥९३॥ अति अवाच्य निंदा कं निविरा ॥ यातें कवन अ
धिक दुखधिरा ॥ निज निंदा सें मरण अखदाइ ॥ युं तुम मानो गे सुरराइ ॥९४॥ हे अरजुन मरि हो तुम जब ही ॥
स्वर्ग लोक पेहो तुम तब ऊं ॥ जो रण महि जितो गें धीरा ॥ भुक्तो गे महि राज प्रविरा ॥९५॥ दोहा ॥ ते हि कारन तू
म कुंति सुत ॥ ऋड हित गदे हो ऊं ॥ अब युद्ध कं आरंभ जो ॥ अति सुखदायक सोऊं ॥९६॥ चौपाइ ॥ हे अरजु
न सुख दुख सम जानो ॥ लाभ अलाभ सम मान प्रमानो ॥ युद्ध करऊं मोर उपदेशा ॥ तब तो पाप न लागी है लेशा
॥९७॥ एहि विधि निवातम को ज्ञाना ॥ कह्यो जथारथ तोय सुजाना ॥ जा वजोग क तमोक्षसहाई ॥ कर्म जोग अब रंतु
सुखदाइ ॥९८॥ अरजुन सांख्य बुद्धि कही तोई ॥ सांख्य विषे वरनत निसजोई ॥ सांख्य सें ज्ञान न जोग्य है जेऊं
जिव को रूप जथारथ नेऊं ॥९९॥ सो तो यस व विधि कह्यो उदारा ॥ कर्म जोग अब कहि कुं उचारा ॥ जिव कें ज्ञान
ऋऋ श्रुति सारा ॥ मोक्ष को साधन सुखद अपारा ॥१००॥ दोहा ॥ कर्म विषे जो बुद्धि है ॥ सो तोय कऊं सुजांन ॥
करम जोग सें सब हि विधि ॥ पावत पद निरवांन ॥१०१॥ सोरठा ॥ कर्म जोग सुखरूप ॥ तुम अरजुन ने हि ऋक्षइर

होइहै स्वर्गादिक अनुरूप ॥ कर्मबंध भव दुखरूप ॥१६२॥ चौपाई ॥ कै कुं कर्मजोग फल भजोई ॥ ताको महातम कहुं अब
वतोइ ॥ कर्मजोग महि कारज कोई ॥ आरंभ अतिनत परहोई ॥१६३॥ नांहि समाप्त ति होवत जो कुं ॥ साधनानि
ष्फल हो तनसो कुं ॥ कारज प्रारंभ नास ही जेहा ॥ नहीं प्रत्यवाय को हेतू तेहा ॥१६४॥ कर्मजोग रूपी धर्म जे कुं ॥
ताको अल्प अंश हेते कुं ॥ दारुण भय भव त्रास निवारे ॥ और न या ही विधि महा दुखटारे ॥१६५॥ लौकिक वैदि
कसाधन जेही ॥ संपुरन भये फल प्रद तेही ॥ ते हि विन प्रत्यवाय के हेतु ॥ ताते कर्मजोग फल भसेतु ॥१६६॥ दोहा ॥
काम्यकर्म मरी बुद्धी सो ॥ तुछ कही भगवान ॥ कर्मजोग मय बुद्धी कुं ॥ प्रभु अब करत बखान ॥१६७॥ चौपाई ॥
यातनगति वमुमुक्षु जेहा ॥ करने जोग्य कर्म करे तेहा ॥ मोक्ष के हेत साधन करे जबही ॥ अचल बुद्धी यह जांन ऊं
त वही ॥१६८॥ अरजुन अचल बुद्धि सो एका ॥ सो बुद्धि मही रहे परम विवेका ॥ निश्चे रहीत कि हूं ही जोई ॥
रहत अनंत शाखा जन सोइ ॥१६९॥ स्वरग पुत्र पशु आदिक अनंता ॥ साधन के फल चाहत जंता ॥ ताते अनंत बु
द्धि सो जानो ॥ नहीं नही चाहन कछुवे कोनो ॥१७०॥ कंनुं अरजुन यह पुष्पीत वांनि ॥ ताहि कहत अति शोभ
ज्ञानि ॥ वेद में स्वरगादिक फल वादा ॥ सो कंनि चहत स्वर्ग फल स्वादा ॥१७१॥ दोहा ॥ पुष्पमात्र फल जाहीमें ॥१३॥

औरन ही कछुं सार ॥ नांही स्वर्ग प्रद भोग वर ॥ फल प्रद कहत गमार ॥१७२॥ सोरठा ॥ कहत यज्ञ इमि वान
स्वरग सें नहि कछुं अधिक फल ॥ गही मोक्ष साक्षात ॥ फल विन तासंग परम गनिस ॥१७३॥ चौपाई ॥ अज्ञ भो
ग ही तरहत हे दीना ॥ काम में तेही मन अधिक प्रवीना ॥ स्वरग सो परम प्राप्य करी जाने ॥ इन में अधिक कछुं
नही माने ॥१७४॥ अज्ञानि इमि बोलत बाना ॥ जज्ञादिक कि जे साक्षाना ॥ कांम्य कर्म सें स्वर्ग निवासा ॥ स्वरग भोग
फलपरम प्रकाशा ॥१७५॥ स्वरग सें पतन होत है जबही ॥ शुचि कुल जन्म होत है तबही ॥ फिर शुभ कर्म करे
हित लाई ॥ स्वर्ग वास फिर होत वडाइ ॥१७६॥ एही विधि अनंत की यात्रा मांइ ॥ जन्म कर्म फल प्रद दुखदाई ॥ भो
ग वड़ाई दाता एऊं ॥ ता सिवानि कहत त्राण तेऊं ॥१७७॥ दोहा ॥ भोग अरु ऐश्वर्ज में ॥ अति आशक्ती जेही
पुष्पीतवानि चित हर्यो ॥ तिनकुं नअज्ञान तीतेही ॥१७८॥ सोरठा ॥ कर्मजोग फल भजोय ॥ तासवुद्धित होनिहीवर
त ॥ ताते मुमुक्षु सोय ॥ कांम्यकर्म संगति न जत ॥१७९॥ चौपाई ॥ कांम्य कर्म अति तुछ फलरूपा ॥ जन्म मरण
प्रद अति दुखकुंपा ॥ वेद कोइ पितु मात सें भारी ॥ जिव को हित करके उपकारी ॥१८१॥ जीवन कुं जानत लघ फल चा
वा ॥ सो अज्ञ जोग्य कि मी कहत रचाला ॥ जो वेदोक्त कर्म फल काेग ॥ न ता न कहत किमी देव मोरारी ॥१८२॥ अरजु

॥ ताहि समाधि के विषे निश्चल वुद्धि न होय ॥ काम्य कर्म रत मलिन मन ॥ सो नतिन पावत सोय ॥१७९॥

गी·भा· नयुंकहिहोत्तुमबाता॥तेहीउत्तरबरनुंसाक्षाता॥सत्वरूरजतमऊतनरजेहा॥निजनिजगुणअनुवर्त्तितेहा अ·२
॥१४॥ १२३॥तेहिहीनवेदकरतहेजबही॥तेहिअनुसारीकहतसोनबही॥तातेंत्रिगुणऊनवेदकहाग॥त्रिगुणीपु
रुषइमिराहलगाग॥१२४॥दोहा॥जोतेहिरुचीअनुसारसें॥वेदनकहेतेहीवान॥भ्रमहोयस्क्रमकममें॥कर
हिअधिकउतपात॥१२५॥चौपाई॥तातेंमलिनगुणतिनहेजेऊ॥अरऊनत्यागकरऊंतुमतेऊं॥गुणातीतस्क
खदुखसेंमारग॥शुद्धसत्वमहीरहऊंउदारग॥१२६॥आत्मपामीहितविनदेजेहा॥सबहीपदारथत्यागऊंतेहा
आत्मस्वरूपकंपोमऊंथिरा॥तेहिहीनततपरहोऊंसधिरा॥१२७॥हेअरऊनश्रुतीभापततेहा॥ग्रहनकरन
केजोग्यनतेता॥सुंजलअस्योसबहीथलजोउ॥कुपवापिसरकोजलसोउ॥१२८॥तिनमहीत्मसावेनरजेही॥ज
उनिजअरथजोग्यग्रहेतेही॥सुंहीजवेदअरथविनजोई॥अथवापरममुमुक्षुहोइ॥१२९॥दोहा॥साध
ककुंसबवेदमें॥मोक्षकोसाधनजोय॥औरसबहीकुंसागिके॥ग्रहणजोगपहेसोय॥१३०॥चौपाई॥शुद्धस
त्वऊनसाधकजोई॥ताहिजोकरनजोग्पकऊंतोइ॥तुमशुद्धसाधकपरमउदारा॥कर्महीमेंअधिकारतुमारा॥
१३१॥तुमनकर्मफलकेअधिकारी॥जिनसेंहोतहेबंधनभारी॥कर्मकोमानरूफलकरऊत्यागा॥कर्मसेंमोयभ ॥१४॥

जऊंपरभागा॥१३२॥ऊथादिकमेंनिवर्त्तिजेहा॥अरऊनअकर्मजानऊंतेहा॥अकर्मसंगतोयमनहोऊं॥मो
क्षविरोधिदुखघुरसोउ॥१३३॥स्वंनऊंधनंजयकऊंतोपबाना॥रागसकुरंविथितितस्रताना॥जयरुपराजयमेंस
मजेऊं॥जोगमध्यथिरताहरनेऊं॥१३४॥दोहा॥समहोयसिद्धिअसिद्धीमें॥कर्मकरऊंपरभाग॥समतासो
हतजोगहे॥रखऊंतहांअनुराग॥१३५॥चौपाई॥अरऊनसबहीकर्मफलतजना॥सिद्धीअसिद्धीविषेसम
सजना॥बुद्धिजोगसमतासोईथिरा॥तेहिऊतकर्मऊखदमतीधिरा॥१३६॥तिनसेंअपरकर्महेजेहा॥बुद्धिजो
गबिनतुछहेतेहा॥बुद्धिजोगऊतकर्महेजेऊं॥संश्रितभ्रमणमिरावनतेऊ॥१३७॥बुद्धिजोगवीनकर्महेजोइ
अतिदुखदायकजानऊंसोई॥बुद्धिविषेइछऊंतुमइगरना॥औरसकलउद्यमपरहरना॥१३८॥कर्मकरनफल
इछतजेही॥कृपणसकामकहावततेही॥सोसंश्रितभुक्तनभयमोही॥बुद्धिजोगबिनसांतिनांही॥१३९॥दोहा
बुद्धिऊऊजोपुरुषसो॥ऊऊतउऊनसोउ॥सबविधिसमदिविचारिके॥त्यागकरनहेदोउ॥१४०॥बुद्धिजो
गकेकारने॥प्रवर्त्तिकरऊंतुमतात॥करमविषेअरुऊसलता॥जोगसोईसाक्षात॥१४१॥चौपाई॥ऊऊवि
वेकिपंडितजोइ॥कर्मजनीतफलसागतसोइ॥जन्मबंधनिरमुक्तहेजेऊं॥अचलअमलपदपावनतेऊं॥१४२

अर्जुनजबतबमतिहैजेहा॥सोहरूपीअपतरिहहितेहा॥कंमोरुकंननजोग्पकछुहोई॥नहावैरागपहोइहै
तुवतोई॥१४३॥कहैश्रीकृष्णकंतुपरमरूजाना॥हमकंरूमोवक्रतविधिज्ञाना॥ताहीतेतवमतीरूक्षमजोउ
होइहैजबअतिनिश्चलसोउ॥१४४॥जबसमाधिमहीथिरतापावै॥हृतउतभ्रमणसबहीमीटजावै॥तबतूमपै
हौजोगअघहारी॥सोहआतमदरसनकरवकारी॥१४५॥दोहा॥राहीविधिकह्योश्रीकृष्णजब॥तबपारथबु
धिमांन॥थिरमतिजनकेसबहीगुन॥पुछेउपरमसुजांन॥१४६॥अर्जुनउवाच॥चौपाई॥जोरिपानिपुछ
तभयेबाता॥कंनकुंश्रीकृष्णदेवकरत्राता॥जोसमाधिजनतपुरुषअनुपा॥प्रभुताकोकहोकवनस्वरुपा॥१४७
जोसमाधिमहस्थितहोरहही॥सोनरबचनकवनविधिकहही॥सोनरकंबैठतबकुंनांमी॥केहिविधिचलन
करहुंजगस्वामी॥१४८॥श्रीभगवानुवाच॥कहैश्रीकृष्णकंतुंअर्जुनसोई॥जुंस्थितप्रज्ञरहतथिरहोई॥
आत्मस्वरुपविशेषमोज्ञांनि॥मनकरिरहततोषजनतध्यांनी॥१४९॥आत्मस्वरुपसमारैजेहा॥मनकेविषैवरत
तनिस्नेहा॥तजेहीसोकामसबहीविधीजबही॥तेहीसमाधिजनतकहैमुनितबही॥१५०॥दोहा॥दुखआ
गमनदखेदेनही॥सुखमहीलेशनराग॥गयेहेरागभयक्रोधसो॥थिरमतीमुनिबडभाग॥१५१॥चौपाई॥नाम

रूपहेमाधिकजेहा॥तिनसैंअधिकउदासीतेहा॥कभअरूअशुभपदारथजेकुं॥पगरहेसुखदुखदायक
तेकुं॥१५२॥पायकेतेहितेहिकुंसुनिजोई॥नहिनिंदेनप्रसंसतकोई॥राहीविधिममतिवर्जततेही॥स्थिरमति
जनतकहावततेही॥१५३॥जबतेहिइंद्रिविषैतेंजावे॥तबसोविषयसेंखेंचिकेलावे॥कूर्मकेअंगसुपिछेलाइ॥
आत्मस्वरूपमेंदेतवेशाइ॥१५४॥राहीविधिवरततदेहप्रजंता॥सोस्थितप्रज्ञकहावतसंता॥कहाहैचतुरधाथि
रमतिजोउ॥प्रथमसेउअवरकछुलखसोउ॥१५५॥दोहा॥दुर्लभनिष्टाज्ञानकी॥पावतविरलाकोय॥आत्मनि
ष्टजिमिहोतहें॥कहुंउपायअबसोय॥१५६॥चौपाई॥विषयसेंइंद्रिफेरतजबही॥विषयनिवर्तिपावततब
हि॥तदपीरागविषयनमेंजेकुं॥इंद्रिअचलकियेमिरननतेकुं॥१५७॥विषयमेंथितिमिटतहेसोई॥आत्मस्व
रूपदर्शनजबहोई॥तेहिविनविषयरागनहिजावे॥श्रुतिपुराणसदग्रंथसुगावे॥१५८॥आत्मदर्शविनसकनकुंज्वरा
रा॥विषयमेंप्रीतीरहतअपारा॥विषयमेंरागजक्रनरजेकुं॥अधीकजतनजतनपंडितनेकुं॥१५९॥प्रबलइंद्री
गणग्रहणनपावे॥मनइंद्रिनकुंखेंचिलेजावे॥सबइंद्रिनकोविजयअबजेहा॥आत्मदरसनकेबसगहा॥१६०
दोहा॥इंद्रियजयआधिननित॥आतमदरसनसोइ॥ज्ञांनकिनिष्ठाअतिकठीन॥केहिविधिप्रापतहोइ॥१६१

चौपाई॥ भयोपरमरसोपप्रचंजा॥ अर्जुनतासककरूंअबखंजा॥ विषयरागकृतइंद्रिजेहा॥ अतिदुर्जयवस
जायकेंतेहा॥१६२॥ममस्वरूपउरधारतजबही॥ अधिकजितेंद्रियहोवततबही॥ जासइंद्रियवसहोवतजबऊं॥
आतमदरशनहोवततबऊं॥१६३॥ताहिविधिममस्वरूपउरनांही॥ निजवुद्धइधारिकेमनमांही॥ जोइंद्रियगण
जितनजावे॥ पचिपचिमुढनासकुंपावे॥१६४॥ विषयमेंजाहाथितिनहीतेसा॥ ममस्वरूपमनकोनप्रवेशा॥ सब
इंद्रियवसकिनेंजबऊं॥ पापवासनामिटततबऊं॥१६५॥ दोहा॥ लगिअनादिकालकि॥ पापवासनाजेऊं॥ वि
षयध्यानसोइवासना॥ रासिरतनहीनेऊं॥१६६॥ चौपाई॥ ध्यानकरतविषयनकोजेही॥ प्रबलसंगउरवाढ
ततेही॥ संगसेंप्रबलकामजबहोइ॥ विषयग्रहणविनरहतनसोइ॥१६७॥ जबकोइकाममेंविघनलगावे॥
कामसेंप्रबलक्रोधहोइआवे॥ क्रोधप्रवेशकरनउरजबही॥ जोगअजोग्यनकछुततबही॥१६८॥ क्रोधमेंहो
वनमोहअपारा॥ कृत्यअकृत्यनरहतसंभारा॥ मोहसेंसमृतिभ्रंशहोयजावे॥ मोक्षकेसाधनसबहीगमावे॥
१६९॥ समृतिनासभयेंवुद्धिनरहही॥ ज्ञानकोनासताहीबुधकहही॥ वुद्धिनासभयेतेंपुनिवानि॥ भवसागरमें
गिरतअभिमानि॥१७०॥ दोहा॥ जोमोमेंमनधारही॥ तासजरहिसबपाप॥ सर्वेभ्यरमेंउरवसैं॥ मिटेंसबसंताप ॥१६॥

१७१॥ चौपाई॥ रागद्वेषविनइंद्रियजेहा॥ नितजाकेवशवर्त्ततेहा॥ सोइंद्रिनकरिजोग्यहेजेउं॥ विषयभोग(
भुक्तनहेसोउ॥१७२॥ सबविषयनकुंत्यागनिजोई॥ ममसुरतिमेंधरतमनसोई॥ ताकोमनअतिनिरमलहोई
मोविनविग्रलागतनहीकोइ॥१७३॥ जाकोमननिरमलभयोजबही॥ सबदुखहानिहोतहेतबही॥ आतमदर
शनसेंगयेसोषा॥ तबहीहोतसबविधिसंतोषा॥१७४॥ निजआतममेंअचलमतिजेऊं॥ ममसुरतिमेंरहतनह
रतेऊं॥ यातेंमननिरमलभयोजाही॥ सबदुखहानिहोतहेताही॥१७५॥ दोहा॥ ममसुरतिमेंमननहीं॥ इंद्रीय
जयपरजेऊं॥ निजआतमकेदरशकृत॥ वुद्धिनहोवततेऊं॥१७६॥ चौपाई॥ तातेंइंद्रिजयसाधनजेहा॥ मोसें
विमुखकुंघटननतेहा॥ निजआतमकुंनपावतजोलुं॥ विषयग्रहणांतिनहीतोलुं॥१७७॥ विषयमेंचपलअ
सांतअपारा॥ कहांसेंअचलसुखपावेगमारा॥ तहीविधिइंद्रिजयपरजेता॥ अतिसंतापकुंभुक्तहीनेता॥
१७८॥ अरजुनसबहीइंद्रिगणजबही॥ विषयमेंजायकेवरततनतबही॥ तापिछेतेहिमनजबजावे॥ सोमनबु
द्धिकिवुद्धिहरावे॥१७९॥ आतमनिष्टबुद्धीकुंटारे॥ विषयमेंसजकरिअधिकविगारे॥ ज्युंमहाजलमेंनाव
हेजेऊं॥ कवीनकुवायुहरतहेतेऊं॥१८०॥ दोहा॥ तातेंप्रथमकहीरिमजो॥ तिनकरिसाधकसोय॥ ममसुरती

मेंमनधरे॥ तबहीकृतारथहोय॥ १८१॥ याकेइंद्रियविषयमें॥ ग्रहणहोततत्काल॥ आतमनीएहोथीरम
ति॥ पावतसांतीविशाल॥ १८२॥ चौपाई॥ एहिविधिनियमइंद्रिनरजोई॥ निरमलमनकीसिधिकहुंतोई॥ यु
आतमपरबुद्धिजेहा॥ सबकुंनिशातुल्यहैतेहा॥ १८३॥ आतमनिष्टबुधिमहिज्ञांनी॥ संजमिजागतहैदमती।
धानि॥ अंतरहष्टीरखतमुनीसोई॥ आतमदर्शिरहतथिरहोई॥ १८४॥ पंचविषयकृतदुःखिकहाहि॥ सबजग
मजगरहततिनमांही॥ सोबुद्धिआत्मदरशकृतजोउ॥ मुनिरजनिसमदेखतसोउ॥ १८५॥ जोनिजजलपुरनाक
रूपा॥ नदनदिजलबहुआवेअनुंपा॥ सोजलआयकेकरहीप्रवेशा॥ तिनकरिसिंधुबढतनहीलेशा॥ १८६॥
दोहा॥ सिंधुतुल्यसोसंजमी॥ निजसुखपुरनधिर॥ शब्दादिकआगमगम॥ बढतनघटतगंभीर॥ १८७॥ शुद्धआ
तमअविलोकसें॥ त्रपतरहतअविकार॥ सोनरसांतिपावही॥ नांहिजोकामिगमार॥ १८८॥ चौपाई॥ जोशब्दा
दिकविषैवीहाइ॥ निस्पृहहोयफिरतसुखदाइ॥ देहअनातमकोतजीमाना॥ अतिनिरमांनरहतगुनज्ञांना
१८९॥ निस्पृहममतात्यागतजेहु॥ मननशीलमुनिविचरतएहु॥ आतमदरशनपायकेध्यांनी॥ परमशांतिपा
वतमुनिज्ञांनी॥ १९०॥ आत्मज्ञांनकृतअतिसुखदाइ॥ असंगकर्ममहीस्थितिदर्शाइ॥ ब्रह्मकिष्टासोरूपस्थीती ॥१७॥

एहा॥ भवदुखदूरतनकछुसंदेहा॥ १९१॥ अंतकालमकुंस्थितिएकवारा॥ जोपावतसुहीमानउदारा॥ सोनिर्वाण
ब्रह्मसुखजेउ॥ अनायासपावतबुधतेउ॥ १९२॥ दोहा॥ कारनआतमज्ञांनको॥ कथकृतकर्महेजोय॥ अर्जु
नएहीविधिनांलख्यो॥ शोककृकृभयोसोय॥ १९३॥ देहकुंआतमजांनिकें॥ मोहविवसभयोजेउ॥ एहीविधिअ
तिमुख्यायके॥ हक्योकथसेंतेउ॥ १९४॥ प्रभुतेहिसांतिकारने॥ सांख्यविषेबुद्धिसार॥ कर्मजोगमेंबुद्धिसो॥ ब
रनिपरमउदार॥ १९५॥ सोरठा॥ अतिथिरबुद्धिजोय॥ जोगकिसाधनरूपसोइ॥ वरनिसबविधिसोय॥ मूक्ता
नंदकेनाथप्रभु॥ १९६॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमु
टीका क्तानंदमुनिविरचिताभगवद्गीतायांसांख्ययोगोनामद्वितीयोध्यायः॥ २॥ अर्जुनउवाच॥ चौपाई॥ हेन
कुंजनार्दनप्रभुसुखकारी॥ कर्मसेंज्ञांनकिनिष्टाभारी॥ जोतुममुझुमांनोजगवंदा॥ केशवमोयक्युंडारतफंदा
१॥ ज्ञानकिनिष्टावर्निजोई॥ आतमदर्शनसाधनसोई॥ तबतुमघोरकर्मकथजेउ॥ क्युंमोयकरनकहतहोतेउ
२॥ आतमदरशनसाधनरूपा॥ ज्ञांनकिनिष्टावर्निअनुंपा॥ तिनसेंविरूधकर्महेजेहा॥ प्रभुतुमकरनकहतहो
तेहा॥ ३॥ अतिविरोधतुमवचनसुनाइ॥ मनकुंमोरमतिदेतभ्रमाइ॥ युंमोयभासतजनसुखदाइ॥ तातेदेकुंएक

अचलवताई ॥ ४ ॥ दोहा ॥ जिनकरिकरनेजोगपसो ॥ कर्मकोनिश्चैधार ॥ जेहीकरिपावमोक्षकुं ॥ सोईकरुदेव
मोरार ॥ ५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ चोपाई ॥ कहेश्रीकृष्णसुनुंअनघउदार ॥ कहीहैप्रथममेंकरिविस्तार ॥ द्वि
तियअध्यायमेंवरनितेऊं ॥ तुमनिकिविधिधारिनतेऊं ॥ ६ ॥ प्रथमहीलोकमेंवरनितेहा ॥ उभयभांतिकिनिष्ठा
तेहा ॥ प्रथमहीज्ञांनकिनिष्ठाजांनो ॥ करमकिनिष्ठाद्वितीयप्रमानो ॥ ७ ॥ उभयभांतिनिष्ठाकरवदाई ॥ सोमेंभिन
भिनवर्निकनाई ॥ ज्ञानजोगकरिवर्निजोउं ॥ सांख्यजोगकिस्थितिकहीसोउ ॥ ८ ॥ कर्मजोगकरिवरनीजेही ॥ क
र्मजोगकिस्थितिकहीतेही ॥ इनमेंनहीविरुधलवलेषा ॥ नहीव्यामिश्रनकछुअंदेषा ॥ ९ ॥ दोहा ॥ कहेंअग्र
स्रमेंकर्मजो ॥ तेहिस्रागतजनकोय ॥ करमरहीतकभज्ञांनकुं ॥ कबहुंनपावतसोय ॥ १० ॥ प्रथमआरंभेकर्मको
सागकरतनरजेऊ ॥ आतमनिष्ठासिद्धिकुं ॥ नहीपावतनरतेऊ ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ तातेंहोयनिष्काम ॥ निजवर्णाश्र
मजोगपसोई ॥ जानिसदासुखधाम ॥ करमसोकरनेजोगपनित ॥ १२ ॥ चोपाई ॥ हेअरजुनयालोकमेंजोई ॥ क्षा
नसहीतवरततनरसोई ॥ काहुसमेक्षणमात्रऊंसोऊं ॥ कर्मकरेबिनरहतनकोऊं ॥ १३ ॥ कछुनकरुंसुजानतजेही
एहिविधिनिश्चैवर्त्ततेही ॥ तदपिप्रकृतिकारजगुनजेहा ॥ सबहिपुरुषकुंप्रेरततेहा ॥ १४ ॥ जेसीपुर्ववासना ॥१८॥

जाही ॥ तेहिकर्मनिमहीजोरतताही ॥ तातेंकर्मजोगकरिधिरा ॥ पुर्ववासनाटारिगंभिरा ॥ १५ ॥ सत्वादिकगु
णकुंवस्पकरही ॥ उरसेंसकल्पदोषपरहरही ॥ ज्ञांनजोगकोतेहीअधिकारा ॥ एहीअनुक्रमसेंलहतभवपा
रा ॥ १६ ॥ दोहा ॥ जोनहीटारतपुर्वकि ॥ विषैवासनाकाल ॥ व्यर्थसोसाधनविकलके ॥ सबविधिरहतबेहाल
१७ ॥ चोपाई ॥ हेअरजुनएसेनरजोई ॥ बाह्यइंद्रीगणजितनसोई ॥ मनमहीपंचविषेस्मरवजेहा ॥ प्रेमसहि
तसंभारततेहा ॥ १८ ॥ अतिसेमुढमलीनमनजोई ॥ मिथ्याचारकहावतसोई ॥ आतमज्ञांनमेंतनपरएऊं ॥ त
दपिनासपावतनरतेऊं ॥ १९ ॥ प्रथमअभ्यासकियोहेजाको ॥ सोइविषेसमरूपहेताको ॥ एसेशास्त्रकथीतक
र्मजेही ॥ तिनमेंलगायइंद्रिगणतेहि ॥ २० ॥ आतमअचलीकनरतजोउ ॥ तेहिमनकरितत्पररतसोउ ॥ इंद्रि
नकोगणनिममेंल्यावे ॥ कर्मजोगमहिताहिलगावे ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अरजुनसुनिष्कामहो ॥ करमकरनहेंजे
य ॥ ज्ञाननिष्ठऊंसेंअधिक ॥ कर्मनिष्ठहेसोय ॥ २२ ॥ चोपाई ॥ सदास्वभावमेंव्यापकजेऊं ॥ तातेंकर्मकरोतुमतेऊं
करमहेज्ञांनसेंश्रेष्ठअपारा ॥ ज्ञानकुंअधिककहावनहारा ॥ २३ ॥ ज्ञांननिष्ठअरजुनतुमजेहा ॥ ज्ञानकुंपुष्टकर
नहितितेहा ॥ एसोतनननिरवाहहेजोई ॥ सोअकर्मकुंसिद्धनहोई ॥ २४ ॥ अरजुनतुमयुंकहोगेवाता ॥ कर्ममेंधन

चेयेमाक्षाता॥ धनसंचेवारनअहंकारा॥ तिनकरिहोइहेकर्मअपारा॥२५॥ अरकजनयाकोउअरजोई॥ सुवही
भांतिममफाउंतोइ॥ जज्ञअर्थकर्मनिसेंन्यारा॥ अपनेकाजकरेकर्मपसारा॥२६॥ दोहा॥ कर्मकेबंधनमेंपरे
तेहीकारनमबलोक॥ तुमकुंतीफनजज्ञहित॥ करमकरउंतजीशोक॥२७॥ सोरठा॥ निजतनकारनकर्म॥
तिनसेंअधिकअकामहोय॥ जांनिअलोकिकमर्म॥ जज्ञकाजकरोकर्मनित॥२८॥ चोपाई॥ तातेंजज्ञश्रीपरअ
नजोई॥ तेहिकरतेतनधारतसोई॥ जज्ञशेषअन्नबिनतनधरही॥ तेहिअघखातअधोगतीपरही॥२९॥
पुष्पमहीपुरसीसमेंअघहारी॥ जज्ञसहीतप्रजापुजामोरारि॥ नारायणतेहीकहीफभवानी॥ फंनजुंप्रजाकुं
अतिफखदानी॥३०॥ तुमनिजवृद्धिजज्ञकरिकरउं॥ औरसकलउद्यमपरहरउं॥ जज्ञमोक्षपदफलपदजे
उं॥ कामधेनुसमफलप्रदतेउं॥३१॥ जज्ञसेंममप्रागरफरजेहा॥ फलप्रदजोनिजजउंतुमतेहा॥ जज्ञसेंजजे
महात्मकदेवा॥ तुमकुंदेतअनादिकमेवा॥३२॥ दोहा॥ फुरतपरम्परसेवयुं॥ होवनवृद्धिअपार॥ एहीविधि
पेहोपरमपद॥ एहिकल्याणतुमार॥३३॥ चोपाई॥ जज्ञसेंआराधेफरजेउं॥ ममसरिररूपीसबतेउं॥ तुमकुं
इष्टभोगदेजेहा॥ मनवांछितदेवहिफरतेहा॥३४॥ जोफरदिनेभोगअपारा॥ निजआराधनकरनउदारा॥ ॥१९॥

सोफरगणतजीभोगजोखावे॥ सोनरनिश्चेचोरकहावे॥३५॥ जज्ञसेंजोप्रभुपुजासाधे॥ तेहिविधिइंद्रादिक
निआराधे॥ जज्ञशेषअन्नखावतसोई॥ सबहिपापसेंछुटनसोइ॥३६॥ निजहितरांधितिमतदेजेउं॥ पुरन
पापजिमतहेतेउं॥ सोईनरपुरनपापिकहावे॥ पापसेंपतीतनरकमहीजावे॥३७॥ दोहा॥ अन्नसेंजंतुसब
होतहे॥ अन्नपर्जन्यसेंहोय॥ जज्ञसेंवृष्टीहोतहे॥ करमसेंजज्ञहेसोय॥३८॥ चोपाई॥ ब्रह्मराव्दकरावरन्यो
जोई॥ मुलप्रकृतिकारनतनसोइ॥ तातेंतनब्रह्मसमफहावे॥ तनवकुविधिकर्मनिउपजावे॥३९॥ ब्रह्मरुपत
नवरमोजेहा॥ अक्षररूपजीवप्रमतेहा॥ तनमहीजीवरहतफरिवासा॥ तनसेंहोतसबकर्मप्रकाशा॥४०॥
तातेंसबअधिकारकेमांही॥ ब्रह्मरुपतनसेंअमनांही॥ तातेजज्ञकोकारनदेहा॥ तामहीरंचनहींसंदेहा॥
४१॥ एहीविधिश्रीनारायणस्वामी॥ चक्रसुंप्रवृत्तिकिनीवकुंनांमी॥ अन्नसेंजिवसहीततनहोई॥ वृष्टीसें
अपजतअन्नसोई॥४२॥ छंदः॥ जिमिवृष्टीसेंअनहोततनेहिविधिजज्ञसेंवरसातहे॥ सुपुरुषकेसुभक
र्मसेंसवजज्ञकोसाक्षातहे॥ सबकर्महोतहेजिवजज्ञतनसेंअनेकप्रकारजू॥ फिरदेहअन्नसेंहोतगही
विधिचक्रममनिरधारजुं॥४३॥ दोहा॥ कारजकारणभावसें॥ चक्रसुंवरततजेउं॥ जोतिनमेंवरततनही

पापरूपनरतेऊं॥४४॥ ज्ञांनजोगिकर्मजोगिजो॥ साधनकालमेंहोय॥ तहचकपृतिनारहे॥ अघमयआशुभसो
य॥४५॥ सोरठा॥ अधिकइंद्रियाराम॥ आत्मारामनहोयसकल॥ लहतनसुखविश्राम॥ पारथजीवनअ
रथसोई॥४६॥ चौपाई॥ जेहिआत्ममहीप्रेमअपारा॥ आत्मास्वरूपसेंतृपतउदारा॥ आंनादिकफरितृप
तनहोई॥ आत्मतृप्तमहामुनिवरसोई॥४७॥ तुंहिसंतोषआत्मसुखमांही॥ गिनतसांदिकमेंसुखनांही
ताहिविधीआतमरतनरजेहा॥ आत्मदरसनहितहसनतेही॥४८॥ नाहितेआत्मदरसहितजाकुं॥ साधन
कौनप्रयोजनताकुं॥ जेहिसाधनविनकियेप्रचंडा॥ आतमदरसनरहतअखंडा॥४९॥ ताकुंसबहीप्रानी
संगलेशा॥ स्वार्थसिद्धहितनहीउपदेशा॥ काउंकोआश्रेकरकेजोउ॥ अरथकुंसाधनजोग्यनसोउ॥५०॥
दोहा॥ जेहिसाधनबिनआतमा॥ भासतसुखप्रदवेश॥ ताकिसाधनकेविषे॥ प्रवृतिनांहीलवलेश॥५१॥ चौ
पाई॥ जाकिप्रवृतिसाधनमहीहोई॥ आतमदरसनइछतजोई॥ कर्मजोगतेहिश्रेष्टकहावे॥ जाकुंकरतपरम
सुखपावे॥५२॥ हेअरजनतुमहोपूर्णकामा॥ फलइछाजांनकुंदुखधामा॥ करनेजोग्यकरमसुखदाई॥ शा
स्त्रप्रमांनकरऊंहितलाई॥५३॥ करनेजोग्यकरमहेजेहा॥ होयनिष्कामकरतनरतेहा॥ सबसेंपरआतमहेजेऊं

ताहिकोदरसनपावतएऊं॥५४॥ ज्ञांनजोगकतजोबुधिवंता॥ इछतआतमदरसप्रजंता॥ कर्मजोगतेहिश्रेष्टअ
पारा॥ जनकादिकजेहिकरतउदारा॥५५॥ दोहा॥ जनकादिकनृपज्ञानिमे॥ श्रेष्टकहावतजोय॥ कर्मजोग
सेंआतमा॥ पायसिद्धिभयेसोय॥५६॥ तातेतुमअतिश्रेष्टहो॥ लोकनकोहेतजांन॥ अधर्मतजिनिजधर्मकुं
ग्रहणमेतुमहिप्रमांन॥५७॥ सोरठा॥ लोकनकोहितधारी॥ जनकादिकआचरणउवि॥ मनमेंअधिकवि
चारी॥ कर्मकुंकरनेजोग्यतुम॥५८॥ चौपाई॥ अरजनश्रेष्टपुरुषजगजेऊं॥ सबहीशास्त्रवेताहेतेऊं॥ शास्त्रप्रमां
णसेंवर्ततजेहा॥ करतप्रसिद्धकर्मसुभतेहा॥५९॥ तेहिकर्मनकुंइतरनरजोई॥ प्राकृतकरतप्रेमजुतसोई॥
श्रेष्टप्रमांणकरतकर्मतेता॥ अवरलोकसमजांनतनेता॥६०॥ तातेजोजगश्रेष्टकहाही॥ लोककोरक्षाधरी
मनमांहि॥ वरणाश्रमकेजोग्यकर्मजोउ॥ सबहिकालमहिकरनेसोउ॥६१॥ जोशुभकर्मश्रेष्टनहिकरही॥
तेहिमगइतरलोकअनुसरही॥ धर्मसेभ्रष्टहोतजनजबहि॥ श्रेष्टकुंपापलगतसोतबही॥६२॥ दोहा॥ हेपा
रथसबविश्वको॥ इश्वरपुरनकांम॥ सत्यसंकल्पसर्वज्ञमें॥ परमानंदसुखधांम॥६३॥ चौपाई॥ तेहिकारन
त्रिभूवनकेमांहि॥ करनेजोग्यमोयकछुनांही॥ याजगमेनमिल्योफलजोई॥ कर्मसेंमिलनेजोग्यनमोइ॥६४॥

लोकनकिरक्षाके काजा॥ तदपि कर्म हित सब ही समाजा॥ कर्म विषे वर्तुं तजी मांनो॥ जेहि विधि सब कों होत क
ल्यांनो॥ ६५॥ हे अरजुन मैं स्थिर चर राजा॥ सब के परम मोक्ष के काजा॥ श्री वसुदेव के घर रूप धराई॥ निज इच्छा
में अवतरयो जाई॥ ६६॥ जउ कुल उचित कर्म हे जेऊं॥ सावधान होय नां करुं तेऊं॥ तो मम राह धर्म हर जांनि॥ म
म अनुवर्ति होहि सब प्रानी॥ ६७॥ दोहा॥ सो निज निज सुख करन ही त॥ कर्म करे नही कोई॥ आतम दरश
न पामो विन॥ परतन रूक महि सोइ॥ ६८॥ चौपाई॥ निज कुल जोग्य करम हे जे हा॥ ईश्वर ता लखी करुं न तेहा॥
तुं में करुं धर्म सु जाने॥ सो पुनि उद्यम ते हि विधि ठाने॥ ६९॥ अपने करन जोग्य कर्म जोउ॥ सकल त्याग हो तब सो
उ॥ ताते नास होहि हि सब ही॥ वर्णसंकर को हेतु मैं तब ही॥ ७०॥ प्रजा धर्म विन तें हो छिन होई॥ सब हो को
ते हीं हीन नास हे सोइ॥ मैं तब तिन को मारन हारा॥ ताहि विधि इम हृदय किन विचारा॥ ७१॥ ताते करम जथा विधि
जेही॥ ईश्वर तदपि करुं मैं तेही॥ तुं अरजुन तुम परम उदारा॥ पांडु तनय जो न तज गमारा॥ ७२॥ दोहा॥ अम
तुज सुधी हीरन पतिके॥ निज कुल उचित हे जेऊं॥ कर्म करो तुम प्रेम जुत॥ त्याग न जोग्य न तेऊं॥ ७३॥ चौपा
ई॥ हे अर्जुन अज्ञांनि जेही॥ करम मैं प्रेम सहीत हे तेही॥ आतम प्राप्ति हित तत्पर होई॥ करत हे कर्म जोग कुं ॥२१॥

सोई॥ ७४॥ तेहि विधि ज्ञांनि लोक ही न जांनी॥ करम जोग करे सु मि विज्ञांनी॥ निज आचरन देखाय के राही॥
लोक कुं धर्म इहां चलते ही॥ ७५॥ या जग में अविवेकि जेता॥ कर्म वासना जुत हे तेता॥ करम ही में इह संग
ति जाकुं॥ कर्म जोग अधिकार हे ताकुं॥ ७६॥ ताते मुमुक्षु किमती जेहा॥ भेद ज्ञान करहीं मुनि तेहा॥ आप
हि आतम दरशि तेऊं॥ कर्म जोग करा साधत तेऊं॥ ७७॥ दोहा॥ कर्म जोग किये होत हे॥ निज आतम को ज्ञा
न॥ सुं देखाय मुनि कर्म कुं॥ करत हे यज्ञ समान॥ ७८॥ सुं अज्ञांनि जीव कुं॥ मुनी वर परम उदार॥ प्रीति विघ रा
वृत करम में॥ करत अधी कुं उपगार॥ ७९॥ चौपाई॥ कर्म जोग आरंभत जोउ॥ अहंकृत जु करत सो दोउ॥
तिन महा भेद अपार देखाई॥ करम कि रिति निह इम दरशाई॥ ८०॥ हे अर्जुन प्रकृती गुन जेऊं॥ सत्व रु रज त
मस बविधि तेऊं॥ गुन करो कर्म होत हे जेता॥ अहं आप किये मानत तेता॥ ८१॥ रूप कुं महाभुज अर्जु
न वाता॥ सत्व रु रज तम गुन सा क्षाता॥ गुण अरु कर्म विभाग हे दोई॥ ज्ञांनि तथारथ जानत सोइ॥ ८२॥ सो
सत्वादिक गुण हे जेहा॥ निज निज कर्म में वरतत तेहा॥ तिकुं गुण करम करावत जेही॥ मुनि वर आपन मांन
तते ही॥ ८३॥ दोहा॥ अविवेकि साधन करे॥ आतम दरशन काज॥ मलिन वासना उर विषे॥ वरतन लिये

समात्र ॥८४॥ चौपाई ॥ तातें प्रकृति के गुन जेऊं ॥ सत्वादिक करि कै नर तेऊं ॥ आत्मदरस नामही मुद यों रहही
गुण के कर्म सब निज सिर धरही ॥८५॥ गुन हि कै संग लग्यो इह जोइ ॥ आतम स्वरूप में लगत न सोई ॥ ताही तें
तुछमति कहावत तेही ॥ मंद अलप मति अज्ञ है तेही ॥८६॥ श्रेष्ठ पुरुष के आचरण जेही ॥ ते हि अनुसारी
चरत तेहा ॥ आप कै पीछे चलत ते हि जांनी ॥ ताहि को हित करन मुनि ज्ञांनी ॥८७॥ अज्ञ सु कर्म में उरगत न
लेहा ॥ ते हि विधि तासी करत उपदेसा ॥ ताहि विधि अज्ञ पुरुष हित जांनि ॥ करत है कर्म जोग मुनी ज्ञांनी ॥८८
छंद ॥ मुनि ज्ञांनि निगुण तिन सब विधि कर्म करता जानही ॥ अति अकरता निज आतमा लखि कर्म उद
म ठांनही ॥ अविवेकी गुण करता न जानत आप करता होवही ॥ इही भांति ज्ञांनि अज्ञानि समुरख लिस जन म
धि गोवही ॥८९॥ दोहा ॥ अज्ञ तज्ञ कि कर्म में ॥ करन कि रिति जे ऊं ॥ अरजन कूं अब सबही विधि ॥ कहत श्री
हरि तिन तेऊं ॥९०॥ चौपाई ॥ हे अरजुन तूं सुपरम सुजाना ॥ उर में राखि ह्रद आतम ज्ञांना ॥ सो यह सबही मम प्र
गट प्रमांनि ॥ सर्वेश्वर सब करता पद जांनी ॥९१॥ सो मम ही सबही कर्म करिस्यागा ॥ आसा त्रसना विन वहु भागा ॥
उर में तापन तज्ज सब विरा ॥ ताहि विधि जुध करो रणधीरा ॥९२॥ मैं सर्वेश्वर सबही पर जोइ ॥ सबही निर्यंता ज ॥२२॥

नऊं सोई ॥ सबहिन को पति मोकूं जांनि ॥ सो मम हि कर्म सागि स्करत दांनी ॥९३॥ यूं मो यथ भजतही सो मम मत ज्ञांनी
सोइ मनुष्य मम मत दे रानो ॥ इही मम मत मैं रहत न जेहा ॥ तदपि श्रद्धा जु कर हैं ते हा ॥९४॥ सोरठा ॥ श्रद्धावंत
ऊंना इहे ॥ तदपि मम मत जोय ॥ तिन मैं दोष न व्यापही ॥ श्रेष्ठ कहावत सोय ॥९५॥ इति तु विधि पुरुष के ॥ बं
धु हे तें अपजेही ॥ कर्म अनादि काल के ॥ तिनहि सें छुटत न तेही ॥९६॥ चौपाई ॥ प्रभु कूं ग मत ए सो मत जेऊं
तो न मुही ध्रम सें रहत न तेऊं ॥ श्रद्धा ऊं न करत तिन मांही ॥ करें न अस्या दोष देखाही ॥९७॥ ऐसें अस्करन की
गति जोई ॥ कहत श्री कृष्ण सबही विधि सोइ ॥ हे अरजुन मम मत हैं जेऊं ॥ करत असूया निंदत तेऊं ॥९८॥ अ
ज्ञान लेहं सो रमत मांही ॥ जो मम मत महि रहत उनां ही ॥ अरजुन सो सब ज्ञांन में प्रानी ॥ अधिक मुद अति ही
अज्ञांनी ॥९९॥ करनें जोग्य जथा रथ जोऊ ॥ जोग्य अजोग्य न जानन सोउ ॥ मृतक तुल्य जग जानन ऊं ए हा ॥ तिन
महा लेस न ही संदेहा ॥१००॥ दोहा ॥ कर्म जोग के जोग्य जो ॥ ज्ञांन जोग के जोग्य ॥ करम जोग शुभ अभय कूं ॥
देवन सक रख आरोग्य ॥१०१॥ चौपाई ॥ कर्म जोग सब सें चनि आवे ॥ विघन रहीत सब करन साधे ॥ आतम ज्ञांन
सो कर्म आधिना ॥ कर्म सबंधु र मर्म अतिछिना ॥१०२॥ ज्ञांन जोग महि विघन अपारा ॥ तन निरवाह कूं न ही आ

धारा॥ जामें तन निरधार है सोई॥ ताते कर्मजोग सुभ सोई॥ १०३॥ अति पवित्र ताहि नर श्रेष्ठ हैं जेते कुं॥ कर्मजोग के जो
ग के जोग्य हैं तेकुं॥ यों सकं त्रीय अध्याय हे जेहा॥ ज्ञान कुं दृढ़ा करे हे ही नेहा॥ १०४॥ हे अरजुन आतम को रूपा॥
शुद्ध निरलेप हे परम अनूपा॥ सो आतम रूपा रहे जव ही॥ पुरव वासना मिटे तन तव ही॥ १०५॥ दोहा॥ शुद्ध नि
विवसस ववभोगमें॥ दोर लग अधिक अपार॥ आत्म स्वरूप न रहि सकत॥ एहि निश्चे निरधार॥ १०६॥ पुर्व वासना
वश्य परे॥ प्राणि मात्र हे जोय॥ शास्त्र कि यो निग्रह हते हय॥ कहा करे हे प्रबल सोय॥ १०७॥ चौपाई॥ पुरव वासना व
श्य हप्राणी॥ जेहि विधि किरत कहत सो वानि॥ श्रोत्रादिक ज्ञानेंद्री पजेहा॥ शब्दादिकते ही विषय हे तेहा॥ १०८
वागादिक करमेंद्री पजेकु॥ वचनादी कृते हि विषय हे तेकु॥ पुर्व वासना वश्य प्रबल देषाना॥ विषयन में प्री तिरहत वि
धि नाना॥ १०९॥ विषयन को भोग करत को तज वही॥ ता पर द्वेष वढत हे तब ही॥ ताते राग द्वेष रिपु भारी॥ ज्ञान नि
ष्ठ कुं अति दुखकारी॥ ११०॥ कर्म इंद्रि वश्य करके कोई॥ आतम ज्ञान कुं साधत जोई॥ सो जोगि हि राग रिपु दुख दाई
राग रु द्वेष वसत उरमांइ॥ १११॥ दोहा॥ निज वश्य करत हे जोगि कुं॥ राग द्वेष बलवान॥ अपने काजमें जो रिके
टारत मुनि को ध्यान॥ ११२॥ याकारन अति दुष्ट लखि॥ ताके वश्य न ही होय॥ शत्रु जानि सुं निस वही विधि॥ सावधा

नरहे सोय॥ ११३॥ चौपाई॥ ताते वासना अरजुन जेहा॥ फल वांछें हीन ते हि फल दुष गेहा॥ कर्मजोग सोई स्व
धर्म रूपा॥ गुण सें रहित कुं परम अनूपा॥ ११४॥ मान रहित होइ साधन सोई॥ ताते परम फल दायक होई॥
ज्ञान जोग पर धर्म हे जेकुं॥ कछुक काल आरंभो तेकुं॥ ११५॥ तदपी मांन वदत उर मां ही॥ ताते ज्ञान जोग सुभ नां
हि॥ करम जोग महा रहे नर जेहा॥ एक जन्म फल लहो न तेही॥ ११६॥ तन कुं तजे ते हि अति निरमान दा॥ लगत
न को उ विघन को फंदा॥ ज्ञान जोग परधरम हे जो उं॥ मान वढावत भय प्रद सोउ॥ ११७॥ अरजुन उवाच॥ दोहा॥
कंन कुं श्री हर कृपानिधी॥ सो मन संसे रहकु॥ ज्ञान जोग हीन जतन महि॥ विघन हेतु कहो ते कु॥ ११८॥ आप
न इछत न विषय कुं॥ तदपि प्रेरत जोय॥ विषय भोग अति पाप मय॥ जो नि कंधु भुलत सोय॥ ११९॥ बल सें जो र
तरा हि विधि॥ परत विषय के फंद॥ याको प्रेरक कुं न हे॥ कहो प्रभु आनंद कंद॥ १२०॥ श्री भगवानुवाच॥ चौ
पाई॥ कहे श्री हरि सम कुं अरजुन वाता॥ याको प्रेरक कु साक्षाता॥ ज्ञान जोग आरंभत जेहा॥ तदपी सवा
सी कृ जोगी ते हा॥ १२१॥ तिन कुं रजो गुण को अति भारी॥ काम शत्रु अति ही दुखकारी॥ पंच विषय शब्दादिक जो
ई॥ तिन के आसन से पतन होइ॥ १२२॥ पुरव वासना सें भयो राकुं॥ ज्ञान जोगि कुं पिरत तेकु॥ बल सें विष

पनमेंतेहिजोई ॥ विषयविकारकोराहनछोई ॥ १२३ ॥ अपनोधाखोहोननपावे ॥ तवहीसोकामक्रोधहोय
जावे ॥ कामसोक्रोधरूपभयोजवही ॥ महापापरतहोवततवही ॥ १२४ ॥ दोहा ॥ ज्ञानजोगिकुंक्रोधसो ॥ हिंसा
दिकअपराधजोय ॥ नहिकरनेकोक्रोधसो ॥ मनवसीकरणवनसोय ॥ १२५ ॥ सोरठा ॥ इहिविधिरजसकृतकाम ॥ तू
मजानोतेहिपरमरिपू ॥ अतिवडपापकोधाम ॥ मदनमहादुखमूलनित ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ धूमसेंअनलजु
आछिनहोई ॥ मुकरकुंमलदृढआवर्णसोई ॥ गरभकुंजरजकोआवर्णजैसा ॥ ज्ञानकोआवर्णकामहेतैसा
१२७ ॥ जेहिविधिज्ञानकुंआवृतरहा ॥ अरजुनतोयकहुंअवतेहा ॥ आत्मसमंधिज्ञानहेजोई ॥ ज्ञानजोगि
कुंसुखप्रदसोई ॥ १२८ ॥ तृसनहोतअनलसमभारी ॥ मुनिकुंकामरिपुअतिदुखकारी ॥ विषयमेंमुनिकुंमो
हवदाई ॥ ज्ञानकुंराखिरहोदुखदाई ॥ १२९ ॥ दृश्यइंद्रियमनवुद्धिजेऊ ॥ कामकेसदनकहावततेऊ ॥ इनकरि
कामकियोनरिपुजेऊ ॥ वसनमवासकीकमुनिउरसोऊ ॥ १३० ॥ दोहा ॥ ज्ञानकुंढांकतकामरिपु ॥ मुनिमनमो
हवदाय ॥ आत्मस्वरूपसेंविमुखकर ॥ विषयमेंदेनलगाय ॥ १३१ ॥ चौपाई ॥ इनकुंभरतकुलश्रेष्ठदाग
जिनमहीइंद्रीविषयसंघारा ॥ तोसेंज्ञानजोगमहीजेऊ ॥ वरततनतिनकुंकामरिपुतेऊ ॥ १३२ ॥ विषयमेंप्रिति

ऊककरेतेही ॥ ज्ञानसेंविमुखकरतहेरही ॥ तातेंइंद्रियविषेजिनमांही ॥ सवहिप्रवर्त्तनचिंतानांही ॥ १३३ ॥
इहिविधिकर्मजोगसुखकारी ॥ तामेंइंद्रियगणधरिअविकारि ॥ ग्यानविग्याननासकरजेहा ॥ पापिकाम
रिपुमारहुतेहा ॥ १३४ ॥ ज्ञानविरोधिकहावतजोई ॥ तिनमेंप्रधानइंद्रियगणसोई ॥ इंद्रियविषेमहुंवर्त्तनजवहुं
आत्मज्ञाननहीहोवततवहुं ॥ १३५ ॥ दोहा ॥ इंद्रियनसेंपरमनकह्यो ॥ ज्ञानविरोधीसोय ॥ इंद्रियजितेमन
विना ॥ आत्मज्ञाननहीहोय ॥ १३६ ॥ चौपाई ॥ मनकुंसेपरबुद्धिहिजानो ॥ ज्ञानविरोधिप्रवलप्रमानो ॥ मनमें
विवेकरहुआसनहोई ॥ बुद्धिविषेवरततहेसोई ॥ १३७ ॥ आत्मस्वरूपवोधदृढजाना ॥ तवलगिहोवतवा
हिकजाना ॥ बुद्धिपर्जंतकहावतजेऊ ॥ विषयमेंअतिविरक्तभएतेऊ ॥ १३८ ॥ इच्छामयरजकोकृतजेहा
ईसोकामकहावततेहा ॥ जवलगीउरमहीतासनिवासा ॥ करतइंद्रियगणसवहीप्रकाशा ॥ १३९ ॥ इंद्रियवि
षयमहिअसतोप्रवृताई ॥ आतमज्ञानकुंरोकतजाई ॥ तातेकामकुंमतीप्रदजेहा ॥ वुद्धीकुंसेंपरवरनततेही
१४० ॥ दोहा ॥ बुद्धिसेंअधिकपर ॥ ज्ञानविरोधिकाम ॥ सवहिभांतितेहोशत्रूलखो ॥ दुरकरोदुखधाम ॥
१४१ ॥ कर्मजोगमहीराखिके ॥ मनकुंवुद्धीकरिधिर ॥ कुटिलप्रवलरिपुकामकुं ॥ नासकरहुरणधिर ॥ १४२

सोरठा॥ जो लौं रहत उरकाम॥ तौ लौं ताकौं तिक भक्त नहीं॥ मुक्तानंद को राम॥ तातें काम जितन कहत॥ १४३॥
इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मुक्तानंदमुनिविरचितभ
गवद्गीताह्निकायां कर्मयोगोनामा तृतीयोऽध्याय:॥ ३॥ चौपाई॥ तृतीय अध्याय में बरनें गहा॥ चारु
ऊक मुमुक्षु जे हा॥ ज्ञानजोग महीं ते हित तकारा॥ होवें तनहीं अधिकार विशाला॥ १॥ तातें कर्मजोग
भजें ऊ॥ अरु ताकू एक होय करनातें ऊ॥ ज्ञानजोग अधिकारि जो इ॥ तिनहिं कुं कर्मजोग भजो इ॥ २॥ श्रेष्ठपु
रुष होवत हें जे ऊ॥ अनि विश्रेष अधिकारि ते ही॥ तिनकुं करमजोग करवरूपा॥ एही विधि वरन्यो परम अ
नूपा॥ ३॥ अब चोथे अध्याय में ताता॥ करमजोग वरनुं साक्षाता॥ सब हि लोक ओधारणकाजा॥ मनु आदीक
को वरनुं समाजा॥ ४॥ दोहा॥ मनु आदिक महान नृपतिकुं॥ करमजोग अधिकार॥ करमजोग सो होत हे
ज्ञानजोग आकार॥ ५॥ चौपाई॥ करमजोग को रुप हे एका॥ करमजोग के भेद अनेका॥ करमजोग महीं
ज्ञान प्रधाना॥ सो अब वरनुं परम सुजाना॥ ६॥ सो प्रसंग से प्रभू अवतारा॥ कहीं कुं जथारथ परम उदारा
एही विधि ग्रंथ अनुक्रम जोई॥ प्रथम प्रारथ कुं बरनत सोई॥ ७॥ श्रीभगवानुवाच॥ कहे श्रीकृष्ण कुं तु

अरजुन बाता॥ यह जो जोग बरनों साक्षाता॥ केवल ऊधम ही करन उछाहा॥ अब हि कहत युं नहीं दी
रवाहा॥ ८॥ सबु ही लोक उधारन एहा॥ ऊधर्हीतक अक्षीनजा नऊं ते हा॥ मनवंतर आदिक महीं एऊ
सब क्षत्रिन को विजसम जेऊ॥ ९॥ दोहा॥ एसे आदित कुं कह्यो॥ जोग प्रथम में एऊ॥ करत निज
सुत कुं कह्यो॥ कर्मजोग सुभ तेऊ॥ १०॥ रवि सुत वैवस्वत मनु॥ निज सुत पात्र प्रमानी॥ इक्ष्वाकु नृप कुं
कह्यो॥ कर्मजोग सुखदानी॥ ११॥ चौपाई॥ एही विधि संप्रदाय करि एहा॥ परंपरा प्रापत भयो जेहा॥
एसो जोग अलोकिक जेऊं॥ प्रथम नृपति तिन जान्यो तेऊं॥ १२॥ हे अरजुन बऊ काल से एही॥ ओ लोकी
बुद्धि मंद भै ते ही॥ नष्ट प्राय भयो जोग अनुपा॥ काऊ न जानत ताको रुपा॥ १३॥ सो यह जोग पुरातन जो उ
अहे सु ही जथारथ सो उ॥ तुम हद भक्त सखा मो प्यारा॥ ताते कह्यो यह जोग उदारा॥ १४॥ सो विन अ
न्य जानत नहीं कोइ॥ कहन कुं समरथ और न होइ॥ ताही ते उपनिषद कह्यो जोइ॥ उत्तम रहस्य जोग है सो
इ॥ १५॥ अरजुन उवाच॥ दोहा॥ अब ही ए हि प्रसंग में॥ जो हरि के अवतार॥ ता सज थारथ ज्ञान नहीं
तें॥ पुछत भगत उदार॥ १६॥ चौपाई॥ का ते संख्या करके बऊ नामी॥ जनम तुमारु अब हि भयो स्वामी

मोरजनमसमतवअवतारा॥ चरमगनतममहीतउदारा॥१७॥ विवस्वतकरजन्महेजेहा॥ कालसंख्यानेहीज
न्मकिगहा॥ अवाईआचोकहीकाला॥ तासजन्मभएगएउविशाला॥१८॥ तुमहीकह्योकरजनकुंजोई॥ ग
हिविधिअवहींकहतहोमोई॥ सोमोजथारथकेहीविधिजानुं॥ केहिविधितकोहेनप्रमानुं॥१९॥ समर्थ
पुर्वजन्मकृतजेकुं॥ औरजन्ममहीजानततेकुं॥ गहीविधिकहेलेग्राम्ममनांही॥ कहतहोतुमयहजन्मके
मांही॥२०॥ छंदः॥ गहिजन्मकरीकह्योजोगरविकुंकहतप्रभुतुमवातज्युं॥ यहपुर्वभवकीवातसोमेंस
मझुंकिमीसाक्षातजुं॥ अरजुननजानतहमकुंभगवानयुंनहीवातहे॥ जानतहेपुरनब्रह्मपुरुषोत्तमसो
ईसाक्षातहे॥२१॥ सवज्ञानसोइअज्ञानसमपुछतसोकारनागहजुं॥ सर्वज्ञसमसंकल्पपुरनकामक्युंतच
देहज्युं॥ सरवेश्वरयुंतुमसवकेकारनतवजनमजवहीयजुं॥ किधुंकरमनुष्यसमकर्मकरीकेप्रगटहोनहे
सोयजुं॥२२॥ किधुंइंद्रजालज्युंअधिकमिथ्याससमसोईभासही॥ किधुंसम्हेतचजन्मनत्रकेहीभांती
रूपप्रकाशही॥ सोदेहहोतहेकायकोकेहीहेतुदेहसोधरतहो॥ कहीकोनकालमेंजनमहोतहेकवनकार
अकरतहो॥२३॥ दोहा॥ कोनकेअर्थेजनमसो॥ होतहेसवसुखधाम॥ गहीविधिपुछ्योपार्थजव॥ बोलेउ

कंदरसांम॥२४॥ श्रीभगवानुवाच॥ चोपाई॥ कहेश्रीकृष्णकुंतुअनघउदारा॥ मोरजनमभएअनंतअपा
रा॥ सुंतवजन्मअनंतभएजेकुं॥ तवममजन्मजांनुंमेंतेकुं॥२५॥ अरजुनतुमनहिजानततेहा॥ तातेंतोप्रर
हतसंदेहा॥ गहिश्लोककरिकृष्णमोरारि॥ कहीनिजजन्मसमस्तभारी॥२६॥ द्वितियश्लोककरिप्रभुसुखद
ई॥ निजअवतारकेभेदवताई॥ सुंनिजदेहजथारथरूपा॥ जन्मरहेतहेतेहिकहतअनुपा॥२७॥ अजअव्य
यसर्वेश्वरजोउं॥ इनआदिकनिजसामर्थसोउं॥ तिनकोत्यागलेशनहीकिना॥ निजस्वभावकरितनधरीली
ना॥२८॥ दोहा॥ सुंनिजरूपसमेतमें॥ निजइच्छाकरिजोय॥ प्रगटहोतहुंसुखसदन॥ जांनिलेहुंतुमसो
य॥२९॥ चोपाई॥ अवगहीश्लोकमेंजन्मकोकाला॥ कहतकृपाकरिदिनदयाला॥ कुंतुअरजुनममजन्म
हेजोई॥ कालकोनेमताहीनहीकोई॥३०॥ वरुणआश्रमकेधर्मजेहा॥ श्रुतिस्मृतिपादितसुखप्रदतेहा॥
धर्मग्लानिपावतहेजवही॥ अधर्मउदयहोतहेसवही॥३१॥ तवतवनिजइच्छाउरधारी॥ जन्मग्रहणकरुं
जनसुखकारी॥ जवजवजन्मधरुंजगमांही॥ कुनवेनादिनियमकछुनांही॥३२॥ अवनिजजन्मप्रयोजनजे
हि॥ हमकृपानिधिवरनततेहि॥ अतिकृपाहुजोहादिकत्यागा॥ इनलक्षणमेंजुकवरभागा॥३३॥ छंदः॥

बडभागिमुनिहरधर्मक्रतममदर्शविनदुखपावही॥ क्षणमात्रकालसोमहस्रक्रगसमदर्शविनवहिजाव
हि॥ सोमेंतकोरक्षणदर्शकरिकरूंनेहीहितधारिके॥ भयोक्षिणवेदकोधर्मतेहिथापनकोअर्थविचारि
के॥ ३४॥ दोहा॥ देवमनुष्यआदिकमही॥ जगजगधरूंअवतार॥ सत्ययुगत्रेताआदिको॥ नांहिरखुनिर्धार॥
३५॥ एहिविधिरक्षासंतकि॥ करुउद्धकोनाश॥ धर्मकोस्थापनकरनहित॥ ममतनुंहोतप्रकाश॥ ३६॥ चोपाई॥
एहीविधिकभयगुणगणभंडारा॥ सोगुणकहुकरूंनमिरतहमारा॥ सर्वेश्वरसर्वज्ञउदारा॥ सत्यसंकल्पआदी
नहीपारा॥ ३७॥ सबकल्याणकारिगुणजेऊ॥ ममस्वरूपमहिरहेनितनेऊ॥ ममसंतनकेरक्षणकाजा॥ ज
न्मधरूंसबलियेसमाजा॥ ३८॥ संतकुंगानकरनहितएहा॥ दिव्यकर्मकरूंजगजगजेहा॥ सोममजन्मकर्म
हेजोई॥ अधिकआमायिकज्ञाननतसोई॥ ३९॥ जन्मकर्ममममजेहीतनजांने॥ सोतनसागिकेपरमसयाने॥ हे
अरजनफिरजन्मनपावे॥ मोहीमिलेममधाममेंआवे॥ ४०॥ दोहा॥ गयेहेरागभयक्रोधजेही॥ मोमहाचित
अरवेउ॥ ममआश्रितमुनिधिरउर॥ रहतनपिंडमद्योउ॥ ४१॥ चोपाई॥ जन्मादिकममदिव्यअनंता॥ जानिप
वित्रभएउबहुविवंता॥ भएहेपुनितज्ञाननतपजोउ॥ प्रेमभक्तीममपावतसोउ॥ ४२॥ हेकुंतिसकतसकंतुममवाना॥ ॥२७॥

जोममत्राराणआयेसाक्षाता॥ जेहिविधिमनुष्यभजनमोयएही॥ तेहिविधिसदाभक्तंमेंसेही॥ ४३॥ शरणा
गतउरइच्छाजेहा॥ तेहिविधिदर्शदेऊंकरिनेहा॥ अवइहांबोलकहेकहाहोई॥ ममस्वभावअनुभवचहेजो
ई॥ ४४॥ एसेंसबहीमनुष्यहेजेऊ॥ सबपरनारायणमेंतेऊ॥ सोमेंममस्वभावकहेजेता॥ मनवानिकुंअ
गोचरतेता॥ ४५॥ दोहा॥ युंममसुरतीस्वभावजत॥ भक्तकुंअगमनहोय॥ चक्षुआदिसबइंद्रिके॥ सब
विधिप्रगरहेसोय॥ ४६॥ चोपाई॥ अवप्रसंगप्राप्तभइजेऊ॥ बालसमापतकिनितेऊ॥ करमजोगबर
मोहेजेहा॥ ज्ञानाकारकहनहितनेहा॥ ४७॥ एसोकर्मजोगअधिकारी॥ अतिदुर्लभहमलियेहेविचारी
करमनिकेफलइछनजोइ॥ इंद्रादिकहिआराधतसोइ॥ ४८॥ इंद्रादिककोआतमजोउं॥ मेंसबजज्ञकोभु
क्तासोउं॥ फलइछाविनजजतनमोई॥ करतसकामकर्मउविहोई॥ ४९॥ मनुष्यसबहीयहलोकमेंजेउं॥
अनपशुपुत्रादिकचहेनेऊं॥ इंद्रादिकहीसेवेसोजबही॥ पुत्रादिकसद्यफललहेतबही॥ ५०॥ दोहा॥ ता
तेफलहोतजजनतहे॥ इंद्रादिकस्करजोय॥ अधिकसकामिअल्पमती॥ मोहीनमानतसोय॥ ५१॥ चोपाई॥
अबहरिभजनरूपकर्मजोई॥ तासविरोधिपातकसोई॥ पापकेनाशकरनहीतजेहा॥ कहतहेकरमेकपानी

धितेहा॥५२॥ हे अर्जुनचहुंवर्ण हे जेऊं॥ जगमहिसृष्टकहावततेऊं॥ ब्रह्मा आदिक किरपुजंता॥ सबजगति
नतन आवत अंता॥५३॥ सत्वादीकविभागकरिजेही॥ गुणअनुसारभएहेतेही॥ ब्राह्मणादिचहुंवर्णउदारा॥
समदमादितेहीकर्मप्रकारा॥५४॥ गुणअरुकर्मविभागसेंजेऊं॥ अतिविभागकृतवरततलेऊं॥ मैंजगउतपति
स्थितिलयकारी॥ तदपिअकरतामें अविकारी॥५५॥ दोहा॥ मैंसबकारनसबहीपर॥ सबजगममआधा
र॥ मुहीमाक्षीणन होतमम॥ मोयजानोकरतार॥५६॥ चौपाई॥ तातेंविचित्रजगतरचुंजेहा॥ मोकुंबंधनकु
रतनतेहा॥ देवमनुष्यादिकजगजेऊं॥ विविधभांतिकरताकर्मनेऊं॥५७॥ जेसेंकर्मकीयेजेहिजेही॥ तेसें
देहदियेतेहितेही॥ करतहेकर्मजीवजोजोइ॥ ताकोफलपावतहेसोइ॥५८॥ मोयकर्मफलइछानांही॥ नि
ज्ञानंदपुरणमनमांही॥ एहीविधिजगकरतामेंतेहा॥ अधिकअकरताजाननतेहा॥५९॥ करमकेआरं
भमेंसोइघानि॥ रहेनिरलेपमोयपहिचानी॥ करमसेंबंधनहोतनलेशा॥ मुक्तहोतमेरेउपदेशा॥६०॥ दो
हा॥ एहीविधिमोकुंजांनिकें॥ पापभयेसबनास॥ पुर्वमुमुक्षूसबहीउं॥ किनेकर्मप्रकास॥६१॥ चौपाई॥ जा
निअलिप्तअकरतामोई॥ करमकरोतुमततपरहोइ॥ ज्ञांनसेंपापरहीततुमजेऊं॥ मनुष्यादिककियेकर्महे

फिरइहांवरनिकेंनाउंतेऊं॥ फलइछातजीवरततजेहा॥ निमक्तकिनोमननेहा॥६१॥ सबहीवृक्षमही
ममताजेता॥ समकीविचारीतजीहेतेता॥ तननिरवाहेमात्रजुंहोई॥ तितनोकर्मकरतहेसोई॥६२॥ तिनकु
रिनहीपावतसंसारा॥ ज्ञाननिष्टकरेकर्मउदारा॥ करमजोगकरिकेंकभअंगा॥ आतमदरस्यानकरतअभं
गा॥६३॥ हरिईछाप्रापतभयोजेता॥ अनवस्त्रादिकपायकेंतेता॥ तेहीसंतुष्टरहतमनमांही॥ शितउस्नसु
खदुखभयपुनाही॥६४॥ दोहा॥ सुखदुखकेकारनसदा॥ निजकरमनकुंजांनी॥ मछरतेहीकारनतजी॥
तातेंरहतनिरमांनी॥६५॥ क्रुधादिककर्मनिविषे॥ जयरुपराजयजेऊं॥ तिनमहीसमवरततसदा॥ करमसें
लिप्तनतेऊं॥६६॥ चौपाई॥ आतमज्ञानमेंमनरह्योजबही॥ तातेंअनातमसंगोसबही॥ संगोसबही
सुखसाजकोसंगा॥ जजनतहेजज्ञसेंविमुक्तभंगा॥६७॥ अथवापंचजज्ञहीनजोउं॥ करमकरतनितततप
रसोउं॥ ताहीकुंबंधनहेतजेहा॥ पुरबकरमसबनासततेहा॥६८॥ अबसबकर्मकरावतजेऊं॥ ब्रह्मरुप
करिकहतहेतेऊं॥ घ्रतजवादीजेहीअरपणहोई॥ सुकसरवादिकअरपणसोइ॥६९॥ ब्रह्मतीब्रह्मकोंका
रणएऊं॥ तातेंब्रह्मरुपहेतेऊं॥ घ्रतजवादिहविब्रह्महीजानो॥ अनलकुंसबविधिब्रह्मप्रमानो॥७०॥ दोहा

होमनहारसो ब्रह्महे॥ पुंब्रह्ममयसबसाज॥ ब्रह्मअनलमहीब्रह्महवी॥ अर्पेब्रह्मनिजकाज॥९१॥ तहां
विधिब्रह्ममेंकरमसब॥ धरतहेततपरहोय॥ ब्रह्मरुपक्रमकरमको॥ करनहारहेसोय॥९२॥ सोरठा॥ ब्र
ह्मसमाधिसोय॥ ब्रह्मरुपकरमनिकरत॥ तसोसाधकजोय॥ ब्रह्मपावतीकेंजगपुनीत॥९३॥ चोपाई॥ सु
करमनकोज्ञानस्वरूपा॥ प्रतीपादनकियोपरमअनूपा॥ करमजोगकेभेदहेजेऊ॥ अबअंतुकरमसेंव
रनततेऊ॥९४॥ अवरकरमजोगीजगजेहा॥ देवकोअरचनकरतहेतेहा॥ कोऊंकर्मजोगीजगजेही॥ ब्र
ह्मरुपअग्नीमेंतेही॥९५॥ घृतआदिकसामग्रीजोतें॥ सर्वादिकसेंहोमतसोतें॥ होमहीमेंनिशहदधारे
तहांविधिज्ञानसेंकारजसारे॥९६॥ अवरकरमजोगीहेजेऊं॥ ज्ञानइंद्रीश्रोत्रादिकतेउं॥ शब्दादिकंकंफे
रकेल्यावे॥ संजमअनलमेधरिकरखपावे॥९७॥ दोहा॥ अपरकरमजोगीविषे॥ शब्दादिकहेजोय॥ इं
द्रियरुपीअग्नीमें॥ होमकरतहेसोय॥९८॥ सोरठा॥ सबइंद्रीगणजेऊं॥ निजनिजवीषयमेंअतिचतुर
करतनिवारणतेऊं॥ तिनकीजतनमेंमितरहत॥९९॥ चोपाई॥ कोऊंकर्मजोगीकविचारी॥ ज्ञानकुंसें
प्रज्वलितभयोभारी॥ आतमसंजमअनलहेजेऊं॥ ध्यानधारणारूपीतेऊं॥१००॥ तिनमेंइंद्रीकेकर्महेजेहा ॥२०॥

शब्दादिककुंहोमततेहा॥ तेहीविधिप्राणकेकर्महेजोई॥ स्वासउस्वासकेआदिकसोई॥१०१॥ आत्मसंजम
अग्नीमेंसोउ॥ भस्मकरतनहीरावतकोउ॥ प्राणइंद्रीकेकरमहेजेही॥ विषयसेंजलसेंटारततेही॥१०२॥
कोऊकर्मजोगीबुद्धिवंता॥ द्रव्यजज्ञकरीजजतअनंता॥ न्यायसेंद्रव्यउपावतजेना॥ देवुजजनमहीखरच
ततेना॥१०३॥ दोहा॥ कोऊकर्मजोगीसदा॥ तपजज्ञहिकरेधिर॥ चांद्रायणआदिकविषे॥ प्रकाककें
गंभिर॥१०४॥ चोपाई॥ कोऊंकर्मजोगीअतिधिरा॥ जोगजज्ञरतविमलशरीरा॥ पुन्यरुपतीरथजगजे
हा॥ तिनमहीरावतपरमसनेहा॥१०५॥ कोऊंकर्मजोगीगुनरासी॥ वेदपढतउरधुरिअविनासी॥ कोऊं
कर्मजोगीबुद्धीवाना॥ वेदकेअर्थकुंपढतक्रजाना॥१०६॥ कोऊंकर्मजोगीअमहाई॥ जलसेंनिजव्रतरा
खतसोई॥ जोमुनिवरअतिदृढव्रतरहहीं॥ सोअनआसपरमपदलहहीं॥१०७॥ कोऊंकर्मजोगीअ
तिज्ञानी॥ प्राणायामपरायणध्यानी॥ सोअपानमहीहोमतप्राना॥ पुरकराखतपरमक्रजाना॥१०८
दोहा॥ कोऊंअपानकुंप्राणमें॥ होमतधिरजधारी॥ पुरेचककुंकरतहे॥ जोगक्रियाजगमविचारी॥१०९
चोपाई॥ प्राणअपानकहावतजेहा॥ कोउजोगिरूंधतहेनेहा॥ प्राणमेंप्राणकुंहोमतधिरा॥ कुंभकक

रतहेपरमगंभिरा॥११०॥तिनप्रकारकेजोगिजेऊं॥अहारकोनियमरखनहेतेऊं॥अल्पअहारमख
हिकोधर्मा॥तेहीविनजोगकोलहतनमर्मा॥१११॥आधेस्लोककोअरथहेजोउं॥प्रथमस्लोकसंगकिनो
सोउ॥द्रव्यजज्ञकलेकरजेही॥प्राणायामप्रजंतहेतेही॥११२॥करमजोगकेभेदहेजोई॥भिनभिनवरनिके
नायेसोई॥तिनमहीप्रवर्त्तेजांनिहोतजेउ॥सबविधिकर्मजोगिहेतेउ॥११३॥दोहा॥पंचमहाजज्ञादिसो
नितनिमितस्भभकर्म॥तिनकरिजज्ञजोहोतहे॥तेहीज्ञानतसबमर्म॥११४॥प्रथमकहेस्भजज्ञसें॥जे
हिपातकभयोनास॥सोसाधककेउरविषे॥होतहेपरमप्रकास॥११५॥चोपाई॥जज्ञशेषअमृतअंन
जेहा॥सोईअंनकरिजोधारतदेहा॥ब्रह्मसनातनकुंसोइपावे॥कालकिजालमेंसोनहिआवे॥११६॥प्र
थमकहेसबजज्ञहेजेउ॥तामध्यएककुंकरतनतेउ॥सोअजज्ञअनिनिचहेप्रानि॥ताहिविलोकतहो
वतहानि॥११७॥नाशवंततूच्छसुखजामांही॥एसोमनुष्यलोकतेहिनाही॥हेअरजुनपरलोकहेजोई
एसेंदुष्टकुंकहांसेसोई॥११८॥एहीविधिजज्ञअनेकप्रकारा॥भयोहेब्रह्ममुखसेंविस्तारा॥ब्रह्मकुंमि
लनकोसाधनएहा॥तामहीलेज्ञानहीसंदेहा॥११९॥दोहा॥कर्मजोगकेभेदसब॥करमसेंउपजेजांनी

नितनिमितस्भभकर्मसे॥होतसकलदुखहांनि॥१२०॥एहीविधिजांनिकजांनतमम॥सुंकहेसुंकरोकर्म
छुटिहोयहसंसारसें॥एहिअलोकिकमर्म॥१२१॥चोपाई॥ज्ञानकर्ममहीरहतहेजबही॥करमकुंज्ञाना
कारहेतबही॥भिंतररहतज्ञानतिनजामें॥एसोकरमकहावततामें॥१२२॥ज्ञानकोअंसहेअधिकप्रधाना
सोचरनतप्रभुपरमस्जांना॥ज्ञानकोआश्रयकरमहेजेहा॥तिनमहिद्रव्यमयजज्ञहेतेहा॥१२३॥द्रव्य
जज्ञसेंश्रेष्टअपारा॥ज्ञानजज्ञसोसबश्रुतिसारा॥कंनऊंकुंतिसुतपरमपवित्रा॥वेदिककर्मसबहिअ
तिछीना॥१२४॥तिनसेंअपरसंमतीकहेजेहा॥स्मारतकर्मकहावततेहा॥श्रुतिसंमतिभाषितकर्मजो
इ॥ज्ञानमेंसबकिसमासहोइ॥१२५॥दोहा॥सबसाधनकरीकेविमल॥पावतेजागपहेज्ञान॥ज्ञानरहतहेक
र्ममे॥ज्ञानऊपरमस्जांन॥१२६॥तातेंकरतअभ्यासजो॥ज्ञानकुंपावतसोय॥अनअभ्यासीज्ञानकुं॥कब
ऊंनपावतकोय॥१२७॥चोपाई॥अरजुनतोयकहुंमेंज्ञाना॥करममेंरहीकेपरमस्जांना॥जिनआत
मजांन्योसाक्षाता॥सोज्ञांनिसेंज्ञानग्रहोताता॥१२८॥नमस्कारकरिप्रस्नउचारे॥सेवाकरिसबअंतरटारे
सोज्ञांनितवप्रस्नविचारी॥कहीहेज्ञानमुनिअतिहितकारी॥१२९॥हेपांडुनंदनसुनुताता॥ज्ञानिकेतत्वज्ञा

॥३१॥

नुविख्याता॥ राहि विधि देहातममनिजेहा॥ सोईमहामोहनपेहोतेहा॥१३०॥ जेहिज्ञानकरिसबजगजोउ॥
निजआतममहीदेखिहोसोउ॥ निजआतमपरआतमजोई॥ ज्ञानदृष्टीकरिभेदनकोई॥१३१॥ दोहा॥
निजआतमदरसनभयो॥ तेसोइसबकोरूप॥ प्राणिमात्रकेआतमा॥ देखिहोपरमअनुप॥१३२॥ अधी
कअधनिजआतमा॥ सबहिकेआतमजेऊ॥ सबहिकुंसोमहीदेखिहो॥ ममआश्रितहेतेऊ॥१३३॥ चौ
पाई॥ हेअरजुनअतिपापिजेहा॥ तिनहिमेंअतिपापीतुमतेहा॥ तदपीदुष्टमकहाज्ञानहेजोइ॥ पाप
उदधिकिनौकासोइ॥१३४॥ ज्ञानरूपनौकासेंविरा॥ पापउदधितरिहोतुमधीरा॥ ज्ञाननावकोराखवीआ
धारा॥ विनप्रयासेंपेहोभवपारा॥१३५॥ अधिकप्रबलअगनिभयोजेऊ॥ काष्टसमुहकुंजारतनेऊ॥ आ
तमज्ञानअनलइमिभारी॥ अरजुनदेतकरमसबजारी॥१३६॥ तातेंज्ञानतुल्यजगमांइ॥ शुध्धकरनअन्य
साधननांही॥ आतमज्ञानपापकरेनासा॥ सोजिमिहोयसोकहुंअभ्यासा॥१३७॥ दोहा॥ कर्मजोगनि
तकरतजो॥ ज्ञानजोगपसोहोय॥ निजआतममहीकालकरी॥ ज्ञानकुंपावतसोय॥१३८॥ चौपाई॥ देवप्र
देशावतायोज्ञाना॥ तिनकिहढिमहीश्रद्धावाना॥ सोइज्ञानमहीमनकुंधारे॥ आत्मासेंअन्यविषयनिवारे॥ ॥३२॥

तेऊ॥६२॥ विवस्वतमनुआदिउदारा॥ कियेहेपुरातनकर्मअपारा॥ तातेंपुरातनकरमहेजेही॥ तुमततपर
होयकरनांतेही॥६३॥ अबबरनेगेंकर्मविचारा॥ तासस्वरूपअगमअतिभारी॥ करनेजोगपकरमहेजेहा
कवनरूपतेहियहसंदेहा॥६४॥ कर्ममेंज्ञानसोअकर्मरूपा॥ ताकोरूपसोकवनअनुपा॥ कर्मअकर्मज्ञान
हेजोउ॥ कविगुनिपंडितलखनकोउ॥६५॥ दोहा॥ अंतरगतजेहिज्ञानहे॥ एसोकर्महेजोय॥ सोकरमनि
केरूपकुं॥ बरनीकहुंनाउतोय॥६६॥ जेहाकर्मनकुंजोनिके॥ टरतजगतजंजाल॥ अशुभरूपसंसारमें॥ सो
इहोमुकततनकाल॥६७॥ चौपाई॥ मोक्षकेसाधनरूपजोकर्मा॥ तिनहीमेंज्ञाननजोगपहेममा॥ विकर्मद्रव्य
सामग्रीजेऊ॥ निसनेमितकर्मनिहितनेऊ॥६८॥ सोविकर्महेविविधप्रकारा॥ तिनमहीज्ञाननजोगपअपा
रा॥ ज्ञानसोईअकर्मकोरूपा॥ तिनमहीज्ञाननजोगपअनुपा॥६९॥ एहीविधिपरममुमुक्षुतेही॥ करनेजो
गपकरमहेजेही॥ युंकरमनकिगहनगतीजेहा॥ दुखकरिजाननजोगपहेतेहा॥७०॥ कर्ममेंअकर्मदेखतजो
ई॥ ताकोभेदबतावेतोई॥ हरिआराधनकर्महेजेउ॥ तिनमहीज्ञानकुंदेखततेउ॥७१॥ छंदः॥ देखतसोकर्म
मेंज्ञानकुंअकर्मज्ञानकहावही॥ अकर्मआतमज्ञानतिनमहीकरमजोगलगावही॥ साक्षातआतमरूप

कोभयोतदपिहरिगुनगातहे॥ हरिभजनकमरणअवस्यकरनोएहीकर्मसाक्षातहे॥७२॥ तेहीविनसोभ
तज्ञांनयुंदेखतसोइबुधिवंतहे॥ सबमनुष्यमहीसोमोक्षसाधनजोगयुक्तभमतासंतहे॥ सबसुभकर्मकोसो
इकरताफलत्रविकर्ममेमनही॥ सबफलकीइछात्यागीकेएकमोक्षइछाहृदरही॥७३॥ दोहा॥ फलइछाविन
कर्ममें॥ अचलबुद्धीभइजाश॥ सोसाधककेउरविषे॥ होतहेज्ञांनप्रकाश॥७४॥ चौपाई॥ अरकनहमयु
कहीहेवाता॥ करममेंज्ञानकहासाक्षाता॥ याकोउत्तरतोयकहंनाउं॥ तबमनसबसंदेहमिटाउं॥७५॥ जोमु
मुक्षकेआरंभजेऊं॥ द्रव्यसंचयआदिकसबतेऊं॥ लोकिकवेदिककर्मअपारा॥ फलइछाविनकरहीसो
सारा॥७६॥ एहीविधिकरमकरतहेजेहा॥ आतमदरशीकहावततेहा॥ आतमज्ञांनअनलअघजारे॥
तेहिपंडितकहेसुनीमतवारे॥७७॥ करमहंकरमकेफलहेजेही॥ करनेकोअभिमानहेतेही॥ कर्मकोअ
भिलाषाहेजोइ॥ सबतजीनिसचपतमुनिसोइ॥७८ ॥दोहा॥ आत्मस्वरूपमेंतृपतनित॥ देहादिकसेंउ
दास॥ एहीविधीकरतहेकरमकुं॥ सोतेहिज्ञांनअभ्यास॥७९॥ सोरठा॥ एहीविधिकरतहेकर्म॥ सोकरत
कछुनहीकरत॥ एहीअलोकिककर्म॥ कर्मसोज्ञानअभ्याससम॥८०॥ चौपाई॥ कर्मकोरुपज्ञांनसमजेऊं ॥२९॥

१३९॥ विषयसेंइंद्रिफेरिकेल्यावे॥ एसोपुरुषसोज्ञांनकुंपावे॥ युंक्रमज्ञांनपायबुधीवंता॥ सद्यसोपावत
सांतिअनंता॥१४०॥ एहिविधिज्ञांनबतायोजेऊं॥ तिनकरिरहीतयज्ञहेतेऊं॥ कहीजोज्ञानजिमिवरन
अपारा॥ सोउपायनहीकरतगमारा॥१४१॥ कह्योजोज्ञानतेहिसंशयभारी॥ नासकुंपावतसोकुविचारी॥
आतमज्ञानजथारथजेहा॥ तिनमहीसंशयजकहेतेहा॥१४२॥ धर्मअर्थअरुकामसुख॥ ताहीइहांन दो॰
हिहोय॥ तोअतिदुख्खभमोक्षसुख॥ क्युंकरपावतसोय॥१४३॥ जेहिउरसंशयज्ञानको॥ ताहीनहीसुखले
श॥ तातेंभटकतभवविषे॥ व्यरथभयोउपदेश॥१४४॥ चौपाई॥ कियोउपदेशजोगकरिराही॥ ज्ञानाकारभ
येकर्मजेहि॥ आतमज्ञांनप्रबलभयोजबही॥ संसयछेदभयेसबतबही॥१४५॥ आतमवंतमनस्वीजेऊं
सावधानवरततनरतेऊं॥ पुर्वकर्महेतुरवप्रदजोई॥ बंधकेहेतुनबांधतसोइ॥१४६॥ तातेअनादिअविद्या
जेहा॥ तिनकरिसंशयउपजततेहा॥ आत्मसमंधिसंशयजेउ॥ हृदेकमलमहीरहतहेतेऊं॥१४७॥ ज्ञान
खड्गहमकह्योउदारा॥ सोसबसंशयछेदनहारा॥ ज्ञांनसेंसंशयछेदिकेसबही॥ कर्मजोगआरंभोअबत
हि॥१४८॥ दोहा॥ हेभारतहिमतसहीत॥ ऊधकरनहितताता॥ वेगसेंबादेहोऊतुम॥ सोनिलेऊंसमबान१४९

करतक्रियाइमिज्ञांनकृत॥ नाहीनत्यागनकर्म॥ मुक्तानंदकेनाथयुं॥ सवहीवतायोमर्म॥ १५०॥ इतिश्रीभ
गवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मुक्तानंदमुनिविरचितभगवद्गीताटी
कायांकर्मयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४ ॥ चौपाई॥ चोथेअध्यामहीवकुवारा॥ कर्मजोगकह्योज्ञांनआका
रा॥ करमजोगकेभेदहेजेऊं॥ विविधभांतिवरनेहेतेऊं॥ १॥ ज्ञानकोअंसकहावतजोई॥ अतिप्रधानकरी
वरन्योसोई॥ अवपंचमअध्यामेंएहा॥ कर्मजोगअतिउत्तमतेहा॥ २॥ आत्मप्राप्तीकेसाधनमांही॥ कर्म
जोगअतिश्रेष्टकहाही॥ उभयभांतिसुंकृष्णकेवाना॥ अर्जुनपुछतभयेसाक्षाता॥ ३॥ अर्जुनउवाच॥
कहेअरजुनकृष्णसुंहृष्णगोसांई॥ कर्मकोत्यागकहतजिनमांई॥ एसोज्ञांनजोगहेजेही॥ प्रभुतत्मश्रेष्टकहन
होतेही॥ ४॥ दोहा॥ द्वितियअध्यायमेंसुंकह्यो॥ श्रुवमुमुक्षंजोय॥ करमजोगकरेप्रथमजब॥ तवअंतर
कधुहोय॥ ५॥ चौपाई॥ अंतःकर्णसुधहोवतजवही॥ ज्ञांनजोगकुंसाधिकेतवही॥ आतमदरशनए
हिविधिहोइ॥ युंतुमकह्योकृष्णमोहमसोइ॥ ६॥ तिसरेचोथेअध्याजेऊं॥ पुनितुमतिनमहीवरन्योगऊं॥
ज्ञांनजोगअधिकारिजेही॥ करमजोगअतिश्रेष्टहेतेही॥ ७॥ तातेंज्ञांनजोगहेजेहा॥ कर्मजोगतुमवर

न्योनेहा॥ प्रभुतुमउभयमेंश्रेष्टजोमांनो॥ सोनिश्चेकरिकहोश्रमभांनो॥ ८॥ श्रीभगवानुवाच॥ कहेश्री
कृष्णकुंअरजुनवांनि॥ ज्ञांनजोगवरन्योसुखदानी॥ कर्मजोगवरन्योहेजोई॥ इहकल्यानकरतहेदोई॥
९॥ दोहा॥ तदपिउभयमेंज्ञांनसें॥ करमजोगवलवांन॥ करमजोगसवजीवको॥ करतपरमकल्यान॥ १०॥
चौपाई॥ ज्ञांनजोगमेंकर्मक्युंमारा॥ याकोअन्तरकहुंतोयप्यारा॥ जोनरकरमकरतहेतोऊं॥ नित्यसंन्यासित्
सहेसोऊं॥ ११॥ नित्तजोआनमअनुभवमांही॥ तेहिविनअन्यइछाउरनांही॥ आतमविनअन्यवस्तुजेहा
रागद्वेषतेहिकरतननतेहा॥ १२॥ रागद्वेषआदिकहेजोई॥ सहनकरतअतिनपरहोइ॥ महाभुजकर्मजो
गकरिधिरा॥ सुखहिसेंवंधनरहीतगंभिरा॥ १३॥ सांख्यजोज्ञांनजोगसुखकारी॥ जोगसोकरमजोगअ
घहारी॥ उभयकुंफलकरिन्यारेवरवाने॥ बालबुधिबुधताहीप्रमांने॥ १४॥ दोहा॥ सांख्यरुजोगकेप्रथ
कफल॥ कहतजुंबालअज्ञांन॥ पंडितप्रथकनकहत हे॥ जाहिजथारथज्ञांन॥ १५॥ सोरठा॥ ज्ञांनजोग
सुभजोय॥ करमजोगएउभयमध्य॥ एककुंमेंस्थितहोय॥ उभयकोफलआनमलहत॥ १६॥ चौपाई॥ सां
ख्यजोज्ञांनकिनिष्टावाना॥ आत्मदर्शरूपीलहेस्थाना॥ करमजोगनिष्टाऊतजेहा॥ सोइस्थानकपावतहे

नेहा ॥१७॥ सांख्य रु जोग कह्यावत दोइ ॥ युं फल करि सम देखत जोई ॥ सोइ देखत सोई पंडित जांनो ॥ और सब
हि जन अंध समांनो ॥१८॥ हे अरजुन कंतु उभय कि वाता ॥ इन महि यह विशेष साक्षाता ॥ ज्ञांन जोग कर खकारी
जोउं ॥ करम जोग विन रहत न सोउं ॥१९॥ अरु जो जोग कर्त्र मुनि धिरा ॥ आतम मनन रत अति गंभिरा ॥ सु
ख हासें करम जोग करीते ही ॥ अल्प काल आतम लहे ताही ॥२०॥ दोहा ॥ ज्ञांन जोग कुं न कष्ट करी ॥ साधन
आतम ज्ञांन ॥ बहुत काल करि पावही ॥ आतम दरश क ज्ञान ॥२१॥ चोपाई ॥ जोग कर्त्र जग मे नर जोइ ॥ ह
रि आराधन रूप है सोई ॥ रूध कर्म निमर्ही वरतत नेहा ॥ ताते अति विशुद्ध मन गेहा ॥२२॥ अधिक प्रबल इंद्रि
य गण जे ही ॥ अति विरोध करि जितसो तेही ॥ सब ही भुत को आतम जेऊं ॥ सो निज आतम जांनि के तेऊ ॥२३
सो करम न कुं करत है जब ही ॥ देह मे आतम भावत तब ही ॥ ताते अल्प काल कहि जेता ॥ आतम दरशन पा
ये अनंता ॥२४॥ ताते करम जोग है जेउं ॥ सब साधन मे श्रेष्ट है तेउं ॥ कर्म जोग सोइ ज्ञांन उपावे ॥ सो मन के मल
सब हीन सावे ॥२५॥ दोहा ॥ एही विधि आतम तत्व को ॥ जानन हार है जोय ॥ इंद्री प्राण मन आदि सें ॥ भिन
रहत है सोय ॥२६॥ चोपाई ॥ ज्ञांन इंद्रि श्रोत्रादिक जे ही ॥ कर्म इंद्री वागादिक ते ही ॥ अंतःकरण रु प्राण है

जेहा ॥ इन हि सें तास क्रिया करि तेहा ॥२७॥ इंद्रिय आदिक माथि कजेऊं ॥ निज निज विषय में वरतत तेऊं ॥ युं
निज आतम प्रथक पीछाने ॥ मैं न करुं कछु मुनि युं मांने ॥२८॥ ब्रह्म आश्रक तो सो करमें जोई ॥ मुल प्रकृति पर जा
न कुं सोई ॥ मह दब्रह्म मम जो निजेऊं ॥ कहा है श्री हरि स्म जिन आगे तेऊं ॥२९॥ एही विधि मुल प्रकृति है जोऊं ॥ देह इं
द्रि आदिक भइ सोऊ ॥ सो देहादिक ब्रह्म मे मंता ॥ सब हि कर्म अरपन बुद्धि वंता ॥३०॥ दोहा ॥ फल कि इच्छा स
गि के ॥ अधिक अंश कर ता होय ॥ मैं न करुं कछु या हि विधि ॥ कर्म करत है जोय ॥३१॥ बंधन हेतु पाप करि ॥ लि
पत न होवत ते ऊं ॥ पद्म पत्र ज्युं जल विषे ॥ स्युं मुनि जगमही गऊं ॥३२॥ चोपाई ॥ देह रु मन बुद्धी है जेऊं ॥ केवल
इंद्रिन को गणा तेऊं ॥ इन सब करि के जोगप है जेहा ॥ फल तजी करम करत है नेहा ॥३३॥ करम जोगी सु वरतन जे ही
आत्म कु द्धि हित करत है तेही ॥ उर मे रहत पुर्व अघ जोइ ॥ तिन के नाश हित करम है सोइ ॥३४॥ कर्त्र सो आत
म विन अन्य जोउं ॥ सो फल देखि चलत न हि सोउं ॥ करम के फल तजी करत है जेउ ॥ केवल अंतरकर्ध ही न तेउ ॥
३५॥ सो आतम के अनुभव रूप ॥ परम सांति फल पावे अनुप ॥ अति आसक्त न रहो वही जेता ॥ आत्म वि
ना अन्य फल चहे तेता ॥३६॥ दोहा ॥ करत सकामि करम कुं ॥ फल आशक्ति जाही ॥ ताही ते कर्म निसें स

गी॰भा॰ ता॥ होतहेबंधनताही॥३७॥ चौपाई॥ अपनेपुर्वकर्महेजेहा॥ सोहेसुखरागसोनिजदेहा॥ सोतनकोसमंध अ॰५
॥३५॥ हेताही॥ तातेंकरमकोकरता देही॥३८॥ तनविनकर्मकरतनहीजंता॥ यहविवेकऋतसोबुद्धिवंता॥ सुवि
वेकऋतमनकरिसोइ॥ अपनेसबहिकरमहेजोइ॥३९॥ नवद्वारपुरदेहहेताहा॥ तिनमहीकरमसागिकें
तेहा॥ निजवशइंद्रिनकोगणकिना॥ तनअभिमाननकरतप्रवीना॥४०॥ सोनिजतनकुंकर्मकरावे॥ आ
पअकरताडुखनहीपावे॥ सोसुखमेंरहेकर्मनकरही॥ नांहिकरावतयुंउचरही॥४१॥ दोहा॥ अबआ
तमकोरुपहे॥ सहजस्वभाविकजोय॥ सोसबविधिसाक्षातकरी॥ वरनीसंतनतोय॥४२॥ चौपाई॥ देव
नरादिकवपुकरीजेही॥ पुरुकतिसमंधसेंवरततहेही॥ रासोसबहीलोकहेजेहा॥ निजनिजजोगपकेकर
तातेहा॥४३॥ निजनिजजोगपकरमहेजाकुं॥ करमसेंदेवादिकफलताकुं॥ समस्थकर्मकेवशपनहीजोई
जिवनहीउपजावतसोइ॥४४॥ तातेस्वभावहिकरताजानो॥ औरनकरताकोकुंप्रमानो॥ वासनापुर्वकरम
किजेकुं॥ देवादिककिकरतातेकुं॥४५॥ कर्त्ताकरमकोमानहेजोउ॥ तेहीविधिकरमकेफलहेसोउ॥ यहती
नुकोजोगमिजावे॥ वास्ताजोइस्वभावेसोईकहावे॥४६॥ दोहा॥ निजसमंधिसुतादिको॥ पापनदारन ॥३५॥

जंत॥ सुंशत्रुकेस्कऋतस्कृत॥ दारतनांहिअनंत॥४७॥ चौपाई॥ तातेंयहजिवातमजेहा॥ देवादिकतन
समनहोतेहा॥ काकुंकोमित्रशत्रुनहिताही॥ एसबकरनवासनातेही॥४८॥ रासोसुखजीवातमजोइ॥ ते
हिविपरितस्वभावक्युंहोइ॥ अरऋतसुंतुमपुछिहोबाता॥ याकोउतरदेकुंमेंताता॥४९॥ ज्ञानकुंआवरण
करताजेकुं॥ पुरवकरमअज्ञानहेतेकुं॥ तिनकरिज्ञानसंकोचकुपावे॥ ताहीतेयहसचजीवमुंझावे॥५०॥
ताहीविधिवरततजीवअपारा॥ तिनमेंपायेजोविमलविचारा॥ ज्ञानकुंआवरणकरतहेजोउ॥ करमरूपअ
ज्ञानहेसोउ॥५१॥ दोहा॥ जाहिजथारथज्ञानसें॥ भयोअग्यानकोनास॥ ताकेउरआदितसम॥ होतहे
ज्ञानप्रकास॥५२॥ चौपाई॥ सोआतमदरस्वानहेजेही॥ तिनमहीअचलबुधीहेतेही॥ सोआतममही
मनहेजोही॥ आतममहिनिष्टाहरताहि॥५३॥ आत्मापरमअयनहेजाकुं॥ तेहीविनऔरगोरनहीना
कुं॥ ताहिविधिज्ञानअभ्यासविचारी॥ धोईगयेजेहिपातकभारी॥५४॥ सुनिय्यापभयेनरजेहा॥ आत्मस्व
रूपीरहतनिततेहा॥ जन्ममृत्युसेंरहितहेजोइ॥ सबआतमकुंपावतसोइ॥५५॥ विद्यासोंब्रह्मविद्याजानो
विनयसोअतिनिरमांनप्रमांनो॥ सोदोउऋऋविप्रहेजेकुं॥ गोगजस्वानश्वपचमहितेकुं॥५६॥ दोहा

इनसबमेंसमदेखही ॥ पंडितपरमकज्ञांन ॥ निजआतमकोंजाहीकुं ॥ भयोजथारथज्ञांन ॥ ५७ ॥ सोरठा
जीवआतमाजोय ॥ सत्तारूपीअधिकसम ॥ ब्राह्मणादिमहिसोय ॥ आतमदरशिसमलखत ॥ ५८ ॥
चौपाई ॥ साधनदशामध्यमुनिजेऊं ॥ जगकुंजितरह्योहेतेऊं ॥ जिनकुंसमदृष्टीसबमांही ॥ भेददृष्टीउ
उपजतनांही ॥ ५९ ॥ जोमायापरशुद्धस्वरूपा ॥ दोषारहीतसमआत्मअनुपा ॥ सोसमभावमेंवरततजो
ई ॥ ब्रह्ममेंअरखंडरहतनरसोई ॥ ६० ॥ करमजोगिएहीविधिरहेजोई ॥ तेहीसमदर्शज्ञानजुंहोई ॥ तेहीवि
धिदेतहेसभउपदेशा ॥ जेहिकेंनिसंशयरहतनलेशा ॥ ६१ ॥ अरजुनकरमजोगिहेजेही ॥ पुर्वकर्मवाशाके
रितेही ॥ प्रियवस्तुपापतभईजोउं ॥ तिनसेहरखनपावतसोउ ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ अप्रियवस्तुपायके ॥ जेही
उद्वेगनहोय ॥ थिरआतममहीबुद्धीजेही ॥ सावधानहेसोय ॥ ६३ ॥ अस्थिरदेहथिरआतमा ॥ एकनजानत
जेऊं ॥ देहरुआतमएककरी ॥ मोहनपावततेकुं ॥ ६४ ॥ सोरठा ॥ युंउपदेशमेंएऊं ॥ ब्रह्महिमेंथिरजबचित
होतकृतारथतेकुं ॥ जोएहीविधिअभ्यासकरत ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ आत्मस्वरुपविषेंअभ्यासजेऊं ॥ पंचविषय
शब्दादिकतेकुं ॥ तहांनहीप्रितिकरुमनजाही ॥ आत्मविषेसुखउपजतनाही ॥ ६६ ॥ सोमाइकअभ्यासकुं ॥ ३६ ॥

सागी ॥ ब्रह्मअभ्यासकरतबडभागी ॥ ब्रह्मकेंअनुंभवकरतसुखजेहा ॥ सोईअचलसुखपावततेहा ॥ ६७
विषयइंद्रीकोहोतसंजोगा ॥ तिनहीसेंउपजतबहुविधिभोगा ॥ सोइभोगदुखकारनजांनो ॥ नाशवंतअ
नित्तसुभमांनो ॥ ६८ ॥ तातेसंतनुकुंतीसुतविरा ॥ भोगविषेसुखगिनततनधिरा ॥ नाशवंततनजांनतजोई ॥
भोगविषेबुधरमततनसोई ॥ ६९ ॥ छंदः ॥ सोईबुधशरीरकुंतजेपहिलेकरतसाधनधिरजं ॥ साधनदशाम
हिआतमाअनुंभवमेंप्रितीगंभिरजं ॥ सोपुरुषकामरुक्रोधसेंउपज्योसोवेगकुंसहतहे ॥ कामादिवेगकुंस
हतसमर्थकुंतेहिबुधीकहतहे ॥ ७० ॥ दोहा ॥ आतमअनुभवजोगपसो ॥ सुखिकहावतसोय ॥ आतम
अनुभवअतलसुखकरव ॥ देहतजेतेराहोय ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ जोनरबाह्यविषयसुखत्यागी ॥ आतमअनुभ
वसुखअनुंरागी ॥ आतममेंहीआरामहेजाही ॥ आतमज्ञांनअधिकहेताही ॥ ७२ ॥ एहीविधिजोगिवरत
तजेहा ॥ ब्रह्मस्वरुपकहावततेहा ॥ ब्रह्मकेंअनुंभवरुपहेजोई ॥ सोसुखकुंपावतमुनिसोई ॥ ७३ ॥ जितरु
दुखमादिकदुरगाऊ ॥ तिनकरिमुक्तभएनरजेऊं ॥ आत्मस्वरुपमेंमनचखआनि ॥ अचलनियमकृतमहामु
निज्ञांनि ॥ ७४ ॥ सबहीप्राणिकोंअतिहितजेही ॥ तिनमहिअधिकप्रितिकरतनेही ॥ आत्मस्वरुपकोदर्शन ॥

जोउं॥ तिनमहीतत्त्वपरवर्त्तनसोउ॥७५॥ दोहा॥ आतमप्राप्तिविरोधिसब॥ पापभयेजेहीनाश॥ ब्रह्मनिर्वा
णजोआत्मसुख॥ सोतेहीहोतप्रकाश॥७६॥ चौपाई॥ जिनकेलछनकहेहेवखानी॥ एसेजोगीपरमविग्यां
नि॥ तिनकुंब्रह्मसुखभसुखकारी॥ सोअबकहतहेअतिविस्तारी॥७७॥ कामक्रोधसेरहितउदारा॥ कर
नस्वभावमेंजतनअपारा॥ जितिलियेमनइंद्रिजेही॥ आत्मस्वरूपकुंमांग्योजेही॥७८॥ एसेजोगिजगमहीजे
ऊं॥ ब्रह्मकोअनुभवसुखलहेतेऊं॥ तिनकुंरहतमोक्षसुखमहीवासा॥ सोमुनिवरउरब्रह्मप्रकाशा॥७९॥ आ
त्मस्वरूपमेंवाहीरजेहा॥ पंचविषेशब्दादिकतेहा॥ बाह्यइंद्रियगणाकिगनिजोइ॥ विषयमेंपिछेकेरनसोइ॥८०॥
दोहा॥ जोगजोगपआसनविषे॥ मुनिबेठतसमकाय॥ भ्रकुटिमध्यनिजनासकी॥ तहांसोद्रगठेराय॥८१॥
नासाभितरचलतहे॥ प्राणअपानजोवाय॥ स्वासउस्वासकुंसमकरत॥ एहीविधिध्यानलगाय॥८२॥ चोपाई॥
आत्मदर्शविनअन्यमेंजेहा॥ मनइंद्रिबुधिरोकतनेहा॥ गयेहेजासभयइछाक्रोधा॥ एसोजेहिउरअचलप्रबो
धा॥८३॥ मोक्षकोअचलप्रयोजनजाही॥ तेहिविनओरनइछाताही॥ एहीविधिरहतहेमुनिवरजोइ॥ सबही
कालमेंमुक्तहेसोई॥८४॥ जज्ञरुतपकोभुक्ताजेऊं॥ सबहिलोकपतिकोपतितेऊं॥ सबहीलोककेइश्वरजोउ

तिनकोअधिकमहेश्वरसोउ॥८५॥ याजगसबहीप्राणिकेवृंदा॥ सबकोसुहृदहरनभवफंदा॥ एसोमोयजा
नितसुखकारी॥ परमशांतिसोयपावतभारी॥८६॥ दोहा॥ युंमेरेहद्रजोनसे॥ होतसबहीअघनाश॥ परमशां
तिकुंपावही॥ सोइअनन्यममदास॥८७॥ ममस्वरूपकोजांनजेही॥ ताहीनबंधनलेश॥ मुक्तानंदकेनाथइमी
दियोसमस्तउपदेश॥८८॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमु
क्तानंदमुनिविरचितभगवद्गीताटिकायांसंन्यासयोगोनामपंचमोऽध्यायः॥५॥ चोपाई॥ साधनसामर्थी
कहतजेहा॥ कर्मजोगसबविधिकह्योतेहा॥ ज्ञानरुकर्मजोगकहिजेही॥ सिद्धहोतेसुखदायकतेही॥१॥ आ
तमकुंअवलोकनरुपा॥ कहुंअबजोगअभ्यासअनुपा॥ जेहीसुनिजोगकोविधिहेजेऊं॥ साधकजांनिलें
तसबतेऊं॥ श्रीभगवानुवाच॥ कहेश्रीकृष्णसुनुअर्जुनबाना॥ कर्मकेफलस्वरगादिकनाना॥ तिनकि
इछात्यागीजोई॥ करनेजोगपकर्मकरेसोई॥३॥ सोसंन्यासिजोगिजांनो॥ जांनजोगकहततातहीप्रमांनो॥ कर्मजो
गनिष्टाकहतजोउं॥ आतमअवलोकनरतसोउ॥४॥ दोहा॥ साधनआतमदर्शके॥ ज्ञानजोगअरुकर्म॥
उभयमेंनिष्टावानहे॥ जांनिअलोकिकमर्म॥५॥ जज्ञादिकसुभकर्मसब॥ करनेजोगपहेजोय॥ सुभकर्मनतसें

अंतिमें॥ कबहुंनत्यागतसोय॥६॥सोरठा॥ ज्ञांनक्रियाजेहुं॥ केवलताकोबलनजेही॥ कर्मजोगरततेहुं
उभयकोबलउरमेंरखत॥७॥चोपाई॥ हेपांडुसुतजोमुनिज्ञांनि॥ लियोहेजथारथआतमज्ञांनी॥ सोजेही
ज्ञानजोगकहेधिरा॥ कर्मजोगसोईजानुप्रविरा॥८॥ आतमअनुसंधानमेंजेही॥ ननअभिमांनतसोमयुते
ही॥ ननअहंतानजिसोसंन्यासी॥ तेहिबिनअनसबतनअभ्यासी॥९॥ तातेंप्रथमकथेहेंजेहा॥ करमजोगी
जांनोसबतेहा॥ निनमहीतनअभिमांनीजोई॥ जोगीहोननपावतसोई॥१०॥ जोगिआतमदरसाचहेजबहुं॥
करमजोगतेहीकारनतबहुं॥ करमजोगकुंसाधतजेउ॥ आतमदरसनपावततेउ॥११॥दोहा॥ जोगारुढ
जोहोतहे॥ अचलसमाधिपाय॥ समतेहीकारनताहीनें॥ त्यागतअनसबउपाय॥१२॥सोरठा॥ जिवातमको
जोय॥ जबलगिदरसनहोतनहीं॥ तोलुकरमकरेसोय॥ तापीछेसमताग्रहत॥१३॥चोपाई॥ तमयुंकही
समाधिकबहोई॥ याकोमरमबताउंतोई॥ जबयहकरमजोगीहेजेहा॥ आतमअनुभवकरीकेंतेहा॥१४
पांचनपंचविषेहेजेही॥ पंचइंद्रीकेकरमहेतेही॥ विषयइंद्रिसंअधिकअसंगा॥ दोउकेसंगकोत्यागअ
संगा॥१५॥सबहीमनोरथकिनेतत्यागा॥ एसोजोगीअधिकबडभागा॥ जोगारूढकहतहेजाई॥ अचल

समाधिपामभईताही॥१६॥ विषयकिआसाक्तिबिनजेहुं॥ एसेंमनकरिकेंनरतेहुं॥ निजआतमकोकर
तउधारा॥ जेहीविधिउरतकहउंअपारा॥१७॥दोहा॥ विषयमेंप्रितिबांधिके॥ निजजिवातमजेहुं॥ ता
हिसंसारसमुद्रमें॥ बोरितडारततेहुं॥१८॥ तातेंनिजमनमित्रहे॥ महारिपुनिजमनसोय॥ मित्रशत्रुसंसार
में॥ औरनदुजाकोय॥१९॥चोपाई॥ निजप्रतापकरिनिजमनजेहा॥ विषयसेंफेरकेजितनतेहा॥ सोमन
ताहीकोबंधहोई॥ बिनजितेशत्रुहेसोई॥२०॥ सितउशनसुखदुखहेजेही॥ मांनअरुअपमांनहेतेही॥ इ
नमहीनिरविकारमनजेहुं॥ परमप्रसांनकहावततेहुं॥२१॥ ताहाकेंमनमहीहोतप्रकासा॥ परमातमतहां
करतनिवासा॥ परमातमसोजीवकोरुपा॥ निजस्वरुपकरिरहतअनुपा॥२२॥ इहांपरमातमयाह्येहेजोउ॥ जी
वकोरुपकह्योहेसोउ॥ जिवहीकोएहीजांनिप्रसंगा॥ परमातमसोजीवसबधअंगा॥२३॥दोहा॥ ज्ञांनजो
आत्मस्वरुपको॥ अनुभवसोविज्ञांन॥ तिनकरितृप्तहेजासमन॥ सोमुनिपरमसुजांन॥२४॥चोपाई॥ दे
हादिककीआसक्तित्याजेही॥ तिनमहीकबहुंनबरततनतेही॥ आतमस्वरुपरहतनितएहा॥ जिसोअधिकइं
द्रिजितेहा॥२५॥ कंचनकिचपाषानसमांना॥ एसोजोगिकहतसुजांना॥ आतमदरसनजोगपहेसोइ॥ तेही

समसाधक और न कोई ॥२६॥ क्रूर दसो मग में सम मंधि जे कुं ॥ अपनि वैरी वा मित्र हे ते कुं ॥ कोऊ कुं निमित्त करी अ
नरथ चावे ॥ एसो सोइ निजशत्रु कहावे ॥२७॥ उदासिन सुभ अशुभ मन करही ॥ उभय कें वाद विचन दीप रही ॥
मध्य सो उभय विवादन जवही ॥ उभय कों हान इच्छत सो तव ही ॥२८॥ दोहा ॥ जन्म से निजहित वांछही ॥ बंध
कहावत ते कुं ॥ धरमवान सोइ साधु है ॥ अघ जक्त न पापि एकुं ॥२९॥ इन सब हो न में सम मत ॥ रहत निरंतर जो ए
आत्म दर्श अभ्यास में ॥ अति विशिष्ट है सो ए ॥३०॥ चौपाई ॥ सदा रहत एकांकि जे ही ॥ जित लिये चित्त अरु
मन तेही ॥ आत्म अभ्यास विना अन्य जे कुं ॥ तिन में अपेक्षा रहा न है ते कुं ॥३१॥ आत्म अभ्यास विना अन्य जे
कुं ॥ तिन में ममता करत न सो तुं ॥ करे जो कर्म त हां निशा भारी ॥ एसो जोगि अधिक अविचारी ॥३२॥ दिवस
दिवस प्रवृत्ति करत अभ्यासा ॥ राखत अति एकांत में वासा ॥ जेहि विधि आतम दरशन होइ ॥ सुं अनिक अ
करत है सोइ ॥३३॥ अधिक पवित्र देश मही एहा ॥ निज आसन थीर करत है तेहा ॥ अति उच्च अति निचा नं
हि ॥ दर्भ मृग चरम रु वस्त्र बिछा ही ॥३४॥ दोहा ॥ अंतःकरण कि शुद्धि कुं ॥ करत है आसन जे कुं ॥ तेही प्रका
र सब विधि सहीत ॥ करि के आसन ते कुं ॥३५॥ चौपाई ॥ सो आसन पर बैठ के जे कुं ॥ मन एकाग्र ह करत है ते कुं

चित इंद्रिन कि क्रिया सब जेहा ॥ जिति के विषय सें फेरत तेही ॥३६॥ एसो जोगी कहावत जोई ॥ निज बंधन मेट
नहीं त सोई ॥ जोग जो आतम दरशन रूपा ॥ करत है सब विधि परम अनूपा ॥३७॥ देह रूप शिरा कंधरा जोउ
तिन कुं सम मान अचल करि सोउ ॥ थिर होय दृष्टि दिशि देखत नांही ॥ निज नासाग्र दृष्टि वहरा ही ॥३८॥ परम प्रसं
न सदा मन जाही ॥ रागादिक उपाग न ही ताही ॥ भय संका विन वरतत जेहा ॥ ब्रह्मचर्य व्रत राखत तेहा ॥३९॥
दोहा ॥ मन कुं नियम में राखिके ॥ चित्त अरपत मो मांही ॥ सावधान मम जन सदा ॥ मो विन अन्य प्रिय नांही ॥४०॥
सोरठा ॥ ताकुं मो विन कोउ ॥ परम प्राप्ति को वां मन ही ॥ मोय भजत निज सोउ ॥ सुं जोगि आनंद करत ॥४१॥ चौपा
ई ॥ मैं पुरुषोत्तम परिब्रह्म जे ऊ ॥ आश्रय करत जोग पुनि तेतेकुं ॥ सो मो में मन जोरत जेही ॥ अति निश्चल मन जुं
न मुनि तेही ॥४२॥ एसो महामुनि जोगि जेही ॥ मो में रहत निरंतर तेही ॥ परम सांति कुं पावत सोई ॥ तेही सम सा
धक और न कोई ॥४३॥ आत्म जोग युं करत है जे तुं ॥ मन निश्चल को हेतु सोउ ॥ सो प्रभु में मन थिर रहे जे सें ॥ जो
ग के साधन कहत है ते सें ॥४४॥ अधिक जिमत अति निज मत जवकुं ॥ जोग विरोधि उभय विधि तबकुं ॥ अ
धिक अहार करत न रजोई ॥ तिन सें जोग सिद्धि नहीं होइ ॥४५॥ दोहा ॥ अति शैन अन नहि रखात जो ॥ तिन सें

जोग न होय ॥ अधिक अहार विहार करन ॥ जोग के जोग्य न सोय ॥ ४६ ॥ चोपाई ॥ अति निंद्रा अति जागन जेही
अति निद्रा स अति निन करत हे हो ॥ ए सब जोग विरोधि जानी ॥ अरु कन कम करही मुनि ज्ञानी ॥ ४७ ॥ अति
सो हल स्वभाव वश्य पजे हा ॥ जोग कुं साधन जोग्य न तेहा ॥ अति मित जागन रहे मित जोउ ॥ जोग कुं साधन जोग्य न
सोउ ॥ ४८ ॥ कलक अहार विहार हे जाकुं ॥ कल क प्रयास कर्म मही ताकुं ॥ कल हे सुपन जागरण जाही ॥ एसो
जोगि अचल मति ताही ॥ ४९ ॥ सब ही दुख हरता हे जेऊं ॥ एसो जोग करत बनते ऊ ॥ सिद्ध होत मुनिवर कुं सो
ई ॥ जोग में विघन न व्यापत कोइ ॥ ५० ॥ दोहा ॥ अम प्रयोजन सागि के ॥ चित अति निरमल जेऊ ॥ सो आ
तम में स्थिर रहे ॥ चंचल होन न नेऊं ॥ ५१ ॥ सब ही काम से निस्पृही ॥ एसो जोगि जो य ॥ अधिक समाधि निष्ठ
जो ॥ कलक हाव न सो य ॥ ५२ ॥ चोपाई ॥ वायु रहित थल होव ही जेऊं ॥ तिन मही दिप धरत हे तेऊं ॥ अधी
क अचल रहे दिपक ने हा ॥ अधिक कां तिकन वरनत एहा ॥ ५३ ॥ मन कि अन्य वासना जेता ॥ नास भइ सु
व ही विधि तेता ॥ आत्म जोग करत जो गी जेही ॥ तास आत्म उपमा कहा एही ॥ ५४ ॥ जोग कि सेवा करत हे
जोउं ॥ ताते निरोध भयो चित सोउ ॥ जो गहा मे अति शक्रख जानी ॥ एही विधि जोगज कऊ जो पानी ॥ ५५ ॥ जो

ग विषे मन राखत जोई ॥ ताको मन अति निरमल होई ॥ जिवात्म कुं देखत जेहा ॥ तेहि उर रहत न कछुं संदेह
५६ ॥ दोहा ॥ अन्य इच्छा सें रहित हे ॥ जोगि परम सुजान ॥ आत्म विषे संतोष सो ॥ पावत पद निरवान ॥ ५७ ॥
चोपाई ॥ अधिक अगोचर सुख हे जोई ॥ सो इंद्रिन सें ग्रहण न होई ॥ आतम बुद्धि कहा वत जे हा ॥ तिन करि
ग्रहण होत हे तेहा ॥ ५८ ॥ एसो अति ही अधिक सुख जेऊं ॥ जोग विषे मुनि पावत तेऊं ॥ जोग के सुख में
रहत हे जेही ॥ अन्य पदारथ करि कुं नेही ॥ ५९ ॥ तत्व में चलत न मुनिवर सोउ ॥ ताकुं विघन न व्यापत को
उ ॥ सो महा सुख सें इगत न एहा ॥ तिन में लेश नहीं संदेहा ॥ ६० ॥ जेही जोग कुं पाय के सोइ ॥ जोग ही कुं इ
छत निरमोई ॥ जोग से और लाभ हे जेउ ॥ मुनिवर अधिक गिनत न हो तेउ ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ जेही जोग में स्थी
त भयो ॥ सद्गुरु के उपदेश ॥ महा दुख हुं के जोग में ॥ चलत नहीं लव लेश ॥ ६२ ॥ चोपाई ॥ जिन में दुख को
लेश न कोइ ॥ जोग ग्राह्य करि कहत हे जोई ॥ एसे ज्ञान के जानत जेहा ॥ ताहि विधि जोगि कहावत तेहा ॥ ६३ ॥
जोग के साधन करत हे जब ही ॥ मन में उदासी राखत तब ही ॥ जोग कुं साधन जोग्य सु जोउ ॥ ताकुं संशे रहत
न कोउं ॥ ६४ ॥ सप्रस से जो उदय भये कामा ॥ सिन रूप अन्य आदिक सुख धामा ॥ सुं संकल्प सें काम हे जेऊं ॥

पुत्रपौत्रक्षेत्रादिकतेऊं ॥ ६५ ॥ ए सबकामकहावतजेता ॥ सबविधिमनकरि त्यागिकेंतेता ॥ विषैमात्रइंद्री
गणजेही ॥ तिनमेंकरिकें सबहीविधिनेरी ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ धीरजकरिकेंजोग्रही ॥ बुधिविवेकजुतसोय ॥ ती
नकरिविषयसेंफेरिकें ॥ मनकुंजीततजोय ॥ ६७ ॥ सोमनकुंआतमविषे ॥ रहततथुकरतप्रवीन ॥ पिछेकाऊं
पदार्थकुं ॥ भजततनहीहोयदीन ॥ ६८ ॥ चोपाई ॥ चपलस्वभावमेंअस्थीरएहा ॥ विषयमेंदौरतकरि
नेहा ॥ सोमनविषयसेंफेरकेंज्ञानी ॥ आत्मवीषेवसपरावतध्यानी ॥ ६९ ॥ आत्मस्वरुपकहावतजेही ॥ ती
नमहीअतिप्रशांतमननेही ॥ अतिप्रशांतरजोगुणजाके ॥ सबरीपापभसमभयेताके ॥ ७० ॥ ब्रह्मरुपवरत
तमुंनिजोई ॥ आत्मस्वरुपभयोहरसोई ॥ एहीविधिआत्मरुपभयोजेऊ ॥ अतिउत्तमसुखपावततेऊं ॥ ७१
एहीविधिआतमजोडतजबही ॥ पुरवजनमअघनासतसबही ॥ ब्रह्मप्राप्तिमयअतिसुखजोउ ॥ सुख
करीपावतजोगीसोउ ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ अबयहजोगकिचतुर्विध ॥ पक्षरच्याहेजेऊं ॥ सबहीभांतिसंक्षेपसें
बरनिकहततहेतेऊं ॥ ७३ ॥ चोपाई ॥ मायाकेसंबंधविनएही ॥ सबहीआतमावरततजेही ॥ तिनमेंसत्तारु
पसेंज्ञानी ॥ समदरशीवरततमुनिध्यानी ॥ ७४ ॥ जिवरुपनिजआतमजेहा ॥ सबहीकेजिवात्महेतेहा ॥

सत्तारुपसेंसमलखितेऊं ॥ समदरशनसोजोगजुतजेऊं ॥ ७५ ॥ अतिनिरमलनिजआतमजेऊं ॥ सबही
मेंव्यापकदेखततेऊं ॥ जगमहीप्राणीमात्रहेजेता ॥ निजआतममहीदेखततेता ॥ ७६ ॥ सत्तारुपसेंदेख
तजबही ॥ सबप्राणीसमतत्त्वहेतबही ॥ ताहीतेंजिवातमहेजोइ ॥ एककुंदेखिलखतसबसोइ ॥ ७७ ॥
दोहा ॥ सबहीप्राणिकेंआतमा ॥ ममआतमसमएऊं ॥ सबहीभुतप्राणीविषे ॥ मुंसमदेखततेऊं ॥ ७८
चोपाई ॥ तिनहीसेंपक्षदव्यादेएहा ॥ प्राप्तभयोसोइजोगीजेहा ॥ सोममसमतापायोजबही ॥ पापरुपुन्य
गयेसबतबही ॥ ७९ ॥ सबहीआत्मनिजरुपहेजेऊं ॥ सोममसबहीकुंदेखततेऊं ॥ सबहीआत्मवस्त
हेजोइ ॥ तिनमहीमोकुंदेखतसोइ ॥ ८० ॥ सबहीआत्मवस्तहेजेही ॥ ममस्वरुपमहीदेखततेही ॥ निजआ
तमकुंदेखतजोउ ॥ समदरशीजोगीहेसोउ ॥ ८१ ॥ तेहीममसेंमेंअतिसुखकारी ॥ नांहीअदरस्यानहोकुंवीचा
रि ॥ जोगीमोयविलोकतजोउ ॥ सोममआतमदेखततेउ ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ मोकुंममसमजीवकुं ॥ जोगिनिरख
तजोय ॥ नांहीअदरश्यनहोतहे ॥ नासमनपांमेसोय ॥ ८३ ॥ चोपाई ॥ अबइनसेंअतिपक्षहेजेहा ॥ उत्तम
दरशाकहतहेतेहा ॥ सबहीभुतप्राणिहेएऊं ॥ तिनमेंव्यापीरह्योमेंजेऊं ॥ ८४ ॥ प्राकृतभेदकोकरीपरित्यागा

एकहीभावमेंस्थितवडभागा॥ एहिविधिमोयभजतहेजेही॥ ध्यानजोगकतजोगितेही॥८५॥ ध्यानमेंनिज
आतमकुंदेखे॥ अथवासबहीप्राणीकुंपेखे॥ एहीविधिसुंसुखरततजोउ॥ तदपिमोमहीवर्त्तनसोउ॥
८६॥ सुंजोगिनिजआतमममांही॥ मोविनदुजादेखतनांही॥ सुसबप्राणिमात्रहेजेउ॥ सबमहीमोहीकुंदेख
ततेउ॥८७॥ दोहा॥ निजआतमसबप्राणिके॥ भिनभिनआतमजोउ॥ मेरेहीआकारसम॥ सदावीलो
कतसोउ॥८८॥ चोपाई॥ अवइनकुंसेंपक्षहेजोई॥ जोगदृष्टावर्नतहेसोई॥ निरमलनिजआतमहेजेही
सवहिप्राणिकेचेतनतेही॥८९॥ सत्तारूपमेसमकरिदेखे॥ भिन्नभावकरीकवहुनपेखे॥ ताहीनेंआपमें
वरततजेहा॥ सवप्राणिमहीवरततनतेहा॥९०॥ पुत्रकेजन्मादिकसुखजेऊं॥ पुत्रकेमरणआदिदुखत
ऊं॥ सवहासमंधकुंसमताजानी॥ समदेखतजोगिवीग्यानी॥९१॥ हेअर्जुनतुमएसेजानो॥ एसेजोगी
अधिकप्रमानो॥ जोगकिपक्कदशाहेजोउं॥ परमभयोमांमोहमसोउ॥९२॥ अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ अर
जुनपुछतजोरिकर॥ कहुंतुमकृष्णदयाल॥ जिवईनाकरनरअसकर॥ भेदप्रबलसाक्षात॥९३॥ चोपाई॥
एसबभिनभिनवरततसोई॥ बहुकालसेंजानेसोइ॥ एसेंसबजीवातमजेहा॥ समतारुपसेंवरततनतेहा॥९४ ॥४२॥

सोअकर्मवरुपकेहीविधिजानुं॥ जिवईनाकिमीतकप्रमांनु॥ समदरशनरुपीहेजेऊं॥ प्रभुतुमजोगकह्यो
मोयतेऊं॥९५॥ तसुंथीरजोगरहेउरमांई॥ सोमोकुंद्रभांसतनांई॥ मनकीचंचलताअतिभारी॥ तानेंदरसुंदे
वमोराही॥९६॥ कंनकुंश्रीहृष्मविषेक्षखजेही॥ वहुतकालअभ्यासेंतेही॥ सहजस्वभाविकमनकिरानी॥
अतिचंचलविषयनसेंप्रिनि॥९७॥ दोहा॥ क्षोभकरतदेइंद्रीकुं॥ मनकोएहीस्वभाव॥ अतिबलकृतएक
वेरतेही॥ रोखनकोनहीदाव॥९८॥ सोरठा॥ महजस्वभाविकजोय॥ विकलकरतसबइंद्रिगए॥ पुरुषसेंव
मनहीहोय॥ अधिकचपलबलवंतमन॥९९॥ चोपाई॥ विषयकेघाटहजारुंजेहा॥ अतिदृढभेदनजो
गपनतेही॥ एसोअधिकप्रबलमनजेहा॥ मुक्केभोगमेंचचलतेहा॥१००॥ सोमनविषयसेंफीरिकेल्यावे॥
आत्मस्वरुपमेंताहीलगावे॥ एहीविधिमनकोनिग्रहहोइ॥ अतिदुष्करअतिदुर्लभसोइ॥१०१॥ अधी
कप्रबलवायुसुंहोवे॥ पंखाकरतेहीपिछादेवे॥ तसुंमनविषयमेंरोकनजेऊं॥ अतिदुष्करमांनुमेंतेऊं॥१०२
तातेप्रभुतुमजननसुखदांनि॥ मोयसदानिजसेवकजांनी॥ मनवसकरनउपायहेजोउं॥ कृपाकिंकृसबवी
धिकहोमोउं॥१०३॥ श्रीभगवानुवाच॥ दोहा॥ कहेश्रीहरसमकुंतुकुंनिकत॥ सहजचपलमनजोउ॥ ता

तेनिग्रहअतिकठिन ॥ नहोंनसंशयकोउ ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ तदपिआत्मानिरगुनजांनि ॥ तेहीअभ्यासक
रनमुनिग्यांनि ॥ आतमविनअन्यविषयहैजेऊं ॥ रोकहृदैकरिदेखतनेउं ॥ १०५ ॥ सुंवैराग्यसेंरोकनजोइ ॥
कछुकयहरागहितमसमयसोई ॥ ताहिविनअन्यउपायनहीकोउ ॥ सबविधिजांनिलेऊंतुमसोउ ॥ १०६ ॥ जिन
अपनांमनजिसानांही ॥ ताकेंपुरुषअनंतजगमांही ॥ अतिबलकरीकेंजोगहैजेऊं ॥ उरवहासेंपावंतमममम
निरऊं ॥ १०७ ॥ प्रथमहीवरनिकह्योमेंजेहा ॥ ममआराधनरूपहैतेहा ॥ सोउपायसेंमनवशपावें ॥ सोसम
मदर्शनजोगकुंपावें ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ ममचिंतनमनजिनिकें ॥ जोगिलतपरहोय ॥ समदर्शनयहजोगकुं ॥
पावनजोगयहेसोय ॥ १०९ ॥ अर्जुनउवाच ॥ चौपाई ॥ कहेअर्जुनसुंनुहृदममोरारी ॥ जोनरश्रद्धाजुक्तहेभा
रि ॥ सोश्रद्धाकरिजोगमेंधारी ॥ करतप्रवेशसोमनचलजांनी ॥ ११० ॥ अतिदृढजोगअभ्यासहैजेही ॥ ताही
करनअतिसिथिलतेही ॥ जोगकिसिद्धीनपावतजबही ॥ जोगमेंचंचलतातामनतबही ॥ १११ ॥ एसोपुरुष
जोगरतजोइ ॥ कवनगतीपावतप्रभुसोई ॥ सोमनयहसंशयअतिभारी ॥ ताहितुंछेदेवमोरारि ॥ ११२ ॥
कंनऊं श्रीकृष्णमहाभुजागहा ॥ उभयविभ्रष्टभयोनरजेहा ॥ महापवनसेंविछडयोजेऊं ॥ बदराअल्पभिन्नर

ह्योनेऊं ॥ ११३ ॥ छंदः ॥ बादरअलपरह्योभिंनसोमहाघराकुंपावतनही ॥ सोनासपावतविचमेंसुंसोउक्या
नासतनही ॥ सोउभयभ्रष्टहैयाहितेस्वर्गादिसाधनजोयजुं ॥ कियोकभकर्मकोत्यागतातेंभ्रष्टकहावतसोय ॥
ऊ ॥ ११४ ॥ दोहा ॥ फलस्वर्गादिकरूपकुं ॥ नहीपावतनरसोय ॥ यातेंताकिस्वरगमें ॥ नांहिप्रतिष्ठाहोय ॥ ११५
ब्रह्मकेमारगमेंभयो ॥ अतिविमूढनरजेऊं ॥ तातेंलेज्ञानपावही ॥ निजआतमफलनतेऊं ॥ ११६ ॥ चौपाई ॥ उ
भयविभ्रष्टभयोहैजेऊं ॥ नासहिकुंपावनकहातेऊं ॥ किनदीनाशकुंपावतएहा ॥ याकोमोयपरमसंदेहा ॥ ११७
मबहीभांतितुमदेवमोरारी ॥ संशयछेदनजोगप्रभुभारी ॥ एकहीकालसबहिजगजेही ॥ प्रभुप्रत्यक्षतुमदेखत
तेही ॥ ११८ ॥ एसेंतुमविनदुजोजोउ ॥ यहसंशयछेदननहीकोउ ॥ तातेंमोयकहोजगस्वामी ॥ संशयछेदक
रोवऊंनामी ॥ ११९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कहेश्रीकृष्णसुंनुपारथमाता ॥ जोगाभ्यासकरतजोताता ॥ जोग
सेंगिरयोविविधिहितजोउ ॥ एसोकाउपुरुषहैनेउ ॥ १२० ॥ दोहा ॥ स्वरगादिककेभोगमें ॥ ब्रह्मकेरुखमहीए
ऊं ॥ उभयवीरअभिलाषप्रस ॥ नाशनपावततेऊं ॥ १२१ ॥ जानिअतिकल्यांनमय ॥ जोगकुंसाधनजोइ ॥ एसे
नरतिऊंकालमें ॥ दुरगतिलहतनकोय ॥ १२२ ॥ चौपाई ॥ तुमसुंकहोंसोनरसाक्षाता ॥ कबुंहोवतनेतेहिकऊंतोयवा

ना॥ जेहिभोगइछामेंरही॥ जोगमेंगिरयोतुछहोनेहि॥१२३॥ नवऊतिपुन्यवानहेंजोइ॥ तिनकेंलोककुंपाव
तसोइ॥ मनवांछीतसुखभोगहेजेहा॥ जोगकेवलसेंभूकततेहा॥१२४॥ जबलगित्रसापुरनहोई॥ तोलुंबं
कुलवरषचिलषोई॥ देवादिककेलोकमेंरहही॥ विषयसमंधिभोगसुखलहही॥१२५॥ भोगकिनत्रसापुरन
जबही॥ सुचीश्रीमंतग्रहआवतबही॥ जोगाभ्यासजोगहेंजेउ॥ तिनकेंघरमहीजनमनतेउ॥१२६॥ दोहा
जोगभ्रष्टइमिजोगके॥ माहात्ममममेंवखान॥ जोगअभ्यासकेंजोगपमें॥ प्रगटतपरमकुजान॥१२७॥ चौपा
ई॥ एककजोगमेंगिरतहेजेहा॥ अतिउत्तमकुलप्रगटतेहा॥ जोगिजोगकरतहेजेऊं॥ बुधिवंतजोगवना
वततेऊं॥१२८॥ तिनकेंकुलमहीजन्मकुंपावे॥ एदोउजन्मसोश्रेष्टकहावे॥ याजगपाकेंतमनुष्यहेजेही॥
उभयजन्मअतिदुलभतेही॥१२९॥ हेकुरुनंदनजोगिसोइ॥ तेहीजन्ममेंतनपरहोइ॥ पुरवदेहमेंकिनोजोउ
जोगाभ्यासबुद्धिलहेसोउ॥१३०॥ अंसुकोउपसोयकेजागतजबही॥ निजअभ्यासकरतमांतबही॥ सुंजोगि
अन्यदेहमेंजावे॥ जोगाभ्यासनभुलनपावे॥१३१॥ दोहा॥ जोगभ्रष्टकेउरविषे॥ अतसंउरहतवैराग॥ असु
कोउविघननहोयसुं॥ जतनकरतबडभाग॥१३२॥ चौपाई॥ जोगाभ्याससपुरवकोजोइ॥ जोगभ्रष्टकुंखेंचत

सोई॥ अतिवेगेपरवसहोयकेंरही॥ जोगहीमेंजोरागनहेतेही॥१३३॥ ज्ञाननकिइछाहेजोउं॥ शब्दब्रह्मउलंघ
तसोउ॥ वेदमंतुष्यादिकहेजेऊं॥ शब्दमेंकहतनकेंजोगपहेतेऊं॥१३४॥ मायाकोकारजहेजेही॥ ताहीनलं
घिकेंवरततेही॥ तातेजोगभ्रष्टवडभागी॥ अतिवलवंतजोगअनुरागी॥१३५॥ याहितेजोगकोमातम
भारी॥ ताहितेंसबकोयकरतविचारी॥ अनंतजन्ममहीकिनेजेहा॥ पुन्यपुंजकरिसिधभयोतेहा॥१३६॥
दोहा॥ सबहीभांतिगयेपापजेहा॥ अतिप्रयत्नसेंसोय॥ जतनकरतहेजोगकी॥ असुकोउविघननहोय॥१३७
सोरठा॥ भयोजोगमेंश्रेष्ट॥ तदपिजन्मसमहोतनही॥ लहतदशाउतकृष्ट॥ परमगतिपावतअचल॥१३८
चौपाई॥ मोक्षमेंनिष्ठाअतिसेजेही॥ अधिकसबहीमेंजोगीतेही॥ जोकेवलतपजोरविचारी॥ पुरुषारथ
साधनहेभारी॥१३९॥ केवलवचनसेंग्यानिजेऊं॥ केवलजज्ञादिकरततेऊं॥ सबहीसेंअधिकहेजोगीसो
उ॥ ताहितेंअरजुनजोगिहोउ॥१४०॥ मोमेंअनन्यभावहइजोई॥ एसेनिरमलमनकरिसोइ॥ भजतमोयना
रायणजोनी॥ पुर्णपुरुषोत्तमपहीचानि॥१४१॥ पिंडवत्यांउसंममतात्यागी॥ सुंमोयभजतपरमवडभागी॥
सबहीजोगिसेंमुनिवरएहा॥ अधिकश्रेष्टमोंहुमेंतेहा॥१४२॥ दोहा॥ तपसिआदिकजोगिसब॥ इनअ

गेकछुंनांही॥ औरकुंगहीममकोउनही॥ युंमोंनुंमनमोंहि॥४३॥ ममस्वरूपमेंमनमद॥ प्रेममगनमुनिजोई
मुक्कानंदकौनाथकहे॥ मोयअधिकप्रियसोइ॥४४॥ इतिश्रीभगवद्गीताऊपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोग
शास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमुक्कानंदमुनिविरचितभगवद्गीताटिकायांआत्मसंयमयोगोनामषष्ठोऽध्या
यः॥ ६ ॥चोपाइ॥ पृथमकेछअध्यायहेजेहा॥ तिनकरिकहोवस्तुअबतेहा॥ मिलनजोग्यपरब्रह्म
हेजोई॥ अतिशुध्धसबजगकारनसोई॥ १॥ सबहीजानसमर्थकल्यस्वामी॥ श्रीनारायणअंतरजामी॥
तिनकुंमिलनउपायहेजेही॥ इष्टउपासनतेजानकुंतेही॥ २॥ ताहीकुहनहितपरमअनूपा॥ तेहिउपासना
अंगस्वरूपा॥ आतमज्ञानसहीतअघहारी॥ करनाकरमपरमफलकारी॥ ३॥ करमकियेसेंशुधमनसो
उ॥ पावनहारजीवातमजोउ॥ तासजथारथदरसनजेऊ॥ पृथमषटकमहीवरन्योतेऊ॥ ४ ॥दोहा॥ अ
बमध्यषटअध्यायमें॥ परमेश्वरपरब्रह्म॥ तासरूपनेहिभक्तिको॥ बरनुंजथारथमर्म॥ ५॥सोरठा॥ श्री
नारायणदेव॥ तासउपासनभक्तिसोइ॥ भेदनभवतनसेव॥ सोवरनुंअबसबविधि॥ ६ ॥चोपाई॥ म
ध्यमषटककहावतनेही॥ तिनमहिममअधाजेही॥ तिनमेंउपासनंजोग्यहेजेहा॥ परमपुरुषनाराय

णतेहा॥ ६॥ तासस्वरूपजथार्थजोई॥ मायाकरिभासतनहीसोई॥ सोमायामेरतहितजंता॥ हरिविमुखमाग
तहोतअनंता॥ ८॥ सुंहीउपासककेचउभेदा॥ ज्ञानिश्रेष्टतेहिभक्तिअभेदा॥ यहसबवातजोवरनीकंता
ई॥ तासभक्तिसबदेकुवताइ॥ ९ ॥श्रीभगवानुवाच॥ हेपारथतुमनिजमनजेही॥ ममस्वरूपमहीबांध्योतेऊं
एकहीममआधारहेभागी॥ जोरतहोममजोगविचारी॥ १० ॥दोहा॥ सोतुमयहममजोगकरी॥ ध्यानजोग्य
मेंजोय॥ सबविधिसंसयरहीतजेही॥ ज्ञानमेंजानिहोसोय॥ ११॥ सोरठा॥ सोइज्ञानफलस्वरूप॥ सावधानम
नकैकंअब॥ बरनुंपरमअनूप॥ मोहजनितसंशयहरन॥ १२ ॥चोपाई॥ ममस्वरूपकोज्ञानहेजेता॥
कहीहुंतोयविज्ञानसमेता॥ अबकहाबोतकहेसेंहोई॥ परमरहस्यममकहावतसोइ॥ १३॥ जेहीज्ञानकुंजानि
बिना॥ पुनिकछुज्ञाननरहतअचीना॥ सोमहीजाननजोग्यअशेषा॥ तिनमहीसंशयरहतनलेशा॥ १४
अबकहीहेजोज्ञानअनुपा॥ ताकोदुइभकहतस्वरूपा॥ शास्त्रनकेअधिकारिजोई॥ तासेमनुष्यहजारुमेंसो
ई॥ १५॥ तिनमहीकोउसोद्धिहितमानि॥ जतनकरतहेफलवपूरदजानि॥ सिद्धीलहुंजतनकरतहेजोउ॥ तिनकेद
जारुंकेमध्यकोउ॥ १६ ॥दोहा॥ मोयजानिकेसिद्धिहीन॥ जतनकरतहेजोइ॥ तसेहजारुमेंसोई॥ जानेज

धारय कोई ॥१७॥ चौपाई ॥ नानाविधि रही भोग हे जेता ॥ भोग जोग पुनि प्रकरण हे तेता ॥ भोग के थान कहुं वि-
धि जेही ॥ तिन करि सूक्ष जगत सब गही ॥१८॥ तेही कारण माया हे जेऊं ॥ गंधादिक गुण जिन मही तेऊं ॥ भूज
ल अनल वायु आकासा ॥ मन बुद्धि आदिक इंद्रि प्रकासा ॥१९॥ अरु महतत्व अहंकार हे जोई ॥ अष्ट प्रकार प्र
कृति भई सोई ॥ सो यह माया मेरि अख्याता ॥ सब विधि जांनि लेउ साक्षाता ॥२०॥ यह मम अपरा प्रकृती प्रमांनो
इन में भिन और कुं जांनो ॥ अधिक विज्ञानिय जेहि आकारा ॥ परा प्रकृती मम अधिक उदारा ॥२१॥ दोहा ॥
जीव रूप करि कें कही ॥ परा प्रकृति तिनेही नाम ॥ हे माहाभूज सो तुम मेरि हे ॥ जांनि लेऊं गुणधाम ॥२२॥ सोरठा ॥
अधिक अचेतन रुप ॥ थिर चर यह संसार सब ॥ चेतन प्रकृती अनूपा ॥ तिन करि धास्यो जगत सब ॥२३॥ चौ
पाई ॥ जउ चेतन प्रकृती मम दोई ॥ उदय को कारण सब कुं सोई ॥ ताही विधि प्राणीमात्र जगजेता ॥ मम दोउ मा
यासि भए तेता ॥२४॥ ताते प्राणिमात्र मम जांनो ॥ अरु दोउ प्रकृती हे तुम मोय मांनो ॥ ताते सब जग मम आधारा ॥
मे ही जगत उपजावनहारा ॥२५॥ प्रलय को कारन कुं अघहारी ॥ ओर परकुं में अजन्म अविकारी ॥ ताही विधि तु
म जांनकुं बुद्धिवंता ॥ मम स्वरुप को आदि न अंता ॥२६॥ अरु जग हे तत्व प्रबल नि दोउ भारी ॥ मे दोउ प्रकृति हे तुम अ ॥४६॥

विकारी ॥ सब ही अचेतन पर चिद रूपा ॥ में चेतन पर हे अनुंपा ॥२७॥ दोहा ॥ ज्ञान शक्ति बल आदि गुन
तिन करि अमित अपार जोय ॥ ताते अपर कुं न मो विनां ॥ पर वस्तु नहीं कोय ॥२८॥ जउ अरु चेतन रूप यह ॥ जगत सब
मोर शरीर ॥ में कुं आतम सब ही को ॥ जांनि लेऊं मतिधिर ॥२९॥ सोरठा ॥ अरु गुण सूत्र माकार ॥ मणिगण प्रोये
विविध विधि ॥ अरु मो मही संसार ॥ जउ चेतन प्राणी सकल ॥३०॥ चौपाई ॥ हे कुंतिसुत जल के मांही ॥ रस
सोइ में दुजो को उ नांही ॥ अरु ससि सूर्य में प्रभा वखांनि ॥ ओं निरूप में लेऊं पहिचानि ॥ सबही वेद मही प्रणव स्व
रूपा ॥ में ॐकार के रूप अनुंपा ॥ गगन में शब्द रूप मोय मांनो ॥ पुरुष में पुरुषातन मोय जांनो ॥३२॥ भोमी विषे
शुभ गंध हे जोइ ॥ मम सुरती जांनो तुम सोइ ॥ अनल में तेज प्रकाशक जेऊं ॥ तम हर ता पारथ में तेऊं ॥३३॥ स
ब ही प्राणीमात्र महि जेता ॥ प्राणकुं धरत आयु में तेता ॥ में ऊं जीवु को जिवनभारी ॥ तद पिर हे तन भसम अवि
कारी ॥३४॥ दोहा ॥ क्षुधा पिपासा आदि दुख ॥ सहन रूप तप जोय ॥ सो तप सिके उर विषे ॥ मो विन और न को
य ॥३५॥ चौपाई ॥ पारथ प्राणिमात्र जग जेही ॥ तिन को बिज सनातन तेहि ॥ सो मो विन दुजो कोउ नांही ॥ इर कु
रि जांनि लेऊं मन मांही ॥३६॥ जो बुधिवंत में बुद्धि अनुंपा ॥ सो तुम जो निलेऊं मम रूपा ॥ तेजस्वीन को तेज हे जेऊं

 सोविनुदुजोअ्औरनतेकुं॥३७॥ अर्जुनकुं भरतकुलश्रेष्टउदारा॥ जोबलवंतनमहीजोअपारा॥ कामरागवरजी
 तबलजेहा॥ मेरोरूपजांनोतुमतेहा॥३८॥ सबहीप्राणिमात्रमहिजोउं॥ धर्मसेंअतिअविरोधिसोउ॥ एसो
कांमकहावतजोई॥ मेरोरूपजांनोतुमसोई॥३९॥ दोहा॥ सतरजतममयभावसब॥ जगतकहावतजेउ॥
देहइंद्रिअरुभोगसब॥ सोहियेंउपजेतेउ॥४०॥ मेंवर्तुसबभावमही॥ सोमुहीभावनकोउ॥ युमेंसबमहीम
बुहीपर॥ मर्मजांनोतुमसोउ॥४१॥ चौपाई॥ चेतन्यात्मकजगसबगहा॥ मोइमेंउपजतमेरेतेहा॥ सोमुही
तिनहीतहेसबही॥ ममआरारमोमेंरहेअबही॥४२॥ मेंकुंसबकोआत्मस्वरूपा॥ मेंजगकारनपरमअनुपा
तातेंशेषसबहिपरजेकुं॥ एसोमोहीनजानतलेकुं॥४३॥ सतरजतममयभावअपारा॥ तिनकरिमोहकरके
जगसारा॥ सतरजतममयभावहेजेही॥ मेंसबपरसोमेंनहीतेही॥४४॥ एकरूपमेंसदाअखंडा॥ ममप्रता
पअतिप्रबलप्रचंडा॥ ताकुंजिवनजांनतकोई॥ तातेंमायाबसजगहोइ॥४५॥ दोहा॥ तुमकहीहोकरवग
सितुम॥ तुममहायहसबलोक॥ तिनकिप्रितनहोतक्युं॥ जासेंमिटेभवसोक॥४६॥ सोरठा॥ गुणकोकार
जभोग॥ तिनमहीप्रितिहोतअति॥ टरतनहीभवरोग॥ याकोउत्तरतोयकहुं॥४७॥ चौपाई॥ गुणमयीम ॥४१॥

त्रिगुणरजतमरूपा॥ दैविमायापरमअनुपा॥ देवजोमेंतेहिरुदेविचारी॥ जेहीकराईकीउलअतिभारी॥४८॥
एसिममसायाहेजेहा॥ सबहीमनुष्यकुंदुस्तरतेहा॥ तातेंपरमकृपालुंअपुहारि॥ मेंसत्संकल्पजनक
स्वकारि॥४९॥ मेरेहीचारणआवेजनजोइ॥ गुणमयीमायातरतहेसोई॥ सोमायिकसुखमिथ्याजांनि॥
सोमहीप्रितिकरतइस्तांनी॥५०॥ युंतुमकहिहोसबहीनरनारी॥ क्युंनहोततबतारनमोरारी॥ याकोउत्तर
तोयसुंनाउं॥ चारप्रकारकेदुष्टबताउं॥५१॥ दोहा॥ पापिमनुष्यकेपापमें॥ सुंनअधिककछुहोय॥ तातें
पापिवतुरविध॥ मोयभजतनहीसोय॥५२॥ चौपाई॥ प्रथमहिमुढपापिकहेजेहा॥ अतिविपरितज्ञांन
कृततेहा॥ दुजेनरमेंअधमकहेजेही॥ मोसमआपकुंमानततेही॥५३॥ तातेंमेरोधरततध्यांना॥ दुष्टभा
वुकतअधिकअज्ञाना॥ तिसरेमायासेंगतज्ञांना॥ ममसमंधिसांमुथिविधिनाना॥५४॥ सुंममज्ञानसब
हिविधिजांने॥ तदपिकपरजक्तिउरआंने॥ तातेंज्ञांनकोहोतविनासा॥ कपटजक्तिउरकरतनिवासा॥५५॥
अस्करभावआश्रितभगजोई॥ सबहीदुष्टकेरजासोइ॥ ममसांमुथिममज्ञांनहेजेकुं॥ सबहिभांतिदृढजांमो
तेकुं॥५६॥ दोहा॥ तदपितिनकेदेषहीन॥ ममसांमुथिममज्ञांन॥ यातेंमनुष्यस्वरूपहे॥ तोकुंअसुरसमांन॥५७

सोरठा॥ एहीविधिचारप्रकार॥ एकएकमेंपावितअधिक॥ लखलनममउपकार॥ ममशरणागतहोननही
५८॥ चौपाई॥ पारथपुन्यकरनरजोइ॥ सोयभजनशरणागतहोई॥ सोउतमुनाधिकपुन्यसेंविश॥ आरत
प्रकारकेभक्तअधिश॥५९॥ आरतप्रतिष्ठाहिनहेतेही॥ भ्रष्टभयोवैभवसेंजेही॥ पुनिवैभवकुंइछतजेही॥
आरतभक्तकहावततेही॥६०॥ द्रुसरोअर्थार्थीजोउं॥ अनितऐश्वर्यप्रामभयोसोउ॥ सोऐश्वर्यवडावन
काजा॥ मोयभजेलखित्रिभुवनराजा॥६१॥ तिसरोजज्ञासकरहेजेहा॥ स्वनिजरूपमिलनचहेतेहा॥ आतम
दर्शकिइछाभारी॥ मोयभजतज्ञानिकरवकारी॥६२॥ दोहा॥ कंतकुंभरतकुलश्रेष्ठअव॥ चतुर्थज्ञानीजेहुं
जिवरूपममप्रकृतीकही॥ निजस्वरूपलखितेहुं॥६३॥ सोरठा॥ शुद्धहोयब्रह्मस्वरूप॥ मोयभजतपरब्रह्मलख
वि॥ सोईममभक्तअनुप॥ ज्ञानिमवसेंअनिअधिक॥६४॥ चौपाई॥ चतुविधभक्तजोकहेबखानी॥ नि
तमुध्यअतिविज्ञेयहेज्ञांनी॥ निसममजोगज्ञानिकुंजांनो॥ तातेंज्ञानीकक्षपमांनो॥६५॥ औरकुंजहांल
गिनिजअभिलासा॥ त्रासहोयतोलुममदासा॥ सुज्ञानिममभक्तहेजेही॥ एकमोमहीहृदभक्तीतेही॥६६॥
औरकुंनिजवांछितहेजोई॥ तेहिसाधनलखिभजतहेसोई॥ तातेंअतिविज्ञेयहेज्ञानि॥ जेहीतरमोरभक्तीवह ॥४८॥

एनि॥६७॥ ज्ञांनिकुंमेंअधिकप्रियजेसा॥ मेंसर्वज्ञनकहेमकुंतेसा॥ मोसंगप्रेमज्ञांनिकुंजेता॥ कोउविधिवर
मोज्ञातनतेता॥६८॥ दोहा॥ तेहिविधिज्ञांनिभक्तसो॥ प्रियकेअपिकप्रीयमोय॥ प्रितिअजोकिकपरस्पर॥
वरनिसकेनहीकोय॥६९॥ चौपाई॥ सबहीउपासनकुरतहमारा॥ तातेंएसबभक्तउदारा॥ मोसेंअन्यप्रस्त
यहेजोई॥ मोहिकुंदांनकरतसबसोई॥७०॥ ज्ञानिसोतोममआतमरूपा॥ शुंमेंमांनुपरमअनुपा॥ कक्आ
तमाज्ञांनीजेहा॥ याहितेंअतिउत्तमहेतेहा॥७१॥ अतिउत्तमगतिमोकुंजांनी॥ मेरोहीआश्रितरहतहेज्ञांनि॥
एहीकारनज्ञांनीजनजोई॥ सबविधिममआतमहेसोई॥७२॥ हेअरकनल्पपुसंख्याएकुं॥ तिनकरिपुन्यजन्मगी
नेजेकुं॥ तिनकोफलयहनहिकरवदांनी॥ यहअतिकलतलेकुंपीछांनि॥७३॥ दोहा॥ ब्रह्मरूपनिजआतमा
मांनतज्ञांनिजेहुं॥ ममशरणागतअचलमति॥ रहततिरंतरतेहुं॥७४॥ चौपाई॥ आगणीतपुन्यजन्मकुंअं
ता॥ वासुदेवप्रभुश्रीभगवंता॥ मोनिजसेंपरएमोअनुपा॥ सोईब्रह्मममरसममरूपा॥७५॥ एहीविधिज्ञा
नवाननरहोई॥ वासुदेवनारायणसोइ॥ परमप्राप्यरूपखदायकुएही॥ जोजोअन्यइछुसोतेही॥७६॥ और
कुंमनमेंमनोरथजोउं॥ वासुदेवममसरवससोउ॥ एहीविधिमोयउपासतजेहुं॥ अतिमहामतिअतिदुलभ

तेहुं ॥ ७७ ॥ अबजांनिकि दुलभनाई ॥ सोसबही विधि देनबनाई ॥ सबलोकिकपुरुषहेजेहा ॥ निजप्रकृति
कृतबरतततेहा ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ पुर्ववासनाकृतकर्युं ॥ रहतहेजंतुजेहुं ॥ निजस्वभावअनुसारसें ॥ रहतनिरंत
रतेहुं ॥ ७९ ॥ चोपाई ॥ ममस्वरुपकोज्ञानहेजोइ ॥ तेहितेहिकामहरयोहेसोइ ॥ तेहितेहिकामसिधिहितजा
नि ॥ करतउपायबकृतविधिप्रांनि ॥ ८० ॥ सोविनअन्यइंद्रादिकदेवा ॥ तेहितेहिनियमकरतेहितेहिसेवा ॥ ती
नकरिदेवरिझावनकाजा ॥ सरणहोतलियेसेवसमाजा ॥ ८१ ॥ सोइंद्रादिकदेवहेजेहुं ॥ ममसरीरजानीतुमतें
हुं ॥ मेंसबस्करकोआतमरुपा ॥ सोनजांनेयहमर्मअनुपा ॥ ८२ ॥ जोजोभक्तश्रद्धाकृतहीइ ॥ इंद्रादिकस्करुह
रकुंकोइ ॥ भावसेंअरचनइछतजेहा ॥ तेहितेहिदेवकिश्रद्धातेहा ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ अचलकरुमेंताहीकि ॥
श्रद्धामेरुसमान ॥ सबहीभांतिरक्षणकरुं ॥ विघनननव्यापेआन ॥ ८४ ॥ चोपाई ॥ सोनिर्विघ्नश्रधाहेजेहुं ॥
तिनकरिकृतभक्तहेतेहुं ॥ सोइंद्रादिकदेवनकेरा ॥ करतआराधनभावघनेरा ॥ ८५ ॥ ममसरीरइंद्रादिक
जेहा ॥ तेहीआराधनसेंकरतेहा ॥ मेंहीदियेतेहिवांछितकामा ॥ सोपावतकरतचुदअभिरामा ॥ ८६ ॥ अ
धिकअल्पबुधिनरजोइ ॥ इंद्रादिकआराधतसोइ ॥ करआराधिअल्पफलपावे ॥ सोफलतअंततनासहोइजा

वे ॥ ८७ ॥ इंद्रादिकहीजजननरजोउं ॥ इंद्रादिकहीपावेनरसोउं ॥ जोममभक्तकुंभजतहेसोई ॥ मोहीकुंपावत
निरगुनहोइ ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ सबहिप्राणीकेमोक्षहीत ॥ मनुष्यादिकमहीजोय ॥ ममअवतारहेताहीकुं ॥ नि
रेअपुपरतसोय ॥ ८९ ॥ चोपाई ॥ सबफलभक्तकर्मकरावतजोइ ॥ तेहिकरिजेहिआराधनहोइ ॥ एसोंमेंसर्वे
स्वरजेहुं ॥ परमकृपाकेवसपहोइतेहुं ॥ ९० ॥ भक्तवत्सलतासेंकरतकारे ॥ सबहीप्राणिकोहीतउरधारि ॥ अ
तिकल्यांनकरनकेकाजा ॥ दिव्यरुपमंगलसबसाजा ॥ ९१ ॥ स्त्रीवसुदेवकेघरमहीआइ ॥ जन्मलियोसब
जनसुखदाई ॥ तहिविधिमेरोपरमस्वरुपा ॥ अचलअतुलनमभावअनुपा ॥ ९२ ॥ तेहिवानजांनेअबुधज
नजेहा ॥ याकेतरणजकुवरसमतेहा ॥ अबलुंअतिअव्यक्तरहेरहा ॥ करमसेंजन्मप्राप्तभयेतेही ॥ ९३ ॥
दोहा ॥ युंमोयमांनतयाहीतें ॥ ममआश्रितनहीहोत ॥ मोयकरमकरिवांभजे ॥ वृथामनुषतनखोत ॥ ९४ ॥
चोपाई ॥ कायकुंयुंनहिजानतप्रानी ॥ याकोउभरकछुंसुखदानी ॥ मनुष्यतुल्यममवरतनजोइ ॥ मायासें
आव्रीतमेंसोइ ॥ ९५ ॥ मनुष्यभावकरिआव्रीतजेहा ॥ सबहीनकुंनभासुंमेंतेहा ॥ सोमहीमनुष्यतुल्यताजो
उ ॥ देखकेमुढभ्रमनसबकोउ ॥ ९६ ॥ तातेमुढलोकयहजेहुं ॥ जन्मरहीतअविनासीतेहुं ॥ एसोमोयनजा

नत कोई ॥ तातें भवजलपार न होई ॥ ९७ ॥ हे अरजुन होगये हें जेही ॥ वर्त्तमांन मही चुरतन तेही ॥ अरु आ
गे होइ हें जग जेता ॥ प्राणिमात्र जानुं में तेता ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ तिहुं कालके प्राणि सब ॥ मोय न जांनत कोई ॥
तातें जांनि भक्त जो ॥ अति दुरलभ है सोई ॥ ९९ ॥ चोपाई ॥ प्रबल मोह को कारन जोइ ॥ हे भारत वरनुं अब सो
इ ॥ इच्छा द्वेष में उपज्यो जेहा ॥ मोह सीत उष्मादिक लेहा ॥ १०० ॥ द्वंद्व में प्राणिमात्र जग जेते ॥ जन्म समे मोह कुं पा
वत तेते ॥ कांन कुं परंतप कहुं तोय बाता ॥ सुख जन्म विषे साक्षाता ॥ १०१ ॥ सुख दुख आदि हें द्वंद्व मही जेऊ ॥
इच्छा द्वेष अभ्यासे तेऊ ॥ इच्छा द्वेष सोई बलवाना ॥ पुर्व वासना सें विधि नाना ॥ १०२ ॥ जन्म समे पुनि जोर जना
इ ॥ सब कुं मोह प्राप्त कराई ॥ सोइ संमोह प्राप्त जब होई ॥ मोर भजन करत न कोइ ॥ १०३ ॥ दोहा ॥
अनंत जन्म मही जो मनुष्य ॥ पुन्य करम बहु किन ॥ प्रबल पुन्य के जोर सें ॥ भ्रम तिहि तब बिन ॥ १०४ ॥
चोपाई ॥ अनंत जन्म मही किने जेहा ॥ प्रबल पुन्य सुखदायक तेहा ॥ तिन करि गुणमय द्वंद्व हे जेऊ ॥ इ
च्छा द्वेष को हेतु तेऊ ॥ १०५ ॥ मम भक्ति विरोधि अघ जेता ॥ अगणित भवके नास भए तेता ॥ द्वंद्व मोह सें मुक्त
हें जेही ॥ दृढव्रत मोय भजत हें तेही ॥ १०६ ॥ मेरो भजन करत हें जोउ ॥ तिन प्रकार के वर हे तेउ ॥ एक प्रकृति

पर आतम जोई ॥ ते हरि दरशन हित भजत हें मोई ॥ १०७ ॥ दुजो बरवे भव के काजा ॥ भजत मोय लखि विरिधि रा
जा ॥ तिज जो मोय मिलन ही न ग्यानी ॥ मोय भजत सुखदायक जांनी ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ तिन प्रकार के भक्त मम ॥
तिन में प्रकृति पर जो य ॥ सो आतम को दर्शहीत ॥ भजे न्यारन हो मोय ॥ १०९ ॥ सोरठा ॥ सो जानत हें ब्रह्म ॥ अ
ध्यातम जांनत सब ही ॥ सोई जांनत सब कर्म ॥ ताके सब संशय टरन ॥ ११० ॥ चोपाई ॥ अति ऐश्वर्य के अर्थि
जेही ॥ साधिभुत मोय जानत तेही ॥ सुमोय साधिदैव सो जांने ॥ एही विधि जांनि भक्त मम वाने ॥ १११ ॥ अरु ए
जांनि मम जन हें जेहा ॥ साधियज्ञ मोय जानत तेहा ॥ सब ही काल मन मो मही धारे ॥ मो बिन और मनोरथ टारे ॥
११२ ॥ प्राणप्रयाण काल मही सोई ॥ तिन प्रकार के भक्त हें जोई ॥ निज निज संकल्प के अनुसारा ॥ मोय जांनत
सब भक्त उदारा ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ मम स्वरूप में भेद नहीं ॥ भाव में भेद हे एउ ॥ ताही तें मो कुं भक्त सब ॥ भिन्न
भिन्न जांनत तेऊ ॥ ११४ ॥ अनन्य भाव सें मम जन ॥ मोय भजत बुधिवंत ॥ मुक्तानंद के नाथ कहे ॥ सोई विमल
मतिमंत ॥ ११५ ॥ इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मुक्ता
नंदमुनि विरचित भगवद्गीता टिकायां ज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ चोपाई ॥ सातमें अध्याय कुं मही

रही ॥ श्रीनारायण परब्रह्म जेही ॥ जड चैतन व्यक्त सब जोई ॥ तिनमें सोय रहत प्रभु सोई ॥ १ ॥ प्रभु सब कारन
जगआधारा ॥ तेही सरीर जडउ चिद् दुआकारा ॥ जड चैतन यह विश्व है जेऊं ॥ तासु नियंता है प्रभु तेऊं ॥ २ ॥
सब कल्यान कारि गुण जे ही ॥ तेही आधार निरंतर रही ॥ सत्व रजतम भाव है जेऊं ॥ तिन करि प्रभु भासत
नही तेऊं ॥ ३ ॥ सुखप्रद हरि स्वरूप है जोऊं ॥ गुण करि ढंक्यो रहत है सोऊं ॥ अधिक सक्ती हरि भक्तो करही
भजनमें साधीक गुण सब रही ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सकत मनुष्य अधिक में ॥ हरिके सरणमही भेद ॥ भजन
भक्ति सब भेद सक्त ॥ भेद सही तनि रवेद ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ अधिक ऐश्वर्य ज्ञानि जन जोई ॥ अति दुरलभ त्रिभुव
नमही सोई ॥ तिन प्रकार के भक्त है जे हा ॥ तिनकूं ज्ञानन जोग्य है तेहा ॥ ६ ॥ ग्रहण करनके जोग्य है जेऊं ॥ स
बही भेद सब विधि कहे तेऊं ॥ अब अध्यातम अध्याय है जोऊं ॥ तिनमही कथा कहत है सोऊ ॥ ७ ॥ सातमें अ
ध्यामें कहे जेही ॥ ज्ञानन जोग्य भेद है तेही ॥ ग्रहण करनके जोग्य है जेऊ ॥ सब हि भेद दरे खावत तेऊ ॥ ८ ॥ अर
जुनउवाच ॥ हे पुरुषोत्तम सजन सुखकारी ॥ जरामरण को भय अति भारी ॥ तिनसें छुटन चहित नरनारी ॥ त
व आश्रीत होइ देव मोरारी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ भवसंकट सें छुटने ॥ जतन करत है जेऊं ॥ तीनकुं ज्ञानन जोग्य सो ॥५१॥

ब्रह्म कहे कहा तेऊं ॥ १० ॥ कहो अध्यातम कवन है ॥ कर्म कवन कहो सोई ॥ यह संसय छेदन प्रभू ॥ तुम
बिन और न कोइ ॥ ११ ॥ दोहा ॥ अतिदैव चहे जोय ॥ तिनकूं ज्ञानन जोग्य सोई ॥ अधिभूत कहा होय ॥ अ
धिदैव कहा कहूं सब ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ हे मधुसूदन कहा मो पाही ॥ अति ऐश्वर्य कुं इछत जेही ॥ केवल पद पाव
न चहे जोइ ॥ ज्ञानि भक्त कहावत सोइ ॥ १३ ॥ ज्ञानन जोग्य तिनकुं जे हा ॥ तिनमही अधियज्ञ कहा तेहा ॥ कही
विधि ज्ञानन जोग्य है एऊं ॥ सब विधि वर्नि कहो मोय तेऊं ॥ १४ ॥ ने मुक्त जिनके मनरहही ॥ एसे त्रिविध भक्त
श्रुती कहही ॥ ते ही तन तजन समें सुखकारी ॥ ज्ञानन जोग्य सो कहहूं मोरारी ॥ १५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एही वि
धी सात प्रश्न किये जेऊं ॥ उत्तर तासु जथारथ तेऊं ॥ तिन स्लोकमें श्रीभगवाना ॥ कहत है सब विधि परम सुजाना ॥
१६ ॥ दोहा ॥ हे अरजुन जो नहीं क्षरत ॥ अक्षर कहत है ताही ॥ पर अक्षर सुं श्रुति कहत ॥ ब्रह्म कहत हम तेही
१७ ॥ चौपाई ॥ अन्तरस्वभाव प्रकृती है जेही ॥ अध्यातम हम कहत है तेही ॥ ब्रह्म रूप अध्यातम एहे ऊ ॥ सुख मु
मुक्षु नरकुं सो ऊ ॥ १८ ॥ प्राप्य रूप तजन जोग्य है तेऊं ॥ एहि विधि ज्ञानन जोग्य है एऊ ॥ मनुष्यादि का आकार है एहा
तेही उत्तन पती को करता जेहा ॥ १९ ॥ सो विसर्ग सो इ कर्म है नामा ॥ अति उपाधि अति दुरख कोधामा ॥ सब ही

मुमुक्षुजन हे जोई ॥ तेहित हेग कारि है सोई ॥ २० ॥ जो विसर्ग वकु विध विस्तारा ॥ साग करन कें जोग्य है सारा ॥ ता
तें ज्ञानन जोग्य है तेहा ॥ तामें लेशान ही संदेहा ॥ २१ ॥ दोहा ॥ जो अनित्य वे भव चहै ॥ ज्ञानन जोग्य है ते ही ॥ अ
धिभुतक्षरभाव सब ॥ काल ग्रसन है जेही ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ पंचभूत गगनादिक जेहा ॥ तिनमही वरतन है निम
एहा ॥ पंचभूत परिणाम है जोइ ॥ पंचविषै शब्दादिक सोई ॥ २३ ॥ अनित्य ऐश्वर्य कें अर्थि जेही ॥ तिनकुं स्वामी जो
ग्य है तेही ॥ अधिदैवकरी कें कहे जेकुं ॥ इंद्रादिक सुर संपरते कुं ॥ २४ ॥ पंचविषै शब्दादिक जोउ ॥ तेही भुक्ता जो
पुरुष कहे सोउ ॥ सो ऐश्वर्य कें अर्थि ताइ ॥ पावने जोग्य परम सुखदाइ ॥ २५ ॥ है तनु धारी मध्य अनुपा ॥ अधिज
ज्ञ सो मैं सुखरूपा ॥ इंद्रादी सुर रहे देह जेउ ॥ मम शरीर ज्ञानो तुम तेउ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सब देव में ॥ आ
त्मरूप रह्यो जेकुं ॥ सो मैं सब ही तज करी ॥ यजन जोग्य निन तेकुं ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ ताहि वीधि परम उदार ॥ तिन
प्रकार के पुरुष तेही ॥ करतो परम विचार ॥ यहम सब ज्ञानतो मर्म है ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ अरुताकुं तिन पुरुष है जेहा ॥
सब हि कु साधारण हे एकु ॥ अंतकाल आवत है जबही ॥ मोही में मनकुं राखि कें तबही ॥ २९ ॥ देह सागकरी
जात है जेही ॥ मेरे भाव कुं पावत तेही ॥ अत्र संशय रत न परिरएउ ॥ मृग सं भारी तनु तजी मृग भएउ ॥ ३० ॥ सुं ॥ ५२ ॥

अंतकाल समै नरनारी ॥ सो मही भाव स्मृं धरत विचारी ॥ तनुं तजी ते सो होवत तेहा ॥ तामें लेश न ही संदेहा ॥
३१ ॥ फलन कुं कुंती सुत कुं तीय बाता ॥ अंत समै जो न रसाक्षाता ॥ जो जो वस्तु संभारत जोइ ॥ तेहि विधि तज
त कें है वरसोइ ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ सब ही काल में जेही विषै ॥ अचल भाव है जाही ॥ अंत समै ताकुं भजे ॥ तनुं त
जि पावे ताही ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ प्रथम हि सें अभ्यासें जेकुं ॥ अंत समै उर आवत तेकुं ॥ तातें सब ही काल मही
विरा ॥ भजकुं मो यत्नु मह रम तिथिरा ॥ ३४ ॥ निज वर्णाश्रम जोग्य है जेहा ॥ कर्म करकुं जुधादिक तेहा ॥ यह
उपाय करी मोम ही ताता ॥ मन बुधि अर्पो साक्षाता ॥ ३५ ॥ अंत समै एसे तुम जोउ ॥ मोय संभारि कें हर मतो
सोउ ॥ पैहो मोय यह हर तत्व पदेज्ञा ॥ यामें संशय कीन हि लेशा ॥ ३६ ॥ सुमामाम्र में सुख मही भारी ॥ निज वांछी
त किय पामी सुख कारी ॥ सो कहीं अंत समं नित्याधिना ॥ तेही हित मरम कहत अतिछिना ॥ ३७ ॥ दोहा ॥
तिन प्रकार के पुरुष कि ॥ रुची भिन भिन अभिराम ॥ सो उपासना भेदकुं ॥ कहत तकु हम सुख धाम ॥ ३८ ॥
चौपाई ॥ तिनमही वैभव अर्थि जेहा ॥ तेही उपासना भेद हे तेहा ॥ सु उपासना कें अनुसारा ॥ अंत समं तीकुं
कहत उदारा ॥ ३९ ॥ मनकरि दृष्ट को रुप हे जोइ ॥ सो चिंतवत अभ्यास हे सोइ ॥ जोग समाधि ऋषि रहे जेकुं ॥ आ

त्मस्वरूपमें रहत हैं तेऊं ॥४०॥ तामें चित्त सें सो अंतकाला ॥ परम दिव्य जो पुरुष विसाला ॥ तेही चित्त वन जतन र
हत हें जे ही ॥ पार्थ ताहि कुं पावत ते ही ॥४१॥ सोइ पुरुष सर्वज्ञ पुराना ॥ शिक्षक वो धरे त विधि नाना ॥ जिव कुं में
सूक्ष्म जे ही रूपा ॥ सब कु करता अकर थु धाम अनुपा ॥४२॥ दोहा ॥ सब सें न्यारा रूप जे ही ॥ भानु तुल्य जे हि वर्ण ॥
मायामय तन मत ताही पर ॥ सब विधि अस्मरण स्मर्ण ॥४३॥ सोरठा ॥ एही विधि पुरुष है जोय ॥ ताही भजत नर जे
मजन ॥ मिलत ताही कुं सोय ॥ तेहि रत ध्यान सो अति मगन ॥४४॥ चौपाई ॥ युं दिन दिन प्रति करी अभ्यासा ॥
एही विधि भक्ती जन जसो दासा ॥ जोग कला में अचल मन किना ॥ ते ही कृष्ण अंत समें सो प्रविना ॥४५॥ भृकु
टि मध्य निज प्राण कुं धारे ॥ दिव्य पुरुष कुं अधिक संभारे ॥ दिव्य पुरुष कुं पावत सोई ॥ ते ही समान रोग्य स्य कुं
होई ॥४६॥ अब कहै वस्त पद अरथि जेहा ॥ ते ही स्मरन विधि कहत हें ते हा ॥ जे ही अक्षर कहे वेद के ज्ञाना ॥
समझी समर्थी ते ही करन बखाना ॥४७॥ निस्पृह जन निजे ही अक्षर जोनि ॥ करत प्रवेश एक खद ते ही मांनि ॥ सो अ
क्षर कुं मिलन चहे जे ही ॥ हर ब्रह्मचर्य कुं राखत ते ही ॥४८॥ दोहा ॥ सो पद सब वेदांत करी ॥ जोगन जोगप अ
नंत ॥ मम स्वरूप अक्षर एही ॥ जांनि ले हुं बुधिवंत ॥४९॥ सोइ उपासन जोगप्र युं ॥ अक्षर धाम अनुप ॥ सु ॥५३॥

संक्षेप में सब ही विधि ॥ कही कुं नाम स्वरूप ॥५०॥ चौपाई ॥ श्रोत्रा दिक इंद्रि सब जेहा ॥ तन के द्वार रूप हें तेहा ॥
तिन कुं निज निज विषय सें धिरा ॥ पिछे फेर के परम प्रविरा ॥५१॥ हृदे कमल महीं रहत हें जे ही ॥ अक्षर रूप
मो ही में ते ही ॥ मन कुं रुंधत हे सोइ दासा ॥ सावधान हो के चकुं पासा ॥५२॥ मस्तक में धरिके निज प्राना ॥ जोग
धारणा करत सुजाना ॥ एही विधि जोग धारणा जोइ ॥ ता के आश्रित होय के सोई ॥५३॥ उंकार एक अक्षर जे
ऊं ॥ सोई ब्रह्म मुख उच्चरत ते ऊं ॥ उंकार करिके हत हें जोउ ॥ एसो मोय संभारिके सोउ ॥५४॥ दोहा ॥ एही
विधि जो नर तनत जे ॥ परम गति हें जोय ॥ अक्षर ब्रह्म अनुपकुं ॥ पावत स्रम मनि सोय ॥५५॥ चौपाई ॥ यु
ते स्वर्य के अर्थि जेहा ॥ युं के वस्त अर्थि हे तेहा ॥ आपकुं प्राप्ति जोगप्र हें जे ही ॥ ते ही अनुंसार सें करत प्रदाए ही
५६ ॥ हरि उपासन के अपहारी ॥ सब प्रकार कहे भेद संगारी ॥ अब वस्तु उपासन प्रभु कुं ज्ञानी ॥ ते ही प्रकार सब
कहत बखानि ॥५७॥ हे पार्थ मोबिन अन्य जे ऊं ॥ तिन में चिंतन राखत ते ऊं ॥ सब ही काल मोय समरत ते ऊ ॥
सदा अजज जोगि हे सोउ ॥५८॥ तिन कुं में अति सुलभ तात्ता ॥ मे कुं मिलत जोग प्रविख्याता ॥ ऐश्वर्यादि भाव म
म जोई ॥ ता कुं प्राप्ती जोग नही सोइ ॥५९॥ दोहा ॥ अब कर्म आरो अधार ह्यो ॥ तिन करिके हत हें जोय ॥ ज्ञानी

केवल्य अर्थिकुं ॥ पुनरावृत्ति न होय ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ अतिगति स्वर्ग के अर्थि जोई ॥ पुनरावृत्ति लहत है सोई ॥ अ
धिक चतुरमन ऊन न रजै सा ॥ परम सिद्धि मोक्ष पाय कें नेहा ॥ ६१ ॥ तुं मोक्ष मिलत के ज्ञानि जनजे ही ॥ सब दुख
सहन अस्थिर भव तेही ॥ फिर न पावें दुःख भव पासा ॥ जन्म मरण भय बिन मम दासा ॥ ६२ ॥ अब गो स्वर्ग धाम
भये जे ता ॥ औरहु प्राप्त भये श्री भगवंता ॥ ता सें तुं भय मां तिन रजे ऊं ॥ लहत न लहत पुनर भव ते ही ॥ ६३ ॥ ब्रह्म
भुवन लगी है जगत जे ता ॥ नास वंत भव भर कत ते ता ॥ तातें अतिवे भव जो पावे ॥ तिन के स्थां न नास होय जावें ॥
६४ ॥ दोहा ॥ हे अर्जुन तीऊं काल मसी ॥ मेंक पालु एक रूप ॥ मोक्ष मिलत तेहा पुनर भव ॥ होत नही दुख कू
प ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्म लोक पर्जंत जे लोका ॥ तेहा मध्य वरतन लोक अशोका ॥ परम पुरुष में अजन्म चेता
रि ॥ नारायण सब जन सुखकारी ॥ ६६ ॥ लोक को उदय अस्त व्यवहारा ॥ मम संकल्प व्यवस्था जान तसारा ॥ अ
हजो मनुष्यादि क संसारा ॥ ब्रह्म भुवन लगि सकल पसारा ॥ ६७ ॥ सब किअहर्निस संख्या एहा ॥ मम संक
ल्प व्यवस्था जानत जे हा ॥ सो नर चौकरी सहस्र युग जेता ॥ अजन अहर्निसि जानत बुधि वेता ॥ ६८ ॥ ब्रह्मा को दिन
आवत जब ही ॥ सहस्र चौकरी लगर है तब ही ॥ तब त्रिभुवन म ही जो न तनुं धारा ॥ प्रगट होत निज गुन विस्तारा ॥ ॥ ५७ ॥

६९ ॥ दोहा ॥ देह इंद्रिय अरु भोग सब ॥ नाम रूप आकार ॥ अज अव्यक्त तनुं त्रिनिय सें ॥ सब ही होत विस्तार ॥ ७०
ब्रह्म निसा जब होत है ॥ तब थिर चर आकार ॥ अज अव्यक्त तनुं सूक्ष्म पति ॥ तिन में होत समाय ॥ ७१ ॥ चौपाई
हे पारथ कर्म न वस्य एहा ॥ प्राणी समूह कराव न नेहा ॥ ब्रह्मा को दिन आवत जब ही ॥ सब विधि उदय होत है त
बही ॥ ७२ ॥ रात्रि समे आवत लय कारी ॥ लीन होत थिर चर नर नारी ॥ पुनि दिन भए प्रगट होय आवे ॥ काल
आलयु निपुनि तेही रावे ॥ ७३ ॥ एहि विधि दिन अरु निशि करि ताता ॥ अज त्रुगन वरष होत विख्याता ॥ तब
ब्रह्म लोक पर्जंत जे लोका ॥ ब्रह्मादिक सुर अधिक विशोका ॥ ७४ ॥ सब ही दिन माया में होई ॥ थिर चर रहन
न पावत कोई ॥ माया होत पुरुष में लीना ॥ पुरुष होत मम रूप में लीना ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ तातें जो एस्थूल गती
पावें जां निस्कर स्वरूप ॥ ताहि पुनर भव ना फिरे ॥ भ्रमन रहत भव कूप ॥ ७६ ॥ चौपाई ॥ अब केवल पद पायें जे ता
पुनरावृत्ति लहत न हां ते ता ॥ जो अनित्य अरू अतिज रूपा ॥ तिन हि में परब्रह्म अनूपा ॥ ७७ ॥ काऊ प्र
मान में जानें बताही ॥ उदय अस्त बिन क होत न जाही ॥ गगनादिक सब भूतन है जे हा ॥ काल सें नास होत है ते हा
७८ ॥ सब ही में रहत अव्यक्त उदारा ॥ जग व्यापक सब जग आधारा ॥ जग के संग नास नहीं पावे ॥ सर्वोन मस वे

परमश्रुति गावे ॥७९॥ जो अव्यक्त सोइ अक्षर कहावे ॥ वेदिक ताहि परमगति गावे ॥ सो अक्षर कूं प्राप्त भये जेह ॥ ज
न्म मृत्यु भय छुटत तेह ॥८०॥ दोहा ॥ सो अक्षर मम धाम है ॥ गुण पर अकल अनंत ॥ एही ब्रह्म निरवान पद ॥
जांनि लेहु कूं हरि कहंत ॥८१॥ चौपाई ॥ जो निभ भगवद भक्त है जेहा ॥ तिन कूं प्राप्ति जोग पद तेहा ॥ सो अक्षर में मारग
जांनो ॥ अथो कू विलक्षण ताहि प्रमांनो ॥८२॥ पारथ कछु मो सें पर नांही ॥ में व्यापक सब हि जग मांही ॥ इन
आदिक लोक निकू है जोउ ॥ परम पुरुष नारायण सोउ ॥८३॥ जिन मह ही विश्व रहत सकल पाइ ॥ मणि मध्य सू
त्र सुं प्रभु सकल दाइ ॥ अनन्य भक्ति करि पावत तेही ॥ भक्ताधीन सदा प्रभु एही ॥८४॥ कौन कूं भरत कुल श्रेष्ठ
प्रवीना ॥ काल किंग तिस बसें अति छीना ॥ दिन आदिक तान वर्ष लुं काला ॥ तेही अभिमांनि देव विशाला ॥
८५ ॥ दोहा ॥ तिन हि देव ताये जिगर में ॥ देह त्यागि गये जेऊ ॥ पुनि यह भव में ना भ्रमे ॥ जोगि महा सन्तो तेऊ ॥८६
सोइ मारग में तन तजे ॥ पुन्य करम कृत जोय ॥ ताहि पुनर भव होत है ॥ सो मग कहूं अब तोय ॥८७॥ चौपाई ॥ अ
ग्नि अरु कां तिरे जेह ॥ तहि अभिमांनि देव है तेह ॥ अह अरु शुक्ल पक्ष कहे जोइ ॥ तेही अभिमांनि देव है सोइ ॥
८८ ॥ उत्तरायण षट मास है एही ॥ तेही अभिमांनि देव है जेही ॥ तेही परब्रह्म के देव ही जांनो ॥ ताहि विधि गमव देव ॥५५॥

प्रमांनो ॥८९॥ देवज्ञान मग में सो रहही ॥ ताने देवज्ञान मग कहही ॥ ब्रह्म वेनान रजे हि मग जावे ॥ देवज्ञांन ग
ए ब्रह्म हि पावे ॥९०॥ धुम रु रात्रि कहें है जेउ ॥ तेही अभिमांनि देव है तेउ ॥ कृष्ण पक्ष व रस्यो है जोउ ॥ तेही अ
भिमांनि देव है सोउ ॥९१॥ दोहा ॥ दक्षणायन षट मास के ॥ अभिमांनि यह देव ॥ पितृ ज्ञांन मग सब रहे ॥ जां
नि लेहु कूं यह भेव ॥९२॥ पितृ ज्ञान मग चलत है ॥ पुन्य करम कृत जोय ॥ चंद्र रूप तहां देव ता ॥ सब विधि निरख
त सोय ॥९३॥ सोरठा ॥ करवे भव फल पाय ॥ गिरत है तहां में अल्प मनी ॥ फिन अप कउ पाय ॥ जन्म धर
त ताले अमित ॥९४॥ चौपाई ॥ शुक्ल सो अग्र रचि आदि गति जांनो ॥ कृष्ण सो धुम आदि गति मांनो ॥ एही वि
धि कहे उभय मग जेहा ॥ जग मह अधिक सनातन तेहा ॥९५॥ ज्ञानि पुन्य कर्म कृत जोइ ॥ उभय सनातन मान
त सोइ ॥ शुक्ल गति ज्ञानि कि जेही ॥ पुनरावृत्ति लहत नही तेही ॥९६॥ कृष्ण गति करम व कि जेऊं ॥ जन्म मरण
पुनि पावत तेऊं ॥ कृष्ण गति सें जरत अज्ञांनि ॥ भव भरकत होवत सकल हांनि ॥९७॥ हे पारथ एउ भय मग धी ग
ज्ञान न जोगि पर संग भिरा ॥ अंत समे आये सोइ ज्ञानि ॥ नही मुरछात गति पही चानि ॥९८॥ दोहा ॥ देव
ज्ञान करि ज्ञात है ॥ आप में जोगि सोउ ॥ ताते अर्जुन तुं सदा ॥ जोग जुक्त हरदे सो उ ॥९९॥ चकु वेद अभ्या

सको॥ पुन्यरूपफलजोय॥ सबहीजज्ञसबदांनको॥ पुन्यजहांलुंहोय॥ १६० ॥ इनदोऊअध्यामेंकह्यो॥ प्रभुको
महातमजेहुं॥ ताहिजांनिसबपुन्यफल॥ जोगीपावततेहुं॥ १६१ ॥ सोरठा॥ जोगीज्ञांनीहोय॥ तिनकुंपाव
तिजोगपसोइ॥ आदिथ्यानममजोय॥ सोमुनिपावतपरमपद॥ १६२ ॥ दोहा॥ ममममहातमकेजांनमो॥ जो
गीअतिसुखदोवंत॥ मुकुंदकोनाथकहे॥ चलतअर्चिमगसंत॥ १६३ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु
ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमुकुंदमुनिविरचितभगवद्गीताटीकायांमहापुरुषयो
गोनामाष्टमोध्यायः॥ ८ ॥ चौपाई॥ आठमेंअध्यायकेमांहीएहा॥ उपासककेभेदकहेतेहा॥ अबनवमे
अध्यायमेंएही॥ करनेजोग्यउपासनजेही॥ १ ॥ एसेपरमगुरुषसुखकारी॥ नारायणनिजजनअघहारी
सोप्रभुकोमहातमसाक्षाता॥ जांनिकेविशेषविख्याता॥ २ ॥ तिनकुंसाधिकेअतिसुखदांनि॥ भक्तीरूपउ
पासनजांनि॥ तासस्वरूपजथारथजोहुं॥ अतिविख्यातकहतहेतेहुं॥ ३ ॥ श्रीभगवानुवाच॥ हेअरजुन
ममममहातमजेहा॥ कंनितबुउरनहीहोतसंदेहा॥ अतिमहातमकीअकथानांही॥ तूमसबमसमांन
तमंनमांही॥ ४ ॥ दोहा॥ तातेभक्तीरूपयह॥ अधिकगुह्यममज्ञांन॥ कहुंतोयविज्ञानजुत॥ सबवि

धिवरमस्कजांन॥ ५ ॥ सोरठा॥ सोतममजांनिकेज्ञांन॥ ममप्राप्तिकेविरोधिसब॥ अस्कभमेंमुक्तस्कजांन॥ हो
इहोमाधनश्रमहितचिन॥ ६ ॥ चौपाई॥ भक्तिरूपयहज्ञांनहेजेहुं॥ सबविद्याकोराजातेहुं॥ सबहीगुह्यकोगे
जासोई॥ अतिपवित्रएहीममनहिकोई॥ ७ ॥ ममप्राप्तीविरोधिअघजेहा॥ सबकोनासकरतहैतेहा॥ भ
क्तिरूपयहज्ञांनसेभ्राता॥ भजतमोयजानिजनत्राता॥ ८ ॥ तबसोउपासककुंतनकाला॥ प्रगटदरस्रामेंदेहुं
चित्रालता॥ धरमसेंगिरतनहीयहज्ञाना॥ करबसेंग्रहणकेंजोग्यस्कजाना॥ ९ ॥ ममप्राप्तिकरायसुतोसार
नारानपावनज्ञानउदारा॥ एहीविधिवरमनुपासनएही॥ भक्तिरूपनितकरहेजेही॥ १० ॥ दोहा॥ एसेपु
रुषकुंप्रेमजुत॥ देहुंमेमेरोदांन॥ तोकुंनमेतेहिकहुदियो॥ युंमोयभासेस्कजांन॥ ११ ॥ चौपाई॥ करनकुं
पूरंतप्रकुंतोयबाता॥ ममप्राप्तिसाधनविख्याता॥ एसोउपासनजोग्यजोधर्मा॥ ताकुंग्रहणकेजोग्य
सोमर्मा॥ १२ ॥ एमिदश्रापायस्कस्वरूपा॥ नहीविश्वासनश्रद्धाअनुपा॥ एसेमोयनपायअपारा॥ मृत्यु
रूपनवमगअधियारा॥ १३ ॥ तिनकेविषेनिरंतरजंता॥ भ्रमतरहतदुखकोनहीअंता॥ यहअतिगो
वरुआचर्जमोइ॥ भवजलतरनचहतनहीकोइ॥ १४ ॥ हेअरजुनतुमप्रथमहीवीरा॥ कंनुममस्रो

त्रिमहानमगंभिरा॥ यहजरचेतनमवसंसारा॥ ममअव्यक्तननुंकेआधारा॥१५॥ दोहा॥ मेंव्यापकसव
विश्वमें॥ अंतरजामिजोय॥ प्राणिमात्रमोमेंरहे॥ मोसेंभिननकोय॥१६॥ मेंनांहीसवप्राणिमें॥ प्राणीमोर
शरीर॥ मेरेचरूपतिनक्रियाति॥ मेंनहीतेहीव्यविर॥१७॥ चोपाई॥ जेमेंघटादिकपात्रहेजोइ॥ जलआ
दिककुंधारतसोइ॥ स्थिरचरप्राणिमात्रजगजेहा॥ एहीविधिमेंनहीधारूंतेहा॥१८॥ मेंनिजसंकल्पधरुं
संसारा॥ अधिकजोगवलदेखोहमारा॥ सवहीप्राणिकोपोषकजेऊं॥ सवसेंभिनरहूंमेंतेऊं॥१९॥ मेरे
मनकोसंकल्पजेही॥ प्राणिमात्रकोपालनतेही॥ तेसेंमोरमनोरथजोउ॥ निममेंरखतसकलजगसोउ॥२०॥
जुंआकाशमेंवायुअपारा॥ विनआलंवनरहतउदारा॥ सवहीमेंगतिकरतहेभारी॥ सोमेंधारूंवायुअ
विकारी॥२१॥ दोहा॥ त्युंसवप्राणिमात्रको॥ परसिसकतनहीसोय॥ मोमहीरहेमेंधारूंसव॥ जांनिलेकुं
तसोय॥२२॥ चोपाई॥ थिरचरप्राणिमात्रजगजेहा॥ अजकोआयुअंतभयेतेहा॥ हेकुंतीसुतमोरप्र
विरा॥ प्रकृतीप्रधानरूपगंभिरा॥२३॥ तिनमेंविश्वलिनहोयजावे॥ ममसंकल्पवडारहननपावे॥ सोयुहप्रा
णिमात्रहेजेही॥ कल्पकेआदिसृजूंमेंतेही॥२४॥ वहुप्रकारपरिणामिजेऊं॥ प्रकृतीनाममममायातेऊं॥ ॥५७॥

अष्टविभागजऊअकरिनहा॥ मेंजगसृजूंविगतसंदेहा॥२५॥ देवमनुष्यआदिकसंसारा॥ मोरप्रकृतिवस्यप्रा
णिअपारा॥ समयसमयमहिंवारमवारा॥ सृजूंविश्वमेंविविधप्रकारा॥२६॥ दोहा॥ अर्जुनतूमयुंपुछी
हो॥ सृजोविश्ववहुवार॥ सर्गादिकसमविसममें॥ उपजतकर्मअपार॥२७॥ सोनिरदइताटोषसें॥ वंधनक्युं
नहीहोय॥ याकोउत्तरसुवरीविधि॥ पारथकहुंअवतोय॥२८॥ चोपाई॥ कंनकुंधनंजयकहुंतोयवाता॥
विसमसृष्टीआदिकर्मताता॥ मोकुंवंधनकरतननेहा॥ निजनिजकर्मविसमभयेतेहा॥२९॥ पुर्वकर्मजिव
नकेजोइ॥ देवादिकभवहेतसोइ॥ विसमकर्ममहीसकमेंनांही॥ उदासीनवर्तुंइनमांही॥३०॥ कंतुंपार्थम
ममायाभारी॥ सवजीवनकेकर्मअनुसारी॥ ममसंकल्पमेंदेखूंनवही॥ मायासृजतसकलजगतवही॥३१॥
सवजिवनकेकर्मअनुसारा॥ ममइक्षणकोहोतपसारा॥ सोइहेतुकरिजगविस्तरही॥ कर्मनिकरिचऊवि
धिभवफरही॥३२॥ दोहा॥ जन्ममरणप्राणिअनंत॥ पावतविविधविकार॥ ममशरणागतहोतनहीं॥ त
हतनभवजलपार॥३३॥ चोपाई॥ सवकोअतिवडईश्वरजेऊं॥ सवहीज्ञानसमसंरूपतेऊं॥ सवजगकार
नमेंसकरवकारी॥ परमकृपालुभक्तभयहारि॥३४॥ सवहीकुंआश्रयकरनकेकाजा॥ मनुष्यरूपभयोमही

तसमाजा ॥ तासोममसहीमाहेजेही ॥ मुढमनुष्यनहिजानततेही ॥ ३५ ॥ अतिविघ्नितज्ञानकृतजोइ ॥ ओर
मनुष्यसममांनतमोइ ॥ तातेंमोरकरतअपमांना ॥ तिरस्कारवहुकरतअज्ञाना ॥ ३६ ॥ मेरेमनुष्यतनमेंक
खदाई ॥ परमकृपाआदिकप्रभुताई ॥ तिनकुंदेखनहारिजेहा ॥ आसुरीमोहनिसायातेहा ॥ ३७ ॥ दोहा ॥
अक्षरव्यक्तिकुंअनुसरे ॥ मुढमनुष्यहेजोय ॥ निष्फलवांछितकर्मसब ॥ निष्फलकरतहेसोय ॥ ३८ ॥ व्यर
थज्ञानअज्ञांनकृत ॥ सर्वेश्वरमेवाही ॥ अन्यमनुष्यसममांनिके ॥ नासकरनचहेताही ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ एसे
मनुष्यहेजेउ ॥ जोजोफलहीनकरतकछु ॥ व्यरथहोतसबतेउ ॥ मुढसदाखुंपचीमरत ॥ ४० ॥ चोपाई ॥ तेपा
रथजोमहामतिधिरा ॥ फलकृतमसुहमेंअतिगंभीरा ॥ सोफलकृतमेंन्यारनममपावे ॥ सबहीपापबंधनमी
टजावे ॥ ४१ ॥ देविप्रकृतिआश्रितजनजेहा ॥ सबजगहेतुंजांनिसोयतेहा ॥ अविनासीकरुणाअतीभारी ॥
संतनकोरक्षणाउरधारी ॥ ४२ ॥ मनुष्यभावकरिममअवतारा ॥ सोयदृहमर्मजांनिकेसारा ॥ अनन्यभावउरमें
हरखाई ॥ भजतमोयुक्तविज्ञनकरखदाइ ॥ ४३ ॥ श्रीनारायणरूपममोरारी ॥ वासुदेवआदिकरूपधरारी ॥ सुं
ममनामकोकिरतनजेहा ॥ करतनिरंतरममजनतेही ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ ममअरचादिककरममें ॥ जतनकरन ॥ ५८ ॥

वडभाग ॥ ममवंदनसतवनादिमें ॥ जासीअधिकअनुराग ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ दृढउलुंकरतप्रणाम ॥ मेरेजोगकुं
चहतनित ॥ सोकरिभक्तिअकाम ॥ मोहीकुंपावतविमलमन ॥ ४६ ॥ चोपाई ॥ ओरकुंअतिवडज्ञानमवा
ना ॥ कीरतनादिभक्तीसेफजाना ॥ ज्ञांनजज्ञकरिजजतहेजेहा ॥ ममउपासनकरतहेतेहा ॥ ४७ ॥ जगआकार
रह्योमेंजेऊं ॥ सर्वप्रकारवरतूंमेंतेऊं ॥ ताकुभावुकरिमोयउपासे ॥ ताकुंमोविनओरनभासे ॥ ४८ ॥ जउचेतन
सबजाकोदेहा ॥ नारायणसरवातमतेहा ॥ तातेंउपासनजोयहेसोइ ॥ सुंअविरणकउपासनमोइ ॥ ४९ ॥ सो
अवकृतक्रतुहेजोउ ॥ अग्निष्टोमआदिकमेंसोउ ॥ मेंकुंमहायज्ञअघहारी ॥ मेंकुंस्वधापित्रिगणप्यारी ॥
५० ॥ दोहा ॥ हविआदिकअंनसोउमें ॥ मेंहीमंत्रकेरूप ॥ देवनकुंहविदानको ॥ साधनपरमअनुप ॥ ५१ ॥ घृ
तसोमेंअरुअग्निमें ॥ आहवनियादिकजेऊ ॥ होमसोइममरूपहे ॥ जांनिलेऊंतुमतेऊ ॥ ५२ ॥ चोपाई ॥ थि
रचरजगकोमेंपितुमाता ॥ मेंधातापोषकविख्याता ॥ मेंहीपीतामहसबजगकेरा ॥ मोविनकारननांहीअनेरा ॥
५३ ॥ जाननजोगपवेदकरिजेऊं ॥ पावनपरमतत्वमेंतेऊं ॥ मेंपवित्रकरनाअतिप्यारा ॥ मेंकुंवेदविजउंकारा ॥ ५४
ऋगअरुसामयजुरकेआदि ॥ वेदरूपमेंब्रह्मअनादि ॥ शब्दब्रह्मममरूपकहावे ॥ जिनकरिजिवपरमपदपावे ॥ ५५

गतिजोइइंद्रलोकादिस्थाना॥ पावनजोग्यसोमेंहिकजांना॥ मेंभरतासबधारनहारा॥ मेंप्रभुशिक्षकपर
मउदारा॥५६॥दोहा॥ मेंसाक्षीसबजगतकौ॥ शुभगरविलोकनहार॥ मेंनिवासथलसबहीकौ॥ अरुगासर
णआधार॥५७॥चौपाई॥ आश्रेजोग्यशरणमेंभारी॥ हितवांछुमेंसकलनरकरखकारी॥ प्रभवजोउदयस्था
नमेंसोई॥ प्रलयस्थानमोविनतहिकोइ॥५८॥ बस्कउपायधरनकोंस्थाना॥ धरनेजोग्यसोमेंहीनिधांना॥
तिनमेंनासरहीतहैंतेऊं॥ बिजरूपमेंहीकुंतेऊं॥५९॥ करअसरूपसोमेंतमहारि॥ ग्रिषमरितुमेंतापकरूंभारी
मेंजलग्रहणकरूंफिरताई॥ वर्षारितुमेंवरषुजलआइ॥६०॥ हेअरजुंनअमृतहैंजेहा॥ जिनकरिजीवजी
वमेंतेहा॥ मृत्युजिनकरिमर्तहैंप्रानि॥ मेंकुंसोउलेकुंपहिचानि॥६१॥दोहा॥ बहुतकहेंक्याहोनहें॥ जइचे
तनजगजोय॥ सबहीरूपमसोमेंहीकुं॥ मोसेंभिन्ननकोय॥६२॥ तुंभिनभिनआकारसें॥ नामरूपजगजेऊं॥
अनंतरूपसंसारसब॥ ममशरीरहैतेऊं॥६३॥ नातेंतिनतिनरूपकरी॥ रह्योमेंजगआधार॥ उपासनाकरू
एकरी॥ महामतिअधिकउदार॥६४॥चौपाई॥ ऋगजजुसांमरूपहेंजेऊं॥ विद्यातिनकहावततेऊं॥ केव
लतिनमहीनिष्ठाजेहीं॥ तासेंपुरुषजगतमेंताही॥६५॥ वेदतिनकरिथ्यापेउजेहा॥ इंद्रादिककरगणसबतेहा ॥५९॥

तिनकेंजज्ञसकंशोपहेंजेही॥ सोमकोपानकरतहेंतेही॥६६॥ स्वरगकिआसीविरोधिजेता॥ भयेसोपवित्रपाप
गयेतेता॥ जज्ञसेंइंद्रादिकजजीजोई॥ स्वरगप्राप्तिजाचनहेंसोई॥६७॥ दुखकेअंशरहीतसुरलोका॥ तिनकें
पायकेरहतअशोका॥ स्वरगमेंदिव्यदेवकेंभोगा॥ सोभुंजेंसकरत्रियसेंजोगा॥६८॥दोहा॥ अतिविशालसु
रलोककसुख॥ भुक्तहेनरजोय॥ स्वर्गप्राप्तिहेतुसकृत॥ क्षयसेंगिरतहेसोय॥६९॥ फेरआवृतमृतलोकमें॥
स्वरगचहतइमीजेऊं॥ केवलऋगजजुसांमके॥ धर्मअनुसरेतेऊं॥७०॥सोरठा॥ तासेंपुरुषहेंजोउ॥ अनंत
वारजनममतमरत॥ सोतिनपावतसोउं॥ भजनभक्तीविनभवभ्रमत॥७१॥चौपाई॥ मेंरभजनविनोअन्यजे
हा॥ जिनकुंनांहीप्रयोजननेहा॥ तासेंअधिकविमलमतीजोई॥ मोरेइध्यानउपासनसोई॥७२॥ चहततनिरं
तरमेरोसंगा॥ तासेजनकुंलगेपाहददंगा॥ मेरिप्राप्तिजोग्यहेंजोउं॥ विघनरहीतअक्षयकरूंसोउ॥७३॥ अन्य
देवइंद्रादिकजेही॥ तिनकेंभक्तकरावततेही॥ अतिश्रवाजुतहीपकेजेऊं॥ इंद्रादिकसुरजजनहेंतेऊं॥७४
हेपारथसोनरमतिधिरा॥ इंद्रादिकसुरमोरशरीरा॥ सबहिकोआतममेंसरबकारी॥ जजनतहेसोपदरविवि
भचारी॥७५॥दोहा॥ विधिहिनयहजजनतहे॥ जोग्यसुजजतनसोइ॥ भ्रमनभ्रमतभवसिंधुको॥ पारनपावत

गी·भा· कोई ॥७६॥ चौपाई ॥ सबही जन्म मुक्त मैं तेऊं ॥ फलदाता जोइ में ऊं तेऊं ॥ तासें जथारथ मोय न जांनी ॥ गिरत स्व अ·९
॥६०॥ रग सें तन अभिमांनि ॥७७॥ इंद्रादिक सुरगण हे जाही ॥ तिनकुं तजसा को मं ऊपजे ही ॥ तासें मनुष्य अपर मित जेहा
इंद्रादिककुं पावत तेहा ॥७८॥ पितृकुं जजत प्रेम ऊत जोई ॥ पितृन कुं पावत हे सोई ॥ भूतकुं जजन को मं ऊपजा ही
भूतन किं पामि हे ताही ॥७९॥ मोय जज्ञ में जजत हे जोउं ॥ अनन्य भाव उर लायके कोउं ॥ सो मोय पावत मिरोदोमा
ताकुं नांही काल की त्रासा ॥८०॥ दोहा ॥ मोय जजत हे ताही कुं ॥ ताही देत कविशेष ॥ जेहा विधि सुगम उपाय सो
ऊं सरल उपदेश ॥८१॥ चौपाई ॥ पत्र पुष्प फल तोय दे जेहा ॥ भक्ति ऊं अरपन मोय तेहा ॥ मोमें हेत जाही
अति भारी ॥ मोय अरपे विन फल दरबारी ॥८२॥ जिम तन कछु प्रसाद विन तेऊं ॥ एही विधि भक्ति ऊं हे तेऊं
तासी भक्ति सें अरपत जे ही ॥ पत्रादिक पे प्रेम के नेही ॥८३॥ पुरन काम सदा में जोई ॥ मगन होय जिम तऊं सोई ॥
प्रेम भक्ति समरपन जेता ॥ अति सुख धाम लगत मोय तेता ॥८४॥ हे कुंति सुत सकं तुम मम बाता ॥ निज तन धारण
हित विख्याता ॥ जो जो कर्म करत तुम विरा ॥ जो जो जिमत सदा मति धिरा ॥८५॥ दोहा ॥ जो कछु होमत देत क
छु ॥ तप ऊं करत कछु जोय ॥ मनक्रम वचनें प्रेम ऊं न ॥ सबही समरपो मोय ॥८६॥ चौपाई ॥ युं मंन्यास जोग सु ॥६०॥

खदा ही ॥ तिन सें ऊं आतमा जाही ॥ तासे तुम अनितन पर जेऊं ॥ लौकिक वैदिक कर्म हे तेऊं ॥८७॥ मम आ
राधन मय करि राहा ॥ शुभ अशुभ फल रूप हे तेहा ॥ पुर्व कर्म के रूप अपारा ॥ तिन करि मुक्त होइ हो प्यारा ॥
८८॥ एही विधि कर्म के बंधन जोई ॥ तिन सें मुक्त सबही विधि होई ॥ मोही कुं पे हो मम उपदेशा ॥ या मही मंमे को
नही लेसा ॥८९॥ सबही प्राणि मात्र नर नारि ॥ सब में मोय सम मह रही भारी ॥ तातें द्वेष जोग पको उ नांही ॥ नही को
उ अधिक हेत जगमांही ॥९०॥ दोहा ॥ जो मोय भजत हे भक्ति में ॥ मोहां में वरतत तेऊं ॥ में वरतुं सो भक्त में
अति वल्लभ मोय ताऊं ॥९१॥ चौपाई ॥ उत्तम कुल आचार हे जेही ॥ तिन करि रहीत रहत हे तेही ॥ अनन्य भा
व मोय भजत है जेहा ॥ साधु ही मांनने जोग्य हे तेहा ॥९२॥ याके उर मम निश्चे जोइ ॥ अति उत्तम वरतत हे सोई
सब ही विश्व के जो आधारा ॥ नारायण पर ब्रह्म उदारा ॥९३॥ सो इ भगवान सदा मम स्वामी ॥ सो इ मम गुरु स
मंधि वऊं नामी ॥ एही विधिया को निश्चे जेऊं ॥ साधु ही मांनने जोग्य हे तेऊं ॥९४॥ अनन्य भाव मोय भजत हे
जवही ॥ भजन सें पाप मिटत सब तब ही ॥ तासो पुरुष भजन रत जोउं ॥ सद्य होत धर्मात्मा सोउं ॥९५॥ दोहा ॥
पुनरावर्त्ति रहीत सो ॥ सांति ही पावत संत ॥ हे कुंती सुत दास मम ॥ गिरत नही बुधिवंत ॥९६॥ अरजुन त

मयह अर्थ में ॥ करऊं अचल विश्राम ॥ जदपि अस कधम्म आचरण करत ॥ मम जन कौ नहीं नास ॥ ९७ ॥ सोरठा
मम भक्ती तुर तास ॥ भक्ति के माहात्म सें सकल ॥ पाप पुंज करि नास ॥ परिपुरण सो होत जन ॥ ९८ ॥ चोपाई
हे पारथ त्रिय वैस्य परु सुद्र ॥ पाप जोनि चांडालि अनि क्षुद्र ॥ ऐसें ऊं जब मम आश्रीत होई ॥ परम गती पाव
त है सोई ॥ ९९ ॥ तब जो नध रिपु विप्रकुल देहा ॥ वा सुंगा क्षत्री भये हें जेहा ॥ सो मोय भक्त होय मोय पावें ॥
तिन की वात कहा वरनि सुनावें ॥ १०० ॥ तातें तुम अनित्य सब जानो ॥ अस्कर स्वरुप यह लोक पुमानो ॥ इ
ह नित्य धर्म में रही के विर ॥ पेम सें मोय भजो रणधिर ॥ १०१ ॥ अब जो भक्ति को रुप है ताता ॥ सब विधि तोय
कऊं साक्षाता ॥ हे अरजुन सर्व तुम में जेहा ॥ सम सं रुप जग करता तेहा ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ पुरुषोत्तम पर
ब्रह्म में ॥ मो ही में मन धरि तात ॥ मोर भक्त होई मोही जज ॥ मोही नमो साक्षात ॥ १०३ ॥ में हो परम आधार
एक ॥ सब विधि तुं तुम होयु ॥ युं मोमें मन जोरि कें ॥ पेहो अचल मनि मोय ॥ १०४ ॥ परम स्वरुप मोय जा
नि कें ॥ भए अनन्य मम दास ॥ मुक्तानंद को नाथ कहे ॥ मम पद तास निवास ॥ १०५ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गी
तासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मुक्तानंदमुनिविरचिते भगवद्गीतानारी काया ॥ ६१ ॥

राजगुह्ययोगोनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ चोपाई ॥ भक्ती जोग कहावत जेऊं ॥ सामग्री करत वरन्यो तेऊं ॥
अब दशमें अध्याय में ताता ॥ भक्ति की उत्पति होत साक्षाता ॥ १ ॥ सो भक्ति को हेतु हित भारी ॥ प्रभु के निरुप
कुशल अपहारी ॥ ऐश्वर्यादिक गुणगण जेऊं ॥ अति कल्याण रुप वऊं तेऊ ॥ २ ॥ थिर चर सब ही जक्त हे जेही
प्रभु के शरीर रुप रे तेही ॥ प्रभु सर्वातम सब जगत्राता ॥ जक्त प्रवर्त्तक करत है वाता ॥ ३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
हे महाभुज मम माहातम जेहा ॥ कहनि कें मगन तुम होत हो तेहा ॥ मोर भक्ती उतपती हुही जोइ ॥ सो हो न कि इ
च्छा करि तोई ॥ ४ ॥ दोहा ॥ फिर मम महातम कहु सुभ ॥ वचन कहुं तोय विर ॥ सावधान तुम होय के ॥ सु
नऊं परम गंभिर ॥ ५ ॥ चोपाई ॥ हे अरजुन सुरगण सब जेहा ॥ इंद्रादिक जु वितंत हे तेहा ॥ भृगु आदिक महा
ऋषी सुही चाना ॥ अधिक ज्ञान करत परम सुजाना ॥ ६ ॥ मम प्रभाव जानत नहीं तेऊं ॥ अगम अगाध जा
ने मोय हऊं ॥ देव महर्षि गण ब्रह्मचारी ॥ सब ही को कारण में ही अनादी ॥ ७ ॥ तातें मम महिमा है जोई ॥ सु
र मुनि सिद्ध न जानत कोई ॥ नेति नेति कही निगम वखाने ॥ मम महातम सब को ऊं न जाने ॥ ८ ॥ सब कारण अ
नादि हें जेऊं ॥ लोक को अति वड ईश्वर तेऊं ॥ जन्म मरण रहीत अविकारी ॥ जानत मोय परम सुखकारी ॥ ९

दोहा ।। मोहरहीतसोमनुष्यमध्य ।। सुंजानतमोयजेऊं ।। सबहीपापकेपुंजमें ।। मुक्तहोतहैतेऊं ।। १० ।। चोपा
ई ।। जउचितवस्तुनिरूपणजेहा ।। मनकरिकरतबुद्धिहैतेहा ।। जउचितवस्तुभेदहजोई ।। जिनकरिजांनेज्ञान
हैसोई ।। ११ ।। सोइअसमोहकऊंमोहनपावे ।। अतिअविकारक्षमासोकहावे ।। कहतजथारथसत्यहैतेही ।।
बाह्यइंद्रिनिग्रहदमहैगही ।। १२ ।। समअंतःकर्णनिग्रहहही ।। सुखआत्मानुभवश्रुतिकहही ।। दुख
जोविषयकोअनुभवसोउ ।। भवजोउतपतीऔरनकोउ ।। १३ ।। मनकोविषादअभावहैराऊं ।। दुखहेतु
दरशनभयतेऊं ।। भयकेहेतुमिलनहैजबही ।। तहांभयपरहीतअभयहूहरतबही ।। १४ ।। दोहा ।। करन
नपिडाकाहूकुं ।। राहीअहिंसाधर्म ।। सत्रुमित्रमैंसममदा ।। सोइसमताकोमर्म ।। १५ ।। चोपाई ।। लाभअला
भसंतोषहैजाही ।। मुनिवरतुष्टिकहतहैताही ।। शास्त्रमेंकहेभोगकछुजेहा ।। सोतजीदेहदमनतपतेहा ।।
१६ ।। आपकुंभोगजोमपहेजेहा ।। औरकुंदेनदानहैतेही ।। जसजोअतिकिर्त्तिजगजाई ।। अजशजोअपकी
र्तिदुखदाई ।। १७ ।। राहीविधिप्राणीमात्रहैजोउ ।। भिनभिनभावजुकछुहैसोउ ।। मनकिवरत्तिबहुभांतजेऊं
ममसंकल्पवरूपवरनतनतेऊं ।। १८ ।। अरुपूर्वमनवंतरमांही ।। भृगुआदीकमुनिसप्तकहाही ।। सप्तम

ऋषिपावरतनकाजा ।। विधिकेमनमैंभयेमुनिराजा ।। १९ ।। दोहा ।। सावरणिआदिकमनुं ।। स्थितिहितव
रतनच्यार ।। जेहीमनुकंसंतानमय ।। लोकमेंप्रजाअपार ।। २० ।। प्रजाअपसउपजायकें ।। पालनतप्रलयप्र
जंत ।। ममसंकल्पवरूपविश्वसब ।। जांनिलेहुवहीवेन ।। २१ ।। सोरठा ।। भृगुआदिकमुनिजेऊं ।। सावरणीम
नुआदिकऊं ।। ममसंकल्पवरूपतेऊं ।। ममअनुवरतीरहतनिन ।। २२ ।। चोपाई ।। ममरैश्वर्यविभुतिरूपा ।।
सबकल्याणगुनरूपअनुपा ।। ममभक्तिकोजोगहैजेहा ।। अचलअखंडकहावततेहा ।। २३ ।। अतिशुभ
भक्तिजोगहैराऊं ।। जानततारहीजथारथजेऊं ।। सोजोउतममजोगकेमांही ।। यामहाँतिसंभरसंशयनां
ही ।। २४ ।। जडअरुचैतनसबसंसारा ।। मैंतेहीउतपतीहेतुउदारा ।। मोहीसेंहोतहैसबजगगरहा ।। मोरस्वभा
विकसांमर्थितेहा ।। २५ ।। ताकुंसबविधिजानतजोइ ।। ज्ञानिपुरूपकहावतसोई ।। भावजुक्तअतितनप
रहोई ।। प्रेममगनअतिभजतहेमोई ।। २६ ।। दोहा ।। मोहीमेंबांधतचितकुं ।। मोहीमेरावतप्रांन ।। संतसभा
मेंपेमजुत ।। करतमोरगुणगांन ।। २७ ।। ममचरित्रअतिदिव्यकुं ।। कहतपरस्परजोय ।। कहतसुंनतममरगु
णसुखद ।। आनंदपावतसोय ।। २८ ।। चोपाई ।। सुंममजोगकुंइछतजोइ ।। मोहीकुंभजनप्रेमजुतसोइ ।। ग

सो पुरुष विमल मति धिरा॥ बुद्धि जोग तेही देऊं गंभिरा॥२९॥ जे ही बुधि जोग में नर बुधि वंता॥ मोही कूं पावे
विमल मति संता॥ सो बुधि जोग कूं पावत जोउ॥ मेरो ही भक्त होत दृढ सोउ॥३०॥ मैं तब तीन के अनुग्रह काजा
तेहि उर वसं चराचर राजा॥ अंतः करण कि वर्त्ति के हाही॥ रहूं प्रकाश रूप होती नुं मांही॥३१॥ तिन की मन वर्त्ति
मही ताना॥ रही कै सव ही भांति साक्षाता॥ मम कल्याण कारि गुण जेऊं॥ भक्त के उर में प्रगट करि तेऊं॥३२॥
दोहा॥ अति प्रकाश रूप ज्ञानमय॥ सो इह दिपक अनुप॥ तिन करि अज्ञान तिम ज्ञानतम॥ नास करूं दुखरूप॥
३३॥ अर्जुन उवाच॥ चौपाई॥ सुं श्रोता कूं आनंद कारी॥ भगुण गण को जो गुण अघ हारी॥ सुं ही विभुती
को संनि साजा॥ ते ही विस्तार कूं जानन काजा॥३४॥ सो इच्छा करत अर्जुन जेहा॥ वोलत भगवत जोरी कर नेहा
परम धाम पर ब्रह्म पुराना॥ अति पवित्र सर्व तुम जाना॥३५॥ तहि विधि कहत सकल मुनी जोई॥ तुम हो
श्री पुरुषोत्तम सोइ॥ सुं ही पुरुष परमातम रूपा॥ सवही कालरु करूप अनुपा॥३६॥ सव प्रपंच पर दिव्य श
रिर॥ सव कारन गुण नाधि गंभिरा॥ अति प्रकाश अज्ज न देव मीरारी॥ जन्म रहित निज जन भय हारी॥३७॥
दोहा॥ अति में मूष जेरी वे रक दे॥ सो इह तुम देव के देव॥ या कारन मुनि सी इसव॥ करत तुमारि सेव॥३८॥

चौपाई॥ आतम तत्व जथारथ जेऊं॥ तिनकुं जांनसु वही मुनि तेऊं॥ तुमकुं पुरुष पुरान वतावे॥ देवऋषी नार
द तिमि गावे॥३९॥ असित रुं देवल कृषी युं वखाने॥ व्यास हूं युं वताय भ्रम भाने॥ तुमहूं कहत मोकुं करत्तारा
मो ही में सव कि प्रवर्त्ति साक्षाता॥४०॥ हे केशव मोय कहूं द पिछानि॥ त्रिप्य के भाव सहित इह जांनि॥ त्रारणा
गत जांनि करी नेहा॥ कहत हो मोय कृपा करी तेहा॥४१॥ निज रोश्वर्य स्वभाव कि जेही॥ अति कल्याण रूप गुण
तेही॥ कहत हे अधिक दया करि सोई॥ परम सत्य करी मानुं सोइ॥४२॥ दोहा॥ नांही प्रसंसा मात्र करूं॥ तातें
श्री भगवान॥ प्रगट होन की रिति सव॥ जे हि विधि कृपा निधान॥४३॥ सोरठा॥ सुं ही प्रकाशन रिस॥ देव दैत्य
नहि जांने कोउ॥ महा कृपी परम पुनित॥ सो उन जानत मर्म यह॥४४॥ चौपाई॥ हे पुरुषोत्तम पुरुष पुराना॥
तुम निज ज्ञान सें परम सुजाना॥ निज आतम कूं जानो मीरारी॥ तुम सव जग करता करतारी॥४५॥ हे सव
विभु निर्यंता स्वामी॥ हे देवाधिदेव वहू नांमी॥ हे जगदिश जगतपती देवा॥ तुमही कहन जोग पत्त व भेवा॥४६॥
प्रभुत्व दिव्य विभुति जेहा॥ तुमही कहन जोग्य हो तेहा॥ अनंत विभुति करू तुम जेऊ॥ सव लोकन में व्यापि
रहे तेऊं॥४७॥ भक्ति जोग करू तमें तव दासा॥ भक्ति हूं सें नित प्रति अभ्यासा॥ चितवत रहूं तुम ही निन जोई॥

चितवन जोग पजांनुं किमि तोई ॥४८॥ दोहा ॥ कवन कवन भावनि विषे ॥ रहत नियंता होय ॥ कोन कोन मही
नाथ तुम ॥ चितवन जोग पहो मोय ॥४९॥ चौपाई ॥ मैं सब विश्व को कारन जेहा ॥ सो ही मैं होत पुर्व चरित्र सब गा
हा ॥ इनु आदि कस्यो कन करी जेही ॥ कहो संक्षेप जो गयु उन तेही ॥५०॥ सुं ही विभु तिजनार्दन जेऊ ॥ करि विस्ता
र कहो मो यु तेऊ ॥ तुम ही कथीत व माहात म जोई ॥ कंनन तप्यास वादि अतनी मोइ ॥५१॥ अमृत पान करत अ
कोउ ॥ सुं सुं त्रपत होत न नहीं सोउ ॥ सुं मोय कंनन प्यास अति भारी ॥ कंनन त्रपती नहीं होत मो सारी ॥५२॥
श्रीभगवानुवाच ॥ श्रीभगवान कहत भगवाना ॥ कंतु कुरु श्रेष्ठ वचन विख्याता ॥ अतिकल्याण कारी
है जेउं ॥ दिव्य विभुति वरनि कहुं तेउ ॥५३॥ दोहा ॥ कहीं कुंतो य संक्षेप सें ॥ मुख्य विभुति जोय ॥ कहत न कं
न न विस्तार कुन ॥ संभव होत न कोय ॥५४॥ सोरठा ॥ मोर विभूती अनंत ॥ कहत कंनत विस्तार कुन ॥
को कुंन पावत अंत ॥ तो ही तें कहीं कुं प्रधांन सोइ ॥५५॥ चौपाई ॥ गुडाकेश कंतु परम उदारा ॥ सम सरीर
थिर चर जग सारा ॥ सब के हृदे कमल महत ताना ॥ आत्मा हो य रहुं साक्षाता ॥५६॥ तातें ध्यान मात्र जग
जेऊं ॥ सब ही को आत्मा में ऊं तेऊं ॥ सब ही को आद्य मध्य अवसाना ॥ मोइ सें होत हे परम सुजाना ॥५७॥ ॥६४॥

द्वादश आदित मध्य हे जोई ॥ विष्णु नांम सरूप में सोई ॥ जो ति विश्व प्रकाशक जेहा ॥ मैं कुं अंसु मान रवि तेहा
५८॥ मरुत जो उंनचास सुभ वाना ॥ तिन में मरिची वायु में आता ॥ सब नक्षत्र महीं उत्पति जोउं ॥ सित
जचंद्र रूप में सोउ ॥५९॥ दोहा ॥ चहुं वेद में श्रेष्ठ सो ॥ साम वेद में सोय ॥ सब देवन में श्रेष्ठ सो ॥ वासव जा
न कुं मोय ॥६०॥ सब इंद्रिन में श्रेष्ठ सो ॥ मन के रूप में तात ॥ चेतन सक्ति जंतु कि ॥ में कुं सोइ साक्षात ॥६१॥ चौ
पाई ॥ एकादश रुद्रन मध्य जेऊं ॥ शंकर नांम रुद्र में तेऊं ॥ जक्ष रु राक्षस के पती जोउं ॥ धन के इश कुबेर में सो
उ ॥६२॥ अष्ट वसु मध्य उत्तम जेहा ॥ पावक नांम वसु में तेहा ॥ सब शिखरि परवत मध्य ताना ॥ मेरु मे रुर
प साक्षाता ॥६३॥ सब ही पुरोहित में मुख्य जेही ॥ पार्थ वृहस्पति में तेही ॥ सेनापती मध्य परम अनुपा ॥
देवसेन न में रूपा ॥६४॥ ताल सरोवर बहु विधि जेउ ॥ गिनत पार न हो आवत तेउं ॥ तिन मध्य मुख्य सिं
धु हे जोई ॥ अति अगाध में मम रूप है सोई ॥६५॥ दोहा ॥ सब मरिचि आदी कुरूषी ॥ तिन मध्य मुख्य हे जेऊ
भृगु नांम जो महा रूषी ॥ मेरो रूप हे तेऊ ॥६६॥ एकाक्षर सब वांनि में ॥ मेइ ऊं सो ऊँ कार ॥ जग्य मध्य जप जग्य
सो ॥ मैं ही स्वयं करतार ॥६७॥ सोरठा ॥ थावर परवत जोय ॥ तिन में हिमालय अचल ॥ मेरो रूप है सोय ॥ सब

परबतनमेंमुख्यमोई॥६८॥चौपाई॥सबहिवृक्षमेंपुज्यहैजोई॥नरूअश्वत्थमोरतनुंसोई॥देवरूषीमध्यमुख्य
हैजेहा॥मुनिनारदममरूपहैतेहा॥६९॥गांधर्वमध्यचित्ररथजेऊं॥मेरोरूपकहावततेऊं॥जोगानिष्टसीद्व
नेमध्यजोउ॥भजनवजोग्यमुनिकपीलमेंसोउ॥७०॥अमृतमथनसमेंभयोजेही॥सबअश्वनमेंमुख्यहै
तेही॥उच्चैश्रवाअश्वअतीभारी॥मेरोरूपसोलेऊंविचारी॥७१॥अमृतमथनसमेंभयोजेउ॥ऐरावत
गजमेइऊंतेउ॥मनुष्यमध्यराजाहैवाही॥मेरोरूपजानोतुमताही॥७२॥दोहा॥सबआयुधमहीवज्र
में॥हवीदुधधेनुंजेऊं॥तिनमध्यकरभीनामसो॥कामधेनुमेंतेऊं॥७३॥जन्महेतुकंद्रपसो॥कामदेमेरोरू
प॥तक्षगीरजनसबसरपहीं॥वासुकिमेंहीअनुंप॥७४॥चौपाई॥नागअनंतमस्तकजनजेहा॥ति
नमध्यशेषनागमेंतेहा॥सबजलजंतुकेपतीजोई॥वरुणनाममममरूपहैसोई॥७५॥पित्रिनमध्यअर्यमा
जेऊं॥मेरोरूपजानोतुमतेऊं॥शुभअशुभकर्मफलदाताजोउं॥तिनमध्यधर्मराजमेंसोउ॥७६॥सबदैतनके
मध्यउदारा॥जनप्रह्लादस्वरुपहमारा॥अनंतसंख्याग्रहकरतहैजेही॥तिनमध्यकालमोरतनुतेही॥७७॥स
बमृगगणमहीमृगपतीजेउं॥केसरिसिंहमोरतनुंतेउ॥सबहीपंखिमेंअतिबलवाना॥गरुडसोमेरोरू ॥६५॥

पसुजाना॥७८॥दोहा॥पुनितकरतवावेगजन॥तिनमध्यवायुंजेउं॥अतिनिअसंगिअतिशेषबल॥मा
रुतममतनुंतेउ॥७९॥शास्त्रधारिसबहीनमहीं॥दशरथसुतश्रीराम॥मोरविभुतितांहीग्रहु॥ममस्वरूप
करखधांम॥८०॥सबहीमच्छकिजातिमें॥मघरमच्छममरूप॥सबहीनदीनमहीजाह्नवी॥गंगामेंहीअनुं
प॥८१॥चौपाई॥सृजनजोगपसबप्राणीअपारा॥सबहीकालतेहीहैतुंउदारा॥पुनीपुनिसृजनकोकार
नजेऊं॥हैआरजनसबविधिमेंतेऊं॥८२॥सबकोनाशकरतहैजेहा॥मोविनदुजाकोउनतेहा॥मध्यमेंपो
षनकरतहैजोउं॥सबसुरवधाममेइऊंसोउ॥८३॥अतिकल्यानकोसाधनरूपा॥सबविद्यामहीपरमअनूं
पा॥अतिकल्याणरुपसुरवकारी॥मेंहीअध्यातमविद्याभारी॥८४॥जल्पवितंडादिकवहुवादा॥तिनहीं
तवकतकरतवजनादा॥तिनमेंतत्वनिरणयहीनजेही॥तासोवादमोरतनुंतेही॥८५॥दोहा॥अक्षरम
ध्यअकारमें॥सबहीसमासहैजेऊं॥तिनमेंउभयपदमुख्यसो॥द्वंद्वसमासमेंतेऊं॥८६॥मुअरतकाल
किआदिसब॥अक्षयकालमेंजोय॥भरणरुपोषणसबहीको॥मेंहीकरतहुंसोय॥८७॥चौपाई॥स
बकेप्राणहरतहेजेहा॥मृत्युरुपमेइऊंतेहा॥उपजनहैप्राणीजगजेही॥उतपतिरूपकरममेंतेही॥८८॥

सब नारि मैं रीझि कीर्ति नाम ॥ श्री अरु बांनि स्मृति गुन धाम ॥ मेधा धृति क्षमा है जोई ॥ सात धर्म पत्नी मैं सो
ई ॥ ८९ ॥ गान करन कि ऋचा है जेऊ ॥ तिन मैं वृहत साम मैं तेऊ ॥ पारवंध सु निछंद अनुपा ॥ तेही मध्य गाय
त्रि मम रूपा ॥ ९० ॥ बारु मास मध्य अनि भारी ॥ मास मार्गसिर मै अघहारी ॥ षट ऋतु मध्य जो सुख प्रमानी
मैं ऋतु रितु बसंत सुखदानी ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ छल करि जो अरु कुं धुत है ॥ तिन मध्य द्युत है जेऊ ॥ पापा रवेलन
रूप छल ॥ मेरो रूप है तेऊ ॥ ९२ ॥ चौपाई ॥ उग्र स्वभाव जु जन रजे हा ॥ तिन को तेज मैं हूं तेहा ॥ जितन हार
को जय है जेही ॥ पारथ सब वही भांति मैं तेही ॥ ९३ ॥ निश्चै जथार्थ करता जेउ ॥ तिन को दृढ़ता श्रुभ मैं तेऊ ॥ सात्वी
कि नर के धर्म अरु ज्ञाना ॥ सत्व के कारज मैं ही जाना ॥ ९४ ॥ वासुदेव वृष्णि कुल मांही ॥ मैं वसुदेव पुत्र अ
स नांही ॥ तो यदुपदेस को करनेहारा ॥ वासुदेव मैं जगगुरु जी धारा ॥ ९५ ॥ पांडव मध्य धनंजय जोउ ॥ तरे रू
प मैं मेरूं सोउ ॥ मनन सें आतम ज्ञानि जोइ ॥ तिन मही व्यास मुनि मैं सोइ ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ कवि विवेकी पु
रुष सब ॥ तिन मध्य उशना जोय ॥ शुक्राचारज दैत्य गुरु ॥ मेरो रूप है सोय ॥ ९७ ॥ चौपाई ॥ नियम लोप
भार दमद जे हा ॥ तिन को दंड मैं हूं तेहा ॥ जितन कुं इछत हे जोइ ॥ तिन को जय पत पाप मैं सोइ ॥ ९८ ॥ गो ॥६६॥

प्य राखने जोग्य है जेही ॥ बांनि नियम मैं रखन मैं नेही ॥ सब ज्ञान तिन को ज्ञान है जेऊ ॥ पारथ सब वही भांति मैं
तेऊ ॥ ९९ ॥ हे अरजुन स्थिर चर जग जोउ ॥ तेही उतपति कारन मैं सोउ ॥ स्थिर चर प्राणि मात्र है जेता ॥ मम ता
रि रूपी है तेहा ॥ १०० ॥ आत्मरूप करि रहुं सब मांही ॥ मो विन स्थिर चर सब नसनांही ॥ तातें प्राणि मात्र है जेउ
मै आत्मा तेही कहुं है नेउ ॥ १०१ ॥ दोहा ॥ अंत न कुं परंतप मोर यह ॥ दिव्य विभुति जेऊ ॥ कहत अंत न आव
तन ही ॥ अमित अपार है तेऊ ॥ १०२ ॥ सोरठा ॥ यह विभुति विस्तार ॥ सो मैं को उपाधि करी ॥ संक्षेप हि कह्यौ
मार ॥ नही विस्तार को पार कऊं ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ जो जो प्राणि ऐश्वर्य समेता ॥ सोभा कांती जुक्त है जेता ॥
धन आदि कु लक्ष्मी जुत जे हा ॥ मोक्ष के ही न आरंभ जुत तेहा ॥ १०४ ॥ सो सो मेरो तेज है तेऊं ॥ अचर्य नियाम
क शक्ति तेऊं ॥ तिन के एक देश मैं एही ॥ उपजो सु जानो तुम तेही ॥ १०५ ॥ हे अरजुन अथवा वहु वारा ॥ बहु जत
न ज्ञान कि ने विस्तारा ॥ कवन प्रयोजन होत है भाई ॥ कहुं संक्षेप मैं मम प्रभुताइ ॥ १०६ ॥ यह सब जड चेतन सं
सारा ॥ गिनत गिनत को उ लहत न पारा ॥ मम महीमा को कोटि म अंसा ॥ तेही जग धारी न करु प्रसंसा ॥
१०७ ॥ दोहा ॥ जेही महीमा को अद्भुतको ॥ अद्भुत अंश है जेऊ ॥ मुनि पराशार सु कह्यौ ॥ विष्णु कुं धारत तेऊ ॥ १०८ ॥

प्रभुकीमहिमाअनंत ॥ जानैजथारथजोय ॥ मुक्तानंदकहैमहामती ॥ होतकृतारथसोय ॥ १०७ ॥ इति
श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमुक्तानंदमुनिविरचितायांभगवद्गी
तार्थकायांविभूतियोगोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ चौपाई ॥ सुंदरशामेअध्यायमेंएहा ॥ भक्तीजोगसि
द्धिहितजेहा ॥ भक्तीजोगकिवृद्धीकाजा ॥ नामरूपसबअनसमाजा ॥ १ ॥ तिनमेंविलक्षणअतिसुखकारी ॥
प्रभुकेगुणसमूहअनिभारी ॥ अतिकल्याणरूपगुणजोई ॥ रहतहेसदास्वभाविकसोई ॥ २ ॥ तेहीगुणकै
कसदाप्रभुजेउ ॥ सारवात्मकरिवरनेतेउ ॥ तापीछेप्रभुमेंभिनजेही ॥ जडचेतनवस्तुकहेतेही ॥ ३ ॥ नामरूप
थिरचरआकारा ॥ प्रभुकेसरीररूपजगसारा ॥ तातेसबहिवस्तुकहेजेऊ ॥ हरिआधिनसबहीविधितेऊ ॥ ४
दोहा ॥ प्रभुकोस्वभावसोसबहीविधि ॥ श्रीमुखकह्योप्रविन ॥ तहीजथारथयुद्धहे ॥ सुंदरनिश्चेकीन ॥ ५
सोरठा ॥ यातेंश्रीभगवान ॥ करनचहतसाक्षाततेही ॥ अरजुनपरमसुजान ॥ हाथजोरिबोलतभएउ ॥ ६ ॥
चौपाई ॥ तनअभिमानमोहसोइभारी ॥ तिनसेंमोहमेंपायोअघारी ॥ सोममनोहनिवर्तिकाजा ॥ परम
रहस्यकहेकरमुनिराजा ॥ ७ ॥ आत्माविषेजोगपहेजोई ॥ तुमसेवचनकहेतुमसोइ ॥ नहीतिनकुंकालमेंमेरो

नासा ॥ अरजुनतुमहितअचउममदासा ॥ ८ ॥ तुमसेवचनकहेउतुमदेवा ॥ तिनकरिमेंजान्योसबभेवा ॥ मेरेमो
हअधिकतमजेहा ॥ प्रभुतववचनगयोसबतेहा ॥ ९ ॥ कंनकुंकमुलदरवलोचनस्वामि ॥ तुमसबकारन
अंतरजामी ॥ विश्वकेउदयअस्तकहेजेऊ ॥ तवमुखकंनेसबहीविधितेऊ ॥ १० ॥ दोहा ॥ तवमहिमाअवि
नासीअज ॥ कुवकुनहीवुतनास ॥ सोसबतवमुखसेंकह्यो ॥ ताकोप्रबलप्रकास ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ हेजगदी
शकह्योतुमजेही ॥ मेंहदनिश्चेकिनोतेही ॥ हेपुरुषोत्तमअखरअभेवा ॥ निजआतमअनुकहतहोदेवा ॥
१२ ॥ सबकुंवश्यरारवतहेतेउ ॥ तमोरूपतमारोतेउ ॥ तेहीसाक्षातकरनकेकाजा ॥ मेंइछतउंसबजगराजा ॥
१३ ॥ हेप्रभुस्त्रजततजोसबसंसारा ॥ सर्वनियंतासबआधारा ॥ ताप्रतोरयहरूपहेभारी ॥ सोयदेखनशक्यमा
नोमोरारी ॥ १४ ॥ हेजोगेश्वरतवसोयरहा ॥ अविनाशीतवआत्माजेहा ॥ सोदेखाओनिजजनसुखदाना ॥ जो
तवरूपअधिकविख्याना ॥ १५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ युंकीतेकअरुहररवसें ॥ गदगदकंवस्कजान
तसेअरजुनप्रारथ्ये ॥ बोलेउश्रीभगवान ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ हेकुंतीसुतसबआधारा ॥ ममस्वरूपभिनभिन
आकारा ॥ शुक्लरुक्षादिकबहुरूपा ॥ अनंतवरणअरजुनदिव्यअनुपा ॥ १७ ॥ सतकेसतममरूपहेजेही ॥

सुं ही हजारुं हजार हे ते ही ॥ सो मम रूप विलोकहुं ताता ॥ अति सांमर्थ्य युक्त अति विख्याता ॥ १८ ॥ अरजुन
एक एक रूप हमारा ॥ तिन महीं देखहुं अरु संचारा ॥ अष्ट वसु देखहुं पुनि तांही ॥ सुं अपार रुद्र तिन मांही ॥ १९
उभय अश्वनि कुमारन कुं देखो ॥ सुं तुं चाम वायु कुं पेखो ॥ या जगच्च गर विलोके जेहु ॥ कं नेत्रन आश्चर्य मही देखो ते
हुं ॥ २० ॥ दोहा ॥ सुं कोय दिन देखे न ही ॥ ब्रह्माण्ड में कं ने न जोय ॥ एसें आश्चर्य अति अनंत ॥ सब विधि निर
खो सोय ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ मम एक देह ते ही एक देशा ॥ तिन महीं रहत है विश्व अशेषा ॥ थावर जंगम सब जग
जोई ॥ सब ही भांती तुम देखो सोई ॥ २२ ॥ हे निद्रा के जितन हारा ॥ जो देखन चहो अन्य आकारा ॥ मम एक देह
देशा ते ही एका ॥ तिन में देखो सच सही न विवेका ॥ २३ ॥ हे अरजुन मेरी एक देहा ॥ तिन को एक देश है जेहा
तिन में सब ही विश्व है जोई ॥ में अब सब ही दिखाउं तोई ॥ २४ ॥ एही तव प्राकृत चक्षु जे ही ॥ तिन करी के ए
सो में ते ही ॥ देखन कुं तुम समर्थ नांही ॥ युं में विचार किया मन मांही ॥ २५ ॥ दोहा ॥ दिव्य नयन तो पर्दं तुं
अधिक अप्राकृत जोय ॥ तिन करि मम ऐश्वर्य यह ॥ जोग हे देखो सोय ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ हे धृतराष्ट्र सुकं नो म
म बाता ॥ युं कही जोगेश्वर साक्षाता ॥ अधिक अलौकिक जोग के द्रष्टा ॥ होय रथ्य सारथी जगदीशा ॥ २७

निज पितु भगिनि तनय ते ही जांनी ॥ सुं अरजुन द्वढ भक्त पहचांनी ॥ अधिक असाधारण निज रूपा ॥ ताही देखाव
न लगे अनुपा ॥ २८ ॥ मुख अरु नेत्र अनेक है जे ही ॥ एसो रूप अलौकिक ते ही ॥ अगणित अद्भुत दरशन जेहुं
एक रूप मही भासत ते हुं ॥ २९ ॥ अगणित दिव्य आभुषण जेहा ॥ सोइ रूप मही भासत तेहा ॥ आयुध दिव्य अ
परमित जोई ॥ जिन में उगांमे भासत सोई ॥ ३० ॥ दोहा ॥ दिव्य पुष्प अरु वस्त्र कुं ॥ धारत है सोइ रूप ॥ दिव्य चंदन
अनुलेप जेही ॥ आश्चर्य परम अनूप ॥ ३१ ॥ अति प्रकाश युक्त रूप सो ॥ कित हुं न जाको अंत ॥ चहुं दिशा मुख
तेही रूप में ॥ सो हत अधिकु अनंत ॥ ३२ ॥ चोपाई ॥ गगन में सूरज सहस्र कि जोई ॥ एक समे कांती जब होइ ॥
विश्वरूप कि कांती जेहा ॥ तेही सम होत कि होत न तेहा ॥ ३३ ॥ अनंत अपरमित जेही विस्तारा ॥ प्रभु देवन के
देव उदारा ॥ तिन को दिव्य शरीर है जे ही ॥ तिन में अनंत विधि भासत ते ही ॥ ३४ ॥ ब्रह्मादिक के भेद करी एकुं ॥
अनंत विभाग करके हे ते हुं ॥ एक देश मही सब जग जोउं ॥ अरजुन तब देखत भये सोउ ॥ ३५ ॥ ता ते अरजुन
देखि अपारा ॥ अति अद्भुत रूप जग सारा ॥ प्रभु को एक देह है जेउं ॥ तिन के एक देश मही तेउं ॥ ३६ ॥ दोहा
देखि चराचर विश्व कुं ॥ विस्मय भयो अपार ॥ रोमांचित तन होय के ॥ लागे उ करन विचार ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ माहात्म्य

चर्म्मयदेखु॥ तेहीमस्तकसेंनमनकरी॥ जोरिपांनिततखेवु॥ पारथयुंबोलतभएउ॥ ३८॥ अर्जुनउवाच॥
चौपाई॥ स्कंनऊंदेखतवदेहकेमांई॥ कुरगणदेखतऊंक्करमांई॥ तुंसबप्राणिमात्रहेजेहा॥ थिरचरजंतदेखुंसम
बनेहा॥ ३९॥ जगकरताचतुराननजेऊं॥ तवतनुंमहीदेखतऊंतेऊं॥ वाककेवकमलासनराही॥ तिनमेंराखी
मनवेवेजेहीं॥ ४०॥ एसेंइत्रासंमधुत्रिपुरारी॥ तेहीदेखतऊंदेवमोरारी॥ कृपीनारदआदिकमुनिजेउ॥ सबवि
धिमेंदेखतऊंसोउ॥ ४१॥ उरगवासकीआदिकजेउ॥ तक्षादिकसबसर्पहेतेउ॥ दिव्यदेहसोईउरगअपारा
देखनऊंतवदेहमेंसारा॥ ४२॥ दोहा॥ विस्वेस्वरतवअनंतभुज॥ अनंतउदरमुखनेन॥ अनंतरूपतोयसब
हिमें॥ देखतऊंक्करखदेन॥ ४३॥ विस्वसबहीतंवदेहहे॥ तातेंनदेखूंअंत॥ मध्यनआदिदेखूंतवु॥ तुमअपार
भगवंत॥ ४४॥ चौपाई॥ तेजपुंजयहरूपतुमारा॥ चऊंदिशजाकीकांतिअपारा॥ दुखकरीदेखनजोग्यहेजे
हि॥ दिनअनलरविसमद्युतितेही॥ ४५॥ नहीपरिमाणमेंआवतजेऊं॥ मुगटसहीतदेखतऊंतेऊं॥ तेहीविधी
गदाचक्रऊतदेवा॥ मेंदेखतऊंअलखअभेवा॥ ४६॥ सबउपनिषदमेंकहेजेहा॥ परमतत्वअक्षरतुमतेहा
तुमहीसदासबजगआधारा॥ तुमहीजाननजोग्यउदारा॥ ४७॥ अतिशुधवेदकोधर्महेजोउ॥ तुमअवना

शिनिभावतसोई॥ निजअवतारसेंतुमअघहारी॥ वेदधर्मथापतक्करखकारी॥ ४८॥ दोहा॥ सोइसनात
नपुरुषसब॥ उपजेजदुकुलमांही॥ युंमेंमांनेअचलकरि॥ यामेंसंशयनांही॥ ४९॥ चौपाई॥ रहीतहीआद्य
मध्यअवसाना॥ अगणितप्राक्रमऊतभगवांना॥ अनंतबाऊऊतदेवउदारा॥ चंद्रभानुजीमिनेत्रतुमारा
५०॥ चंद्रसुंसितललोचनजेही॥ भक्तकेतापनिवारततेही॥ रविसमतसनपनतवजेहा॥ सबअभक्तकुं
पिउततेहा॥ ५१॥ दिसअनलसमआननजेऊं॥ तवमुखजगसंघारततेउ॥ प्रभूतवतेजसेंसबजगजोइ॥
अधिकतापऊतदेखुसोई॥ ५२॥ हेमहामतिश्रीहृदमकंतुबाता॥ स्वर्गभोमिकेमध्यसाक्षाता॥ सबदिलोक
अरुदशादिशाजेउ॥ तुमहीएककरिव्यापकतेउ॥ ५३॥ दोहा॥ अधिकउग्रतवरूपयह॥ देखिकेअतिविकराल
ऊधदेखनहीआयेसो॥ त्रिभूवनडरसेंबेहाल॥ ५४॥ चौपाई॥ तुमहीदेखिक्करत्रंदहेतेहा॥ तवसमीपअ
तसबजेहा॥ तिनकेमधकितनेकहेजेऊं॥ अद्भुततवबपुदेखिकेंतेऊं॥ ५५॥ अधिकडरेदोउजोरिकेंहाथा॥
करतहेस्तवुननमाचनमाथा॥ महाऋषीवृंदसिद्धगणजेही॥ अतिशोभ्तवनकरतहेतेही॥ ५६॥ सुंअगपारु
ड्हेजोइ॥ बारेभानुवसुअष्टहेसोइ॥ तेहीविधिसाध्यदेवहेचारा॥ निमिदशाविश्वेदेवउदारा॥ ५७॥ उभयअश्वनी

गी·भा· कतहेजेउं॥ उनचासवायु हेजेउ॥ पितरषजंतसो विस्मितभएउ॥ तुमही विलोकि चकितहोइरयेउ॥ ५८॥ अ·११

॥७०॥ दोहा॥ हाहाहूहू आदि सब॥ गंध्रवके गण जेऊं॥ जक्षकुवेरादिक सबे॥ विस्मे पाएउ तेऊं॥ ५९॥ असुर वि
रोचन आदि सब॥ कपीलादिक सिद्ध जोय॥ विस्मे जुत होइहे सब॥ तुमहि विलोकत सोय॥ ६०॥ चौपाई॥
हे महाभुज तव रूप उदारा॥ तिन महि मुख अरु नेत्र अपारा॥ सुं वहु कर उरु चरन हे जामें॥ उदर अनेक अ
नंत विधि तामें॥ ६१॥ अनंत दाढ करी अति विकराला॥ प्रभु तव रूप सो परम विसाला॥ तिनकुं देखि प्रथम
करहेजेउ॥ सबहि लोक भयपु दुख कत तेउ॥ ६२॥ सुं तव रूप देखि सब लोका॥ भयसें भिन पाव अति सोका॥
सुं मेरेउर में भय छायो॥ नव जनन तद विम हा दुख पायो॥ ६३॥ प्रकृती पुरुष को आश्रय रूपा॥ ऐसो अक्षर
ब्रह्म अनुपा॥ सोइन भता ही प्रसन्न तहे जेहा॥ अधिक प्रकाश ऊंऊ होइग हा॥ ६४॥ दोहा॥ अनंत वरण हे
जाही में॥ विकसे वदन अपार॥ अति विशाल प्रज्वलित अनंत॥ लोचन कत भयकार॥ ६५॥ ऐसे तुमकुं
देखके॥ अधिक डरयो में जोय॥ हे विष्णु धीरज अरु॥ सांति न आवत मोय॥ ६६॥ चौपाई॥ डरसें अधीक
भयंकर भारी॥ प्रलय अनल सम अती दुखकारी॥ सबही कुं नास करत हे जोइ॥ ऐसे तव मुख देखि के सोइ॥ ६७ ॥७०॥

दसु दिशि भेद न भासत कोई॥ सुं कछु लेवान रहो वृत मोई॥ हे देवेस प्रसन मोय होहं॥ दीउ में सांत करी प्रभु सोउ॥
६८॥ यह धृतराष्ट्र के सुत हे जेता॥ दुर्योधन आदिक सब नेहा॥ भिष्म रु द्रोणाचार्य जेऊं॥ सुं सुत पुत्र करण
हेतेऊं॥ ६९॥ ऐसे वहुत के पक्ष के राजा॥ नृप सम मुह सब सहीत समाजा॥ सुं हि हमारे पक्ष के जे हो॥ जोधा अन
नत कक हेतेही॥ ७०॥ दोहा॥ दाढन करि विकराल हे॥ तव मुख भय प्रद जोय॥ उभय सेन तव वदन में॥ वेग
सें पेवत सोय॥ ७१॥ तिन महि केतनेक विरके॥ शिर चुरण भए जेऊं॥ तिन कत दांत के छिद्र में॥ लगी रहे भासत
तेऊं॥ ७२॥ चौपाई॥ जेसें नदिन के जल हे जेउ॥ सिंधु हि सनमुख दोरत तेउ॥ सुं तव सुख प्रकाश कतसोई॥
नृपती मात्र तहां पेवत सोई॥ ७३॥ जैसु अती दिप्त अनल महि आई॥ गिरत पतंग वेगसें धाइ॥ सुं नृप लोक त
सही तन अव ही॥ तव मुख वेग सें पेवत सव ही॥ ७४॥ सव नरेन्द्र कुं तुम जगस्वामी॥ दिपमान मुख सें वह नां
मि॥ गिलत हो सब विधि करि वकुंप्यारा॥ तव सो नृपति के रुधिर कि धारा॥ ७५॥ तिन करि लिप्त अधर तव
जेहा॥ प्रेम सें पुनि पुनि चाटत तेहा॥ हे विष्णु तव कांति जेही॥ अति से घोर भयानक तेही॥ ७६॥ आपने तेज
करि कांती एऊं॥ सव हि लोक महि व्यापि केतेऊं॥ सव कुं तापकरत अति भारी॥ सही न जात अति दुखकारी॥ ७७॥

दोहा॥ अतिघोरयहरूपतूम॥ कहोप्रभुकोनहोदेव॥ कहाकरनेभईप्रवृतितव॥ जाननचहूंयहभेव॥७८॥
चौपाई॥ तववांछितप्रवृतिहैजेहा॥ सवविधिमेंनहीजांनुंतेहा॥ हेप्रभुयहसवकहोमोयवाता॥ रिझीमोय
देववरत्राता॥७९॥ एहीविधिकरनकूंरूपहेएही॥ यहअभिप्रायमेंप्रगटयोतेही॥ सवसंघारकारियहरूपा
एहीकारनहीनभयोअनुंपा॥८०॥ एहीविधिवातकहांसवस्वामी॥ प्रसंनहोउप्रभूअंतरजामी॥ सवहीभेद
कहोप्रभुमुखदाई॥ मैंतोपनमुंचरननिरनाई॥८१॥ श्रीभगवानुवाच॥ कहेश्रीकृष्णसुनुंअरजुनएही॥
कालरूपकरिमेंइकुंतेही॥ मुख्यधृतराष्ट्रपुत्रजिनमाई॥ एसिसवुनरदेवकहाई॥८२॥ दोहा॥ तिनकेअंतकुं
गिनतहुं॥ राजालोकहेजेहु॥ तेहिक्षयकारिघोरवपु॥ प्रगटकियोमेंएहु॥८३॥ इहीपायएहीरूपमें॥ नृप
तिलोकसवजीतुं॥ सवविधितेहीसंघारहीन॥ लोकमेंप्रवृतसोमोउ॥८४॥ सोरठा॥ समसंकूपवतुंपसोई॥
तवउद्यमविनउभयदल॥ रहननपावेकोय॥ होइहेनाशजोधासवही॥८५॥ चोपाई॥ यातेंशत्रुसमरजुंझध
विकराला॥ तेहाहिततवादीहैतवकाला॥ शत्रुजितिनिजसलेकुंदारा॥ भुक्योराजसम्रधिजुतसारा॥८६॥
दुर्योधनआदिकनृपजेहा॥ प्रथमहीदियेकालमुखतेहा॥ तूमइनकेमारेमहाविरा॥ निमितमात्रहोनारण ॥७१॥

धिरा॥८७॥ जगकरवानवलावनजोई॥ तातेंसव्यसाचिनकहेतोई॥ दोउकरजुधकरततूमताता॥ यातेंतव
प्रतापविख्याता॥८८॥ भिष्मद्रोणअरुजयद्रथजेहुं॥ करणतथाअन्यराजातेहुं॥ स्वरविरमधसूरहेजेही
मैंसवमरणमेंजोरेतेही॥८९॥ दोहा॥ तिनकुंतूमअतिवेगसें॥ नाशकरोततकाल॥ अनायासरणजीतो
के॥ पैहीभोगविशाल॥९०॥ गुरुवंधुअरुअपरनृप॥ भोगाशाकहेजोउ॥ मैंतेहासवुंकरमारिहुं॥ कष्टनपा
योतेहुं॥९१॥ सोरठा॥ जुधकरोतूमविर॥ दयानकरनिसत्रुपर॥ जितिहोतूमरणधिर॥ रणमधशत्रुमार
सव॥९२॥ संजयउवाच॥ दोहा चोपाई॥ कहेसंजयसुनुंनृपममवाता॥ निजभक्तनपरप्रभुसाक्षाता॥ द
यासिंधकेश्रवहेजोई॥ तासवचनयहसुनिकेसोई॥९३॥ अरजुनप्रभुकुंकिनप्रनामा॥ भयसेंभितपारथ
गुनधामा॥ पुनिप्रणामकरिजोरेउहाथा॥ पुनिपुनिप्रभुहीनमावतमाथा॥९४॥ एसेंअरजुनदिनहेजेहा॥
अतिडरयुतअजनसवदेहा॥ गदगदकंठवीकलहीपरएउ॥ पुनिश्रीकृष्णसेंवोलनभएउ॥९५॥ अरजु
नउवाच॥ हेकृष्णकेशभक्तभयहारी॥ तवकिरतिकरिकेअघहारी॥ जुधदेवनआपेहेजेही॥ सवजग
हरखकुंपावतेही॥९६॥ दोहा॥ सुंअनुरागकुंपावही॥ सवजगजसकहेजोय॥ तूमकुंदेखिराक्षसमउरे

सबदिशिभागेसोय॥९७॥सोरठा॥सिद्धसमुहहैतेजेऊं॥सोसबतुमकुंअतिनमत॥अधिकऊंक्कहेतेऊं॥नि
जजननरंजनखलदमन॥९८॥चौपाई॥हेबडआत्माऊनअघहारा॥अजऊंकेकरताअवतारी॥सबकुंअ
धिकवडेतुमजेहा॥ब्रह्मादिकननमतकिमितेहा॥९९॥हेअनंतहेदेवकेइशा॥हेजगवासदेवजगदीशा॥
अक्षरतिवुकहावतजोइ॥आतमवुक्कतुमहीहोसोई॥१००॥कारजकारणऊनतरहैजेही॥प्रकृतीतत्त्वजोइत
महोतेही॥प्रकृतिरूतिनऊनजीवहैजेउ॥दीउसेंपरसोमुक्तुमनेउ॥१०१॥आदिदेवजगकरताजोउ॥पुरु
षसनातनतुमहोसोउ॥तुमहीसबकेपरमआधारा॥जगमेंतुमसबजाननहारा॥१०२॥दोहा॥जाननतो
ग्यसोसबहीतुम॥सर्वातमतुमजोई॥एहीप्रकारसबमेंरहो॥परमधामतुमसोई॥१०३॥हेवऊरूपीतुमही
प्रह॥जडचेतनसंसार॥तिनमेंव्यापकआत्महोई॥तुमहोजगआधार॥१०४॥सोरठा॥तातेंवायुआदी॥न्ना
न्नमेकहनेजोग्यजोई॥तुमहिसोदेवअनादि॥सर्वातमसबसेंप्रथक॥१०५॥चौपाई॥वायुरूपतुमहीव
ऊनामी॥धर्मराजसोइतुमजगस्वामी॥वरुणरूअग्नितुमहीसरभुपा॥तुमहिचंद्रमापरमअनुपा॥
१०६॥प्रजापतिमरिच्यादिकजोई॥तेहीतेहीरूपसेंतुमहोसोई॥सबकेपितामहअजविख्याता॥तिनहि

केतातसोतुमकरत्राता॥१०७॥ताहीतेंतुमकुंनमनवऊवारा॥दोउनमनपुनिवारहजारा॥पुनिलोइनम
नअपरमितहोई॥गिनतपारनहीपावतकोउ॥१०८॥अतिअद्भुतआकारहेजेही॥तवसुरतिप्रभुदेखिकेत
तेही॥हरषसेंफुलेलोचनजाके॥अतिभयभितअंगसबताके॥१०९॥दोहा॥एसोमेंनोपुअग्रसे॥नमन
करतऊंदेव॥पिछेसेंसबदिशानमही॥नमनकरूंततखेव॥११०॥हेसबरूपीविर्सअसं॥प्राक्रमतोरअपार
एसेंतुमसबजगतमही॥व्यापकएकउदार॥१११॥सोरठा॥आतमतासेंअनुप॥तुमसबकेउरमेंरहत॥
तातेंतुमहीसबरूप॥पुनिनिजरूपसेंअतिप्रथक॥११२॥चौपाई॥अनंतविर्यबऊंप्राक्रमजेही॥सर्वात्मा
सबकरतातेही॥इनआदिकसबमहीमाजेहा॥मेंनहीजानुंनाथकछुतेरा॥११३॥एसोमेंमोइमोहसेंस्वामि॥
अथवासंग्परहेवऊनामि॥तुमसंगपभयोहेपरिचयभारि॥तिनसेंसखासमामानेमोरारि॥११४॥हेजादवहे
सखाविहारी॥कनेहोइहसमसबचालहमारी॥युमेंविनयबिनबोलोजेऊं॥क्षमाकराबुनऊंसबतेऊं॥११५॥
प्रभुतुमसबहीकालकेमांई॥अतिसतकारकेजोग्यगोसांइ॥सोतुमकुंकिइमभइताही॥सखाआसनभो
जनमांही॥११६॥दोहा॥असतकारमेंकिनसो॥देहेअचुनअविकार॥क्षमाकरावनऊंसकल॥जोक

छुंहोयहमार ॥११७॥ जोएकांतवासवहीमध्य ॥ किनीतवअपमांन ॥ अप्रमेयअपराधसव ॥ क्षमाकरहुंभ
गवान ॥११८॥ चौपाई ॥ यहजोचराचरलोकहेसारा ॥ तिनकेपीतातुमपरमउदारा ॥ तुमहीगुरुसवकेरूकर
खकारी ॥ तुमअतीपुजनजोगमोरारी ॥११९॥ हेअप्रतिंमहीमाअनंतदेवा ॥ करसुनिसिद्धकरततवसेवा ॥
त्रिभूवनमेंतवसमकुंनकोई ॥ तुमसेंअधिकसोकहांसेंहोई ॥१२०॥ यातेंतुमसवहीकेताता ॥ पुजनजोगपहीगु
रुविख्याता ॥ कारुण्यादिकगुणकरिस्वामी ॥ तुमसवहीसेंअधिकवहुंनामी ॥१२१॥ तातेंतुमकुंनमनकरीभारी
देहकुंभुपरसंदरसुंधारी ॥ ईश्वरस्तवनजोगतुमजेऊ ॥ हौयविनीतरिझाउंतेऊ ॥१२२॥ दोहा ॥ अतिअपराधी
पुत्रके ॥ अतिअपराधहेजोय ॥ क्षमाकरतहेतातसव ॥ सुंतुमजांनोमोय ॥१२३॥ सखासखाकेदोषकुं ॥ क्ष
माकरतलखिचित ॥ नारिकेअपराधपती ॥ क्षमाकरताहीरीत ॥१२४॥ सोरठा ॥ हेकृपालुहेदेव ॥ तुममेरेअ
पराधसव ॥ क्षमाकरोगननखेव ॥ क्षमाकरनकेजोगतुम ॥१२५॥ चौपाई ॥ कवहुंनदेख्योअद्भुतजेहा ॥ अती
सेउग्ररूपतवजेहा ॥ ताहीकुंदेखिमेंहरखकुंपायो ॥ ममममनभयसेंव्यथाकरिछायो ॥१२६॥ तातेंदेवतुमारो
रुपा ॥ अतिप्रसंन्नदेखायोअनूपा ॥ हेदेवनहेविश्वनिवासी ॥ सोपरसिद्धश्रीअविनासी ॥१२७॥ किरटम्

गदऊनमूर्त्तिजेही ॥ करमहीगदाचक्रऊनतेही ॥ एसेंतुमहिभक्तभयहारी ॥ चथमसुंदेखनचहुंकरखका
री ॥१२८॥ हेहजारभुजक्रतकरखकंहा ॥ हेसवविश्वरुपजगवंदा ॥ पुरवसिद्धचतुरभुजरुपा ॥ तिनकरिऊन
होउजगभूपा ॥१२९॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दोहा ॥ कहेश्रीहरिअरजुनकुंने ॥ तेजोमयममरूप ॥ आद्यम
धअरुअंतविन ॥ सर्वातमहेअनूप ॥१३०॥ चौपाई ॥ सवकोआदिरूपममसारी ॥ अतिनिरारांजीभयोमें
तेही ॥ ससंक्रूपसेंभक्ततोयजांनि ॥ मेंजोदेखायोरुपरूखदांनी ॥१३१॥ यहममरूपसोएसोध्याना ॥ तुमविन
कौउनदेखिसाक्षाना ॥ पृथमकुंकिनहीनदेख्योजेहा ॥ एसोअलौकिकरुपहेएहा ॥१३२॥ अनन्यभक्तिविन
साधनजेऊ ॥ सवहीउपायकूरेकोयतेऊ ॥ तिनकरिमेंजिमिरहलकुंविस ॥ तेहीविधिकोऊनजांनेकधिरा ॥१३३
हेकुरुकुलमधकरउदारा ॥ सुमेंदेखायोकपुन्यपारा ॥ विश्वरुपसोइरुपहेजाको ॥ एसोमेंमहीमावउनाको
१३४ ॥ दोहा ॥ सोमहीभक्तिवानतुम ॥ तुमविनदुजोजोई ॥ कक्रनकरियहलोकमें ॥ सोयनदेखनकोई ॥
१३५ ॥ केवलवेदकोपवनचा ॥ केवलजजनरुदान ॥ इनकरिमोहिनदेखहि ॥ भक्तिरहीतअजांन ॥१३६॥ सोरठा
क्रीयाजतअरुजाग ॥ सवहीव्रतादिकघोरतप ॥ इनसवकरिवडभाग ॥ मेंनहीदरसंभक्तिविन ॥१३७॥ चौपाई

यहममघोररूपहेजोई॥ देखिकेंथिरबदिहेतोई॥ डरबअरुमुदभावहेजेही॥ तुमकुंतातनहोनांनेही॥ १३८॥ भ
यसेरहीतमगनमनहोई॥ संसेशोकनरहोउरकोइ॥ फिरतुमचतुर्भुजरूपमजाँजेहा॥ सुंदररूपदेखोममनेहा॥
१३९॥ **संजयउवाच**॥ कहेसंजयसुंनुनृपतिउदारा॥ वासुदेवयकहदेवउदारा॥ पुनअरजुनकुंकहीकेबाता॥
फेरचतुर्भुजभयेसाक्षाता॥ १४०॥ सोनिजरूपचतुरभुजजेहू॥ पुनसेंनगेउदेखावनतेहू॥ विश्वरूपदरशनभ
योजबही॥ त्रासकरूअरजुनभएतबही॥ १४१॥ **दोहा**॥ अतिवउआतमरूकनित॥ कृपासिंधुभगवान
सौम्यरूपहोइताहीकीर॥ किनोअतिसनमान॥ १४२॥ **अरजुनउवाच**॥ **चोपाई**॥ कंनकुंजनार्दनविनती
एहा॥ अतिसुंदरतनवरुरूपहेजेहा॥ देखिमनुष्यसमभयोकुंमचेता॥ अबभयोप्रसन्नमनमिटोअचेता॥ १४३
श्रीभगवानुवाच॥ कहेश्रीकृष्णसुंनुअरजुनबाता॥ सबहीकुंशिक्षाकरसाक्षाता॥ सुरवानमसबकारनतुं
कुं॥ सोममरूपदेखोतुमनेकुं॥ १४४॥ अतिदेखेमेंआवतजेही॥ औरकोउदेखतनतहींतेही॥ यहममरूपकी
दरशनजोइ॥ देवकुंनिसचनिइछतसोइ॥ १४५॥ तोकुंनदेखतभयेममरूपा॥ याकोकारनवरतुंअनूपा॥
भक्तिबिनांअन्यसाधनजेउ॥ मोयनदेखावेवरतुंअबतेउ॥ १४६॥ **दोहा**॥ ममभक्तीबिनकेवलही॥ वेदपव ॥७५॥

नतपदांन॥ जज्ञादिकइनसबनमें॥ मोयनदेखिसकजांन॥ १४७॥ **दोहाः**॥ जिमिदरशनभयोतोय॥ तेहीप्रका
रकरिभक्तीबिन॥ मोयनदेखतकोय॥ यहममदर्शविनअतीकठीन॥ १४८॥ **चोपाइ**॥ हेअर्जुनतोयकछुसम
बाता॥ रहतकुंमेंजेहीविधिसाक्षाता॥ अनन्यभक्तीकरीतेहीप्रकारा॥ जानतदेखनमोयतदारा॥ १४९॥ हेतु
तुकेतपावनहारा॥ भक्तीमेंजांनिकेरूपहमारा॥ तत्वसेंममस्वरूपमहीजोइ॥ करनचवेशवाक्यहेसोइ॥
१५०॥ कंनकुंपांडुकनजोनरधिरा॥ अध्ययनादिककर्मगंभिरा॥ सोसबकर्मकरतममकाजा॥ जोइआरंभ
जोकरतसमाजा॥ १५१॥ सबहीआरंभनमहीनिसजेही॥ मेंएकपावेनजोगपछतेही॥ सोविनअन्यसंगहेजेहा
मेरोभक्तजनसबतेहा॥ १५२॥ **दोहा**॥ याजगमेंसबप्राणीकं॥ वेररहीतहेजोय॥ सोममजनअतिविमल
मन॥ मोहीकुंपावतसोय॥ १५३॥ निद्राजोगप्रस्वभावसो॥ सबहीतजतममदास॥ मुक्तानंदकोनाथकहे॥ तेहीउरमो
रनिवास॥ १५४॥ **इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमुक्तानंद
मुनिविरचितभगवद्गीताटिकायांविश्वरूपदर्शनोनामेकादशोऽध्यायः**॥ ११॥ **चोपाई**॥ एकादशकेअध्या
मोंई॥ सुदजोभक्तिजोगकहाई॥ भक्तिजोगनिष्ठाकरनजेहा॥ तिनकुंपावनेजोगपहेएहा॥ १॥ नारायणपरब्रह्म

हेसोई॥ तेहितिश्वर्यअपरमितजोई॥ तेहीसाक्षातकरनचहेजेऊं॥ एसेंअर्जुनकभ्रमतितेऊं॥ २॥ अतिकल्यां
णरूपगुणजेही॥ तासमहोदधिहेप्रभुतेही॥ ससमेंकपसेंजथारथजेउ॥ निजऐश्वर्यदेखायेउतेउ॥ ३॥ अव
द्वादसमिंअध्यायमेंभारी॥ आत्मप्राप्तीसाधनकरवकारी॥ आत्माकोउपासनजोउ॥ भक्तिकोसाधनरूपहेसोउ
४॥ दोहा॥ तिनमेंश्रीभगवानकि॥ भक्तिकहावतजोय॥ अतिकरवसेंपरिश्रमविनां॥ ग्रहणहोतहेसोय॥
५॥ तातेंभक्तिकिश्रेष्टता॥ प्रभुकोउपासनजेऊं॥ तिनकोउपायसोसबहीविधि॥ बरनिकहावततेऊं॥ ६॥ सोर
ठा॥ प्रभुकेउपासकजोय॥ अक्षरब्रह्ममेंनिष्टजेउ॥ उभयकुंवांछितसोई॥ सबसाधनभिनभिनकहत॥ ७॥
अर्जुनउवाच॥ चोपाई॥ कहेअर्जुनकंतुप्रभुकरवकंदा॥ प्रथमकहोतुमहीजगवंदा॥ सबविधिमम
पारथणजोई॥ मेरीभक्तजथारथसोई॥ ८॥ इनआदिकवचननिकरिदेवा॥ तवउपासनाकोहढसेवा॥ तिन
करिजकनिरंतरजेही॥ तुमहीकुंभक्तउपासततेही॥ ९॥ कोउनरइंद्रीअगोचरजेहा॥ अक्षरब्रह्मउपासत
तेहा॥ उभयमेंश्रेष्टकहुजगस्वामी॥ भिनभिनकरिवरनोबहुनांमी॥ १०॥ श्रीभगवानुवाच॥ हेअर्जुनजे
हिमेंअतिप्यारा॥ सोमोमहीमनरखतउदारा॥ परमश्रद्धायुक्तनितजेउ॥ मोयउपासतहढमतितेउ॥ ११

दोहा॥ अनन्यभावमोकुंभजे॥ सबसेंअधिकहेसोय॥ परमभागवतसंतसो॥ तेहीसमअोरनकोय॥ १२
चोपाई॥ देवादिकनाहूनिकरिएहा॥ नांहीदेखावनजोगयहेजेहा॥ चक्षुआदिकइंद्रिकहावे॥ तिनसेंअव्यक्त
तज्ञाननपावे॥ १३॥ सबमहीव्यापीकेवरनतजेऊं॥ चितवनमेंनहीआवततेऊं॥ निरविकारनितअचलहे
जोई॥ सोअक्षरकुंउपासतकोई॥ १४॥ अक्षरब्रह्मउपासकजेही॥ तिमेंसबइंद्रिगणतेही॥ सबमहिसम
बुधीहेजेही॥ सबकेहीतमेंप्रितिजुततेही॥ १५॥ प्राणीमात्रकोहीतअनुसरही॥ अक्षरब्रह्मउपासनकरही
अक्षरब्रह्मउपासकप्रांनि॥ मोहीकुंपावतहेसोइज्ञांनी॥ १६॥ दोहा॥ एहिविधिसममतिपायके॥ आत
मज्ञांनिधिर॥ सोसमअक्षरब्रह्मकुं॥ पावतपरमगंभिर॥ १७॥ चोपाई॥ अतिअव्यक्तअक्षरब्रह्मएहा॥
तहांमनाकिएचितजेहा॥ एसपुरुषकहावतजोइ॥ अतिश्रेकष्टकुंपावतसोइ॥ १८॥ अक्षरब्रह्मअ
व्यक्तहेएही॥ तहांमनहढथिरनचहेजेही॥ तनअभिमांनिअव्यक्तकुंध्यावे॥ सोसांतिअतिदुखकरीपावे
१९॥ लोकिककर्मअन्नदानादिकजेउ॥ तनधारणहीतकरतहेतेऊं॥ जज्ञदानतपहोमकेआदि॥ वेदिककरम
करतब्रह्मवादी॥ २०॥ सोसबकर्मसमरपतमोइ॥ मोविनपावनेजोगपनकोई॥ एहीविधिअनन्यजोगकरीध्या

नि॥ मोयजुपासनदृढविज्ञांनी॥२१॥ दोहा॥ हे पारथ मेरे विषे॥ चितयुं करायो प्रवेश॥ एसें पुरुषकुं मुक्तिहित
करनो रह्यो न लेश॥२२॥ मुमुक्षु रूप भव तुरत धिसें॥ ते ही ताकुं तत्काल॥ मोर नाम सच ग्रंथ में॥ सदा भक्त प्रतिपाल॥
२३॥ चोपाई॥ तातें तुम मो मही मन धारो॥ मो मही बुद्धि धारि भ्रम टारो॥ तुंतब मन अरु बुद्धि जोइ॥ मो में प्रवेश
करायके सोइ॥२४॥ ता पिछे या देहके अंता॥ करिहो निवास मो में बुद्धिवंता॥ यामें तिलभर संशय नांही॥ य
द्यपि तुम अचल करो मन मांही॥२५॥ मो महि थिर चित करना जेहा॥ तुम सें सिघ्र होस कें न तेहा॥ तब हे धनंजय
तुम ययु विचारो॥ करो अभ्यास जोग अति भारो॥२६॥ अति सें प्रेम करि मोय संभारो॥ मो बिन और वासना टारो
चित को समाधान इमि होइ॥ एही विधि पावने इछो मोइ॥२७॥ दोहा॥ अब तुं सम्मति अभ्यासकुं॥ करन किंचि
त्ति न तोय॥ मेरे हांतक भक्त करम हे॥ करो सब हि विधि सोय॥२८॥ चोपाई॥ मम महीत मंदिर करना भारी॥ पुष्प
वाटिका अति सुखकारी॥ मम मंदिर मही दिपक जारो॥ धोय लिपि नित मंदिर झारो॥२९॥ पुष्प लाय पुजा
विस्तरना॥ अंगराग चंदन को करना॥ नाम कीर्तन तुम न अपारा॥ स्तुंही प्रकुं मास्कति वरु वारा॥३०॥ इन आ
दिक भक्त कर्म हे जोई॥ प्रेम सें तातन करो तुम सोइ॥ एही विधि मम हीन करम हे जेउं॥ आदरजुत्त किने सें तेउं॥३१

परम सिद्धि मम प्राप्ति रूपा॥ तुम तत्काल सो पैहो अनुपा॥ तातें सत्य करि मांनो एहा॥ या में लेश न ही संदेहा॥३२
दोहा॥ अरु मम हित सब भक्त कर्मकुं॥ करनकुं सामर्थ्य नांही॥ भक्ति जोग आश्रित सदा॥ होरे नाम न मांही॥३३॥
अधिक जितेंद्रिय थिर तुम॥ करो कर्म फलत्याग॥ कर्मज तिन फल आसन तजी॥ भजउं मो थुर भाग॥३४॥ चौ
पाई॥ अति श्रेष्ठ नितिविन सिध्य लगहा॥ संमृति रुप अभ्यास हे जेहा॥ तिन सें निज आतम को ज्ञांना॥ निज हीन
में अति श्रेष्ठ खाना॥३५॥ ज्ञानकुं परि पुरण नही होई॥ तिन सें स्वात्म ध्यांन सब भसोई॥ ध्यांनकुं परिपुरण ज
ब नांही॥ तब सब भक्त कर्म के फल जो कहा ही॥३६॥ तिन को साग करत हे जे ही॥ ध्यांन सें अति विशेष हे ते ही॥ फ
ल इछा बिन कर्म जो कर ही॥ तिन सें सब ही पाप सब दूर रही॥३७॥ मनकुं शांति ही तत्काला॥ आत्म ध्यांन
सि होत विसाला॥ ध्यान सें ज्ञांन होत अघहारी॥ ज्ञांन सें प्रभु कि भक्ती सुखकारी॥३८॥ दोहा॥ फल इछा
बिन कर्म मे॥ निष्ठा जक हे जेउं॥ ता ही ग्रहण कें जोग्य गुण॥ सब विधि कहत हे तेउं॥३९॥ चोपाई॥ द्वेषकुं क
रत प्राणि सब जेहा॥ तिन को द्वेष करत न ही तेहा॥ द्वेष के करन हार कु विचारो॥ तिन सें प्रेम ते करत अती भा
री॥४०॥ प्राणि मात्र दुखि जो होइ॥ तिन पर करुणा करत हे सोई॥ देह रु देह सबंधि जे उं॥ तिन सें ममता रहीत

हेतेही॥४१॥तनअभिमानरहितहेजेउं॥कदुखमेंसमरहतहेतेउ॥अधिकक्षमाकुलपरमउदारा॥क
रतनिरंतरपरउपगारा॥४२॥इश्वरइछामिलतहेजेऊं॥अंनादिकसेंतृपरहेतेऊं॥पुछतिपारसुधआत्म
स्वरूपा॥तेहिसंजोगजुतसदाअनुंपा॥४३॥दोहा॥दृढनिश्चेआतमविषे॥निमेमेंरहेमनजास॥वासु
देवभगवानकी॥उरमेंदृढविश्वास॥४४॥फलइछाबिनकर्मसें॥आराधनकियेसोय॥ममआतमसाक्षा
तमा॥प्रभुदेखाइहेमोय॥४५॥सोरठा॥एहीबाधिअरपेजोय॥मोमहीमनअरुबुद्धीजेही॥एसोमम
जनसोइ॥मोकुंअतिप्रियभक्तहेही॥४६॥चौपाई॥करममेंनिष्ठाकुलकहेजेहा॥काहुकुंपीडाकरतननेहा
जिनसेंलोकदुखभयकुलनहोइ॥एसोकरमकरतनहीकोइ॥४७॥लोकसेंआपनभयदुखपावे॥सबजगनां
हिनदुखउपजावे॥वलभवस्कमिलकछुजबही॥हरखमेंसुकुलितमनरहेनबही॥४८॥काहुकोप्रियनदे
खिसकेजोउं॥अमरसनांमकहावनसोउ॥भयउदेगपजंतनहेजेही॥इनसेंमुक्तमोरप्रियनेही॥४९॥आत्मा
सेंअन्यसबसंसारा॥तिनसेंअपेक्षारहीतउदारा॥सुगरूमेंकहेसोइम्मकरीगाहा॥शुद्धरहतइमिधारतदेहा
५०॥दोहा॥कहीजोशास्त्रमेंस्कभक्रिया॥ग्रहणकुंसमर्थजोइ॥उदासीनआतमविना॥दक्षकहावनसोइ॥५१ ॥७७॥

सोरठा॥व्यथारहीनवदुभाग॥शास्त्रविनांअन्यसबकर्म॥तेहीआरंभकोत्याग॥एसोममजनमोरप्रीय॥५२
चौपाई॥सोनरदृष्टपदारथमांही॥देखिकेंहरषकुंपावतनांही॥अप्रियवस्कप्राप्तिमहीएहा॥ताकोद्वेषकर
ननहीनेहा॥५३॥नारिपुत्रमरणादीकजोइ॥मनुष्यकुंशोककेकारणसोइ॥एसोजोगवनतहेजबही॥ति
नभरसोकनयावतनबही॥५४॥नारिधनादिकप्राप्तिजेही॥मनुष्यकुंहर्षकोकारणनेही॥सोनहीप्राप्तहोत
जबकोउं॥तिनकुंकबकुंनइछतसोउ॥५५॥शुभअरुअशुभकरमहेजेते॥बंधनहेतजांनिकेंतेते॥सबहि
भांतिकिनेसबत्यागा॥सोमोयप्रियममजनबडभागा॥५६॥दोहा॥शत्रुमित्रजेहिसमसदा॥सुमसंमानअ
पमांन॥सितउष्मसुखदुखविषे॥समममभक्तजांन॥५७॥असमपदारथआत्मबिन॥सबविधिसागत
जेऊ॥एसोमेरोभक्तजो॥मोकुंवल्लभतेऊ॥५८॥चौपाई॥निंद्यास्तवनतुल्यहेजाही॥बांनिनियमकुलस्क
खदाही॥सहजमिलतअनादीकजोई॥तिनकरिअतिसंतोषीसोई॥५९॥आत्मस्वरूपकहावतजेहा॥तिन
मेंअतिस्थिरमतिकुलतेहा॥निमसेंरहनकुंनहीथलकोइ॥सोममभक्तअधिकप्रियमोइ॥६०॥जिनकुंसबविधि
परमअनुंपा॥मेइकुंपरमप्राप्यस्वरूपा॥एहीविधिश्रद्धाकुलहेजेही॥धर्मरुपअमृतकहोतेही॥६१॥जुह

मकह्योपरमसुखकारी॥ सुंदररखलअचलउरधारी॥ यहममधर्ममेंरहतउदारा॥ तेमेभक्तअधिकमोयप्यारा॥
२२॥ दोहा॥ तेसेलक्षणजुक्तसी॥ संतसकलवरगुणधाम॥ मुक्तानंदकोनाथकहे॥ प्रियमोयजननिष्काम॥ २३॥
इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमुक्तानंदमुनिविरचितभग
वद्गीताटिकायांभक्तिश्रीयोगोनामद्वादशोऽध्यायः॥ १२ ॥ चोपाई॥ प्रथमकेषटअध्यायमेंगहा॥ परम
पावनेंजोगपरहेजेहा॥ वासुदेवपरब्रह्मउदारा॥ तेहीप्राप्तिउपायस्तुतिसारा॥ १॥ प्रभुकोउपासनभक्तीस्वरूपा
तिनकोअंगसरूपअनुपा॥ पावनेहारजिवात्मजेऊं॥ तासजथारथदरसानतेऊ॥ २॥ ज्ञानरूकरमजोगहे
जोइ॥ उभयसेंआत्मदरसनुलहेसोइ॥ बिचकेषटअध्यायमेंभारी॥ पावनेजोगपजोप्रभूअघहारी॥ ३॥ तास
स्वरूपजथारथजाना॥ सोहेप्रथमजेहीलखनसकजाना॥ भक्तिजोगगएकोंतीकजेहीं॥ निष्ठातासकहीसुखनेही॥ ४
छंदहरिगिता॥ सबकहीगएकोंतिकभक्तीजोगकिविमलनिष्ठातेहरजूं॥ तेम्रुर्जकैवल्यअर्थिकोंकह्योभक्ति
जोगहेतेहरजूं॥ इनउभयकुंवांछितसोसाधनकहेसबविधिसारजूं॥ अबवेषषटअध्यायमेंयहप्रकृती
पुरुषविचारजूं॥ ५॥ सोप्रकृतिपुरुषसमंधसेंपरपंचउपज्योजोपजूं॥ तेहीईशतासस्वरूपकोजिमिजथा ॥७८॥

रथहेसोयजूं॥ निमिकर्मज्ञानरूभक्तितिनकेस्वरूपभिनभिनजेहीजूं॥ तेहीग्रहणकरनप्रकारप्रथमहीक
हेसबविधितेहीजूं॥ ६॥ दोहा॥ द्वादशामेअध्यायकरी॥ प्रथमकहेगुनजेऊं॥ तिनकोसाधनकरतहे॥ अ
तिसुखकारितेऊ॥ ७॥ तिनमेंप्रथमहीतेरमे॥ अध्यामांहीअनूप॥ देहरुजीवात्माउभय॥ कहतहेतासस्व
रूप॥ ८॥ चोपाई॥ देहसेंसूक्ष्मआतमाजेहा॥ तिनकिप्राप्तीउपायहेएहा॥ आत्मस्वरूपकोसाधनजेही॥
अतिविशुद्धअवकहतहेतेही॥ ९॥ एहीप्रकारआतमहेएऊ॥ जडसमंधहेतूतेहीतेऊ॥ तेहीविवेककोअ
नुसंधाना॥ तेहिप्रकारअबकहीहेसजाना॥ १०॥ श्रीभगवानुवाच॥ हेकुंतिसुतदेहकेमांना॥ बहुविधि
भावकुंधरतअजाना॥ मेंअदेवमैंमनुष्यउदारा॥ मेंअतिथूलमैंकृशअपारा॥ ११॥ एहीविधिसुक्ताजोवहीजे
हा॥ तेहिसंपूर्णकहेभासतएहा॥ तासोनामबंतयहदेहा॥ जिवातमसेंप्रथकहेतेहा॥ १२॥ दोहा॥ ततके
जथारथज्ञानजो॥ कहेनिरंसमेसोय॥ जिवकुंभोगकोक्षेत्रहे॥ देसकहावतसोय॥ १३॥ आत्मतत्वकेजान
सा॥ देहकुंजाननहार॥ कहतक्षेत्रगमताहीकु॥ जिनकेविमलविचार॥ १४॥ सोरठा॥ ज्ञाननजोगपुहेदे
ह॥ तिनसेंज्ञानकरिअतिप्रथक॥ जाननहारहेएह॥ एहीविधिकहतविचारजन॥ १५॥ चोपाई॥ हेभा

रतसबक्षेत्रहैजेहा॥ऋषिसमर्षिकहावततेहा॥सबमहीएकक्षेत्रगम्यजोई॥सोयजांनोजगआतमसोई॥१६
पुर्वश्लोकमेंजोकृकोरुपा॥कथोरेक्षेत्रगम्यरूपअनूपा॥तिनहिकोआत्मामेंऊंनताना॥तुमयुंजांनिलेऊंसाक्षा
ता॥१७॥जेसेंक्षेत्रगम्यजिवकहाई॥तेहीविनदेहकिसिद्धिनोई॥तेसेंक्षेत्रगम्यजिवदेहेऊं॥सोविनप्रथक
सिद्धनहीतेऊं॥१८॥तातेंजिवक्षेत्रगम्यजेही॥मैंजेहीआत्मजांनोयुंतेही॥जोप्रभुरहतहेआत्मामांई॥आ
त्मासेंअतिपृथककहाई॥१९॥दोहा॥जाहीनुजांनेआतमा॥आत्माजासरीरा॥जोआत्मामेंरहततेही॥
निममेंरखतगंभिर॥२०॥क्षेत्रक्षेत्रगम्यउभयको॥अक्षिजऊकहोज्ञांन॥ग्रहनकरनकेजोगयसो॥श्रुतिसि
द्धमोरप्रमान॥२१॥चोपाई॥अबयहक्षेत्रकहावनदेहा॥जेहीद्रव्यकोवरनतहेतेहा॥जिनकोआश्रयरु
पहेताही॥जोयहतनकेविकारहेतेही॥२२॥जेहीकारनतनउपज्योअनुंपा॥जेहीप्रकारहेदेहकोरुपा॥सो
संक्षेपसेंकऊंअबताता॥सोसेंकंनोसबहीतुमबाता॥२३॥जेसारुपक्षेत्रगम्यकेरा॥जेसेंतासप्रभावअनेरा
सोसबहीसंक्षेपसेंविरा॥सोसेंकंथ्योअधिकरणाधिरा॥२४॥क्षेत्रक्षेत्रगम्यजेहीविधिहोऊ॥तिनकोरुपज
थारथसोऊं॥ऋषीपराशरआदिकजेऊं॥बऊविधिगांनकियोहेतेऊ॥२५॥दोहा॥ऋगसामजऊअथर्वणा

वेदचऊंहेजेऊं॥देहआत्मस्वरूपसो॥भिनभिनबरनेतेऊं॥२६॥चोपाई॥ब्रह्मरूपप्रतिपादकजेहा॥व्यास
केसूत्रकहावततेहा॥तिनऊंजोक्षेत्रक्षेत्रकोजांना॥तेहीस्वरुपअतिप्रथककरखाना॥२७॥नानाविधके
हेतूंहेजोई॥तिनकरिऊकसूत्रहेसोई॥अतिविशेषनिर्णकोरुपा॥सूत्रमेंबर्नोपरमअनुंपा॥२८॥बऊप्रका
रइमीबरन्योजेऊं॥क्षेत्रक्षेत्रगनसबवीधितेऊ॥मेंसंक्षेपसंवरन्योजेऊ॥सऊंनुंमुनिसाबधानहोतेऊ॥२९॥पंच
भुतभुआदिकजेही॥क्षेत्रकेआदिकारणतेही॥पंचभुतकारणअहंकारा॥बुद्धिसोइमहततत्वउदारा॥३०॥
॥दोहा॥अतिअव्यक्तजोप्रकृतिअरु॥दशइंद्रिमनएक॥पंचविषेचोविशइमी॥तत्वकोएहीविवेक॥३१॥
चोपाई॥सबसबकीचाहइछाहेएहा॥दुखकोअभावद्वेषहेतेहा॥इछाद्वेषरुसुखदुखजेही॥तनअभिमां
निमांनततेही॥३२॥जदपीआतमधर्महेएही॥तनकेमानबिनलखतनदेही॥तातेंक्षेत्रकेगुनतेहीजांनो॥
यामेंसंशयलेशनआंनो॥३३॥मायासेंभुमिलगजोई॥सबहीतत्वसंघातहेजोई॥चेतनताअरुधिरजतेऊं
क्षेत्रकेधर्मकहावततेऊं॥३४॥यहसबअतिसंक्षेपसेंताता॥सबविकारऊतअतिविख्याता॥क्षेत्रस्वभा
ववऊतविधितेऊ॥क्षेत्रकेधर्मकहावततेऊं॥३५॥तिनऊतक्षेत्रकत्योंहेतेऊ॥३५॥दोहा॥अबयहक्षेत्र

के कार्ज में ॥ आनम साधन जोय ॥ तिन हीन ग्रहण कूं जोग्य गुण ॥ सब विधि कहत हें सोय ॥ ३६ ॥ चोपाई ॥ उ
नम कौ अपमान न गाने ॥ निरमांनि बुध ताही प्रमाने ॥ आप कौ मान बराचन काजा ॥ अनिते धर्म को करन
समाजा ॥ ३७ ॥ सोइ हे दंभ तिन रहीत हें जे हा ॥ अधिक अदंभि गुण हे ते हा ॥ मन क्रम वचन सें अहनिस तोइ
पर कूं न पीडे अहिंसा सोइ ॥ ३८ ॥ पर अपराध प्राप्त भये जेही ॥ निरविकार चित क्षांति तेही ॥ मन क्रम वचन स
रलता रहही ॥ ताही विवेकी आर्जव कहही ॥ ३९ ॥ आत्म ज्ञान प्रद गुरु जो उदारा ॥ तेही सेव तन अतिशे करी ।
प्यारा ॥ जल मृत कासे देह स्वच्छ करनां ॥ सु रागादिक मल पर हरनां ॥ ४० ॥ दोहा ॥ इन करी अंतःकरण कूं
अतिशे निरमल होइ ॥ बाहीर भिंतर स्वच्छ ये ॥ शोच कहावत सोइ ॥ ४१ ॥ चोपाई ॥ आत्म ज्ञान हीन शास्त्र हे
जे कूं ॥ सोइ शास्त्र कहें अरथ हे ते कूं ॥ तिन में मन निश्चल रहे जे हा ॥ अति थिर भाव कहावत एहा ॥ ४२ ॥ आत्म
स्वरूप सें इतर हे जे ही ॥ पंच विषे शब्दादिक ते ही ॥ तिन सें मन कूं हाटावत जोइ ॥ आत्म नीग्रह जानो सोइ ॥ ४३
आत्म विनां अन्य विषय हे जे कूं ॥ तहां अभाव वैराग्य हे ते उ ॥ असत अनात्म रूप हे देहा ॥ तिन में आत्म भा
वन ही ते हा ॥ ४४ ॥ जन्म रु मृत्यु जरा अरु व्याधि ॥ निज शरीर महि अनंत उपाधि ॥ दुख रूप ही इमि दोष हे जेता

पुनि पुनि देखे विचारि के तेता ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ आत्म विनां अन्य विषय में ॥ सब विधि अधिक असंग ॥ पुत्र
दार ग्रह आदि में ॥ प्रिति रहीत अभंग ॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ इष्ट अनिष्ट हे जोय ॥ सो वस्तु कि प्राप्ति मही ॥ रहत हें स
म चित होय ॥ सदा हर्ष उदवेग विन ॥ ४७ ॥ चोपाई ॥ मो मही अनन्य जोग करि भारी ॥ अविभचारि भक्ती स्वत का
रि ॥ जन वर्जित थल में नित वासा ॥ जन किस भाम ही अधिक उदासा ॥ ४८ ॥ आत्म ज्ञान मही निष्ठ जे हा ॥ रहत
निरंतर रहही येते हा ॥ क्षेत्र सम संधि पुरुष हे जे ही ॥ आत्म ज्ञान साधन ते ही एही ॥ ४९ ॥ अमानित्व आदिक गुं
ण जे कूं ॥ तिन को समुह कह्यो हे ते कूं ॥ आतम ज्ञान को एही प्रदाइ ॥ ता तें ज्ञान जिमि वरनेउ भाइ ॥ ५० ॥ ते ही विन
क्षेत्र को कारण जेउ ॥ आतम ज्ञान विरोधि तेउ ॥ या तें ता हि कह्यो अज्ञांना ॥ एही विधि ज्ञांनो परम सुजाना ॥ ५१
दोहा ॥ अति निरमांनि आदि गुण ॥ तिन करि ज्ञेय हे जोय ॥ तिन कूं ज्ञान न जोग्य सो ॥ कही कूं क्षेत्र गम्य तोय ॥
५२ ॥ चोपाई ॥ सब ही के अंतर जामि रूपा ॥ सोइ क्षेत्र गम्य परम अनुपा ॥ ता स स्वरूप कूं ज्ञान त जे हा ॥ परम मो
क्ष कूं पावत ते हा ॥ ५३ ॥ ज्ञान न जोग्य रूप हे जोइ ॥ उतपति नास रहीत हे सोइ ॥ मै कूं पर ए सो हे एही ॥ ब्रह्म स्वरूप
जथारथ ते ही ॥ ५४ ॥ कार्ज कारण रूप हे जेउ ॥ उभय अवस्था रहीत हे ते कूं ॥ सत अरु असत न वाह हे जे कूं ॥ तिन

करिकहतेजोगपनतेऊं॥५५॥पुनिसोक्षेत्रगम्यकोगहरूपा॥सबहीगोरकरचरणअनुपा॥सुमबथलमही
मुखदृगशिरा॥सबथलश्रवणऊक्कजगदिशा॥५६॥दोहा॥नामरूपयइलोकमें॥थावरजंगमजोइ॥सो
सबहीमेंक्षेत्रगम्य॥आविकैरहतहैसोइ॥५७॥चौपाई॥सबहिइंद्रिकिहर्त्तिजेहा॥तिनकरिविषयकुंजा
नततेहा॥सबइंद्रीनकिवृत्तिबिनएऊं॥सबकुंजथारथजानततेऊं॥५८॥देवादिककोसंगहेजेही॥तिनसें
असंगिरहतनीनगही॥देवादिकसबदेहहैजेउ॥पोषणभरणकुंसमर्थतेउ॥५९॥मायामयसत्वादिकतीना
तिनसेंनिरगुनरहतप्रविना॥सतरजतमतिवुंगुणजोइ॥तिनकेभोगमहीसमर्थसोइ॥६०॥पृथ्विआदिपं
चमहाभूता॥तिसीबाहिरभिंतरअनुकूता॥सोवरततहेथिरचररूपा॥अतिसूक्ष्मसबहीसेंअनुपा॥६१॥
दोहा॥तातेंथिरचरमेंरहे॥तदपिनजानेकोइ॥गुणातितगुणमेंरहत॥ज्ञेयकहावतसोय॥६२॥अमानित्व
केआदिगुण॥तिनकरिरहीनहेंजेऊं॥तिनकेतनुमेंहेतोऊं॥अधिकदुरहेनेऊं॥६३॥निरमानादिकगुणनि
ऋत॥तिनकुंक्षेत्रगम्यरूप॥अतिसमीपहेज्ञेयसो॥भासतपरमअनुप॥६४॥चौपाई॥नहिविभागभरण
कहेतोऊं॥देवमनुष्यादिकमहीसोऊं॥मनुसबमहिविभागऊत्तरगही॥पुंरहेसबमेंज्ञेयहेतेही॥६५॥भरण

पोषकेकरताजोई॥जगसंघारकरतहेसोई॥सबहीकुंउदयकोकारनजेहा॥जाननजोगपक्षेत्रगम्यतेहा॥६६
करजआदिप्रकाशकजेउं॥सोसबहिकोप्रकाशकतेउं॥तमजोप्रकृतितेहीपरकहेजाही॥जाननजोगप्र
पकहेस्वामी॥६७॥ज्ञानस्वरूपकहावतजोउ॥ज्ञानसेंपावनेजोगप्रहेसोउं॥सबहीप्राणीकेह्रदयमोझार॥
रहतनिरंतरजगआधारा॥६८॥दोहा॥उभयश्लोककह्योक्षेत्रकुं॥पांचश्लोककह्योज्ञान॥षटश्लोककही
कह्योक्षेत्रगम्य॥जाननजोगप्रकजान॥६९॥क्षेत्रक्षेत्रगम्यकोसबे॥जानिकेंममजनमर्म॥अजरअमरम
मभावकुं॥पावेररवतहदधर्म॥७०॥चौपाई॥अतिसेंपृथकरूपहेंजोइ॥एसेंप्रकृतिपुरुषहेदोइ॥इनदो
उकोसमंधहेजेहा॥अतिशेअनादिकहतहेएहा॥७१॥प्रकृतिपुरुषमिलकेरहेजेऊं॥तेहीकारणकेभे
दकहेतेऊं॥तेहीसमंधकोकारनजेही॥कमुधिविचारिकहतहेतेही॥७२॥प्रकृतीपुरुषदोउभिनकहा
ए॥असोअन्यसमंधसोइपाए॥हेअरजनएदोउसाक्षाता॥तुमअनादिअजजानोताता॥७३॥इच्छाआ
रुदेषादिकजोउ॥बंधकेहेतुविकारहेसोउ॥अमानित्वआदिकगुणजेउ॥मोक्षकेहेतुकहावतेऊं॥७४
दोहा॥गुनअरुदोषसोप्रकृतिसें॥उपजेजानोतुमविर॥संतहेसजिमिगुनग्रहत॥तजतदोषजिमिनिर

७५ ॥ चौपाई ॥ प्रकृती पुरुष मिलि रहे दोउ जेहा ॥ तेही कारज के भेद कहे तेहा ॥ कारजरूप कहावत देहा ॥
कारण मन इंद्रिगण गहा ॥ ७६ ॥ तिन कुं क्रिया करावन मांई ॥ पुरुष के आश्रित प्रकृति कहाई ॥ अधिक अवि
द्यारूप सें जोई ॥ हेतु होन कहत हे सोई ॥ ७७ ॥ प्रकृति अविद्यारूप हे जेउ ॥ तेही समंध कृत जिव हे तेउ ॥ सुखदु
ख भोगकुं भुक्त न जब ही ॥ पुरुष कुं हेतु कहत हम तब ही ॥ ७८ ॥ प्रकृती अविद्या मही रह्यो जेऊं ॥ पुरुष सो जिव
कहावत तेऊं ॥ प्रकृति सें तोऊं गुण हे जेउ ॥ गुणकृत सुखदुख भुक्त सोउ ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ सत्वादिक गुणनी
नको ॥ संग जीव कुं जोय ॥ साधु असाधु जोनी में ॥ जन्म को कारन सोय ॥ ८० ॥ चौपाई ॥ यातनमें रह्यो पुरुष
जो जेता ॥ देह प्रवृति अनुसारि अनंता ॥ होत हे संकल्प अनंत प्रकारा ॥ तिन करि द्रष्टा जिव उदारा ॥ ८१ ॥ नि
ज व्यवहार में चरतन जोई ॥ इंद्रिन कुं ननि चारत सोई ॥ देह को पोषण करत हे ताही ॥ सुखदुख भुक्ता जिव हे
तेही ॥ ८२ ॥ देह कुं निमम में रखत हे ताऊं ॥ पोषण भरण करत हे तेऊं ॥ तिन करी देह इंद्रि मन जेहा ॥ तिनको म
हेश्वर जिव हे तेहा ॥ ८३ ॥ सुं परमात्मा कुं कह्यो ताही ॥ देहमें अति परक कहत हे वाही ॥ वुक्तगमसें जिवको रु
पा ॥ ताही विधि वरन्यो परम अनुपा ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ ताही विधि उभय प्रकार के ॥ पुरुष क्षेत्र गन्य जेऊं ॥ अभि ॥८२॥

समष्टिरूप कही ॥ प्रकृति उभय विधि तेऊं ॥ ८५ ॥ सत्वादिक तिऊं गुण सहीत ॥ सबकुं जानत जेउ ॥ देव मनुष्या
दिक मही ॥ तनु धरि लिमन तेउ ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ तनु धारि सम सोय ॥ लोकुं न बांधत प्रकृति तेही ॥ बहुरि जन्म न
होय ॥ पावत आत्मस्वरूप सोई ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ कितनेक सिध जोग कृत जेहा ॥ देहमें आत्मा रहत हे तेहा
मनरूपी आतम करी गही ॥ ध्यान सें सब विधि देखत तेही ॥ ८८ ॥ अन्य अपक्व जोग कृत जेते ॥ सांख्य जोग क
रि सब विधि तेते ॥ मन कुं शुद्ध करत हे जेऊं ॥ आत्मा कुं देखत हे तेऊं ॥ ८९ ॥ आत्म दरशके साधन जेता ॥ कर्म
जोग के आदिक तेता ॥ तिन में कछु न जानत जेउ ॥ अन अधिकारि कहावत तेऊ ॥ ९० ॥ अन्य सें ज्ञान सुनी
बुधि प्रकासे ॥ कर्म जोग करि आत्म उपासे ॥ श्रवणमात्र इमी करत हे जेही ॥ आत्मदरश मृत्यु तरे तेही ॥ ९१
॥ दोहा ॥ प्रकृती समंध कृत आतमा ॥ ताकुं होन विवेक ॥ सो अनुसंधि कहन हीन ॥ कहत विवेक क्रिटेक ॥
९२ ॥ चौपाई ॥ थावर जंगम प्राणी जेहा ॥ जड चेतन समंध हे एहा ॥ तिन सें भयो यह सब संसारा ॥ हे अर्जुन
इमि कहत उदारा ॥ ९३ ॥ थावर जंगम रूप हे जेही ॥ प्राणिमात्र उपजत हे तेही ॥ क्षेत्र क्षेत्रज्ञ जोग सें होई ॥ ए
सि विध जानो तुम सोई ॥ ९४ ॥ प्रकृति पुरुष के जोगसें जेउं ॥ प्राणिमात्र कहावत तेउ ॥ सोइ सोइ देवादिक के

देहा॥ तिनके विषेमन इंद्री तेहा॥ ९५॥ तिनमें रहत परमेश्वर रूपा॥ ज्ञांन सें सम आकार अनुंपा॥ एसो जिवा
तम हे जोउ॥ देह के संग पमरत न नही सोउ॥ ९६॥ दोहा॥ युं आतम कुं देखवही॥ सोइ देखत बुधिवान॥ सोई आ
तम जिम रहत सुं॥ देखत परम सुजान॥ ९७॥ नास वंत यह देह सम॥ आत्मा जानत जेह॥ सदा जन्म अरु मरण
कुं॥ पावत हे न रेनेह॥ ९८॥ चोपाई॥ देवादिक जु शरीर मही एहा॥ देह सें जो पर रहत हे तेहा॥ देह कों रहे आधा
र हे एही॥ तन को नियंता होए रहे तेही॥ ९९॥ देह इंद्री अरु मन हे जेउ॥ तिनको इश्वरा होइ वरतत तेउ॥ सतारु
प सें जिव हे सोई॥ सब ही में सम युं देखत जोइ॥ १००॥ सो अपने मन करि कोइ काला॥ निज आत्मा नही हन
त कृपाला॥ सब मही सत्तारूप कों ज्ञाना॥ तिन करि सम दरशन सें सुजाना॥ १०१॥ परम गति पावत बुधी
वंता॥ जाकों कालसें होत न अंता॥ एसो शुध आतम हे जेऊ॥ सो स्वरूप कुं पावत तेऊ॥ १०२॥ दोहा॥ क्षे
त्र रूप परिणाम कुं॥ पाइ अविद्या जोइ॥ सो सब कर्म कराव ही॥ युं देखत हे सोइ॥ १०३॥ युं ही अकरता आ
तमा॥ देखत परम सुज्ञान॥ सोइ जथारथ आतमा॥ देखत हे बुधीवंन॥ १०४॥ चोपाई॥ देवादिक प्राणी
हे जेता॥ प्रकृति पुरुष मय वरत तेता॥ ताते देव की भाव हे तेही॥ मनुष्य भाव वरतत हे जेही॥ १०५॥ क्

खु दिर्घ आदिक भिन भावा॥ एक प्रकृति मही रहत स्वभावा॥ आत्मा विषे रहत नही कोई॥ एही विधि आ
त्मा देखत सोई॥ १०६॥ पुत्र पौत्र आदि विस्तारा॥ प्रकृती सें ही देखत हे सारा॥ तब ही सो ब्रह्म आत्मा जेहा॥ प्र
कृति पार ते हि पावत तेहा॥ १०७॥ देहादिक सें श्रेष्ट हे जेऊ॥ ताते परमातम कह्यो तेऊ॥ एसो जिवातम को रु
पा॥ हे अकृति कृत कह्यो अनुंपा॥ १०८॥ दोहा॥ देह में रहत कुं जिव कुं॥ अज अनादि गुण जेऊ॥ सत्वादिक
गुण रहीत नित॥ ताते नास विनते ऊ॥ १०९॥ ताते यह जिवातमा॥ कछु न करत हे सोय॥ युं यह देह स्वभावक
रि॥ लिप्त कबहुं न ही होय॥ ११०॥ चोपाई॥ निरगुण कुं कछु करतन सोई॥ तन स्वभाव कछु लिप्त न होई॥ हे अ
र्जुन युं पुछि होए जोइ॥ याको उत्तर कहत कुं तोई॥ १११॥ युं आकाश सब ही में रहही॥ तद पि अधिक सुक्षम
गुन गहही॥ ताते सब ही वस्तु करि एहा॥ गगन न लिप्त होत कछु तेहा॥ ११२॥ युं आत्मा अति सुक्षम रूपा
सब में रहत अलिप्त अनुंपा॥ देव मनुष्यादिक तन जेही॥ रहत कुं तिन में असंगि एही॥ ११३॥ हे भारत रवि ए
क हे जेऊ॥ यह सब लोक प्रकासत तेऊ॥ युं जिवातम क्षेत्रि जेउ॥ सब ही क्षेत्र प्रकाशत तेउ॥ ११४॥ दोहा॥
कह्यो युं सब प्रकार करि॥ क्षेत्र क्षेत्रज्ञ जेऊं॥ तिन को भेद सो ज्ञांन दृग॥ तिन करि देखत जेऊं॥ ११५॥ जिव कुं

गी॰ भा॰ माया तरन की ॥ अचल उपाय है जोय ॥ निरमानादिक मोक्ष के ॥ साधन ज्ञान न सोय ॥ ११६ ॥ दोहा ॥ बंधन अ॰ १४
॥८४॥ सें होय मुक्त ॥ निज स्वरूप रत्यो आतम जेही ॥ तेही पावत सुं निकेत ॥ मुक्तानंद सो हरि भजत ॥ ११७ ॥ इति
श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मुक्तानंदमुनिविरचित भग
वद्गीताटीकायां क्षेत्रक्षेत्रज्ञनिरूपणयोगो नाम त्रयोदशो ऽध्यायः ॥ १३ ॥ चोपाई ॥ त्रयोदश में अध्या
य में एही ॥ मिले हे परस्पर आप में जेहा ॥ ए सें क्षेत्र क्षेत्रज्ञ गम्य जेउं ॥ प्रकृति पुरुष मय वरतत तेउ ॥ १ ॥
तास स्वरूप जथारथ जांनि ॥ प्रभु कि भक्ति करत अति सुखकारी ॥ निरमानादिक साधन जेऊ ॥ इन करी
बंध सें छुटत तेही ॥ २ ॥ तिन महि बंध को कारन भारी ॥ सत्वादीक गुणमय दुखकारी ॥ जो जो सुख महीं वि
ति होई ॥ बंधन हेतु सब ही विधि सोई ॥ ३ ॥ अब चौदमें अध्याय में एही ॥ सत्वादिक तिऊं गुन हे तेही ॥ ता
को भीन भिन रूप हें जेसें ॥ कृष्णकृपानीधि बरनत तेसें ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बंधन हेतु होत जिमि ॥ कहत हे तास प्रका
र ॥ गुणातित कि हे ही सुं ॥ कहत हे श्रुति अनुसार ॥ ५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ चोपाई ॥ कहे श्रीकृष्ण सुनुं अ
रजुन ताता ॥ प्रथम जो कह्यो ज्ञान साक्षाता ॥ तिन सें अन्य ज्ञान हे एही ॥ प्रकृति पुरुष के भिंतर जेही ॥ ६ ॥८४॥

सत्वादिक सब बंधि सुभ जांना ॥ में तो यु कहीऊं परम सु जांना ॥ प्रकृति पुरुष को ज्ञान हे जेहा ॥ तिन मध्य अ
ति उतम हे एहा ॥ ७ ॥ जेही ज्ञान जांनि मुनि नेहा ॥ भये संसार सें मुक्त स्वछंदा ॥ परम सिद्धि पाये सुखरूपा ॥ आ
त्म स्वरूप जो सुख अनुपा ॥ ८ ॥ कहिऊं एसो ज्ञांन हे जोई ॥ कितनेक मुनि तेही आश्रित होई ॥ मम साधर्म्य प्राप्त
भए जेउ ॥ सर्ग समे उपजत नहि तेउ ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सृष्टि समे उपजत नहीं ॥ प्रलय में दुख नहीं लेश ॥ मो से वाम
म संत सें ॥ पाये जो सुख उपदेश ॥ १० ॥ चोपाई ॥ अब प्राकृत गुण ते हि समाजा ॥ बंधन हेतु कहन कुं काजा ॥
सब ही प्राणि मात्र हे जेही ॥ प्रकृति सबंध सें उपजत तेही ॥ ११ ॥ एही विधि प्रथम कह्यो हे जेहा ॥ श्रीमुख आप
कहत हे तेहा ॥ हे अरजुन जगजोनि रूपा ॥ महद्ब्रह्म मम प्रकृति अनुपा ॥ १२ ॥ भुमि आदि भेद हे जेऊ ॥ आठ
प्रकार प्रकृति भई तेऊ ॥ तेज को पुंज पुरुष हे जोई ॥ प्रकृती सरूप जो रत कुं सोई ॥ उभय प्रकृती सें होत अनंता ॥ ब्र
ह्मा आदि कु स्तंब पर्यंता ॥ उभय प्रकृति संजोग सें नाता ॥ होत हे जग स्थिर चर विख्याता ॥ १४ ॥ दोहा ॥ देवा
दिक सब जोनि में ॥ होत सुरति बकु जेही ॥ पुरुष के मिलि भइ अष्टधा ॥ प्रकृति हे कारन तेही ॥ १५ ॥ में मायाम
हि विज को ॥ पोष्य कु सब को तान ॥ जाके जे से करम तेही ॥ न हां जी उं साक्षान ॥ १६ ॥ चोपाई ॥ हे महाभुज अरजुन

॥८५॥

संतुंताही ॥ सत्वरुरजतमगुण हैजेही ॥ मायामेंउपजत हेराहा ॥ प्रकृतीस्वभावरूपहैतेहा ॥ १७ ॥ गुणकोप्रका
शादिकहेजोई ॥ तिनमेंनिरूपणजोगपहेसोई ॥ प्रकृतिअवस्थामेंरहेजबही ॥ गुणउपजेभासननहीतबही ॥ १८
महतत्वादिकतासुविकारा ॥ तिनमहीउपजेभासतसारा ॥ हामेंत्रिगुणकहावतजेतें ॥ ततसमंधिजाकुंहैतेतें ॥
१९ ॥ नासरहीतजेहिनामअनंता ॥ देहविषेवरततजोजंता ॥ देहमेंवरतनरूपजोवाकुं ॥ सोउपाधिकरिबांध
तताकुं ॥ २० ॥ दोहा ॥ सुंयहदेहमेंवासमें ॥ ततउपाधिकरिताही ॥ जिवकुंबांधतत्रिगुणसु ॥ सुरुनदेतन
वाही ॥ २१ ॥ चोपाई ॥ सत्वरुरजतमगुणआकारा ॥ तेहीबंधनकेंकुहतप्रकारा ॥ हेअरजुनतिकुंगुणहे
जेहा ॥ तिनमध्यसत्वविमलहैनेहा ॥ २२ ॥ सुखरुप्रकाशकोकारनहेराही ॥ सुंअरोगीकोहेतनेही ॥ सुख
केसंगसुअरुज्ञानकेसंगा ॥ जिवकुंबांधतसत्वअभंगा ॥ २३ ॥ ज्ञानरुसुखकोसंगहेजोई ॥ सत्वउपावतजी
वकुंसोई ॥ साधनवैदिकलोकिकजेतें ॥ तिनमेंजिवप्रवर्त्तनतेतें ॥ २४ ॥ विहितनेहिफलरूपअनंता ॥ जोनिजे
निमहीजन्मतजंता ॥ सत्वसुंसुखअरुज्ञानकेद्वारा ॥ संगमेंबांधतपरमउदारा ॥ २५ ॥ दोहा ॥ रजकोराग
नरनारिकुं ॥ प्रितिपरस्परजेउं ॥ रहतअधिकअनुरागसो ॥ हेतूरजोगुणतेउं ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ पंचवी ॥८५॥

षेनाशादिकराहा ॥ तिनकिचाहरहतनितजेहा ॥ पुत्रादिकसंजोगहेजेही ॥ तिनकिचाहकोकारनरही ॥ २७
रासोरजोगुणजिवकुंजोई ॥ कर्मसंगकरीबांधतसोई ॥ हेअरजुनसबक्रियाकहाई ॥ प्रितिकरायकेबां
धतताई ॥ २८ ॥ बहुतक्रियामहीप्रितिजेतें ॥ तिनमेंजिवसुखकरतहेतेतें ॥ क्रियाजोपापपुन्यमयदोइ ॥ सुभ
अरुअसुभभवकारनहोइ ॥ २९ ॥ राहीविधिप्रबलरजोगुणजेऊ ॥ करमकेसंगद्वारकरितेऊ ॥ जिवकुंअतिदृढ
बंधनकरही ॥ तातेंरजोगुणमुनिपरहरही ॥ ३० ॥ दोहा ॥ हेअरजुनअज्ञानसें ॥ भयोतमोगुणताही ॥ सब
जिवनकुंमोहको ॥ करनाजानोतेही ॥ ३१ ॥ मोहविपर्जयज्ञानको ॥ कारनतामसजोय ॥ करनेजोगपनजायअ
स ॥ करमकरावतसोय ॥ ३२ ॥ सोरठा ॥ अतिगाफलताजेऊ ॥ कर्मकुंकरनस्वभावनही ॥ अतिनिद्राकरिए
ऊ ॥ जिवकुंबांधतजोरकरी ॥ ३३ ॥ चोपाई ॥ गुणकरिबंधनद्वारहेजेही ॥ तिनमेंप्रधानकहतहेतेही ॥ हेअ
रजुनयहसत्वहेजेऊ ॥ सुखमहीजिवकुंजीततनेऊ ॥ ३४ ॥ तैसेंरजोगुणवरततजेहा ॥ करममेंजिवकुंजी
ततनेहा ॥ सुहीतमोगुणवरततजेऊ ॥ जिवकेज्ञानकुंढांकिकेतेऊ ॥ ३५ ॥ अतिप्रमादमहीजिवकुंजोई ॥ जी
ततप्रबलतमोगुणसोई ॥ अतिविपरितप्रवृतिकोसंगा ॥ तममेंरहतप्रधानअभंगा ॥ ३६ ॥ देहस्वरूपप्र

कतिहैजोतें॥तासंगपसमंधसहीतरहैसोउ॥तामेंसत्वादिकगुणस्वामि॥सबहिकाखबरततबऊंनामि॥३७॥
दोहा॥ अतिविरुद्धकारसऊमी॥सुंउपजावतगहीं॥अरजुनतमसुंपुछिहैं॥कहुंअबउत्तरताहीं॥३८॥
चौपाई॥सत्वादिकतिनुंगुणजेहा॥वैकतिजऊअज्ञानमसंगएहा॥इहसमंधपायेहैजोउ॥पुर्वकर्मकेवसपु
नेसोउ॥३९॥हेहकंपुष्ककरतजोअहारा॥ताकोविषमभएअबहोरा॥गुणसत्वादिपरस्परताहीं॥वृदयअ
स्तहोवरततनेही॥४०॥कबऊंकरजतमकुंकरिविना॥सत्वअधिकहोरहतप्रविना॥सुंतमसत्वखिनकर
होइ॥रहतरजोगुणअतिवडहोइ॥४१॥हेअर्जुनसुंहिकोइकाजा॥रजअरुसत्वसोहोतकंगाजा॥रजअ
रुसत्वकोववकरीरवंग॥वरततमोगुणअधिकप्रचंड॥४२॥दोहा॥सत्वादिककोवृद्धिअरु॥होतप
राभवजेऊं॥कारजपासीकरिजानिवो॥करतहैनेहिविधितेउ॥४३॥चक्षुआदिसबज्ञानके॥द्वारमेंहोतप्र
काश॥तबयहदेहमेंसत्वगुण॥बसोकरनउरवनास॥४४॥चौपाई॥हेभारतयहलोभवखाना॥निजध
नकोदेसकतनदाना॥ताहकुचपलस्वभावहैजोइ॥अतिवउप्रवर्तिकहतहैसोइ॥४५॥फलकेसाधनरूप
जोकर्मा॥ताहीकरतसोइआरंभधर्मा॥विषयमेंइंद्रिनकरतविरामा॥सोइअसममहाकुरवकोधामा॥४६

विषयकिचाहप्रहाहैएहा॥वरैरजोगुणवरततहैनेहा॥लोभादिकचारनहैजवही॥बरोरजोगुणजांनोत
वही॥४७॥अतिअप्रकाशजोज्ञानकोनासा॥अतिजडतानहीबुद्धीप्रकासा॥करनेजोगपकरमनहीजोई
तिनमहीप्रवर्तिप्रमादहैसोइ॥४८॥दोहा॥मोहविपरजेज्ञानसो॥इतनेकयेहैजेऊं॥तामसगुणवृद्धिभये॥
प्रगटहोतहैराऊं॥४९॥सोरठा॥हेकुरुनंदनधिर॥इनमेंतमोगुणअतिवरत॥जांनोगुणगंभिर॥बरतहै
तमतबगहीवरन॥५०॥चौपाई॥सत्वप्रधिभयेमरनहंदेही॥आत्मज्ञानिकेकुलमेतेही॥जन्मीकेज्ञान
केसाधनरूपा॥पुन्यकरमसबकरतअनुपा॥५१॥रजसप्रधिभएतेजेही॥प्राणीमरनकुंपावततेही॥फ
लहीतकरमकरतहैजेहा॥तिनकेकुलमहीजनमततेहा॥५२॥सुंहीतमोगुणवृद्धिहोइ॥तिनमेंदेहतजत
हैजोई॥श्वानसुकरआदिकतनुलहही॥मोक्षकेसाधनजोगपनरहही॥५३॥सत्ववृद्धीभयेमरतहैजेउ॥
स्वर्गवेताघरजन्मिकेतेउ॥करमकरतफलइछात्यागी॥होतहैप्रभुपदकोअनुरागी॥५४॥दोहा॥निरम
लफलहैसत्वको॥जिनमेंनहीदुखलेश॥सुंहीसत्वगुणज्ञानसो॥कहतहैसुभउपदेश॥५५॥चौपाई॥रा
जसबहेतजतनजबही॥कर्मसंगिकुलजनमततबही॥तातेंदुखफलताहीप्रमाना॥कहतजथारथर

जके ज्ञांना ॥५६॥ सुंही तमो गुणमें मरजावे ॥ अति अज्ञांनरूप फल पावे ॥ राजसे तमो गुन जान हे जे ही ॥ राही विधि
तम फल्ल कहत है ते ही ॥५७॥ राहि विधि सत्व वृद्धि भये ताता ॥ आत्मज्ञांन होवत साक्षाता ॥ सुंही रजोगुण वा
रत जाही ॥ स्वर्गादिक फल भावत ताही ॥५८॥ सुंही तमो गुण बाढत जाकुं ॥ अधिक मुढता होवत ताकुं ॥ अ
ति विपित वृद्धि ते हि आवे ॥ ताते ज्ञान नाश होइ जावे ॥५९॥ दोहा ॥ कह्यो अर्जुन ते हि प्रकार करी ॥ सत्व में वरतत न
जोई ॥ अनुक्रम से भव न रत है ॥ लहत परम पद सोइ ॥६०॥ चोपाई ॥ राजस रहत त्रीलोकि मांही ॥ जन्म मृत्यु
दुःख न वकुं ताही ॥ ताम सि आसत म मेरहे जोई ॥ निच जन्म बहु पावत सोई ॥६१॥ भक्त के भेद सें सुख्य हे जे ही ॥
फल विन स्वकृत करत हें ते ही ॥ राही विधि सत्व वृद्धि कियो जेहा ॥ सात्विक पुरुष कहावत तेहा ॥६२॥ सोन
र कुं गुण नास के हारा ॥ उर्द्ध गमन को कहत प्रकारा ॥ राही विधि सात्विक आरसें रहुं ॥ भक्ति रुप फल करम
सें तेहुं ॥६३॥ रज तम सब विधि जिति कें तेहुं ॥ केवल सत्व में वरतत तेहु ॥ सब सत्वादिक गुण बिन जोउ ॥
करता और न देखत कोउ ॥६४॥ दोहा ॥ तब गुन सें पर आतमा ॥ जांने अकरता जाय ॥ अति सें मम
म भाव कुं ॥ पावत है नर सोय ॥६५॥ चोपाई ॥ प्रभुत व भाव सो कैसो होइ ॥ याको उत्तर कहुं अब तोइ ॥ देह

रुप माया भइ जे हि ॥ तिन सें भये सत्वादिक ते ही ॥६६॥ मायिक त्रि गुण उलंघन जेहा ॥ गुण सें अन्य आत
म है एहा ॥ सो आतम है ज्ञांन स्वरुपा ॥ ताकुं देखि के परम अनूपा ॥६७॥ जन्म मृत्यु दुःख व्याधन जोई ॥ तिन के दु
ख सें छुटत सोई ॥ अमृत रुप आत्म लहें जउ ॥ मेरो भाव कहावत तेउ ॥६८॥ अर्जुन उवाच ॥ गुण तिन
को रुप हे जेउं ॥ ते ही सुचक आचार हे तेउ ॥ गुण के नास को हेतु जेइ ॥ अब अरजुन पुछत हे तेइ ॥६९॥ दो
हा ॥ सत्वादिक गुण तीनकुं ॥ उलंघे मती धिर ॥ के ही लछन ते ती जानि ये ॥ कहो प्रभु परम गंभिर ॥७०॥ सोर
ठो ॥ गुण तित नर जो य ॥ के ही आचार में वरितत ॥ सत्वादिक गुण सोय ॥ के ही साधन से मुनि तरत
७१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ चोपाई ॥ कहे श्रीकृष्ण कुंतुपांडु कुमारा ॥ जो आतम से अन्य आकारा ॥ अति
अवश्य महा प्रवर्त्ते जेहा ॥ मोह प्रकाश प्रवर्त्ति तिकुं तेहा ॥७२॥ सत्व रज तम कार्य जेउ ॥ इन को द्वेष क
रत नहीं तेउ ॥ आत्मा सें न्यारे है जेउ ॥ इष पदारथ तिन महीं तेउ ॥७३॥ निवृत्ति पाम है न हे जब ही ॥ सत्वादि
क के कार्य सबही ॥ तब ऊं प्रकाशादि कहे जोइ ॥ तिन कुं फ व ऊं न इछत सोउ ॥७४॥ आत्म स्वरुप जो गुण
सें न्यारा ॥ ताके दर्श सें न सउदारा ॥ आत्म विन्यां अन्य वस्त जेता ॥ तिन में उदासी देह स भेता ॥७५॥ दोहा ॥ स

त्वादिक तीनूं गुन निकरी ॥ देहआंकोक्षाहार ॥ तासौ पुरुष मोच जतन नहीं ॥ इह मति अधिक उदार ॥ ७६ ॥ मो
ह प्रकाश राग प्रवर्त्ति तीहूं ॥ गुण को कारज जे ही ॥ तिनमें गुणातीत प्रवर्तित हूं ॥ जानि सु न्यारहे तेही ॥ ७७ ॥ सोरठा ॥
गुण को कारज जेहूं ॥ ते ही अहं सारि प्रवर्त्ति जोई ॥ चेष्टा करत न तेहूं ॥ गुणातीत थिर मति रहत ॥ ७८ ॥ चौ
पाई ॥ सुख दुख में सम चित है जाको ॥ निज आत्मा को रहत मन ताको ॥ रज पाषान कनक सम जाही ॥ तु
ल्य विषय प्रिय अप्रिय ताही ॥ ७९ ॥ देह आतमा भिन भिन जोई ॥ तिनके बीवेक में कुशल है सोई ॥ निंदा स्त
वन तुल्य जे सो रहही ॥ गुणातीत हम ताकूं कहही ॥ ८० ॥ मान अपमान में समचित तेही ॥ मित्र शत्रु सम तुल्य
है जेही ॥ व्यवहारी आरंभ को सागा ॥ गुणातीत सोई मुनि बड भागा ॥ ८१ ॥ ताही विधि गुण को नाश है जे हा
तिनके मुख्य हेतु कहे तेहा ॥ देहातम विविक कहा जोई ॥ तितने मात्र गुणनाश न होई ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ न
रकूं अनादी काल की ॥ अस्र भवा सना जेऊ ॥ प्रभु के प्रबल उपासना बिन ॥ नाश न होवत तेऊ ॥ ८३ ॥ चोपाई ॥
तातें सस संकल्प में जे हा ॥ परम कृपा वन्नप वर तेहा ॥ दयासिंधु निज जन पर जेही ॥ तासों में सुखकारी तेही
८४ ॥ अनन्य भक्ति करि सेवत जोई ॥ गुणसत्वादी उलंघत सोई ॥ मम आश्रित होई माया तरही ॥ काल व्या

लमें सो नहीं परही ॥ ८५ ॥ ब्रह्म भाव में जोग्य सो होई ॥ ब्रह्मरूप ही पावत सोई ॥ गुण उलंघन रिति उदारा ॥ सब
विधि वर्नि कहि श्रुति सारा ॥ ८६ ॥ अविभचारि भक्ति करि भारी ॥ सेवत मोय जो निःसुखकारी ॥ अमृत अख
उ ब्रह्म विख्याता ॥ ते हि आधार मेंई साक्षाता ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ सुहि सनातन धर्म को ॥ मेंऊं इह आधार ॥ ताकी
ति कृ षम भक्त कूं ॥ जोग सुखो सुखदातार ॥ ८८ ॥ सोरठा ॥ संतन कूं सुखरूप ॥ मैं ताको आधार निंत ॥ मेंऊं पर
म अनूप ॥ सुख सदा मो कूं भजत ॥ ८९ ॥ ब्रह्मरूप मुनि जोय ॥ भजत मो सुपर ब्रह्म लखी ॥ मो ही कूं पावत सोय ॥
मुकुंदानंद श्री मुख वचन ॥ ९० ॥ इतिश्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवा
द मुकुंदानंद मुनि विरचित भगवद्गीतायां टिकायां गुणातीत योगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ चोपाई ॥
त्रयोदश में अध्याय में जोई ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञ स्वरूप है सोई ॥ तामें प्रकृति पुरुष को रूपा ॥ सो धिकें सब विधि पर
म अनुपा ॥ १ ॥ पुरुष क्षेत्रज्ञ स्वरूप है जेही ॥ प्राकृत गुण को संग भयो तेही ॥ सो गुण संग निमित है जाकूं ॥
प्रकृति संबंध सदा कहो ताकूं ॥ २ ॥ अब चौदमें अध्याय में भारी ॥ जिव क्षेत्रज्ञ स्वरूप विचारी ॥ गुनको संग
मूल है जाकूं ॥ प्रकृति संबंध कहो प्रभु ताकूं ॥ ३ ॥ गुण को संग जेही विधि होई ॥ अति प्रतिपादन करिके सोई

गुणसंगनिवर्त्तिप्रथमजिनमांई॥ तासिंआतमज्ञानिकहाई॥ ४॥ दोहा॥ पुरुषोत्तमकिभक्तिकरत॥ आत्मज्ञ
मितेहीहोय॥ औरकुंआतमदर्शनही॥ कह्योसबहीविधिसोय॥ ५॥ चोपाई॥ पनरमेंअध्यायकेमांही॥ भग
नजोग्यभगवानकहाही॥ क्षरअक्षरदोउपुरुषहेजेहा॥ तिथरुमुक्तकहावतनेहा॥ ६॥ तिनसेंअतिन्यारेहेजं
हि॥ पुरुषोत्तमप्रभुकहतहेनेही॥ प्रथमअसंगशस्त्रकस्तिबही॥ बंधनछेदमयेहेजबही॥ ७॥ बंधनरहीत
जोअक्षररूपा॥ मुक्तपुरुषसोपरमअनुपा॥ ताकोरूपकहनकेकाजा॥ छेदनजोगप्रजोअस्वसमाजा॥ ८॥ बं
धनकरनविस्तारसोगाऊं॥ जडपरिणामभेदहेतेऊं॥ ब्रह्मजुंकल्पिकेजगतपसारा॥ बीलतनभएउश्रीहरिउदारा॥
९॥ श्रीभगवानुवाच॥ दोहा॥ कहेश्रीकृष्णअरजुनसुंनो॥ यहसंसारहेजोइ॥ पिपरतरुजुंथिरनही॥ क्ष
णभंगुरहेसोइ॥ १०॥ चोपाई॥ सोतरुकुंकितनिकश्रुतीजोइ॥ ऊंचेमुलवतावतसोइ॥ निचेशाखाकहतहेताकी
अवयक्तिवरलुंसवयाकी॥ ११॥ जगकीआदिअजसवपरजेहा॥ सोइब्रह्माजगमूलहेतेहा॥ भुपररहेसव
नरपशुआदि॥ निचेशाखासोइअनादि॥ १२॥ ज्ञानउदयसेंप्रथमसंसारा॥ अचलप्रवाहरूपकरीसारा॥ ता
नेअछेद्यअसत्वंउस्वरूपा॥ वेदचऊंतेहीपत्रअनुपा॥ १३॥ पत्रनिमेंनरुबादमजेमें॥ वेदमेंजगतरुवादनतेमे ॥८९॥

कर्मसकामकहतश्रुतिजेही॥ तिनकरिभवतरुवाढतएही॥ १४॥ दोहा॥ एसोयहसंसारतरु॥ ज्ञानतसव
विधिजेऊं॥ वेदअर्थकतसवहीविधि॥ जाननहेनरतेऊं॥ १५॥ वेदजक्तकेछेदको॥ उद्यमदेतवताय॥ वेद
कुंजानिकेविश्वतरुं॥ छेदनकरतउपाय॥ १६॥ चोपाई॥ मनुष्यादिकशाखातेहीभारी॥ एसोविश्वतरुविस्ता
री॥ मनुष्यादिकके करमसेंजोइ॥ उपरतरशाखाबकुंहोई॥ १७॥ मनुष्यपशुआदिकहेजेऊ॥ निचेशाख
प्रसरितेही॥ गाइवजक्षआदिकरजोउ॥ उपरशाखाप्रसरीसोउ॥ १८॥ सत्वादिकगुणसेंसोइडारी॥ शुभअरुव
हिडसवकारी॥ पंचविषेशब्दादिकजेऊं॥ शाखामेंनवपल्लवतेऊं॥ १९॥ ब्रह्मासोइसदाजेहीमूला॥ मनुष्यहे
उपरभागप्रफुला॥ एसोविश्वतरुविस्तारा॥ निचेमनुष्यमेंमूलहेभारी॥ २०॥ दोहा॥ मनुष्यअवस्थामेंकी
ये॥ कर्मअशुभशुभजेही॥ तिनकरिनिचेमनुष्यपशु॥ आदिजन्मलहेनेही॥ २१॥ सोरठा॥ ऊंचेजन्मअपार
देवादिकमहीहोततेही॥ भ्रमतभ्रमतभवपार॥ हरिकिभक्तीविनलहतनही॥ २२॥ चोपाई॥ ऊंचेमूलजोब्र
ह्मारूपा॥ तेहीस्कंतकेस्कंतभएउअनुपा॥ तिनकीपरंपराभइजेहा॥ मनुष्यपशुआदिवऊंनेहा॥ २३॥ एहीवि
धिनिचेशाखाजाना॥ विश्वतरुंनहीजातपिछाना॥ मनुष्यमेंकरमकीएसेंऊं॥ उपरतरशाखावढितेऊं॥ २४

यु संसारवृक्ष है जेही ॥ संसारिन ही जानत तेही ॥ सु संसारवृक्ष को अंता ॥ नहीं जानत संसारि जंता ॥ २५ ॥ वि
षय के सागर रत भव जोई ॥ अज्ञानि वन ही जानत सोई ॥ देह में आतम बुद्धि जेऊ ॥ विश्व वृक्ष कि स्थिति तिहें तं
ऊ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ यु संसारि जिव कूं ॥ नहीं जगतरु को ज्ञान ॥ दृढ बंधाने मुल जेही ॥ सो कि मिटाने अज्ञान ॥ २७
सोरठा ॥ गुणमय भोगकुं जेऊ ॥ त्यागकरत वैराग बल ॥ असंगशस्त्र सें तेऊ ॥ जगतरु छेदिकें सब ही विधी
२८ ॥ चौपाई ॥ पिछे खोजन जोग्य है जोई ॥ सो पद में प्रवेश करि सोई ॥ ऐसें पुरुष कुं फिर भव मांही ॥ पुनराव
त्ति होवत नांही ॥ २९ ॥ प्रवृत्त सो अनादिकाल सें जेउ ॥ गुणमय भोग को संग है तेउ ॥ गुण को संग मूल है जेही
ऐसो अतिअविवेक है तेही ॥ ३० ॥ तन अभिमान कहावत एहा ॥ केही विधि सें तनी वर्त्ति तेहा ॥ एही विधी
आशंका महि ताता ॥ या को उत्तर कुं सा क्षाता ॥ ३१ ॥ सो अज्ञान निवर्त्ति काजा ॥ जो प्रभु सदा सब ही के राजा
विश्व कुं करता हरता जेऊं ॥ आदि पुरुष नारायण तेऊ ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ ताकुं पावत जिवजब ॥ तब ही मिटत
अज्ञान ॥ विमल ज्ञान तेही होत है ॥ हरन मोह मद मांन ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ सब जग करता जेउ ॥ तिन सें पुरातन
रुप एही ॥ गुणमय भोग है जेउ ॥ तिनकि प्रवर्त्ति भई प्रबल ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ यु में अनादि पुरुष कुं सदाई ॥ प्र

भाव मम शरणकुं पाई ॥ मान रु मोह रहीत भए जेहा ॥ विषय प्रसंगदोष विनतेहा ॥ ३५ ॥ आत्मज्ञान महीं
तत्पर रहहीं ॥ आत्म विनां अन्य करखु नहीं चहहीं ॥ तातें रहत अचल निष्कामा ॥ फल दुख द्वंद मुक्त सु
खधामा ॥ ३६ ॥ आत्म अनात्म स्वभाव के जाना ॥ अति अमुद मुनि परम सुजाना ॥ ऐसें सु भक्त छन जन जो
इ ॥ अविनाशि पद पावत सोई ॥ ३७ ॥ जा पद कुं रवि नांही प्रकाशै ॥ चंद के तेज सें सो नहीं भासै ॥ जो पद अग्नि
प्रकाश न कुं रही ॥ जो पद पाय न पिछें फर ही ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ ऐसो अक्षर ब्रह्म सो ॥ श्वेत द्वीप पर धाम ॥ जाकुं पा
यन गिरत है ॥ सोइ परम मम धाम ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ जो आवत मम धाम के मांही ॥ सो बहुरि भव भटकत नांही
ऐसो में ते ही अंश हु जेऊं ॥ मम अवतार सनातन तेऊं ॥ ४० ॥ मृत्यलोक महीं मम अवतारा ॥ आनंत जीव को
करन उधारा ॥ सोइ मम धाम प्राप्ति के काजा ॥ जिव सु होत सब नके राजा ॥ ४१ ॥ निज प्रभुता निज ज्ञान देजोई
अति संकोच रूप किये सोई ॥ ऐसो भयो अंश मम जेहा ॥ तेही पहीचान के लक्षन एहा ॥ ४२ ॥ मन आदिक षट
इंद्रि जेही ॥ माया मय तन में रहे तेही ॥ तिनकुं विषय सें पिछें लावै ॥ आपन इंद्री वश पहीं प जावै ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ इ
श्वर जो मम अंश सो ॥ जिव सु पावत देह ॥ अथवा देह सें निकसे ॥ तेही अवसर म हीं एह ॥ ४४ ॥ षट इंद्रि न कुं

संगलेहै॥ निजवांछिततनुं जोय॥ तिनमें प्रवेशकूं करत हे॥ पुनि निकसत हे सोय॥४५॥ मृगमद चंदन पुष्पके
आदिक वस्तु जेऊ॥ तिनमें वायु निकसे॥ अति सुगंध लेतेऊ॥४६॥ सोरठा॥ तेही विधि ग्रही प्रसंग॥ जव तन
तुं तजी के निकसत॥ षट इंद्रिन संग॥ निकसत अमृष्य लग मन नहीन॥४७॥ चौपाई॥ मेरो अंश जो जीव हे जेहा
मन जुत षट इंद्रीनकुं तेहा॥ श्रोत्रादिकके विषय हे जेही॥ तिनमें प्रवर्ति करायके ग्रही॥४८॥ ज्ञानइंद्रीके वि
षय हे जेऊ॥ शब्दादिक मन भावन तेऊ॥ सब विधि अति स्वतंत्र मम अंशा॥ विषयकूं भुंजन करत प्रसंसा॥
४९॥ मेरो अंश जो जीव हे जोई॥ देहकुं साग करत हे सोई॥ अथवा देहमें रहत हे जबही॥ गुणमय विषयकूं भुं
जत तबही॥५०॥ सत्वादीकनीकूं गुणमय जेऊ॥ करत दुखादि जुत जब तेउ॥ तासेंऊं कुं बंधन नहीं जांने॥
ज्ञानदृष्टी जुत सकल प्रमांने॥५१॥ दोहा॥ जन्मकर्म मम अंशके॥ दिव्य सु जानत जोय॥ इनके चरित्र विचित्र में
मोह न पावत सोय॥५२॥ आसुरि संपति जुक्त सो॥ अज्ञानि मति हीन॥ जन्म कर्म लखि मनुष्य सम॥ मोहकुं
पावे मलिन॥५३॥ चौपाई॥ सो मम अंशकूं जानन काजा॥ जत्न करत शुभमति मुनिराजा॥ अधिक इंद्रि
गण जित न जेहा॥ निज आतम में रहत हे तेहा॥५४॥ तासों मेरो अंश हे जोई॥ निरमल मति मुनि देषत सोई॥

नहि

जिन अपनो मन वश्य किना॥ तेही जानन जेही चितन प्रविना॥५५॥ तास स्वरूप को ज्ञान हे जेही॥ सो जानन
ज्ञाक्षिन ही तेही॥ तासें जत्नकूं करत अपारा॥ सो मम अंश न देखनहारा॥५६॥ सुं मम अंस संकर्षण रूपा॥ प्र
द्युमन अनिरुध रूप अनुंपा॥ जिवरूप करि बिरने जेऊ॥ सब जग को जीवन हे तेऊ॥५७॥ दोहा॥ अब वरविचं
द्रादिक सबे॥ जगत प्रकाशक जोउ॥ तिनमें प्रकास सो हम दियो॥ कहत श्रीकृष्ण तासोउ॥५८॥ चौपाई॥
अरजुन जगत प्रकाशक मांनो॥ रविमही तेज सो मेरो जांनो॥ सुं ही चंद्रमामें हे जेही॥ मेरो तेज जांनो तुम तेही॥
५९॥ अग्निविषे सुं तेज हे जेहा॥ मेरो इ तेज जांनो तुम तेहा॥ रविशशि अग्नि भजे मोप्र जबही॥ में निजतेज
दियो तेही तबही॥६०॥ सबही विश्वधारत भुव जेऊ॥ धारकताकि मेरि हे तेऊ॥ करिके प्रवेश भूमि में ताना॥
में सब प्राणि धारुं विख्याता॥६१॥ सुं में अमृत रसमय भारी॥ चंद्रके रूप होइ करवकारी॥ में सब ओषधि पो
षनहारा॥ मोहि सें सब रसकी विस्तारा॥६२॥ दोहा॥ जब अनलके रूपमें॥ सब प्राणि देहे जेउ॥ तिनके
देह आश्रित भयो॥ उदरमें करत प्रवर्तेउ॥६३॥ सोरठा॥ भक्ष भोज्य करत रूप॥ लेह्य चोष्य प्राणि जिमत॥ प्रा
णअपान अनुंप॥ समसें पचाउं सबही अन्न॥६४॥ चौपाई॥ हे अरजुन प्राणि कृत अस्तु जा॥ तेही सब ज्ञान

प्रवृत्तिकोमूला॥तामेंरुदयमहीफलभयगुणजोई॥ममसंकल्पकरिहीनहेसोई॥६५॥मेंआत्माकरूंसबमेंप्रवेशा
तातेंहोतमोसेंउपदेशा॥स्मृतिहीनसबकेउरजेहूं॥अतिशेज्ञाननहीवृत्तहेतेहूं॥६६॥सुनुअज्ञाननिवृत्तिजेहा
मोहिसेंहोतयथविधितेहा॥ज्ञानजोगपवेदरुरिजोउ॥सबकोसारमेंइकसोउ॥६७॥सुवेदांतअर्थश्रुति
सारा॥संप्रदायतेंहिमेंकरतारा॥वेदकोज्ञानमेंइकभारी॥सुमोयश्रुतिसबकहतपोकारी॥६८॥दोहा॥मो
बिनदुजीवेदको॥अर्थनज्ञानतकोई॥यातेंमोहीसेंवेदको॥सारअर्थकहनोसोइ॥६९॥चौपाई॥याजग
उभयपुरुषहेंजेहो॥क्षरअरुअक्षररूपहेतेहो॥तिनमहीविधिसेंकिरपजेता॥प्राणिमात्रअनेतविधि
जेता॥७०॥क्षरणस्वभावजकहेउहूं॥तातेंक्षरकरिवरनेतेहूं॥जोकुटस्थअतिशेअविकारा॥जउके
संबंधसेंरहीनउदारा॥७१॥निजस्वरूपमेंरहतहेंजेउ॥मुक्तपुरुषजांनोसबतेउ॥कालसेंक्षरणस्वभावन
जाकूं॥अक्षरत्राहमेंकरतहेताकूं॥७२॥उत्तमपुरुषकहावतजोइ॥वासुदेवप्रभुजांनोसोइ॥क्षरअक्ष
रदोउपुरुषहेंजेहा॥तिनसेंअधिकभिंनहेएहा॥७३॥दोहा॥सबश्रुतिमहीपरमातमा॥पुरुषोत्तमकहे
जेहू॥सोत्रिलोकरक्षकसदा॥शुभगुणगणनिधितेहूं॥७४॥त्रिभुवनरुपीविश्वमें॥अपनोअंशअनिरुध ॥८२॥

तिनकेधारणवेशकरी॥जगधरिरहतप्रबुध॥७५॥सोरठा॥अविनासीहेंजोय॥परमेश्वरसबसेंअधिक॥
स्वरगनियंतासोय॥तिममेंरखनहारसोइ॥७६॥चौपाई॥तातेउत्तमपुरुषहेजोई॥वासुदेवमेंइकसोइ॥
तातेंक्षरब्रह्मादिकजेउ॥तिनकूंउलंघिरह्योमेंतेउ॥७७॥अक्षरपुरुषजोमुक्तअनंता॥तिनहीसेंउत्तम
मेंभगवंता॥यातेंश्रुतिस्मृतिमहीताता॥पुरुषोत्तममेंहीविख्याता॥७८॥हेअरजुनजोअतिबुधिवाना
पुरुषोत्तममोयजांनेसुजाना॥सोसबज्ञानकहावतप्रानी॥सोअसुदसुनिवरविशांनि॥७९॥ममप्राप्ति
केसाधनजेही॥ज्ञानजोगपजांनेसबतेही॥सबहिभावकरिभजतहेसोइ॥तेहीसमजगमहिऔरनकोइ॥८०
दोहा॥हेभारतनिष्पापमति॥एहीविधिमेंरोजोय॥पुरुषोत्तमप्रतिपादकम॥शास्त्रगोप्यहेसोय॥८१
तद्यपितुमनिष्पापहो॥जोगपरोपरमसुधिर॥यातेंमेंतुमकूकह्यो॥ग्रंथपरमगंभिर॥८२॥एहीशास्त्रकूं
जांनिकें॥बुधिमानअतिहोइ॥मुक्तानंदकोनाथकहे॥होतकृतारथसोइ॥८३॥इतिश्रीभगवद्गीतासूप
निषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमुक्तानंदमुनिविरचितभगवद्गीताटिकायांपुरु
षोत्तमयोगोनामपंचदशोध्यायः॥१५॥चौपाई॥गयेजोतिनअध्यायसेंएहा॥प्रकृतिपुरुषदेो

उपपयमकहेतेसा॥ मिलेपरमपरजुंतेहीरुपा॥ कहेजथारथपरमअनुंपा॥ १॥ प्रकृतिपुरुषकोसंगहेजेही॥
गुणकोसंगहेतहेतेही॥ गुणकोसंगनिवर्तिजबहोई॥ तबभिंनभिंनकरिवरनेदोई॥ २॥ भजनजोगप्रभगवा
नहेजेऊं॥ प्रकृतिपुरुषसेंभीनहेतेऊं॥ क्षरअक्षरदोउपुरुषहेजोइ॥ पुरुषोत्तमतिनपरकहेसोइ॥ ३॥ अ
वसेरमेंअध्यायमेंजेतुं॥ सबहीप्रसंगबरनिककुंतेउं॥ पंद्रेमेंअध्यायमेंजोउ॥ कह्योजोअर्थथिरताहीतसो
उ॥ ४॥ दोहा॥ शास्त्रकेवचपथ्थिररहनहीत॥ कहनचहतप्रभुजोई॥ शास्त्रकेवचपदेविसरग॥ अस्महेआ
करिसोइ॥ ५॥ श्रीभगवानुवाच॥ चौपाई॥ कहेश्रीहरिसमझतुंअरजुनवीरा॥ अभयजोभयसेंरहीतगंभी
रा॥ अंतःकरणशुद्धसोकहही॥ रजतमगुणकरिक्षोभनलहही॥ ६॥ रहतप्रकृतिपरआतममांही॥
ज्ञानजोगमहीस्थितिसोकहाही॥ न्यायसेंधनलावतहेजेऊं॥ देतकुपात्रकुंदानहेतेऊं॥ ७॥ विषयसे
मनकुंपिछालावे॥ संपुरणदमसोइकहावे॥ इन्द्रआराधनफलबिनजेउ॥ पंचतजकरेजज्ञहेतेउ॥ ८॥
प्रभुकेआराधनकोविधिजेहा॥ सबहीभांतिप्रतिपादततेहा॥ पुंलखिवेदपरतहेजेही॥ क्रमसाध्या
यकहावततेही॥ ९॥ दोहा॥ प्रभुकुंराजीकरनहीन॥ उपवासादिकजोय॥ अतितिनिरमलसोतपसरा

सरलहेआर्जवसोय॥ १०॥ चौपाई॥ प्राणिमात्रकुंपीडतनांई॥ सोइअहिंसाबर्निकहाई॥ जुंदेखेसुंक
हतहेजोई॥ प्राणिमात्रकोहीतसत्यसोई॥ ११॥ परकुंपीडाकरतनजेउं॥ अतिअक्रोधस्वभावहेतेउं॥
निजकल्याणकुंरुंधतजेहा॥ तिनकुंतजतत्यागहेतेहा॥ १२॥ विषयमेंइंद्रीनदोरतजबही॥ सांतिजथार
थजांनोतबहि॥ परअनरथकरकहतनजेही॥ अपिशुनभावकहावततेही॥ १३॥ काऊकुंदुखसही
सकतनजोउं॥ सबपरदयाकहावतसोउं॥ विषयसेंजबनिस्प्रहहोइजावे॥ अधिकअलोलभावसो
इकहावे॥ १४॥ दोहा॥ संतविजोगनसहीसके॥ मृदुलस्वभावहेएही॥ कछुअजोगपनांकरसके॥ ल
आजांनोतेही॥ १५॥ सोरठा॥ इछनजोगप्रहेजेउं॥ सोसबविषेसमिपभए॥ चंचलहोतनतेउं॥ अचप
लसोभावसोइ॥ १६॥ चौपाई॥ कामादिकअरुदुरिजनजेऊं॥ जितिनसकतनतेजहेतेऊं॥ आपकुंपी
डनहारहेजेहा॥ तिनसेंअद्रोहक्षमाहेतेहा॥ १७॥ संकरपरउजोगप्रहेजेही॥ करतसोकर्मधृतिहेते
हि॥ अंतरबाहिरसकधअपारा॥ सोहेसौचसबहीस्रुतिसारा॥ १८॥ काऊकोद्रोहकरतनहिजबही॥
अतिअद्रोहभावहदतबही॥ गर्वकरनकोगरनजाही॥ ताकुंगर्वअतिमानकहाही॥ १९॥ तिनकरार

हीतस्वभावहेजोई॥ नाअतिमांनकहावतसोई॥ सोकअरुइसेंबरनेजेऊं॥ अभयादिकछबिसगुनते
ऊं॥२०॥ दोहा॥ दैवीसंपतनकृतभए॥ प्रभुकेवचनकृनजोई॥ तेहीउरएहीछबिसगुन॥ पारथप्रगटतसोइ
२१॥ चोपाई॥ हेकुंतीसुतकहुंअमसाजा॥ आपकुंधर्मिजनावेनकाजा॥ एहीविधिधर्मकरतहेजोई॥
दंभकोरूपकहावतसोइ॥२२॥ जोग्यअजोग्यकर्महेजेही॥ तेहीअविवेककोकरताएही॥ विषेभोगहीन
हरखुहेजेहा॥ अलिनिरंदर्पकहावतनेहा॥२३॥ विद्याधनसमथोहीनमाना॥ सोइअभिमानजानुरूधिवाना
परपिड़ाहितचितविकारा॥ क्रोधकोरूपहेतहीउदारा॥२४॥ संतकुंदुखदस्वभावहेजेऊं॥ अनिपारुष्यको
लक्षनएऊं॥ जोग्यअजोग्यविवेकनजेउ॥ अनिअज्ञानकहावततेउ॥२५॥ दोहा॥ आसुरिसंपतप्रव
र्त्तिहीन॥ जोउपजेदुखधाम॥ इतनेअजोग्यस्वभावसो॥ तेहीउरकरतआराम॥२६॥ चोपाई॥ हेपांडुसुतत
कहुंममबाता॥ दैवीसंपतकहुंसाक्षाता॥ ममआज्ञामहीवरततरूपा॥ मोक्षकेहातसोदेवीअनुपा॥२७
ममआज्ञामहीरहतनजेही॥ सबविधिआसुरीसंपतनेही॥ अतिबंधनहितनरकमेंडारे॥ जिनमेंबसत
तेहीजन्मविगारे॥२८॥ एसेवचनसुंनिशिसहलायो॥ निजप्रकृतिनिरधारनआयो॥ तातेअरजुनअतीउर

पाए॥ तेहीप्रभुवचनकहतमनभाए॥२९॥ हेअरजुनतुमसोकनकरना॥ आसुरिसंपतसेंनहीउरना॥
दैविसंपतअतीसुखदाना॥ तासप्रवर्त्तिहितनुमभएताता॥३०॥ दोहा॥ हेपारथयहलोकमें॥ उभयप्र
कारकेजंत॥ एकदैविएकआसुरी॥ उपजतप्राणिअनंत॥३१॥ चोपाई॥ उभयप्रकारकोसर्गप्रसारा॥
तिनमहीउपजतजिवअपारा॥ उतपतिकालविषेभयेदोइ॥ अतिविभागकृतउपजेसोइ॥३२॥ ममआ
ज्ञाअनुवर्त्तिजेही॥ दैवीजिवकहावतनेही॥ तिनकिउसतिजेहीहितताना॥ जोकछुकरतसोकहुंसाक्षा
ता॥३३॥ ज्ञानरूकरमजोगसोकरही॥ भक्तिजोगअतिसेअनुसरही॥ दैविकेतिहुंजोगहेजोइ॥ अतिवि
स्तारसेबरनेसोइ॥३४॥ उपजतआसुरिजिवसमाजा॥ जोआचारकरनकेकाजा॥ सोआचारपरमदु
खदाना॥ मोसेंसुन्योसबहीतुमताना॥३५॥ दोहा॥ साधनअपवेउदयको॥ प्रवर्त्तिकहावतविर॥ सा
धनकेबंधमोक्षको॥ सोनिवर्त्तिमतिधिर॥३६॥ चोपाई॥ आसुरजिवकहावतजेता॥ प्रवर्त्तिनिवर्त्तिन
हिजांनततेता॥ वैदिककर्मजोग्यहेजोइ॥ बाह्याभिंतरस्हेकचिहोइ॥३७॥ एहीविधिरहतसोसोचकहावे
आसुरजिवमेंसोनहीआवे॥ जेहिआचारसेंबाहिरमांही॥ होतपवित्रआचारकहांही॥३८॥ आसुरजी

वमेंसोनहीलेशा॥ काऊंकोनामाननउपदेशा॥ ज्युंजांमोत्युंजथारथागही॥ सबकोहितआचरणसत्तनेही
त्रु३९॥ आसुरजीवमेंसोनहीहोवे॥ तृष्णावचनकहीजन्मविगोवे॥ आसुरजिवकहावतजेने॥ मनकल्पित
मतथापततेने॥४०॥ दोहा॥ आसुरजिवसोजगतकुं॥ कहतहेंअसत्यअसार॥ सत्यब्रह्मजगहेतुहे॥ पु
नहींकहतगमार॥४१॥ चौपाई॥ ब्रह्मकेविषेजगतनहींरहही॥ आसुरजिवसदायुंकहही॥ थावरजंगम
सबसंसारा॥ बिनईश्वरसबकहतपसारा॥४२॥ सत्यसंकल्पईश्वरमेंजेही॥ जगकरतामायकहतनतेही॥
नरत्रियमिलतपरस्परजेहा॥ याजगहेतुसुगरहेएहा॥४३॥ नरनारिसमंधबिनहोई॥ एसोपिंडनभाषत
कोई॥ तातेंआसुरजिवकहेतोइ॥ कामसेंजगउपज्योकहेसोइ॥४४॥ एसिदृष्टीआलंबनकरही॥ बुद्धिहिनत
नककखअनुसरही॥ देहसेंपृथकआतमाजेतें॥ आसुरजिवनदेखतनेतु॥४५॥ दोहा॥ देहरुअन्यविवे
कमें॥ अल्पबुद्धिहेसोय॥ अनितिहिंसकसबविश्वके॥ क्षयहितआसुरहोय॥४६॥ चौपाई॥ दुखहिसेंपुरन
होतनजेऊं॥ एसेकामकुंआश्रितनतेऊं॥ सोइकामसाधनचहेभारी॥ मोहसेंकरतकरमदुखकारी॥४७॥ आ
ग्रहअसतग्रहणसोकरही॥ शास्त्ररहितसोव्रतअनुसरही॥ दंभमानमदक्रुक्तहेजेही॥ आसुरपुरुषवर

तेइमितेही॥४८॥ आजक्किकालिमरनरिगजाही॥ एसेआसुरपुरुषहेतगही॥ नहीपरिमाणमेंआवेविश्रा
जा॥ प्राकृतप्रलयपर्यंतजोकाला॥४९॥ तिनकरीसाधनजोग्यहेजोइ॥ एसिविषयचिंतावससोइ॥ कामस
मंधिभोगहेजेउ॥ अतिपुरुषारथमांनततेउ॥५०॥ दोहा॥ नरतनकाफलएहीहे॥ युंजानतमतीमंद॥ वि
षयासक्तसोआसुरी॥ मुरफसेभवफंद॥५१॥ चौपाई॥ आशारुपीपासअपारा॥ तिनकरिवंधेरहतग
मारा॥ कामरुक्रोधपरायणरहही॥ एहीसुखसारआसुरिकहही॥५२॥ कामभोगहीनउद्यमजेना॥
आसुरिकरेअन्यायसेंतेना॥ द्रव्यसंचयहितउद्यमकरही॥ आसुरिजिवनपापसेंडरही॥५३॥ एहजोक्षे
त्रपुत्रादिकमेरे॥ ममसामर्थकरीमिलेहेघनेरे॥ औरकुंअनंतमनोरथजेते॥ ममसामर्थकरिपेऊंतेते॥५४
निजसामर्थधनपायोअपारा॥ सोधनकुंअबभरेहेभंडारा॥ निजसामर्थधनपैऊंअशेषा॥ भाग्यरुईश्वरबल
नहीलेशा॥५५॥ दोहा॥ मेंअतिशेबलवानहुं॥ मेंहीकियोरिपुनास॥ करमेंअन्यरिपुमारिहुं॥ मोपनकाऊं
कित्रास॥५६॥ चौपाई॥ दुरबलमेंदबुद्धिहेजेही॥ भाग्यरुईश्वरकल्पनतेही॥ मेंईश्वरस्वाधिनउदारा॥ और
कुंनियममेंराखनहारा॥५७॥ मेंभोगीमेंसिद्धसकुजाना॥ मेंनिजबलकरिअतिबलवाना॥ मेंनिजसामर्थस्

खिअपारा॥भाखईश्राकहाकरहीविचारा॥५८॥निजसांमर्थ्यपायोधनमारा॥अतिउत्तमकुलजन्महमारा
निजसांमर्थ्यसबवैभवपावे॥सुखिमोसमअन्यकोनकहावे॥५९॥मैंहिजज्ञकरिउंजीऊंमछंदा॥दैऊंदांनपेऊं
आनंदा॥युंअज्ञांनसेंबोलतबानी॥आसुरीमोहकूअभिमांनि॥६०॥दोहा॥ईश्वरअरुअदृष्टविन॥स
वहीकरनममजोर॥अनंतकामएकहीसमै॥मैंहीकरुंचहुंओर॥६१॥चौपाई॥युंअनंतचिंतकरिदुखमह
हि॥अतिविभ्रांतआसुरिरहही॥एहिविधिमोहजालकरिभारी॥भयोअतिसेआवृणदुखकारी॥६२॥का
मभोगमहीप्रीतिअपारा॥एसेआसुरीजिवगमारा॥मरिमरिअशुचिनरकमहीजावे॥नरककुंडमहीम
हादुखपावे॥६३॥निजमुखआपकेकरतबखाना॥आपकुंपुरनमांनेअज्ञाना॥साधनओरकछुंनहि
करही॥अतिअनम्रताकाहुसेंडरही॥६४॥विद्याधनकुंरंबमदभारी॥तिनकरिअतिमदऊतअहंकारी
जसविस्तारथियोजनजांनि॥जज्ञकरतअतिश्रेअभीमांनि॥६५॥दोहा॥जज्ञसेआपकोनामजिमि॥जाहि
रुपरगटहोय॥तहीकारनविधिहीनसब॥जज्ञतजज्ञकरिसोय॥६६॥चौपाई॥ओरकिमोयअपेक्षानांही॥
मेंसमर्थ्यसबकारजमांही॥एसोअहंकारअतिभारी॥तेहीआश्रितवरततअहंकारि॥६७॥सबकारज

ममबलसुरा॥युंबलआश्रितमानतक्रूरा॥मोसमत्रिभुवनमेंनहीकोई॥एहीविधिदरपकुंआश्रित
होई॥६८॥इच्छामात्रसेंसबकरुजोइ॥अनायासपेंऊंमेंसोई॥एहीविधिकामसेंआश्रितरहही॥कामस
मंधिबचनबहुकरही॥६९॥मेराबुराकरनचहेजेते॥मेंगिनिगिनिहनीऊंअबतेते॥एहीविधिक्रोधकुं
आश्रितपापी॥आसुरीपुरुषविश्वपरितापी॥७०॥दोहा॥निजतनपरतनमेंरह्यो॥पुरुषोत्तममेंजोउ
सबहीकरगवनदरमें॥मोसमओरनकोउ॥७१॥सोरठा॥सबकारनमोयत्यागी॥मोसेंरपदुरषाद्वेषकरी
करतहेजञअभागी॥मोरअसक्यवाकरनहीत॥७२॥चौपाई॥युंममद्वेषकरतहेजोइ॥नरमेंअधमअ
तिक्रुरहेसोई॥आसुरअशुभपुरुषहेजेते॥जन्ममरणदुखभुक्तहीतेते॥७३॥आसुरजोनिकुंपावतजे
हि॥तीनमहीदारुनिरंतरतेही॥मोसेंविमुखजिवहेजेहा॥तिनमहीजन्मधरतबहुतेहा॥७४॥देकुंतिस्
तममप्रतिकुला॥आसुरजोनिअनंतदुखमूला॥तिनमेंजन्मधरतहेतेउ॥आसुरजिवकहावतजेउ॥
७५॥जन्मोजन्मविमुखसोरहही॥अतिविपरीतज्ञांनसोकहहि॥आसुरजिवमोयनहीपावे॥अधर्म
सेंअधमजोनिमहीजावे॥७६॥दोहा॥असुरभावनेदीआत्मको॥सबविधिकरतविनास॥आसुर

भावके हेतु सो॥ सब विधि कहुं प्रकाश॥ ७७॥ चोपाई॥ आसुर भावन के अति भारी॥ तिनके द्वार तीन दुख
कारी॥ नरक के द्वार रूप हे जेही॥ आतम नाश के करता तेही॥ ७८॥ काम क्रोध लोभ गनीना॥ नरक के कार
न कहत प्रवीना॥ असुर स्वभाव कहे जोइ॥ तिन कुं नरक के कारन सोइ॥ ७९॥ तातें घोर नरक प्रद ज्ञानि॥
कामादिक त्रय दुखद पीछानि॥ कहुं सुमुक्षु नर हे जेता॥ करसें त्याग करत हे तेता॥ ८०॥ हे कुंती सुत कहुं तुम
सुवाता॥ नरक के द्वार एही साक्षाता॥ काम क्रोध अरु लोभ प्रजंता॥ एही तिनुसें मुक्त हो धीमंता॥ ८१॥ दोहा॥
निज आतम के मोक्ष हीत॥ करत हे साधन तेही॥ मेरे रूप के ज्ञान कुं॥ प्राप्त भयो हे एही॥ ८२॥ एसो मम अनु
कुलसें॥ जत्न करत हे जोय॥ ता पीछे मम भक्तिसें॥ लहत परम गति सोय॥ ८३॥ चोपाई॥ वेद रूप मम आ
ज्ञा एहा॥ तिनको त्याग करत हे जेहा॥ निज इच्छासें वरतत जोई॥ तनत सिद्धि न पावत कोई॥ ८४॥ सुख यह
लोकमें लहत हे जेही॥ सो सुख कुं नही पावत तेही॥ परम गति परलोकमें जेऊ॥ विमुख जिव कहांसें लहे तेऊ॥
८५॥ तातें ग्रहण जोग्य हे जेता॥ तजने जोग्य कहावत तेता॥ तिनके विभागन में तो पलाता॥ शास्त्र हे सो तुम (प्र)
मांण बिख्याता॥ ८६॥ धरम शास्त्र इतिहास पुराना॥ तिन में कहुं चहुं वेद कह जांना॥ सुं प्रसंन पुरुषोत्तम हे[illegible]

॥८७॥

तेहि विधि करम कहत हे सोई॥ ८७॥ दोहा॥ सुं पुरुषोत्तम प्राप्तिके॥ कहत हे शास्त्र उपाय॥ सोइ कर्म तुम
जानीके॥ करन जोग्य उचित लाय॥ ८८॥ श्रुति पुरान सदग्रंथ को॥ जाकुं हद विश्वास॥ मुक्तानंद को नाथ कहे॥
सोइ साचो मम दास॥ ८९॥ इतिश्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे
मुक्तानंद मुनि विरचित भगवद्गीता टीकायां आसुरासुर संपत्ति योगो नाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥ चोपाई॥
सातरमे अध्याय के मांही जोउं॥ दैव रु आसुर सरग हे दोउ॥ तिनको विभाग कहे सें भारी॥ प्राप्ति जोग्य जो सुख
ख कारी॥ १॥ तिनकी प्राप्ति उपाय स्वरुपा॥ वेद सब प्रगट तत्त्व ज्ञान अनुंपा॥ ताते वेद ज्ञान को मूला॥ वेदसें ज्ञा
न कह्यो अनुकुला॥ २॥ सतरमे अध्याय में अब ही॥ शास्त्र सें रहीत करम जो सबही॥ आसुर भाव सें कर
त हे एहा॥ निष्फल करम कहावत तेहा॥ ३॥ शास्त्र में कहे करम शुभ जेही॥ गुण करी तिन प्रकार हे तेही॥ सो
करमन के लछन जोइ॥ सब ही भांति अब कहत हे सोइ॥ ४॥ दोहा॥ शास्त्र रहीत निष्फल कर्म॥ ताको ज्ञा
हिन ज्ञांन॥ एसे अरजुन शास्त्र विन॥ श्रद्धा कुं रे खिक जान॥ ५॥ सोरठा॥ श्रद्धा शास्त्र विन जोय॥ तिन क
रि जज्ञादिक करन॥ गुण करि फल भिन होय॥ पारथ पुछत भेद सोइ॥ ६॥ अरजुन उवाच॥ चोपाई॥ क

हे अरजुन कहुं तुम सम पाला॥ शास्त्र कि विधि बिन श्रद्धा विशाला॥ श्रद्धा जुक्त जज्ञादिक करही॥ शास्त्र के
वचनसें ना अनुसरही॥ ७॥ तिनकी स्थिति की सत्व गुन मांही॥ कि राजस मही वास कहाही॥ कि तामस मही
बसत है प्रानि॥ जो बिन शास्त्र करन अभिमांनि॥ ८॥ श्रीभगवानुवाच॥ युं पुछे श्री हरि भगवाना॥ शास्त्र
रहीत श्रद्धा विधि नाना॥ तिन करि जज्ञादिक करे भारी॥ उभय कुं जरम हि निष्फल धारी॥ ९॥ शास्त्र कहे जज्ञादी
क जेही॥ गुन करी तिन प्रकार हे तेही॥ सो प्रतिपादन करन के काजा॥ प्रथम शास्त्र कहे श्रद्धा समाजा॥ १०॥
दोहा॥ शास्त्र में कही रसी श्रद्धा॥ मांहे तिन प्रकार॥ त्रिविधि भेद सो सब ही विधि॥ कहत हे हरि उदार॥ ११॥
चोपाई॥ हे अरजुन सब जिव हे जोई॥ तिन कि श्रद्धा नीन विधि होई॥ पुरव वासनामें भइ रहा॥ ताते स्वभाविक
श्रद्धा ते हा॥ १२॥ सात्विकि राजसी तामसि जानो॥ तिन प्रकार कि श्रद्धा प्रमानो॥ ताकी कथा सुनो अब ताना॥ भिं
न भिंन बरनि कहुं साक्षाना॥ १३॥ हे अरजुन सब पुरुष कुं भारी॥ होवत श्रद्धा सत्व अनुसारी॥ जे ही गुराजु
त अंतः करण जाकुं॥ ते सि श्रद्धा होत हे ताकुं॥ १४॥ जे सि श्रद्धा जुक्त जो रहही॥ ताकुं सुं ही लोक सब कहही॥
सात्विकि श्रद्धा जुक्त हे जेउ॥ सात्विकि पुरुष कहावत तेउ॥ १५॥ दोहा॥ राजसि श्रद्धा जुक्त सो॥ राजसी पु

रुष कहाई॥ तामसि श्रद्धा जुक्त जेही॥ तांमसि कहे जग मांई॥ १६॥ चोपाई॥ सात्विकि श्रद्धा जुक्त हे जेहा
जजत निरंतर देव कुं तेहा॥ राजसि श्रद्धा जुक्त जो होई॥ जक्ष रु राक्षस जजत हे सोई॥ १७॥ तामसि श्रद्धा जु
क्त हे जेते॥ भुत प्रेत गण जजत हे तेते॥ सब ही क्रिया गुण के अनुसारा॥ कहत हे अहनिस सब संसारा॥ १८
राही विधि श्रद्धा जुक्त हे जेउं॥ शास्त्रिय जज्ञादिक करे तेउं॥ तिन मही गुन करी अनंत प्रकारा॥ फल के भेद
उरक रि निरधारा॥ १९॥ तप जज्ञादिक साधन भारी॥ शास्त्र सें रहीत सो अति दुखकारी॥ तिन मही सुख को
लेश न आवे॥ अति श्रम रथ अति दुख दु कहावे॥ २०॥ दोहा॥ राहि विधि निज अभिप्राय सो॥ प्रगट क
रन भगवान॥ सब हि भेद संक्षेप सें॥ कहत है परम सुजान॥ २१॥ शास्त्र रहीत अति घोर हे॥ सो तप करत है जं
त॥ अति अहंकार संजुक्त तेही॥ काम राग बलवंत॥ २२॥ चोपाई॥ अति अविवेकि पुरुष हे जेहा॥ पं
च भुत निज तन मही तेहा॥ पृथ्वि आदिक भूत समोहा॥ कृश करि तास करत अति द्रोहा॥ २३॥ साक्षि रु
प मैं ने हि तिन मांही॥ मम आज्ञा सो इ मांनत नांही॥ तिन करि मोय करत कष्ट भारी॥ तप जज्ञादि करत अहं
कारी॥ २४॥ मम आग्या विरोधी अति पापी॥ आसुरि जिव विश्व परितापी॥ अति विपरीत करत विख्याता॥

एसे इष्ट तेहि जांनहुं नाना ॥ २५ ॥ भूत सु प्रेत जजागादिक दाई ॥ गुन करि भेद कह्यो तिन मांई ॥ तासो विस्तारिके
तिन महि ताकु ॥ सत्वादिक कि इष्ट धि दे जेहुं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ तिन को है तु अहार है ॥ सो है तिन प्रकार ॥ सो अहा
रकुं पृथग कही ॥ कहत हे करि विस्तार ॥ २७ ॥ चोपाई ॥ अहार कुं प्राणिमात्र को जेरा ॥ गुन करि तिन भांति प्रि
य तेहा ॥ सत्वादिक गुन सब भेद दही ॥ ताते तिहुं विभाग बुध ग्रहही ॥ २८ ॥ तेही विधि जज्ञकुं तिन प्रकारा ॥
तपकुं तिन विधि जानो उदारा ॥ दांनकुं तिन प्रकार को विरा ॥ सो सब कहो सब ही रणधीरा ॥ २९ ॥ कहे जो अहार
जज्ञ तप दाना ॥ सत्वादिक सें भेद तेही नाना ॥ गुन में त्रिविध भेद कह्यो जेही ॥ सो मैं कहो सब ही विधि तेही ॥ ३०
सात्विक आहार कहावत जेउ ॥ सब विधि वरनी कहत है तेउ ॥ आयुष अंतःकरण में ज्ञाना ॥ उभय को वृद्धि
करत कज्ञाना ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ बल अरु अरोगि भाव कुं ॥ अधिक बढावत जोय ॥ सुख अरु प्रीति बढावही ॥ सा
त्विक आहार है सोय ॥ ३२ ॥ मधुरे रस सें जुक्त है ॥ घृत सें जुक्त थिर जेही ॥ भक्ष किये बहु वार लुं ॥ क्षुधा न आपे ते
हि ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ रुचि सें करत है सोय ॥ सात्विक अहार सो अति सुखद ॥ सात्विक पुरुष है जोय ॥ तिनकुं वल्लभ
सो हु नीस ॥ ३४ ॥ चोपाई ॥ अतिकटु खाटा अति खारा खारा ॥ अति तिख्या कि उष्ण अपारा ॥ रुक्ष जो चिकनाई वि

न होई ॥ तापकुं करत विदाहि सोई ॥ ३५ ॥ एहि विधि अहार कहावत जेता ॥ राजसी पुरुषकुं वल्लभ तेता ॥ दुख रु
ज सोक बढावत ताही ॥ राजस गुन ही बढावत तेही ॥ ३६ ॥ बहुत काल को अंन है जेही ॥ तज्यो स्वभाविक रस है ते
ऊ ॥ अति दुरगंध जुक्त है जेउ ॥ काल सें अमृत रस पायो नेउ ॥ ३७ ॥ गुरु आदिक विन अन्न जो पाया ॥ अति अप
वित्र सो उच्छ कहाया ॥ तासो भोजन ही वही जेहा ॥ तामसी जिवकुं वल्लभ तेहा ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ तामस गुनकुं बढाव
हि ॥ तामसी अंन अनुसार ॥ ताते निज हित चहत सो ॥ तजन तामसि आहार ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ सत्व कि वृद्धि काज
सात्विक आहार है जोग्य अति ॥ सोइ सेवत ग्रही लाज ॥ सत्व कि वृद्धि ही तजमि ॥ ४० ॥ चोपाई ॥ तिन प्रकार के ज
ज्ञ है जेहा ॥ भिंन भिंन वरनि कहत हें तेहा ॥ फल इच्छा बिन पुरुष हे जोइ ॥ विधि जुक्त जज्ञ करत है सोइ ॥ ४१ ॥ मंत्र
क्रिया जुक्त द्रव्य अनुंपा ॥ तासो जज्ञ आराधन रूपा ॥ एही विधि हरि आराधन जांनि ॥ अपुनो प्रयोजन कारन गं
नि ॥ ४२ ॥ ताते जजन जोग्य है ताही ॥ एही विधि मन समधाय कें तेही ॥ हरिकुं जजत जज्ञ करि जोउ ॥ सात्विक जज्ञ क
हावत सोउ ॥ ४३ ॥ फल इच्छा जुक्त दंभ के काजा ॥ जस ही तजज्ञत जजत करि राजा ॥ हे अरजुन यह जज्ञ हे जेहुं ॥ सब
विधि राजसी जानो तेहुं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ सदाचार जुक्त वीप्र वर ॥ तिन वरनो विधि जेही ॥ तिन सें रहीत अशुध ज

थ ॥ तिनकरि क्रूर कहे तेही ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ मंत्र दक्षणा हीन ॥ श्रद्धा रहीत अति क्लेश कीन ॥ तासो जग्य मलिन ॥ ता
मसिक कहत हे सबही विध ॥ ४६ ॥ चोपाई ॥ तपको गुन करि सबही समाजा ॥ तिन प्रकार कहन के काजा ॥ तनम
नवचन सें तप सिध होई ॥ तिन के भेद पृथ्थम कहे सोई ॥ ४७ ॥ ब्रह्मा विष्णु शिवादिक देवा ॥ ब्राह्मण गुरु पीतृ
मात कि सेवा ॥ आचार्यादिक अरु ब्रह्मवेता ॥ सबही को पुजन विधि समेता ॥ ४८ ॥ शौच जो तिर्थादिक मही
स्नाना ॥ सरल स्वभाव सो आर्जव जाना ॥ अष्ट भांति त्रियसा गन जबही ॥ ब्रह्मचर्य दृढ जानो तबही ॥ ४९ ॥ प्रा
णिमात्र कुं पीडत नांई ॥ सो अहिंसा वर्निक हाई ॥ ऐसे गुन वरतत हे जेही ॥ देह समंधित तप कहे तेही ॥ ५० ॥ दो
हा ॥ परकुं नहीउ द्वेगप्रद ॥ सत्य रु प्रिय हीत रुप ॥ वेदादिक को पढन हे ॥ वचन को तप सो अनुंप ॥ ५१ ॥ चोपा
ई ॥ मन क्रोधादि रहीत अविकारी ॥ पर हीत करन चातुरि भारी ॥ मन वांनि कि वरनि हे जोई ॥ तिन में रहत मो
न हे सोई ॥ ५२ ॥ ध्यान जोग्य हरि मुरति जेही ॥ तहां थिर रहे मन निग्रह तेही ॥ आत्मा सें अन्य विषय हे जेऊ ॥
तेहीन सें मारे भावशुध तेऊ ॥ ५३ ॥ ऐसे लक्षण वरतत जेहा ॥ मन समंधित तप कहत हे तेहा ॥ मानस तप कृत जो
गि भारी ॥ रहत भजन रत अति अविकारी ॥ ५४ ॥ फलइछो बिन परम अनुंपा ॥ तप प्रभु कुं आराधन रुपा ॥ ए ॥१००॥

सि चिंता कृत कहे जेउ ॥ परम श्रद्धा सें करत हे तेउ ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ कायिक वाचक मानसिक ॥ तिन भांति तप जोई
ऐसो अति सें विमल तप ॥ सात्विक कहत हे सोई ॥ ५६ ॥ चोपाई ॥ मन करि आदर करनो भारी ॥ सो सतकार परम
कृतकारी ॥ वचन सें करत प्रसंसा जेही ॥ सब विधि मान कहावत तेही ॥ ५७ ॥ देह सें करनो नमन अपारा ॥ सो पु
जा हे सब ही प्रकारा ॥ अति सतकार मान अरु पुजा ॥ तेही हित करत भाव नही दुजा ॥ ५८ ॥ दंभ हि सें तप कि जे जेउ
राजस तप बुध कहत हे तेउ ॥ स्वरगादिक अस्थिर फल जाको ॥ नाश्रवंत चलत पहे ताको ॥ ५९ ॥ अविवेकी अति
मुढ हे जोई ॥ तिन कुं करत देखि सब कोई ॥ निज सां मृष्ट बिन देखे ग्यानी ॥ तप सें देहपीड त अभिमांनि ॥ ६० ॥ दोहा ॥
अथवा कष्ट सें तप करे ॥ परकुं विनासन काज ॥ सो तामस तप कहत हे ॥ मनन शील मुनिराज ॥ ६१ ॥ चोपाई ॥ दां
न के भेद कहावत जेहा ॥ भिन भिन करि कहत हे तेहा ॥ फल इछा उरमें नही धरही ॥ यह देनो युं मन नद्र करही ॥ ६२
देशि के संदर देश रु काला ॥ उतविक पात्र गुणग्र द्विज विशाला ॥ तेही स्वारथ बिन दिजे दाना ॥ सात्विक दान सो क
ह्यो सुजाना ॥ ६३ ॥ मायपिछा देइहे वकुं ग्रही ॥ तेही हित दान करत हे जेही ॥ स्वरगादिक फल चाहत जेऊ ॥ अरु
चिदान राजस कह्यो तेऊं ॥ ६४ ॥ देश रु काल अधम जहां होई ॥ अति कुपात्र कुं दिजिये जोई ॥ पद प्रक्षालन आदिक

जेही॥ अभसनमानरहीतहेतेही॥ ६५॥ दोहा॥ अतिअनादरविनदिजियें॥ तिरस्कारकृतदांन॥ विधिरही
तयहदानसो॥ तामसकथ्योअजांन॥ ६६॥ चौपाई॥ युंवैदिकतपजज्ञरुदाना॥ गुनसेंकह्योजेहीभेदअजांना॥
अबवैदिकजज्ञादिकजेउ॥ प्रणवकेजोगमेंकहतहेंतेउ॥ ६७॥ ततसततत्रयकोकरिनिरदेशा॥ तेहीलक्षण
सबकेंकंअशेषा॥ हेअरजुनउंतत्सतनामा॥ युंकहेतिनत्रयगुनधामा॥ ६८॥ वेदरुवेदिककरमहेंजोई॥ ते
हिप्रतिपादनकरनहेंसोई॥ वेदकेज्ञानकहावतजेता॥ युंप्रतिपादनकरतहेंतेता॥ ६९॥ जज्ञादिकवेदिककर्म
जेऊ॥ उंतत्सत्त्रयअक्षहेंतेऊ॥ तिऊंनिरदेशावेदकेभारी॥ तासमधजहीकरवकारी॥ ७०॥ दोहा॥ ए
सेंतीनुंवरणके॥ पुरुषकहावतजोय॥ वेदरुजज्ञसोप्रथमहम॥ करराखेहेसोय॥ ७१॥ चौपाई॥ अबउंत
त्सतत्रयहेतिना॥ तेहीअनवयविधिकऊंप्रवीना॥ तिनमहीउंशबदहेजेहा॥ तेहिअन्वयकउंप्रथमहीते
हा॥ ७२॥ वेदकेंपठनहारहेंजेही॥ तिनवरनकेपुरुषहेतेही॥ तिनकिजज्ञदानतपआदि॥ होतहेविधिवतकी
याअनादि॥ ७३॥ उंशबदसोप्रथमहीकहहीं॥ सदाक्रियायुंप्रवरततरहहीं॥ उंशबदकरिप्रथमउचारा॥ वेदको
आरंभकरतउदारा॥ ७४॥ एहिविधिवेदरुवेदिककर्मा॥ यज्ञादिकबऊभांतिसेमर्मा॥ तिनकुंउंशबदकोभारी

अन्वयवरन्योअतिविस्तारी॥ ७५॥ दोहा॥ उंशबदसेंअक्षमव॥ वेदकुंधरतउदार॥ जज्ञादिकउंकारकृत
करमकरतविस्तार॥ ७६॥ तातेंत्रासणशबदकरि॥ तिनवरणकहेंजेही॥ उंशबदकोतिनहीकुं॥ अन्वयकह्यो
हेएही॥ ७७॥ चौपाई॥ मोक्षकिइछाजिनकुंसोई॥ एसेतिनवरणहेजोइ॥ सोतजेकेंफलअनुसंधाना॥ वे
दपठनतपजज्ञरुदाना॥ ७८॥ युंनानाविधीक्रियाअपारा॥ करतहेंप्रयासहीतकरिप्यारा॥ ब्रह्मक्रिया
तिउपायस्वरुपा॥ मोक्षकेसाधनपरमअनुपा॥ ७९॥ ब्रह्मवाचिततशबदहेजेही॥ तिनकरिकहनकेजोग्य
हेतेही॥ वेदपठनजज्ञादिकजेउ॥ ततशबदसेकहतहेंतेउ॥ ८०॥ तातेंतत्शबदहेजेहा॥ ताकोअन्वयवरन्यो
एहा॥ तिनवरणकेपुरुषहेजेऊं॥ वेदपठनआदिकरतेहरा॥ ८१॥ दोहा॥ तेहीकारनतत्शबदको॥ अन
न्वयपरमअनुप॥ सबहिकुंप्रापतभयो॥ अतिफेरक्षरस्वरूप॥ ८२॥ चौपाई॥ ब्राह्मणादीत्रयवरणहेए
ही॥ तेहिसतशबदकोअन्वयजेही॥ तिनकेप्रकारकहनकेकाजा॥ बऊविधिथिरचरप्रशिसमाजा॥ ८३॥
तिनमहीसतशबदहेजोई॥ तेहिउत्पतिकेभेदकहेसोइ॥ हेकुंतिफलतस्कंनुंअबएहा॥ विद्यमानवस्तनहीजे
ही॥ ८४॥ तिनकेसतभावमहीताना॥ सतशबदजोरतसाक्षाता॥ तेसेंमबहीवस्तकेमांहीं॥ जोकछुस्करव

पुरुसाधु कहाही ॥ ८५ ॥ तिन महिमन तप अनुसंधाना ॥ लोक रु वेद में प्रगट बखाना ॥ लोक में सुभ करम
करत हे जबही ॥ सत करम ताही कहत हे सबही ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ वैदिक लौकिक करम में ॥ युमत शब्द उदार ॥
अग्र भाग महीसबनके ॥ जोरत हे करि प्यार ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ ताते वैदिक पुरुष हे जेही ॥ तिन वरण के होवत ते
ही ॥ तिन कि जग्य दान तप मांही ॥ होत हे स्थिति सो सत कहाही ॥ ८८ ॥ तिनुं वरण के हीन सूद्र जोई ॥ जग्यादिक
सुभ कर्म हे सोइ ॥ ताही सत करम युं कहत हे ताइ ॥ सो परलोक में अति फलदाइ ॥ ८९ ॥ ताते वैदिक कर्म हे जेऊ ॥
ब्राह्मण वाच्य सें बरने तेऊ ॥ तिन वरन के पुरुष हे जेहा ॥ ॐ तत्सत् ति कुं वाच्य हे नेहा ॥ ९० ॥ वेदरहीत जो पुरुष
गमारा ॥ तिकुं अन्य पुलक्षण करी मारा ॥ सुं ही वेद विन करम हे जेता ॥ ॐ तत् सत् अन्वय विन तेता ॥ ९१ ॥
दोहा ॥ पुरुष रु कर्म जो वेद विन ॥ असत कहावत तेही ॥ ॐ तत् सत् सें अति पृथक ॥ जानन जोग्य हे एही ॥
९२ ॥ चौपाई ॥ श्रद्धा रहीत कछु होम्या जेऊ ॥ दान दिया श्रद्धा कुन तेऊ ॥ श्रद्धा रहीत तप किनो जेहा ॥ जो कछु
कियो श्रद्धा विन तेहा ॥ ९३ ॥ ब्राह्मणं ककोसो जद्यपि होइ ॥ तदपि अति श्रेष्ठ असत हे सोई ॥ हे अरजुन हम एहा
विधि कहही ॥ यामें संशो लेश न रहही ॥ ९४ ॥ काय सें पु रम कहत हे वाता ॥ श्रद्धा रहित सब व्यर्थ हे ताता ॥ ॥१६२॥

होमादिक जो कर्म कहाई ॥ मरिके मोक्ष हीत होवत नांई ॥ ९५ ॥ सुं संसारिक फल कहे जेही ॥ शुभ करमन सें पा
वत तेही ॥ श्रद्धा हिन सो कछु न पावे ॥ वृथा करम करि जनम गमावे ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ श्रद्धा रहीत जो जो करे ॥
सो सब निष्फल हीन ॥ मुक्तानंद को नाथ कहे ॥ जड मति जन्म विगीन ॥ ९७ ॥ इति श्री भगवद्गीतासु उपनिष
त्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मुक्तानंदमुनिविरचित भगवद्गीताटिकायां गुणकर्म
विभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ सोलसतर दोउ अध्या जेहा ॥ इन करि वरणन कीनो
ताहा ॥ अधिकारी दय अरु अति कल्याना ॥ तिन के साधन रूप प्रमाना ॥ १ ॥ वैदिक तप जग्यादिक कर्मा
फल पद ताही कह्यो युं मर्मा ॥ वैदिक कर्म कहावत जेते ॥ प्रणव के अन्वय कृत कहे तेते ॥ २ ॥ तिन मही मो
क्ष अपेक्षु रय जेही ॥ ते ही साधन के भेद कहे एही ॥ तत्सत् शब्द को करि निरदेशा ॥ मोक्ष को साधन ताही वि
शेषा ॥ ३ ॥ जग्यादिक सुभ करम हे जेऊ ॥ हो निष्काम करन कहे तेऊ ॥ सत्व कि वृद्धि होत हे जबही ॥ फल बी
न कर्म आरंभत तबही ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सत्व कि वृद्धि होत हे ॥ सेवत सात्विक आहार ॥ आहार सें अंतर
कध भए ॥ होत हे ब्रह्म विचार ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ अब अष्टादश में अध्या मांही ॥ सब कछु संन्याय राखुं नाही ॥

मोक्षकेसाधनकरिकहेभारी॥ सागसंन्यासतकअघहारी॥ ६॥ सागकोरूपजथारथजेहा॥ कहहेसबहीवि
धिआगेएहा॥ सर्वेश्वरसबपरमबज्ञांनां॥ वासुदेवप्रभुश्रीभगवांना॥ ७॥ सोप्रभुकुंक्रमकर्महेनाना॥ ते
हिकरतापनअनुसंधाना॥ सुमतरजतमकारजजेता॥ शुभअरुअशुभकहीकहीकेतेता॥ ८॥ सत्वकोग्र
हणश्रद्धाक्रतकरना॥ वर्णाश्रमकेउचितअनुसरना॥ कर्मजोहरिआराधनरूपा॥ सोप्रभुप्राप्तिउपाय
अनुंपा॥ ९॥ दोहा॥ अरुसबगीताशास्त्रको॥ सारअरथहेसोय॥ भक्तीजोगभगवानमें॥ तेहीसम
औरनकोय॥ १०॥ सोरठा॥ इतनिसबहीबात॥ प्रतिपादनकरिहेप्रथक॥ तिनमेंप्रथमसाक्षात॥ साग
संन्याससोउभयवर॥ ११॥ प्रथकएकस्वरूप॥ उभयकोनिरणयकरनहीत॥ सागसंन्यासअनुंप॥ अ
र्जुनपुछतप्रेमक्रत॥ १२॥ अर्जुनउवाच॥ चोपाई॥ हेमहाभुजऋषीकेशउदारा॥ हेकेशिकेमारनहार
सागसंन्यासत्राव्हहेसोइ॥ तिनकोरूपजथारथजोई॥ १३॥ सागसंन्यासउभयअर्थस्वामी॥ किएकअर्थ
हेकहोबहुनांमी॥ प्रथककवाएकस्वरूपहेएहा॥ मेअप्रतिज्ञाननचहुंप्रभुतेहा॥ १४॥ श्रीभगवानुवाच॥
अबश्रीकृष्णभगवानमोरारी॥ दोउसंन्याससागकरबकारी॥ सोदोनुंकोएकस्वरूपा॥ याहीप्रकारहेपर ॥१०३॥

मअनुंपा॥ १५॥ एहिविधिनिरणेकरनकेकाजा॥ कृष्णकृपालचराचरराजा॥ मतवादिनकेवाददेखाई
बोलतभयेपरमसुखदाई॥ १६॥ दोहा॥ हेअर्जुनकितनेककवि॥ काम्यकर्महेतेकुं॥ तिनकोसाग
संन्याससो॥ युंजांननहेतेकुं॥ १७॥ चोपाई॥ अरुकितनेकविचिक्षणजेहा॥ निसनेमितकाम्यकर्मते
हा॥ सबकेफलकोसागहेतेउ॥ सदग्रंथनमेंसागकहेतेउ॥ १८॥ तिनमेंशास्त्रकत्थोसागहेजोइ॥ कां
म्यकर्मकोजांनोसोइ॥ सबहीकरमकेफलकोसागा॥ युंअतिवादकरतबडभागा॥ १९॥ सोइविवाददे
खाइमोरारी॥ एकसंन्यासत्राव्हकरबकारी॥ दुजोसागत्राव्हहेजोउ॥ तिनमेंजोरतभयेप्रभुसोउ॥ २०॥ ता
तेंसागसंन्यासउदारा॥ एहोइत्राव्हएकश्रुतिसारा॥ एकहीअर्थप्रथककछुनांही॥ युंहदभासनहेउरमां
ही॥ २१॥ दोहा॥ कपीलादिकमतअनुंसरे॥ एसेपंडितजोय॥ जज्ञादिककर्मदोषसुं॥ तजनजोगपकहे
सोय॥ २२॥ अरुअन्यपंडितकहतहे॥ जज्ञदांनतपरूप॥ कर्मनतजनेजोगपसो॥ करनेजोगअनुंप॥ २३॥
चोपाई॥ कंनकुंभरतकुलश्रेष्टउदारा॥ युंवादिनकेवादअपारा॥ तिनमेंसागकोनिश्चेजोई॥ मोसेंता
तसुनोतुमसोइ॥ २४॥ कंतुंनरव्याघ्रसागकिबाता॥ त्रिविधसागबरनोसाक्षाता॥ वेदिककर्मकराव

तजे ही ॥ तेही फल त्याग प्रथम कह्यो एही ॥२५॥ दुजो करता पनकुं तजना ॥ तिसरो ममता त्यागि हरि जि
जना ॥ एहि विधि त्याग के तिन प्रकारा ॥ तात कहे तुमकुं श्रुतिसारा ॥२६॥ जज्ञ दान तप आदिक जेता ॥
वैदिक कर्म कहावत तेता ॥ मोक्ष इच्छा कृत जन सब ही ॥ तिनकुं तजन जोग्य न ही कब ही ॥२७॥ दोहा ॥
कर्म जज्ञ तप आदि सब ॥ करने जन्म प्रजंत ॥ करत मुमुक्षु मनन तेही ॥ करहि विमल मति संत ॥२८॥ चौ
पाई ॥ याहि तें हे कुंतिसुत ताता ॥ यह जो मुमुक्षु के साक्षाता ॥ जज्ञ दान तप आदिक कर्मा ॥ अति पवित्र
करे वैदिक धर्मा ॥२९॥ तातें उपासन कां इम्युं एहा (?) ॥ जज्ञादिक सब कर्म हुं जेहा ॥ संग रु करम में ममता त्या
गा ॥ तेही विधि फल कुं त्यागि बड भागा ॥३०॥ दिवस दिवस प्रति देह प्रजंता ॥ हीन उपासन सिद्ध हुवे बं
ता ॥ करने जोग्य मुमुक्षु एही ॥ यु मम दृढ मत उत्तम तेही ॥३१॥ अचल जो निस निमित कभारी (?) ॥ महा
जज्ञादि कर्म सुखकारी ॥ तिनको त्याग घटत न ही कब ही ॥ करन जोग्य अति सुखप्रद सब ही ॥३२॥ दो
हा ॥ करम कुं बंधन हे तुं लखि ॥ महा जज्ञादिक जोय ॥ मोह सें तिनकुं तजत हे ॥ तामस त्याग हे सोय ॥३३॥
चौपाई ॥ परंपरा करि के सो अनुपा ॥ करम हे मोक्ष को साधन रूपा ॥ तो कुं अनंत दुख मला वत जब ही (?) ॥ क ॥१६४॥

र्म सिद्ध होवत हे तब ही ॥३४॥ तातें दुखद कर्म सब जांनि ॥ बहु प्रयास कृत ता हि प्रमांनि ॥ कर्म ही देह
कुं क्लेश उपावे ॥ यातें मन कुं महा दुख पावे ॥३५॥ सुं उरि जोग सिद्धि के काजा ॥ ज्ञान अभ्यास जानि सुखर
साजा ॥ युग निम हा जज्ञादिक जोई ॥ शुभ कर्म नि कुं तजत न रसो ई ॥३६॥ राजस गुन हे मुल हद जाको ॥ ए
सो त्याग कहावत ताको ॥ त्याग सें ज्ञान उदय फल जे हा ॥ ताकुं न हि पावत नर तेहा ॥३७॥ दोहा ॥ अरक्ष
न वर्णाश्रम उचित ॥ जज्ञादिक कर्म जे कुं ॥ मम आराधन होय सु ॥ करन जोग्य हे ते कुं ॥३८॥ एही विधि संग
रु कर्म में ॥ ममत रु फल कु रिसाग ॥ सात्विक त्याग सो सत्वगुण ॥ उदय हे त्वह उरभाग ॥३९॥ चौपाई ॥ ऐसें
सत्वगुण कृत मतवाला ॥ आत्म ज्ञान कृत बुद्धि विशाला ॥ तातें अविद्या कृत दुखकारी ॥ छेद भयो तेहि
ही संशय भारी ॥४०॥ कर्म में संग रु फल को त्यागा ॥ करता पन कृत जो बड भागा ॥ बुरे करम को करत न द्वे
षा ॥ सुं शुभ कर्म में प्रिति न लेशा ॥४१॥ तातें धारि तनुं हे जोई ॥ करम तजन समर्थ न हि कोई ॥ वपु धारण ही
तन मन जल आदी (?) ॥ तास प्रा मी जे ही कर के अनादि ॥४२॥ एसें कर्म कहावत जेता ॥ अब उप करे विन चल
न न तेता ॥ यातें अनादिक प्राप्ति काजा ॥ करने अव शुभ जज्ञादि समाजा ॥४३॥ दोहा ॥ जो जज्ञादिक कर्म में

फलसागिमतिधिर॥ सबहीशास्त्रमहीसागिमो॥ करतहेगुनगंभिर॥४४॥ चोपाई॥ हेअरजुनअनिष्टहे
जेऊं॥ नरकादिकरूपीफलतेऊं॥ इष्टजोस्वर्गादिकफलरूपा॥ मिश्रजोपुत्रधनादिअनुंपा॥४५॥ एहीवि
धित्रिविधकर्मफलजेहा॥ सागरहीतकुंसोबनतेहा॥ करतापनममताफलतिना॥ तिनकोसागनकर
तमलिना॥४६॥ तिनकुंदेहतजीतिकुंफलहोइ॥ सागिकुंतिनमेंनहीकोई॥ करताममतनजनतफलजेही
मोक्षविरोधिफलनहीतेही॥४७॥ युंकिएकर्मविषेबडभागा॥ करतापनआदिककोसागा॥ शास्त्रसि
द्धसंन्यासहेएऊं॥ सागत्राह्करिवरन्योतेऊं॥४८॥ दोहा॥ अबश्रीपुरुषोत्तमविषे॥ करनकोअनुसंधा
न॥ तिनकरिनिजआतमसदा॥ कहतअकरताजोन॥४९॥ चोपाई॥ हेअरजुनकंतुवचनहमारा॥ शास्त्र
शास्त्रकेजानतहारा॥ जिनमेंजथारथज्ञानहेतेही॥ एसीवेदिकिबुद्धिजेही॥५०॥ तिनकरिकिनोनिरणे
जामे॥ एसोसांख्यशास्त्रहेतामें॥ सबहीकर्मसिद्धिहीतभारी॥ कारणपंचसोकयेहेपोकारी॥५१॥ सांख्य
मेंपंचहेतुकहेजेउ॥ मोसेजथारथजानोतेउ॥ हेमाहाभुजभिनभिनकुंसबही॥ तबसंज्ञाषष्ठेउसबअ
बही॥५२॥ अधिष्टानयहदेहकुंजानो॥ करताजिवात्मसहीप्रमानो॥ कर्मसिद्धीमहीपृथकअपारा॥ अ

नंतभांतिकेजेहीव्यवहारा॥५३॥ दोहा॥ पंचकर्मइंद्रिपृथक॥ करणकहावततात॥ पंचप्राणचेष्टाकरे
सोभिंनभिंनसाक्षात॥५४॥ चउंप्रकारसबकर्मके॥ हेतुबरनिकहेजोय॥ तिनमेंपंचमेदैबहे॥ अंतरजा
मिसोय॥५५॥ सोरठा॥ प्रबलहेतुभगवान॥ सबहीकरमकिसिद्धीमही॥ सोप्रभुपरमसुजान॥ अतिप्र
धानकारनप्रगर॥५६॥ चोपाई॥ देहवांनिअरुमनतीकुंथंभा॥ इनसेंमनुष्यकरेकर्मआरंभा॥ शास्त्रसी
द्धसोन्यायहेकर्मा॥ शास्त्रविरोधअन्यायअधर्मा॥५७॥ एसबदेहवानीमनजेऊं॥ इनसमंधिकरमनिमेंते
ऊं॥ प्रथमकहेदेहादिकपंचा॥ सोहदहेतुकरमकोसंचा॥५८॥ प्रथमकहेपंचहेतुवामे॥ मुख्यकरतापरमा
तमतामें॥ सोसबकुरमकरततिनमांही॥ करताजीवदेखेअन्समांही॥५९॥ अतिविपितमतिनरएहि॥ स
द्गुरुशास्त्रवाधनहीतेही॥ तातेजथारथकरताजेहा॥ सोनरनाहिदेखतहेतेहा॥६०॥ दोहा॥ परमातम
करताप्रबल॥ मेंकछुकरतानांही॥ ताकिबुद्धिनिरलेपनिस॥ लिपतनकरमनिमांही॥६१॥ चोपाई॥ कर्म
कोकरतामेंनहीजबुही॥ ताकोफलमोकुंनहीतबुही॥ यहसबकर्मनमेरेकोई॥ जाकिबुद्धीमहियुंदृढहोई
६२॥ सोनरयहसबलोककहेजेऊं॥ ऊदविषेहनिकेसबतेऊं॥ तोऊंनकाऊंकुंमारतनाही॥ पापकोफलनही

पावत तेही ॥ ६३ ॥ यह कर्त्तापन आदिक सब ही ॥ निज आतम में गिनत न कब ही ॥ सोई सत्वगुणी बुधि
उदारा ॥ तिन करी होत है विमल विचारा ॥ ६४ ॥ ग्रहण के जोग्य सत्वगुन जेऊ ॥ अधिक जनावन हीन पुन
तेऊ ॥ कर्म में सत्वादिक गुन जेहा ॥ इन किये विषम कही हे प्रभु तेहा ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ राम सें श्रीभगवान सों ॥
कर्म को प्रेरण जेऊ ॥ तिन के बहुत प्रकार सो ॥ प्रथम कहत प्रभु तेऊ ॥ ६६ ॥ चौपाई ॥ करने जोग्य कर्म विधि
नाना ॥ जिन करि जो निर्णय है जाना ॥ ज्ञेय जो करन जोग्य शुभ कर्मा ॥ परिज्ञाता जो लखत सब मर्मा ॥ ६७
त्रिविध युं कर्म प्रेरणा जेऊ ॥ जानत जो जानन जोग्य है तेऊ ॥ जानन हारा तिहुं कहत जेही ॥ बहु विधि जग विधी
हारा ही ॥ ६८ ॥ करण जो जिन सें कर्म सब होई ॥ इंद्रियादिक नाना विधि सोई ॥ कर्म जो जज्ञादिक विस्तारा ॥ क
र्ता कर्म को करने हारा ॥ ६९ ॥ एही विधि तीन प्रकार को भारि ॥ ज्ञानन जोग्य परमसुखकारी ॥ कर्म निको
संग्रह सब ताता ॥ ताकुं वरनि कहो साक्षाता ॥ ७० ॥ दोहा ॥ करने जोग्य जो कर्म है ॥ सो करमन को ज्ञान ॥ की
नो एसो कर्म तेंही ॥ करता परमसुजान ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ सो तिहुं सत्वादिक गुण जेऊ ॥ तिन के भेद करि
के सब एऊ ॥ सांख्य शास्त्र गुण वर्णन जेहा ॥ नाम हि तिन भेद कहे एहा ॥ ७२ ॥ तिन मधि गुण सें भेद कुं पाए

ज्ञानादिक तिहुं जो कहाए ॥ तिन कुं तुम निश्चय मन ल्याता ॥ कहुं तो जथारथ कहुं साक्षाता ॥ ७३ ॥ ब्राह्मणा
दि तिहुं वर्ण उदारा ॥ ब्रह्मचर्यादिक आश्रम चारा ॥ करम के अधिकारि हे जेही ॥ युं भये अति विभाग कहत
तेही ॥ ७४ ॥ एसे सब हि प्राणि के मांही ॥ जेही ज्ञान करि के अस्म मांही ॥ आत्मरूप शुद्ध भाव है जेऊ ॥ सो एक
हि देखत है तेऊ ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ आत्मारूपि भाव सो ॥ विप्रादिक तनु मांही ॥ लक्षरी यादिक भेद में ॥ रहीन है
देह जुं ना ही ॥ ७६ ॥ चौपाई ॥ नाश्रवंत विप्रादिक देहा ॥ तिन मही नाश में रहीत हे एहा ॥ एसो आतम भाव
है जेऊ ॥ करमन के अधिकार में तेऊ ॥ ७७ ॥ जेही ज्ञान करी एक ही देखे ॥ भिन भाव कबहुं न ही पेखे ॥ अर
जुन एसो ज्ञान है जेही ॥ सात्विक ज्ञान जानो तुम तेही ॥ ७८ ॥ ब्राह्मणादि सब प्राणी अपारा ॥ तेही आका
र अनंत विधि न्यारा ॥ तिन करि आतम भाव है जेऊ ॥ नाना विध भासत है तेऊ ॥ ७९ ॥ हस्व दीर्घ पृथक बहु
रूपा ॥ तिन करी भिन भिन भेद अनुपा ॥ तेही विधि कर्मसम यम ही नाना ॥ जे ही ज्ञान जानत साक्षाता ॥ ८०
दोहा ॥ हे अरजुन यह ज्ञान तुम ॥ राजस जानो तात ॥ भेद द्रष्टी यह ज्ञान में ॥ नही एकत्व प्रदसाक्षात ॥ ८१
चौपाई ॥ अरु जो ज्ञान एक कार्य मांही ॥ अधिक अल्पफल कछु लखत नांही ॥ एसो भुत प्रेत गणगण का

नेहिआराधनकरिअविवेका ॥८२॥ तिनमेंसबही फलप्रदरञ्जुंपिति ॥ बिनकारनअतिगानेकुरिती ॥
अत्यूनथारथज्ञांननजाही ॥ तामसज्ञांनकुहतहेताही ॥८३॥ करनेजोग्यकरमहेजेहा ॥ नेहीसमंधिरहत
ज्ञांनहेतेहा ॥ नेहीअधिकारसमंमहीहोई ॥ अधिकारिनकेभेदसेंसोइ ॥८४॥ गुनकेरितिनभेदहेजेऊं
करिसंक्षेपवरनिकेतेऊं ॥ करनेजोग्यकरमहेजेतु ॥ गुनसेंत्रिविधकहतहेतेउ ॥८५॥ दोहा ॥ निजनिज
वर्णाश्रमउचित ॥ करनादिकतिऊंजेऊं ॥ तिनकेसंगसेंरहीनहे ॥ दंभरहीनकियेतेऊं ॥८६॥ फलकिइ
छारहीनहो ॥ करनहारकियेजोइ ॥ इनलक्षणकृतकर्मजो ॥ सात्विककहतहेसोइ ॥८७॥ चौपाई ॥ फ
लइछाउरमेंअतिभारी ॥ करतापनकेमानअहंकारी ॥ बहुप्रयासकरनेमेंजाही ॥ राजसकरमकहत
हेताही ॥८८॥ कियोकर्मताहीमेंचाकुं ॥ पिछेअतिदुखहोतहेताकुं ॥ किनोकर्मताहीमेंजेऊं ॥ अरथको
नासहोतहेतेऊं ॥८९॥ अरुतिनमेंप्राणिवधजेतु ॥ हिंसादिकअनर्थनेतु ॥ सोकरमनकिसमाथिजेहा
करनकुंनिजसांमर्थहेतेहा ॥९०॥ मनमहीविनविचारिकेएता ॥ मोहसेंकर्मआरंभतजेता ॥ एसेकर्म
करतहेजोई ॥ तामसकर्मकयेहेसोइ ॥९१॥ दोहा ॥ फलकेसंगकुंत्यागिके ॥ करतापनअभिमांन ॥ नी ॥१८७॥

नसेंरहीतसोरहतहे ॥ एसोपरमकज्ञांन ॥९२॥ चौपाई ॥ आरंभ्योजोकर्मतिनमांही ॥ जोदुखसमाप्तिहोवननां
हि ॥ तबलगिदुखकुंधारततेहा ॥ सोधिरजधनीकहतहेतेहा ॥९३॥ अतिउछाहउद्यमकृतभारि ॥ सिद्धिअ
सिद्धिनमहीअविकारी ॥ अरजुनएसोकरताजेउ ॥ सात्विकरताकहतहेतेउ ॥९४॥ विनिजकअंतरसविं
कारा ॥ करमकेफलकुंचहतअपारा ॥ करममेंवांछीतकुल्मंहंजेतु ॥ तिनकोखरचकरतनहीतेउ ॥९५॥ पर
कुंपीडिकेकरनस्वभावा ॥ करममेंवांछितकधिअभावा ॥ सिद्धिअसिद्धिनमहीसोघानी ॥ हरखसोककृतननअ
भीमांनि ॥९६॥ दोहा ॥ इनलक्षणकरियुक्तहे ॥ एसोकरताजेही ॥ सोकरताराजसकहो ॥ अधिकअसममनी
नेही ॥९७॥ चौपाई ॥ योग्यक्रियकरमसेंन्यारेजोइ ॥ अतिकुकर्ममहीबरततसोइ ॥ नहीपायोविद्याकरबकारी
आरंभमहिसिथलताभारी ॥९८॥ अभिचारादिककरमकठोरा ॥ तिनमेंरुचीअंतरतमघोरा ॥ परकुंवगन
महीतनपरजेऊं ॥ जोग्यकर्मकुंकरतनतेऊं ॥९९॥ सबहीकालउरकेंत्रांअपारा ॥ स्तब्धस्वभावजानतसारा ॥
अभिचारादिककरमहेजेही ॥ औरविषेआरंभिकेनेहो ॥१००॥ बुहुतकालतुंअनरथताको ॥ रहतविचा
रिस्वभावहेजाको ॥ अरजुनएसोकरताजेउ ॥ तामसकरताकहतहेतेउ ॥१०१॥ दोहा ॥ जोग्यकरमकोज्ञांन

अरु॥ जोगपकरमहेजोय॥ करमकोकरतातिकुंविषे॥ गुणमेंत्रिविधकहेसोप॥१६२॥ सोरठा॥ अबबुद्धी
अरुधृतिजेहु॥ सोतुगुनकेजोगकरि॥ त्रिविधहोतहेतेहु॥ सोसंक्षेपमेंकहतअब॥१६३॥ चौपाई॥ कर्मनकुं
धनंजयबुद्धिगहा॥ जोविवेकजुतनिश्चेतेहा॥ धृतिआरंभक्रियातिनमांही॥ विघनभयेंतेंहीमागतनांही॥
१६४॥ तिहुगुनमेंबुद्धिअरुधृतिजेहु॥ त्रिविधभेदजुतभिनभिनतेहु॥ मेंतुमकुंवरनिकहुंताता॥ सबहो
भोतिस्कंनिलेसाक्षाता॥१६५॥ विभवकोसाधनधर्महेजोई॥ हेपारथप्रवृतिहेसोई॥ मोक्षकोसाधनरूपजोध
र्मा॥ निवृतिसोइटारनसबकर्मा॥१६६॥ प्रवृतिनिवृतिजुतधर्मदोगही॥ सोदोउधर्मजानेबुधिजेही॥ उभय
धर्ममहीरहेसबचरना॥ तिनकुंकरनजोगपुआचरना॥१६७॥ दोहा॥ याकुंकरनेजोगपह॥ करनजोगपय
रनांही॥ युंजानतहेंबुद्धिजो॥ नीजविचारकेमांही॥१६८॥ शास्त्रमेंरहीतजोवरतनो॥ सोभयस्थाननिदांन॥ शा
स्त्रमेंकह्योसुवरतनो॥ अभयकोस्थानप्रमांन॥१६९॥ इनकुंजोबुद्धीजांनही॥ बंधमोक्षहेदोउ॥ तिनहीकुंजो
बुधीजांनही॥ सात्विकिकहतहेसोउ॥११०॥ चौपाई॥ अरुजोबुद्धीकरिकेनराही॥ प्रथमकहेदोउधर्महेतें
ही॥ संतअधर्मजथारथजांने॥ धर्ममेंरहननताहीपिछाने॥१११॥ करनेजोगपधर्मकुंजेहा॥ नहीकरने ॥१०८॥

कुंजोगपहेतेहा॥ जोबुधिमेंनजथारथलहही॥ पारथसोबुधिराजसिकहही॥११२॥ हेपारथतामससेंजव
हे॥ आवर्णजुतबुद्धिभइसबही॥ अतिअधर्मकुंधर्महिमांने॥ धर्महिकुंसोअधर्मप्रमांने॥११३॥ सतकुं
असतप्रमांनतजोई॥ असतकुंसतकरिमांनतसोई॥ येसबअर्थमांनेविपरिता॥ तामसिबुद्धिकहीभय
भिता॥११४॥ दोहा॥ हेपारथशुधजोगजो॥ मोक्षकोसाधनरूप॥ प्रभुकीउपासनतिनहिमें॥ हेदधृतिप
रमअनुप॥११५॥ सोधृतिसेंमनप्राणअरुं॥ क्रियाइंद्रिकिजेहु॥ प्रभुकिउपासनकेविषे॥ धारतहेनरते
हु॥११६॥ सोरठा॥ सोधृतिपरमसुजांन॥ सात्विकिकहीहेसबहीविधी॥ हरतमोहअग्यान॥ ज्ञानध्यानव
विज्ञानप्रद॥११७॥ चौपाई॥ हेपारथफलचाहतजेहा॥ धरमअरथअचहेकामकेतेहा॥ अरुजोतिनके
साधनरूपा॥ तिनकुंमानतपरमअनुपा॥११८॥ मनअरुप्राणइंद्रिगनजेउ॥ सबकिक्रीयातेंहीधारतते
उ॥ सोधृतिराजसीकहीतोयताता॥ अधिकअसक्तफलजुतसाक्षाता॥११९॥ हेपारथदुरमतिनरजेता॥
जेहीधृतीसेंधारतहेएता॥ निद्राभयअरुत्रासअनंता॥ सोकअमदकोनहीअंता॥१२०॥ विषयकिसेवसे
तनमदहोई॥ अतिदुखदायककहोवतसोई॥ इनसबकुंधारतधृतिजेही॥ तांमसिधृतिहमकहतहेतेही॥१२१

गी॰भा॰ अ॰१८

॥१०९॥

दोहा॥ सुनकुंभरतकुलश्रेष्ठअब॥ प्रथमकहेहेजोय॥ ज्ञानकर्मकरतादिसब॥ सुखकेकाजहेसोय॥१२२॥
चोपाई॥ सोसुखगुनकरितिनप्रकारा॥ सोतुमसुनंहुअबपरमउदारा॥ जोसुखमेंचिरकालअभ्यासा॥
तिनसेंअधिकप्रितिलहेदासा॥१२३॥ अरुसबसंसारिकदुखजेहा॥ तिनकेअंतकुंपावतताहा॥ तासोसु
खअतिवांछितजेहुं॥ गुनकरितिनभांतिरहेतेहु॥१२४॥ जोसुखजोगअप्रारंभकेकाला॥ बहुप्रयाससेंहोत
विसाला॥ सुधअभ्यातमअनुभवनअनुंपा॥ तातेंविषसुहोतदुखरूपा॥१२५॥ जबपरिपक्वअवस्थाहोई॥
हृदअभ्यासकेबलकरिसोई॥ आत्मस्वरूपजोसुधअपारा॥ तामदर्शभयेहोतउजारा॥१२६॥ दोहा॥ त
बजोसुखअमृतसरिस॥ प्रगटतपरमविसाल॥ सोसुखनिजबुद्धिशुद्धसें॥ होवतहेततकाल॥१२७॥
सोरठा॥ सोसुखपरमअनुंप॥ आत्मस्वरूपकेज्ञानतेंही॥ बरनोकह्योजेहिरूप॥ सात्विकसुखसोकह
तबुध॥१२८॥ चोपाई॥ अनुभवसमेंहोतसुखजोई॥ विषेइंद्रिसंजोगसेंहोई॥ जोसुखअमृतसमभय
हारि॥ पिछेनरकप्रदअतिदुखकारी॥१२९॥ जेसेविषकोपानकरेकोउ॥ तासेंदुखदहोतहेसोउ॥ अरजु
नतासोसुखहेजेहा॥ बुधराजससुखकहतहेतेहा॥१३०॥ जोसुखअनुंभवकालमेंताता॥ उतरकालवी ॥१०९॥

षेसाक्षाता॥ आपकुंमोहकोकरतासोई॥ आलसनिंदप्रमादसेंहोई॥१३१॥ सोसुखतामसकह्योप्रविना॥
ताहिचहतमतिहिनमलिना॥ तातेंमुमुक्षुराजमरारी॥ सात्विकग्रहणजोगसुखकारी॥१३२॥ दोहा॥ भु
वमहीमनुष्यादिकविषे॥ स्वरगमेंदेवनिमांई॥ प्रकृतिजकब्रह्मादिसब॥ तगणप्रजंतकहाई॥१३३॥ माया
सेंतिहुंगुनभये॥ तिनसेंमुक्तभयोजोय॥ तासोत्रिभुवनकेविषेप्राणिमात्रनहीकोय॥१३४॥ चोपाई॥ स
त्वअधिकारसुकहेउकुं॥ सत्वग्रहणहितबरनेतेहु॥ सत्वरूरजतमकारउजेहा॥ तिनकेभेदकहेसबएह
१३५॥ अबजोमोक्षकोसाधनरूपा॥ तासोकरमकह्योपरमअनुंपा॥ तेहिलखिहरिआराधनसाजा॥ सोउ
पदेशाकरनकेकाजा॥१३६॥ जेहीविधिकर्मकह्योजोजाकुं॥ श्रीहरिप्राप्तिरूपफलवाकुं॥ सोसबप्रतिपाद
नहितएउ॥ ब्राह्मणादिअधिकारीजेउ॥१३७॥ तेहिस्वभावअनुसरिहेजोउं॥ सत्वादिकगुणभेदसेंसोउ
वृतिकहनकरनजोगपसुभकर्मा॥ भएविभागजकहतसोमर्मा॥१३८॥ दोहा॥ ब्राह्मणक्षत्रिवैश्यअरु
सुद्रवरणयहचार॥ हेअरजुनसबभिनभये॥ गुणस्वभावअनुसार॥१३९॥ ब्राह्मणआदिकजन्मके॥
हेतुप्रथमकेकर्म॥ तिनसेंभएसत्वादिगुन॥ गुणसेंभिनभएधर्म॥१४०॥ सोरठा॥ समदमादिसबकर्म

गुणकरिभएहेविभागकृत॥ सोसबहिकोमर्म॥ न्यारुतुंप्रतिपादनकरत॥१४१॥ चौपाई॥ अबब्राह्मण
केकर्महेजेता॥ अधिकमोक्षप्रदकहततहेनेता॥ न्यामजोवाह्यइंद्रियवसकरना॥ दमअंतःकरणनिग्रमेंधर
ना॥१४२॥ तपजोनियमतजिभोगनभजना॥ सौचजोबाह्यिंद्रियकरमनतजना॥ ताइनकरतदुष्टनितभारी
क्षांतितोकुंचितरहेअविकारी॥१४३॥ आर्जवगहीसरलताहोई॥ ज्ञानविज्ञानकहेसोई॥ सबहिवेदको
अरथहेजेहा॥ अचलससगिनेआस्तीकतेहा॥१४४॥ सोपहसमदमादिसबजेकुं॥ ब्राह्मणकेस्वभावस
भतेकुं॥ तिनसेंभयोयहकर्मउदारा॥ न्यामदमादिसंपतिश्रुतिसारा॥१४५॥ दोहा॥ धरकरहीतधिरजस
हितरणमेंकरतप्रवेश॥ अतितेजस्वीन्याबुसें॥ नांहिपराभवलेश॥१४६॥ चौपाई॥ कर्मकुंकरतविघनवी
चआवे॥ तेकुंसमाप्तिकरेधृतिसोकहावे॥ सबहिक्रियाकिसिद्धिजोइ॥ तेहिसामर्थ्यिजोदक्षतासोइ॥१४७
आपकेमरणकुंजांनोजबकुं॥ रणमेंकुंकधमेंहरततनकबकुं॥ देनेजोमपवस्तकेमांइ॥ अतिउदारसोदानक
हाई॥१४८॥ आपसेंन्यारेप्राणिवाकुं॥ नियममेंरखनकिन्याक्रियाकुं॥ सोयादिकसबकर्मदेजेकुं॥ क्षात्र
स्वभावहिसेंभयेतेकुं॥१४९॥ कृषीजोअंनउपजावनकाजा॥ भोमिकुंखेरतकरिसाजा॥ पशुपालनकरेखन ॥११०॥

जबेपारा॥ देतलेतधनकरतवधारा॥१५०॥ दोहा॥ कृषीआदिकसबकर्मजो॥ वेसस्वभावहेजोय॥ ति
नसेंभयेसबजानियो॥ औरनकारनकोय॥१५१॥ प्रथमकहेतिकुंचरणतेहि॥ सेवारूपजोकर्म॥ सोभयो
सूद्रस्वभावसें॥ जांनिलेकुंयहमर्म॥१५२॥ चौपाइ॥ निजनिजकर्मप्रथमकहेजेहा॥ तहांरतलहतपर
मपदतेहा॥ आपकेकरममेंअतिरतजोइ॥ पावेमोक्षजिमिसुंनुत्तमसोई॥१५३॥ जगमहिव्याप्तिमात्रजो
भासे॥ तेहीउतपतिअरुस्थितिलयजासे॥ जिनकरिविश्वव्यापीरह्योएकु॥ अमरकेअंतरजामीतेकु॥
१५४॥ ताहिमनुष्यनिजकरमसेंजबहीं॥ पुजिकेअधिकरिझावततबहीं॥ तासप्रसादपरमपदरूपा॥
परमसिद्धिसबपावेअनूपा॥१५५॥ आपवासनाकरकहेजेही॥ ग्रहणकरनकेजोगपहेतेही॥ एसोकरम
जोगनिजधर्मा॥ गुणसेंरहीतकुंमेरतभर्मा॥१५६॥ दोहा॥ ज्ञानजोगपरधर्मसे॥ कर्मजोगअतिसार॥ नी
जस्वभावमेंमिलतजो॥ हेलसोसुगमप्रकार॥१५७॥ निजस्वभावकरिकसो॥ कर्मकरतनरजोय॥ सोन
रछुटतपापसें॥ भवभयताहिनहोय॥१५८॥ चौपाई॥ हेकुंतिसुतसुनुममबाता॥ भएहेस्वभावसेकरम
जोभ्राता॥ सोदुखसहीतसदोषहेजबहीं॥ ताकोसागकरननहितबहीं॥१५९॥ ज्ञानजोगकेजोगपहोवी

रा॥ कर्मजोगकरेतदपिस्थिरा॥ करमरुग्यानआरंभहेजेता॥ दुखसोइदोषक्रतहेतेता॥१६०॥ धुमसें
अनलज्युंरहेआवराना॥ सुंयुंहदुखमेंउभयलपटाना॥ तिनसेंइतनोभेदरहेभारी॥ कर्मगमहेकरमजोगसु
खकारी॥१६१॥ करमजोगएसोसुखरूपा॥ रहीतप्रमादसोपरमअनुपा॥ ग्यानजोगसोकृग्निरहेताता॥
सोउप्रमादक्रतजगविख्याता॥१६२॥ दोहा॥ सबहिफलादिकके विषे॥ प्रीतरहीतबुधिजास॥ जिसोम
नजेहीसबहीविधि॥ जगमेंअधिकउदास॥१६३॥ चोपाई॥ सबहिभांतिकरताप्रभुजोनि॥ आपअक
रताएहेनिरमांनि॥ आपकेकरतापनमेंजोई॥ अतिनिस्प्रहऊरचाहनकोई॥१६४॥ सोनरकरिकेफला
दिकत्यागा॥ करमकुंकरतरहेबडभागा॥ ग्यानजोगकुंकिफलरुपा॥ ध्यांनकिनिष्ठापावेअनुपा॥१६५
देहप्रजंतदिनहीदिनभारी॥ किनोकरमजोगसुखकारी॥ तिनकरिसाधनजोगप्रजोध्यांना॥ सोईसिद्धि
पायोबुधिवाना॥१६६॥ एहिविधिवरततब्रह्मकुंपावे॥ औरसकलउरसेंविसरावे॥ सोविधिअबकुंती
सुतविरा॥ मोसेंकहेंनोसंक्षेपसेंधिरा॥१६७॥ दोहा॥ ध्यांनरुपजोग्यांनहे॥ तेहीशुभनिष्ठजोय॥ परम
पावनेजोगप्रजो॥ ब्रह्मकहावतसोय॥१६८॥ चोपाई॥ अतिविशुद्धबुद्धिक्रतजोई॥ धिरजसेंनिजमनवस

करिसोई॥ विषयसेंविमुखकरतमनएहा॥ ध्यांनजोगपकरिकेमनतेहा॥१६९॥ पंचविषयशब्दादिकजे
ऊ॥ ताकुंतजिकेविमलमतिएऊ॥ विषयनिमितजेहीत्तसेभारी॥ रागरुद्वेषताहीहरडारी॥१७०॥ ध्यान
विशेधिकहावतजेउ॥ तेहीविनश्रुधप्रथलमेंरहेतेउ॥ अतिसेभोजनकरतनएही॥ अतिउपवासकरत
नहीतेही॥१७१॥ देहवांनिमनवरताजोउं॥ ध्यानकेसनमुखकिनिसोउ॥ देहप्रजंतदिनहिदिनविरा॥
ध्यानजोगमहीततपरधिरा॥१७२॥ दोहा॥ ध्यानकरनकेजोगप्रजो॥ प्रभुकोदिव्यस्वरुप॥ तिनसेंप्रथकस
बवस्तमें॥ तेहीवेरागअनुप॥१७३॥ चोपाई॥ देहादिकमेंआत्ममतिजेही॥ ह्दअहंकारकहावततेही॥
तनअभिमानकिह्दीजेहा॥ तासहेतत्तरमावलतेहा॥१७४॥ दर्पजोहरससेंभयोमदजेऊ॥ कामरुक्रोध
महारिपुतेउ॥ सामग्नितनधारनकाजा॥ सोइपरिग्रहसहीतसमाजा॥१७५॥ सोसबत्यागिकेनिरमम
जोई॥ आत्मविनांअन्यचहतनसोई॥ आत्मसेंप्रथकवस्तुतिनमांही॥ आत्मबुद्धिसबहिविधिनांही॥
१७६॥ आतमअनुभवकोसुखजाकुं॥ शांतरुदांतकहतहेताकुं॥ ध्यांनजाकुंकरतहेजोउ॥ ब्रह्मभावकुं
पावतसोउ॥१७७॥ दोहा॥ सबबंधनसेंमुक्तहो॥ आत्मरुपरहेएऊ॥ प्रकृतीपारस्धआतमा॥ वाही

कुंपावततेऊं ॥१७८॥ चोपाई ॥ ब्रह्मरूपवरततहेजेही ॥ आत्मस्वरूपप्रगटनिततेही ॥ केवलरूपकरमा
दिकजेहा ॥ तिनसेंरहातअंतरनितएहा ॥१७९॥ योनरमोसेंप्रथकसबमानि ॥ तिनकोसोचकरतनहीज्ञा
नि ॥ काऊंकिइछानुरनहीधारे ॥ मोबिनओरकोसंगनिवारे ॥१८०॥ मोबिनओरप्राणिमेंवाही ॥ अधि
कअनादरसोसमताही ॥ त्रणसमसबहीवस्तगिनेजोई ॥ मेरिपरमभक्तिलहेसोई ॥१८१॥ स्वरूपस्वभाव
सेंमेंअविकारी ॥ जेसोमेंअतिशोकरवकारी ॥ गुणसेंअरुविभुतिसेंताता ॥ जेसोमेंअतिबडविख्याता
१८२॥ दोहा ॥ मोकुंएहीविधिभक्तीसें ॥ जानेतथारथजोय ॥ जानितथारथमोयमम ॥ भक्तएकांतिकहोय
१८३॥ चोपाई ॥ युंवर्णाश्रमउचितहेजेहा ॥ निसनिमितफलचहेविनतेहा ॥ हरिआराधनकिनोजोई
तासेंकरमकोफलकह्योसोई ॥१८४॥ अबजोकह्योप्रकारसोइममा ॥ तिनकरिकिनेकाम्यजोकर्मा ॥
तिनहिकोफलसोइहेभाई ॥ एहिविधिकहतहेप्रभुसमुझाई ॥१८५॥ नितनिमितजोकर्मकहाई ॥ केव
लसोइकरनेयुंनांइ ॥ सबहीकाम्यकर्महेजेऊं ॥ मोमेंसागीकर्त्तादिकतेऊं ॥१८६॥ तासोहोयकेसबही
काला ॥ ममहीतकरमजोकरनविसाला ॥ समसनातनपदहेजोउ ॥ ममप्रसादसेंपावतसोउ ॥१८७ ॥११२॥

दोहा ॥ अनममचितमेंकर्मसब ॥ करिकेसमरपनमोय ॥ मेंफलपावनजोगपजेही ॥ तासेतूमहीजोय
१८८॥ सोतूमकरमकुंकरतऊं ॥ मोमेंबुद्धिकुंधारी ॥ आत्मनिष्टकरोकरमसो ॥ बुधिजोगसुखकारी
१८९॥ सोरठा ॥ सोबुधीजोगहेजोय ॥ तेहीआश्रितहोकेअचल ॥ मोमेंसदाचितप्रोय ॥ अरजुनए
सोहोअचल ॥१९०॥ चोपाई ॥ मोहिमेंचितएसेतूमजोइ ॥ सबहीकर्मकिनेउसजतहोई ॥ संसारिक
सबदुखहेजेउ ॥ ममप्रसादसेंतरिहोतेउ ॥१९१॥ जोतूमअहंकारसेंअबही ॥ करनजोगपमेंजानुंसबही ॥ मांनिकेयुंनसुनिहोममबाता ॥ पेहोनासतूमअतिविख्याता ॥१९२॥ करनजोगपसबजीवकुं
जोउं ॥ नांहीकरनकेजोगपहेसोउ ॥ ताहिसिखावनजोगपसुजाना ॥ हेअरजुनमोविननहीआना ॥
१९३॥ निजहीतअरुनिजअनहितदोई ॥ तिनकोज्ञांनस्वतंत्रहेमोई ॥ युंअभिमांनधारिउरमांही
मेरेवचनकुंमांनतनांहि ॥१९४॥ दोहा ॥ नांहीकरूंगोजुधमें ॥ युंमानतहेजोय ॥ यहस्वतंत्रताअ
वप्रबल ॥ मिथ्याहोईहेसोय ॥१९५॥ ममस्वतंत्रतासेंअधिक ॥ कछुजुकचिततोर ॥ ममआगपासेंप्रकृतितोय ॥ जोरेंगिकरिजोर ॥१९६॥ चोपाई ॥ हेकुंतिसुतसुनुममबाता ॥ क्षत्रिस्वभावसेंभयोसा

क्षाता॥ स्वरविरूधी निजकर्मा॥ तिनकरि तुम बंधायेत्तविधर्मा॥२९७॥ तातें तुम परवश्य होय विरा॥ विर
हाक स्कंनके रणधिरा॥ नासहि हो क्रुध करि रहो नवही॥ जोन चहत अज्ञांनसें अवही॥२९८॥ यातें सर्वेश्व
रमें जे ही॥ पुर्वकर्म निमित्राणितही॥ सबस्वभाव अनुंरुति किना॥ सोकारन तुम स्कंनकुं सुविना॥२९९
हे अर्जुन ईश्वर हे जेउ॥ सवही कुं नियममें रखत रहेतेउ॥ एसे वासुदेव भगवाना॥ सबके उरमें रहत स
वज्ञाना॥३००॥ दोहा॥ देहरु इंद्रिरुपयह॥ आपरच्यो सुभजंत्र॥ तिनमें रहे सब प्राणि नेही॥ निममें र
खत स्वतंत्र॥३०१॥ निजमाया गुणमयी प्रबल॥ तिनकरि गुण अनुंसार॥ थिरचर विश्व भ्रमावही
उरवसिरहे करतार॥३०२॥ चोपाई॥ हे भारत सबविधि स्कुजेहा॥ भक्तवत्सलता करि केतेहा॥ तारसा
रथि भये अविनासी॥ युं कह्य (ही) विधी कहे सुखरासी॥३०३॥ एसे सो सब अंतरजामी॥ वासुदेव स
वही के स्वामी॥ मनक्रमवचनसें परम सुजाना॥ ताके सरणा रहो तजी माना॥३०४॥ तेहि विन अति
अगपांनसें विरा॥ करिहो क्रुध तुम होय अधिरा॥ क्रुध करि हो अज्ञांनसें जवही॥ होइ हो नास स्वारथ
विन तबही॥३०५॥ तातें कह्यो मैं जेही प्रकारा॥ जुधादिक करि सुं ही उदारा॥ युं किये प्रभुप्रसाद सें भारी ॥११३॥

परम सांति पै हो सुखकारि॥३०६॥ दोहा॥ सुं हि सनातन प्रकृती पर॥ प्रभु को स्थानक जोई॥ मोरवच
नसे सहज तुम॥ पैहो परमपद सोइ॥३०७॥ चोपाई॥ पावन जोग मुमुक्षु जे ही॥ गुह्य सें अधिक गुह्य
हे एही॥ करमजोग अरु तत्त्व अतिसूक्ष्म जेऊ॥ ज्ञांनजोग अरु तन निरमल तेऊ॥३०८॥ भक्तीजोग अरु तत्त्व सुपर
ज्ञाना॥ तिकुं समं धिक कह्यो ज्ञान सुजाना॥ यह सबकुं विचारि साक्षाता॥ निज अधिकार सुं कि जे ताता
३०९॥ करमजोग वा ज्ञांनकुं जोगा॥ अथवा भक्तिजोग संजोगा॥ एनमें से तो यथ वसभजोइ॥ जेही विधि
इछा कि जे सोई॥३१०॥ पुनि सब गुह्य में गुह्य हे भारी॥ मोरवचन अति से सुखकारी॥ ताहि स्कंनो तुम अ
नि चित लाइ॥ सुने सबही विधि होत भलाइ॥३११॥ दोहा॥ तुम मो कुं वल्लभ सदा॥ हो तुम दृढमतीवा
न॥ तातें मैं तव हित अचल॥ कहत तुं परम सुजान॥३१२॥ चोपाई॥ प्रेम सहीत मन मोमें धारो॥ होम
म भक्त परम मत वारो॥ मेरो जजन रूपजन जेहा॥ करकुं अधिक प्रीति सें तेहा॥३१३॥ मो ही कुं नमस्का
र कर्यु तता॥ मोहि कुं युं पैहो साक्षाता॥ एहि विधि सत्य प्रतिज्ञा एहा॥ तव आगें कि नि में तेहा॥३१४॥
यह नही कथन मात्र मम वांनि॥ सत्य सें परम सत्य सुखदानी॥ यातें तोय कह्यो सब विरा॥ तुम मोय

॥११४॥ अतिवलभरणधिर॥२१५॥ हेअरजुनमनकरिकेंएकुं॥ मोंनेधर्मसवहीतुमजेकुं॥ मनकुतधर्मत्यागी
केसवही॥ मेरेसरणआयोतुमअवही॥२१६॥ दोहा॥ मेंएककुंसुंहीकरो॥ युंवरततनतोयविर॥ में
सबपापमेंछोडीकुं॥ सोकनकरनाधिर॥२१७॥ चोपाई॥ परमगुह्ययहसास्त्रहेजेहा॥ मेंतोयकह्योर
हितसंदेहा॥ नांकियोतपएसोनरजेकुं॥ तेहीआगेंकहनांनहिंएकुं॥२१८॥ तवअरुममभक्तिनहीजा
ही॥ तपसितोकुंकहनानहीताही॥ भक्तकुंसुनेनेचहततनजेही॥ यहममरहस्यनकहनातेही॥२१९॥
ममस्वरूपममसांमर्थ्यमांही॥ तुंममगुणमहीदोषदेखाही॥ युंममद्वेषाकरतहेंजोई॥ कहनेजोग्य
कबुकुंनहिसोई॥२२०॥ परमगुह्यपहसास्त्रहेंजेकुं॥ मेरेभक्तकुंकेहहीतेउ॥ परमभक्तिममकरिकें
अशेषा॥ पेहेंमोयसंशायनहीलेशा॥२२१॥ दोहा॥ सवहीमनुष्यमेंआजसें॥ प्रथमभयेतिनमां
हि॥ ममअतिप्रियकरतापुरुष॥ तेहिविनअन्यभयोनांहि॥२२२॥ सोरठा॥ आजसेंआगेजोप॥ भो
मिविषेवकुंनरनीमध्य॥ अतिसिचलभमोप॥ तेहिविनअन्यकोउहोइहेनही॥२२३॥ चोपाई॥ धर्म
रूपतवममसंवादा॥ पढिहेप्रेमकुनलखितेहिस्वादा॥ ज्ञांनजज्ञसेंजसोमोयतेही॥ मममतिमेंवर ॥११४॥

तलहेतही॥२२४॥ परमश्रद्धाकुनतपुरुषहेजेकुं॥ रहीतअसूयाएसोतेकुं॥ यहसंवादसुंनतहेजव
ही॥ तवतिकुंभक्तीविरोधिसवकुं॥२२५॥ पापसेमुक्तहोइततकाला॥ अतिसुभवंतकेलोकविसाला
सोसुभलोककुंपावतसोई॥ दुखकोलेसनहीतहांकोई॥२२६॥ हेअरजुनकहेवचनमेंजोउ॥ सुनेकि
नहीएकचीतसोउ॥ अतिअज्ञांनसेंमोहीतहोइ॥ कथनकरीकुंकयोयुंमोई॥२२७॥ दोहा॥ हेपार्थअती
मोहवस॥ युंबोलेतमविर॥ सोतवमोहहकोनासअव॥ भयोकिनहीमतिधिर॥२२८॥ चोपाई॥ अर्जुनउवाच
वातप्रथमकहीसुनिकेंतेहा॥ तवअरजुनबोलतभएएहा॥ हेअच्युतममोहअनंता॥ तवप्रसादमेंपायो
अंता॥२२९॥ समृतिजथारथज्ञांनहेजोइ॥ तवकरुणासेंपायोमेंसोइ॥ थिरहोइचिकुलमिट्योवकुंनामी॥ सं
सयरहीतभयोमेंस्वामि॥२३०॥ अवकुंधाविकिवचनतुमारा॥ कहीहोसोकरिकुंकरिय्यारा॥ सुनिकहेसें
तुंजनमेजयएहा॥ युंअरजुनभयेगतसंदेहा॥२३१॥ नृपधृतराष्ट्रपुछिसुंवाता॥ संजयकहतभयोसाक्षा
ता॥ व्यासकिकृपासुंनीजउरज्ञांना॥ सोसवसंजयकहतसुजाना॥२३२॥ संजयउवाच॥ दोहा॥ कहेसंजय
हेनृपतिसुं॥ वासुदेवभगवान॥ पार्थनिजपितुमगनिसुन॥ अरजुनअतिबुद्धिवान॥२३३॥ सोरठा

तिनको यह संवाद ॥ अद्भुत रोमांचित करन ॥ ताकुं तजी के प्रमाद ॥ ज्युं कृष्णोक्त में मग्न भयो ॥ २३४
चोपाई ॥ मम गुरु वेद व्यास अघहारी ॥ तास अनुग्रह से सुखकारी ॥ दिव्य श्रवण दृग पायो जेही ॥
यातें गुह्य जोग हे तेही ॥ २३५ ॥ जोगेश्वर श्री कृष्ण हे जोई ॥ आपही कहत भए प्रभु सोई ॥ सो प्रभु सें जो प
रम विख्याता ॥ सो में श्रवन भयो साक्षाता ॥ २३६ ॥ हे नृप कृष्ण अरु अर्जुन जेऊ ॥ तेहि संवाद पुनित अ
तितेऊ ॥ श्रुनि साक्षात अलौकिक एहा ॥ पुनि पुनि हरखुं संभारि के तेहा ॥ २३७ ॥ हे नरेस अर्जुन के
काजा ॥ रुप प्रकास्यो श्रुर मुनिराजा ॥ रासो अद्भुत हरि को रुपा ॥ सो संभारि के परम अनुपा ॥ २३८ ॥ सो
रठा ॥ अति बड रुप कुं पाउं मम ॥ अति बड विस्मय होय ॥ पुनि पुनि हर्ष कुं पाउं में ॥ मन ही में मम कुं सो
य ॥ २३९ ॥ चोपाई ॥ कहा अब बहुत कहें से होई ॥ जोगेश्वर समरथ प्रभु सोई ॥ निज संकल्प से सब संसारा
तास उदय स्थिति करत संघारा ॥ २४० ॥ जो वसुदेव के पुत्र कहाई ॥ सो श्री कृष्ण जेही पक्ष के मांई ॥ पारथ
प्रभु पितु भगति कुं मारग ॥ तेही श्री कृष्ण पद आधारा ॥ २४१ ॥ जेही हरि चरण को आश्रय भारी ॥ ग
से अर्जुन धनुष के धारि ॥ सो जेही पक्ष में अर्जुन धिरा ॥ तेहि पक्ष रहे श्री गंभिरा ॥ २४२ ॥ जहां श्री

कृष्ण तहां विजय प्रचंडा ॥ संमृधि सब हि तहां रहत अखंडा ॥ तांही अचल निति को वासा ॥ युं मम
मति मही परम प्रकासा ॥ २४३ ॥ दोहा ॥ श्री आदिक सब रहेत तेही ॥ रहत सदा अनुकुल ॥ मुक्तानं
द को नाथ जेही ॥ सारथि मंगल मुल ॥ २४४ ॥ दुर्ग नाम पत्तन विषे ॥ उन्मत गंगा तिर ॥ हरि आगया
भाषा भई ॥ हरन सब हि भव पीर ॥ २४५ ॥ संवत अढार रु आसिया ॥ प्रात्रर प्रथम हि मास ॥ कृष्ण विज
रविवार दिन ॥ पुरन ग्रंथ प्रकास ॥ २४६ ॥ यह गीता कुं प्रेम से ॥ पढत श्रवन बुधिवंत ॥ मुक्तानंद को ना
थ तेही ॥ रिझत श्री भगवंत ॥ २४७ ॥ या गिता के अरथ कुं ॥ उर मही धारत जोय ॥ वासुदेव जगवंद को
लहत परम पद सोय ॥ २४८ ॥ इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जु
नसंवादे मुक्तानंदमुनिविरचित भगवद्गीताटिकायां समासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥
इति भगवद्गीता भाषा संपुर्णम् ॥ ॥ श्री हरिकृष्णाय सहजानंदाय निलकंठ वर्णि नमः ॥ सुमातः
लिपी कृत रावल जेगा मोरारजी संवत् १८५१ ना चैत्र सुदि दशमि ने भृगुवासरे आपुस्तक गांम
मेथाण मध्ये परिपुर्ण लिख्युं छे ॥ ॥ प्रत प्रमाणे लिख्युं छे ॥ अशुद्धं वा शुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥